Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

7

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि
न लगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० विश्वनाथ जी द्वारा प्रदत्त संग्रह 7

स्वागतम्

DONATION

8151

आर्य समाज देहरादून

ओ३म्

शताब्दी-१९८०

समारोह

दिनांक १, २, ३ नवम्बर १९८०

स्थान — अग्रवाल धर्मशाला, देहरादून

नगर कीर्तन — ३१ अक्टूबर १९८० दिन में २ बजे से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज देहरादून
शताब्दी-समारोह
१.२.३ नवम्बर १९८०

देवदत्त बाली, बाली वाच कम्पनी, पल्टन बाजार, देहरादून

आर्य समाज देहरादून की शताब्दी–स्मारिका प्रकाशित करने में हमारी अन्तरङ्ग सभा का मुख्य अभिप्राय इस समाज के इतिहास का प्रकाशन ही था। पूर्वजों के पुण्य स्मरण से जहां आगे बढ़ने की प्रेरणा तथा उत्साह प्राप्त होता है और भूलों से, यदि कोई अतीत में हुई हों, बचने की शिक्षा मिलती है, वहीं इतिहास को सुरक्षित करना, भावी पीढ़ियों के प्रति, अपने कर्तव्य का पालन भी है।

गत एक सौ वर्षों के अभिलेखों की गहरी छान-बीन करके इतिहास-भवन का निर्माण करना वास्तव में भाई यशपाल आर्य जी की ही तपस्या और लगन का परिणाम है। मुझे विश्वास है कि इस इतिहास के प्रकाशन से आर्यसमाज के सार्वभौम आन्दोलन का इतिहास भी लाभान्वित हुए बिना नहीं रहेगा क्योंकि इस समाज की स्थापना भले ही महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रथम देहरादून-प्रवास की समाप्ति के कुछ दिन पश्चात् हुई, इस की स्थापना का बीज महर्षि के आगमन से ही बोया गया था और आगमन का कारण भी अपने में नाटकीय तत्त्वों को लिए हुए था।

इतिहास की इस खोज से जहां यह लाभ हुआ कि सुनी-सुनाई बातों के आधार पर जो कतिपय भ्रान्तियां देहरादून के आर्यजनों में प्रचलित हो गई थीं, उनका साधार निराकरण हो गया है, वहीं यह अतिरिक्त उपलब्धि हुई है कि अचल सम्पत्ति सम्बन्धी मौलिक अभिलेख, जो इस समाज में खोए गए मान लिए गए थे, पत्रों की छान-बीन करते-करते सब मिल गए।

स्मारिका के सम्पादक भाई सोहनलाल जी, प्रकाशन-व्यसाय के विशेषज्ञ हैं। सामग्री को यथा-स्थान सँजोने और रूप-सज्जा का निर्माण करने में जो भी सफलता मिली है उसका श्रेय उन्हीं को है। इतिहास के अतिरिक्त पठनीय सामग्री का जो भी संकलन है, वह उन्हीं का किया हुआ है।

लेखक एवं सम्पादक महोदयों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हुए प्रभु से प्रार्थी हूं कि इस इतिहास के अध्येताओं में महर्षि दयानन्द के लक्ष्यों की प्राप्ति की अटूट लगन पैदा हो।

देवदत्त बाली

दिनांक १५ अक्तूबर १९८०

प्रधान, आर्य समाज, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

THANKS A MILLION

मैं सभी धर्म प्रेमियों का आभारी हूँ जिन्होनें विभिन्न प्रकार से बहुमूल्य योगदान देकर इस स्मारिका को पाठकों के समक्ष उपयुक्त समय पर प्रकाशित करने में मेरा अनेक प्रकार से सहयोग किया है।

मैं उन सभी दान-दाताओं का जिन्होंने पृष्ट-दान करके अथवा विज्ञापन के रूप में सहयोग देकर स्मारिका के प्रकाशन को सुलभ बनाया है।

अन्त में यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी यदि मैं यह कहूँ कि यह श्री देवदत्त बाली जी और श्री यशपाल जी के अथक प्रयासों का ही फल है कि स्मारिका आपके समक्ष है।

सोहनलाल अरोरा, सम्पादक शताब्दी स्मारिका

नटराज पब्लिशर, १७ राजपुर रोड़ देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज देहरादून
शताब्दी-समारोह

१, २, ३, नवम्बर १९८०

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। - महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द सरस्वती १४ अप्रैल १८७९ को प्रथम बार देहरादून नगर में पधारे थे। उन्हीं की पावन प्रेरणा से उनके आने के पश्चात् २९ जून १८७९ को आर्यसमाज देहरादून की विधिवत् स्थापना हुई थी। समाज अपने जीवन के १०० वर्ष पूर्ण कर चुका है। इस अवधि में उसने इस नगर की जो सेवा की है, वह आपके सामने है। आर्य समाज द्वारा संचालित शिक्षणालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या नगर के कुल विद्यार्थियों की संख्या के ४० प्रतिशत से कम नहीं होगी। इस शताब्दी-समारोह के अवसर पर समाज निम्नलिखित नवीन कार्य करने जा रहा है।

आर्यसमाज द्वारा संचालित "श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम" में एक चिकित्सालय की स्थापना की जा रही है जिसका उद्‌घाटन इसी अवसर पर होगा।

घण्टाघर के निकटस्थ क्षेत्र की जनता की आवश्यकता को पूरा करने के लिए श्री मदनसिंह गोरखा ट्रस्ट की लगभग ४॥ बीघा भूमि में एक विशाल "वैदिक धर्मशाला" का शिलान्यास इसी अवसर पर करने की योजना है।

आर्य समाज देहरादून का सौ वर्ष का इतिहास शताब्दी-स्मारिका के रूप में छप रहा है। इस स्मारिका के लिए दान या विज्ञापन के रूप में सहयोग प्रार्थनीय है।

नगर के विभिन्न मुहल्लों में पारिवारिक सत्संग नित्य प्रातः ७ से ८ बजे तक किए जा रहे हैं। आप भी अपने गृह पर यज्ञ और सत्संग के लिए आमंत्रित कर सकते हैं। विवरण हेतु मंत्री, आर्य समाज से सम्पर्क करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश", जिसने लाखों लोगों का मार्गदर्शन किया है, प्रचारार्थ आधे मूल्य पर केवल दो रुपये में वितरित किया जा रहा है। आप अपने लिए या उपहार के रूप में देने के लिए इस योजना का लाभ उठा सकते हैं।

क्या आप आर्य समाज के सदस्य हैं? यदि नहीं तो देश को नई दिशा देने के लिए—नये मानव का निर्माण करने के लिए—आर्यसमाज के सदस्य बनिये।

कवि-सम्मेलन, संगीत-सम्मेलन, आर्य-सम्मेलन, योग-सम्मेलन, महिला-सम्मेलन, वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि के अतिरिक्त आर्य जगत् के प्रसिद्ध सन्यासियों, विद्वानों एवं गायकों से श्रवण-लाभ करने का यह अपूर्व अवसर होगा।

नगर के बाहर से हजारों आर्यजन हमारे अतिथि बनकर नगर में आएंगे। हमें और आपको उनका आतिथ्य करने का भरपूर अवसर मिलेगा। तिथियां अभी नोट कर लें। यह अवसर जीवन में एक बार ही आएगा।

इस महान् यज्ञ में आपका आर्थिक तथा अन्य सभी प्रकार का सहयोग आपसे प्रार्थनीय है। इसी सन्दर्भमें छपवाए गए नोट शताब्दी-समारोह की संग्रहणीय वस्तु होगी।

सम्पर्क-सूत्र :-
आर्य वस्तु भण्डार
४६, डिस्पेन्सरी रोड, देहरादून
फान : ४११४

भवदीय—
यशपाल आर्य
मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज देहरादून
शताब्दी-समारोह
१, २, ३, नवम्बर १९८०

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।
- महर्षि दयानन्द

निमन्त्रण-पत्र

मान्यवर,

आर्य समाज देहरादून के शताब्दी-समारोह पर आपको सादर सप्रेम निमन्त्रण प्रेषित है। आशा है कि आप परिवार तथा इष्ट मित्रों सहित पूरे कार्यक्रम में उपस्थित रहने की कृपा करेंगे।

देवदत्त — यशपाल आर्य
प्रधान — मंत्री

तथा समस्त सदस्यगण, आर्य समाज, देहरादून

कार्य-क्रम

प्रभात-फेरी दिनांक २७ अक्तूबर सोमवार से ३० अक्तूबर बृहस्पतिवार तक प्रतिदिन प्रातः ५-३० बजे आर्य समाज मन्दिर से चलेगी और ६-३० बजे समाप्त हुआ करेगी।

नगर-कीर्तन

शोभा-यात्रा ३१ अक्तूबर शुक्रवार को दिन के १ बजे आर्य समाज मन्दिर से चलेगी।

दि० १, २, ३ नवम्बर का कार्यक्रम पीछे देख लें।

स्थानः-अग्रवाल धर्मशाला, गाँधी मार्ग

ऋषि-निर्वाण-पर्व

दि० ७ नवम्बर शुक्रवार को प्रातः ७ से ९ बजे तक यज्ञ एवं प्रवचन।

स्थानः-आर्य समाज मन्दिर

रमा हंस वाद-विवाद प्रतियोगिता

दि० ८ नवम्बर शनिवार को दिन में २ बजे से आर्य समाज मन्दिर में। विषयः 'बीसवीं शताब्दी में सृष्टिकर्ता ईश्वर के अस्तित्त्व से इनकार करना आत्म-प्रवंचना है।'

अनिल विजयोपहार वाद-विवाद प्रतियोगिता

दिनांक ८ नवम्बर सांय ४-३० बजे से आर्यसमाज मन्दिर में। विषयः-'मौजूदा परीक्षा-प्रणाली बन्द की जाय। इसकी कोई उपयोगिता नहीं, कोई आवश्यकता नहीं'।

संगीत प्रतियोगिता

दि० ९ नवम्बर रविवार मध्याह्नोत्तर २ बजे से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शनिवार १ नवम्बर १९८०

प्रातः

७-३० बजे से ८-१५ यज्ञ
यजमानः—श्री अशोकनाथ सेखरी
८-१५ ,, ,, ८-४५ भजन श्री ओम्प्रकाश वर्मा
८-४५ ,, ,, ९-३० प्रवचन आचार्य विश्वबन्धु जी
९-३० ,, ,, ९-४५ भजन श्री रामप्यारी आर्य कन्या पाठशाला
९-४५ ,, ,,१०-३० प्रवचन आचार्य भगवान देव
१०-३० ,, ,,११-१५ शंका-समाधान : पं० ओम्प्रकाश जी शास्त्री

मध्याह्नोत्तर

२-०० बजे से २-३० भजन डी.ए.वी. इण्टर कालेज करनपुर
२-३० ,, ,, ४-०० महिला सम्मेलन
सभापति—श्रीमती शकुन्तला गोयल मेरठ
४-०० ,, ,, ४-१५ भजन
४-१५ ,, ,, ५-०० उपदेश पं० ओम्प्रकाश जी शास्त्री

रात्रि

७-०० बजे से ७-३० भजन श्री ओम्प्रकाश वर्मा
७-३० ,, ,, ८-१५ उपदेश प्रोफेसर रत्नसिंह जी
८-१५ ,, , ८-४५ भजन
८-४५ ,, ,,१०-३० कवि-सम्मेलन
सभापतिः—पं० श्यामनारायण जी पाण्डेय

विशेषः—दि० १, २, ३ नवम्बर के कार्यक्रम अग्रवाल धर्मशाला में और शेष सब आर्य समाज मन्दिर में होंगे। वैदिक धर्मशाला के शिलान्यास तथा औषधालय के उद्घाटन का कार्यक्रम पृथक् प्रकाशित किया जायेगा।
सभा में धूम्रपान करना या मद्य-सेवन करके आना निषिद्ध है।
कार्यक्रम में किसी भी प्रकार का परिवर्तन करने का अधिकार प्रधान जी को प्राप्त है।

रविवार २ नवम्बर १९८०

प्रातः

७-३० बजे से ८-१५ यज्ञ
यजमानः-डॉ० सोमनाथ जी
८-१५ ,, ,, ८-४५ भजन
८-४५ ,, ,, ९-३० प्रवचन प्रोफेसर रत्नसिंह जी
९-३० ,, ,, ९-४५ भजन संगीत-मन्दिर, न्यू फौरेस्ट
९-४५ ,, ,,१०-३० प्रवचन प्रोफेसर उत्तमचन्द जी 'शरर'

मध्याह्नोत्तर

२-०० बजे से २-३० भजन पं० सुगनचन्द जी
२-३० ,, ,, ४-३० राष्ट्र-रक्षा-सम्मेलन
सभापतिः-आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री
वक्ताः डॉ० भाई महावीर, प्रोफेसर रत्नसिंह, आचार्य भगवानदेव, श्री ओम्प्रकाश जी पुरुषार्थी
४-३० ,, ,, ४-४५ भजन

रात्रि

७-३० बजे से ८-०० भजन
८-०० ,, ,, ८-४५ भाषण पं० ओम्प्रकाश जी पुरुषार्थी
८-४५ ,, ,, ९-१५ भजन श्री ज्ञानेन्द्र कुमार
९-१५ ,, ,,१०-०० भाषण प० ओम्प्रकाश जी शास्त्री

बाहर से आने वाले नोट करें :—

(क) समस्त जानकारी के लिए जानकारी केन्द्र ३१ अक्तूबर से शिवाजी धर्मशाला में स्थापित किया जायेगा। फोन ३५२८
(ख) बाहर से आने वाले अपनी बस सीधी शिवाजी धर्मशाला में ले जावें।
(ग) पत्र व्यवहार के लिएः—यशपाल आर्य, आर्य वस्तु भण्डार, ४६ डिस्पैंसरी रोड़ देहरादून। फोन ४९९४
तार—'Jaribooti' 'जड़ीबूटी'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोमवार ३ नवम्बर १९८०

प्रातः

७-३० बजे से ८-१५ यज्ञ
यजमानः—श्री लक्ष्मणदेव जी
८-१५ ,, ,, ८-४५ भजन
८-४५ ,, ,, ९-३० प्रवचन पं० ओम्प्रकाश शास्त्री
९-३० ,, ,, ९-४५ भजन कन्या गुरुकुल, देहरादून
९-४५ ,, ,,१०-३० प्रवचन आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री
१०-३० ,, ,,११-१५ शङ्का-समाधान
पं० ओम्प्रकाश जी शास्त्री

मध्याह्नोत्तर

२-०० बजे से २-३० भजन—डी०ए०वी० इण्टर कालेज, प्रेमनगर
२-३० ,, ,, ४-०० योग-सम्मेलन
सभापतिः—आचार्य भगवानदेव जी
वक्ता : स्वामी जगदीश्वरानन्द जी
आचार्य विश्व बन्धु शास्त्री,
प्रो० उत्तमचन्द 'शरर'
४-०० बजे से ४-१५ भजन
४-१५ ,, ,, ५-०० भाषण प्रोफेसर रत्नसिंह जी

रात्रि

७-०० बजे से ७-३० भजन
७-३० , ,, ८-४५ भाषण प्रो० उत्तमचन्द जी 'शरर'
८-४५ , ,, ९-०० मंत्री जी की आख्या
९-०० ,, ,, ९-१५ भजन प्रो० वासुदेव देशपाण्डेय
९-१५ ,, ,,१०-०० भाषण महात्मा रामगोपाल जी वानप्रस्थी

(घ) गरम बिस्तरा साथ ले कर आवें।
(ङ) कितने सज्जन पधार रहें हैं यह पूर्व ही पत्र द्वारा सूचित कर देवें ताकि आवास व भोजन की व्यवस्था में सुगमता हो जाय।

उत्सव पर पधारने वाले महानुभावः—

(१) पूज्य स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती, दिल्ली।
(२) महात्मा रामगोपाल जी वानप्रस्थी (शाल वाले)।; भूतपूर्व ससद्-सदस्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली।
(३) श्री ओम्प्रकाश जी पुरुषार्थी महामंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली (भू०पू० संसद सदस्य)।
(४) आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०।
(५) शास्त्रार्थ-महारथी पं० ओम्प्रकाश शास्त्री, खतौली।
(६) प्रोफेसर उत्तमचन्द 'शरर' आर्य कालेज, पानीपत।
(७) प्रोफेसर रत्नसिंह जी, अवकाश प्राप्त, दर्शन-विभाग महानन्द मिशन कालेज, गाजियाबाद।
(८) माननीय आचार्य भगवानदेव जी, संसद्-सदस्य अजमेर (राजस्थान)।
(९) माननीय डॉ० भाई महावीर जी, संसद्-सदस्य, नई दिल्ली।
(१०) श्री ओम्प्रकाश वर्मा, आकाशवाणी-गायक, हरियाणा

कवि-गण

(१) पं० श्यामनारायण जी पाण्डेय, आजमगढ़।
(२) श्री राजेश 'दीक्षित' आगरा।
(३) प्रो० उत्तमचन्द जी 'शरर', पानीपत।
(४) पं० ओम्प्रकाश शास्त्री, खतौली।
(५) श्री विद्याभास्कर शास्त्री, नई दिल्ली।
(६) श्री हरिराम 'चमचा' मुजफ्फरनगर।
(७) श्री रघुनाथ 'प्यासा' मुजफ्फरनगर।
(८) श्रीमती पद्मा शर्मा, ऋषिकेश।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐ

ब्रह्म महूर्त में व्रत :

प्रातः रत्नं प्रातरित्वा दधाति तं चिकित्वान् प्रतिगृह्या निधत्ते ।
तेन प्रजां वर्धयमान आयुः रायस्पोषेण सुवीरः ॥ ऋ० १।१२५।१॥

हे व्रतपते बल के भण्डारा, प्रात: काल में पुत्र तुम्हारा ।
सुन्दर समय पर व्रत लेता हूँ, तव चरणों में चित देता हूं ।
दिन भर में नहीं पाप करूंगा, हरदम तेरा जाप करूंगा ।
सब अंगों को वश में करके, शुभ मार्ग में सदा विचर के ।
कर्म मैं वेद अनुसार करूंगा, शुभ कर्मों से प्यार करूंगा ।
पर उपकार में रहे यह जीवन, धन बल करदूं तेरे अर्पण ।
जब भी बुद्धि कुमार्ग जावे, जब भी मन में पाप समावे ।
अपनी दया अपार दिखाओ, पाप करम से हमें बचाओ ।

याचना :

भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ यजु० ३६।३॥

ओंकार प्रभु तेरा नाम, गुण गावे संसार तमाम ।
तेरी महिमा गावें वेद, तेरे जपे न आवें खेद ।
प्राण स्वरूप प्राणों से प्यारा, अन्त न कोई तुम्हारा पाता ।
सारे जग को पैदा करता, सबसे उत्तम दुःखों को हरता ।
बुद्धि करो हमारी उज्ज्वल, तन मन होवे हमारा निर्मल ।
हे ईश्वर! हम तुझको ध्यावें, अपना यह जीवन सफल बनावें ।

समर्पण :

हे ईश्वर दयानिधे ! भवत्कृपया अनेन
जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थ काममोक्षणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः ॥

दया निधे ! हे ईश प्यारे, जितने हैं शुभ कर्म हमारे ।
यज्ञ, दान और तप तमामी, अर्पण तेरे चरणों में स्वामी ।
धर्म, अर्थ और काम हमारे, मोक्ष आदि पदार्थ चारे ।
इनकी सिद्धि प्राप्त होवे, जन्म मरण के कष्ट को खोवे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि दयानन्द सरस्वती
Maharshi Dayanand Saraswati

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री यशपाल आर्य

समाज देहरादून के इतिहास लेखक

श्री देवदत्त बाली

प्रधान, आर्य समाज देहरादून

श्री सोहनलाल अरोरा

सम्पादक शताब्दी स्मारिका

आर्य समाज लक्ष्मण चौक के पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

कुछ स्मारिका के विषय में

भवन नींव पर खड़ा रहता है और नींव पृथ्वी के गर्भ में रहती है। पुस्तक की भूमिका पर चाहे पुस्तक स्थिर रहे या न रहे, परन्तु भूमिका लिखी अवश्य जानी चाहिए। यह आज का रिवाज हो चला है।

मैं इस परिपाटी को पूरा करने के लिए यह भूमिका नहीं लिख रहा हूँ। मेरा उद्देश्य स्पष्ट रूप से यह बताना है कि स्मारिका के प्रकाशन की क्या तो आवश्यकता आ पड़ी और क्या इसका महत्त्व है ?

लगभग 100 वर्ष पूर्व जब आर्य समाज देहरादून में स्थापित हुआ था, उस समय का कोई कार्यकर्त्ता अब जीवित नहीं है। पुराने आदमियों ने किस मार्ग का अवलम्बन कर उन्नति की थी ? कैसे-कैसे कष्ट उठा हमारे लिए प्रचार का मार्ग प्रशस्त किया था ? क्या-क्या भूलें की थीं ? उनका अध्ययन हमें अपने मार्ग पर बढ़ने के लिए नया प्रोत्साहन प्रदान कर सकता है। उनका जीवन हमारे लिए प्रकाश स्तम्भ बन सकता है और उनकी भूलों से सबक सीख कर हम अपने मार्ग को निष्कंटक बना सकते हैं। यदि दो-चार को भी प्रेरणा मिल जाये तो स्मारिका-प्रकाशन का यह ध्येय पूरा हो जायेगा।

इन 100 वर्षों की अवधि में दसियों गलत धारणाएँ हमारे अन्दर घर कर गयीं। श्री महानन्द जी जैसे विद्वान् सन्त को हमने इस आर्य समाज भवन का दान-दाता और भूमिदाता मान लिया। आर्य समाज की स्थापना महर्षि के हाथों 29 अप्रैल, 1879 को हुई समझ ली। "महानन्दाश्रम" के न जाने क्या-क्या अर्थ कर डाले। इसमें किसी का दोष नहीं था। समय के साथ-साथ विस्मृति हो जाना स्वाभाविक है। यदि आज रामायण न होती तो श्री राम के विषय में हम क्या जानते ? यदि पं० लेखाराम सरीखे विद्वानों ने महर्षि के जीवन की खोज में अपने को समर्पित न किया होता तो महर्षि के जीवन का वह भाग भी आज अन्धकार में खो गया होता।

आर्य समाज देहरादून का शताब्दी-समारोह सामने आया तो आर्यजनों के मन में यह अभिलाषा जग उठी कि इस अवसर पर आर्य समाज का इतिहास अवश्य छपना चाहिए। 1975 तक का इतिहास मैं पूर्व ही लिख चुका था।

लोग कुम्भ के मेले में जाते हैं, मुरमुरे और इलायचीदाना प्रसाद के रूप में ले आते हैं। शताब्दी के अवसर पर यहाँ देहरादून पधारने वाले क्या ले जाएँ जो आर्य समाज देहरादून की शताब्दी में आना उन्हें याद रह जाये ? इस छपे इतिहास को साथ ले जाने वाला मानो आर्य समाज देहरादून का समस्त प्यार साथ ले चला है। उसे शताब्दी-समारोह के साथ गत 100 वर्षों के सब समारोह देखने को मिल जायेंगे। यही प्रसाद हो जायेगा। यह सोचकर इतिहास छपवाने का निश्चय किया गया।

रही स्मारिका की बात। सो सब जानते हैं कि पुस्तक छापना आज के महंगे युग में अत्यन्त कठिन काम है। विशेषकर तब, जब वह उपन्यास, नाटक, किस्से-कहानियाँ या सस्ता घासलेटी साहित्य न हो। छपने पर होने वाला हज़ारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुपये का व्यय कहाँ से आयेगा ? यही विचार कर, स्मारिका के रूप में, यह इतिहास छापना उचित समझा गया। जो आय इस प्रकार हो जायेगी उससे प्रकाशन का बोझ हल्का हो जायेगा और यदि कुछ अधिक एकत्र हो गया तो वह "शताब्दी" के अन्य कार्यों में व्यय हो जायेगा।

अन्तरंग सभा में जब भाई सोहन लाल जी अरोड़ा ने स्मारिका को यथासमय छपवा देने का भार अपने कन्धों पर ले लिया तो समाज निश्चिन्त हो गया। क्योंकि इनकी योग्यता और लग्न से हम सभी परिचित हैं। परिणामतः स्मारिका आपके हाथ में है।

भवदीय
यशपाल आर्य
मन्त्री
आर्य समाज, देहरादून।

15 सितम्बर, 1980

पृष्ठदाता
आनन्द ब्रदर्स, 51 सुभाष मार्ग, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज देहरादून का इतिहास लेखन

9 दिसम्बर, 1973 को रविवासरीय सत्संग आरम्भ होने पर मुझे सूचना दी गयी, कि सती-मन्दिर के आगे दीवार बना कर उसे मस्जिद में शामिल करने की कोशिश की जा रही है। सती-मन्दिर के आगे बनने वाली यह दीवार तोड़ दी गयी।

26 दिसम्बर, को मुझे तथा 10 अन्य लोगों को 147 सी. आर. पी. सी. का नोटिस मिला, जिसके अनुसार हमसे यह पूछा गया था कि मन्दिर पर हमारा क्यों और कैसे अधिकार बनता है।

न्यायालय में उपस्थित होने पर हमें दूसरा नोटिस 107/112 सी. आर. पी. सी. के अन्तर्गत दिया गया।

30 दिसम्बर, 1973 को आर्य समाज देहरादून की अन्तरंग सभा के अधिवेशन में इस विषय पर खुल कर चर्चा हुई। सभा ने इन मुकदमों के व्यक्तिगत स्वरूप को अस्वीकार कर दिया और समाज की ओर से मुकदमा लड़ने का निर्णय किया गया।

मैं मंत्री था, अतः पैरवी तथा दौड़-धूप का समस्त उत्तरदायित्व मेरा ही था।

मैंने आर्य समाज का प्रत्येक पुराना, उपलब्ध रिकॉर्ड निकाला। प्रारम्भिक रिकार्ड उर्दू भाषा में लिखा है। उसे पढ़ा और उसके नोट्स बनाने आरम्भ किए। इच्छा यह थी कि सती-मन्दिर के बारे में कोई लेख मिले तो उसका प्रयोग सती-मन्दिर के वाद में किया जाये। पुराने रजिस्टर और पत्रक को देखते समय अनायास यह ध्यान आया कि बहुत दिनों से आर्य समाज देहरादून का इतिहास लिखने की जो इच्छा मन में दबी चली आ रही है उसकी पूर्ति का इससे श्रेष्ठ अवसर पुनः प्राप्त नहीं होगा। उन सभी स्थलों को भी साथ-साथ उतारना आरम्भ किया जिनसे आर्य समाज देहरादून के इतिहास की रूपरेखा तैयार हो सकती थी।

पचासों बरस से आर्य जन इस इतिहास के लिए तड़प रहे थे। 1929 में आर्य समाज देहरादून की अर्ध-शताब्दी मनायी गयी थी। 29-10-1931 को अन्तरंग सभा ने एक प्रस्ताव स्वीकृत किया था कि "वार्षिकोत्सव से बचने वाला धन आर्य समाज देहरादून के इतिहास के लेखन व प्रकाशन में लगाया जाय।"

26 जनवरी 1947 को अन्तरंग सभा ने पंडित चन्द्रमणि विद्यालंकार, हैडमास्टर, बद्रीनाथ छिब्बर, पंडित अमरनाथ वैद्य, बाबू रामप्रसाद व श्री जगदर्शन सेवल पर आधारित एक इतिहास-लेखन समिति का गठन किया था।

14 फरवरी, 1954 को अन्तरंग सभा ने पुनः नई समिति का निर्माण किया था जिसमें पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार, पं० अमरनाथ वैद्य, मास्टर रामस्वरूप, श्री नारायण दास भार्गव, चौ० हुलास वर्मा, और श्री आर्य किशोर जी शामिल थे। आर्य समाज की स्थापना को 75 वर्ष पूर्ण हो गये थे, जयन्ती मनानी थी इसलिए, कार्य में तेजी आ जाये, यह विचार कर पूज्य पं० नरदेव शास्त्री जी को भी समिति में शामिल किया गया और इतने समय पश्चात्, अब 1980 में प्रभु की कृपा से यह कार्य सम्पन्न हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज के समस्त उपलब्ध रिकॉर्ड इस इतिहास के मुख्य आधार हैं।

इसके अतिरिक्त आर्य समाज देहरादून का इतिहास लिखने के लिए मैंने जिस सामग्री का उपयोग किया है—उसका वर्णन करना भी आवश्यक है। सुविधा के लिए स्थान-स्थान पर उसका संकेत इस प्रकार किया है :—

हिन्दी जीवन-चरित्र

"महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र" (हिन्दी) लेखक पं० लेखराम जी, प्रकाशक—आर्य समाज नया बांस देहली, प्रथम संस्करण।

उर्दू जीवन-चरित्र

"मुकम्मल जीवन चरित्र महर्षि दयानन्द सरस्वती" लेखक पं० लेखराम जी, सम्पादक—श्री लक्ष्मण जी आर्योपदेशक, छपा—यूनियन स्टीम प्रेस, लाहौर—1916, प्रकाशक आर्य पुस्तकालय—आर्य होटल, लाहौर।

अंग्रेजी जीवन चरित्र

"Life of Dayanand Sarswati" by Harbilas Sharda. प्रकाशक परोपकारिणी सभा, अजमेर, 1968।

पत्र-व्यवहार

"ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन" पं० भगवद्दत्त द्वारा सम्पादित। प्रकाशक श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट, गुरु बाजार, अमृतसर। द्वितीय संस्करण 1955.

देहरादून गजेटियर

H. G. Walton I. C. S. लिखित 1911 में छपा "देहरादून गज़ेटियर" अंग्रेजी में।

विलियम्स

"Historical & Statistical Memoirs of Dehra Dun" by G. R. William B.A., Bengal Civil Service, Published by Authority—1874.

उत्तर-प्रदेश का इतिहास

उत्तरप्रदेश की आर्य समाजों का इतिहास जिसे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने प्रकाशित किया है—दोनों भाग।

सत्यार्थ प्रकाश

द्वितीय संस्करण की फोटो स्टेट कापी। आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट देहली द्वारा प्रकाशित।

पृष्ठदाता
श्री शिवनारायण सिंह नेगी, 53 सुभाष मार्ग, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवरण

जिला की आर्य समाजों, शिक्षा-संस्थाओं और संस्थाओं द्वारा भेजे गये विवरण-प्रश्नों के उत्तर।

बहुत-सी बातें मेरे अपने ज्ञान में थीं या मैं उनका प्रत्यक्षदर्शी था। कुछ वयोवृद्ध लोगों से बातचीत पर उनके संस्मरण मिले। समस्त उपर्युक्त ग्रन्थकारों एवं सहयोगियों के प्रति मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। आर्य समाज देहरादून का विशेष रूप से इसलिए कि उसने अपना समस्त उपलब्ध रिकॉर्ड—रजिस्टर, कागज, दस्तावेज मुझे प्रदान किये और प्रकाशन का समस्त व्यय-भार वहन करना स्वीकार किया। श्री देवदत्त जी बाली, प्रधान आर्य समाज देहरादून ने इतिहास लेखन के लिए मुझे न केवल प्रोत्साहित किया अपितु ग्रन्थ-निर्माण में अत्यन्त सहयोग प्रदान किया। श्रीमती डॉ० ब्रह्मवती नारंग और भाई देवदत्त जी बाली ने इसका प्रूफ रीडिंग किया। सो चाहते हुए भी डा० ब्रह्मवती जी को तो धन्यवाद नहीं दे रहा। वे मेरी बड़ी बहिन हैं। उनसे केवल आशीर्वाद की कामना करता हूँ। बाली जी समाज के प्रधान हैं। समस्त श्रेय उनको ही है।

इस सबके पश्चात् भी यह इतिहास इस रूप में न छप पाता यदि भाई सोहन लाल जी अरोड़ा का मूल्यवान् सहयोग प्राप्त न होता। वे कुशल प्रकाशक हैं। यशस्वी व्यापारी हैं। उन्हीं के प्रयत्न से "स्मारिका" के रूप में यह इतिहास छप सका है। "स्मारिका" के लिए विज्ञापनों की प्राप्ति का समस्त श्रेय भी आपको ही है।

अन्तरंग सभा (आर्य समाज देहरादून) के निर्णय के अनुसार, 1, 2, 3, नवम्बर, 1980 को आर्य समाज देहरादून का शताब्दी-समारोह मनाया जा रहा है। इसी अवसर पर इस ग्रन्थ का विमोचन किया जा रहा है।

इस इतिहास में यदि कोई भूल रह गयी हो तो उसका दोष मुझ पर है। जानने-जनाने पर संशोधन कर दूंगा।

ईश्वर कृपा करे। इस इतिहास से हम में नया जीवन पैदा हो, उत्साहवर्धन हो और अपने पुरखाओं से प्रेरणा प्राप्त कर हम तेज़ी से अपने मार्ग पर चल सकें।

एक बार पुनः उन सबको धन्यवाद जिनका कोई भी सहयोग इस ग्रन्थ के लेखन में मुझे मिला है।

भवदीय

—यशपाल आर्य

दि० 15 सितम्बर, 1980 आर्य निवास, 1/3 धामावाला, मौ० देहरादून।

नोट :—भाई देवेन्द्र नाथ जी प्रभाकर ने कुछ प्राचीन अप्राप्य चित्र, महर्षि का स्वहस्त लिखित एक पत्र, और श्री अमरनाथ वैद्य का एक मुद्रित लेख दिया। उनका प्रयोग यथास्थान किया गया है। एतदर्थ धन्यवाद।

पृष्ठदाता

श्री एस. पी. तलवाड़, 12 नेशिविला रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज देहरादून का अभिनव विकास हो

आर्य समाज देहरादून का अभिनव विकास हो
आर्य जन इस हेतु यह शताब्दी हैं मना रहे ॥

सब ही सकल भेद-भाव भूलि के श्रद्धान्वित हो
संगठित हो, संगठन का बिगुल हैं बजा रहे ॥

मानवता का मंत्र ले सम्मान-मान-मानव का
मार्तण्ड सा प्रकाश ले भूमण्डल पर छा रहे ॥

जग को जगाने सब मग जगमगाने लगे
जाज्वल्यमान ज्योति से जग-तम हैं मिटा रहे ॥

देश को दे रहे दिव्य दयानन्द का सन्देश
दिनकर सा दिव्य तेज देखो, हैं दिखा रहे ॥

हर के हिय का अब हटाने को पीर चले
हर्षित होकर हर हृदय को हरसा रहे ॥

राग-द्वेष दूर हटा, अनुराग के रंग रंगे
राग राजनीति, रीति-प्रीति के हैं, गा रहे ॥

दूरदर्शी दिव्य आर्य, दुर्गुण दुर्व्यसनों को,
दम्भ को और दम्भियों को दूर हैं भगा रहे ॥

नगर देहरादून के आर्य नर नारी सब
नागरिकों को नीति नव प्रीति हैं सिखा रहे ॥

कान्ति-शान्ति, क्रान्ति-दूत, आज कमर कस के उठे
काव्य, अमर काव्य, वेद सबको सुना रहे ॥

अमित, अपार हो, अनन्त ज्योति हो अखण्ड
अद्वितीय, अमर इसका चर्चित इतिहास हो ॥

भिन्नता के भाव का भेदक समाज यह
भलाई के कर्म का ही इस को अभ्यास हो ॥

नम्रता-विधायक, न्याय, नीति रीति नायक हो
निर्बल, असहायों का यह निर्मल निवास हो ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वन्दनीय विश्व में हों, वैदिक धर्म रत रहे
वेद-ज्ञान ईश्वरीय, ऐसा ही विश्वास हो ॥

विद्या-विस्तारक, मान विद्ववज्जनों का करे
वैभववान् बनने का मन में उल्लास हो ॥

कान्तिमय, क्रियाशील, कर्मठ, कृतज्ञ, बनें
कुरीतियों के नाश का ही सर्वथा प्रयास हो ॥

सत्य-निष्ठा, सदाचार, सद्गुण, सद्भाव-युक्त
सदस्य हों सभी सबमें सत्यार्थ प्रकाश हो ॥

हो न उपहास कभी हास न "भास्कर" इस,
आर्य समाज देहरादून का अभिनव विकास हो ॥

शुभकामनाओं के साथ !

लेखक :—आचार्य कविवर विद्या भास्कर शास्त्री "भास्कर"

पृष्ठदाता

श्री ओमप्रकाश हरि, 41 राजपुर मार्ग, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देहरादून नगर और जिला

गंगा और यमुना की गोद में बसा यह छोटा सा नगर है जिसे देहरादून कहते हैं। इसके एक ओर सूखी बिन्दाल बहती है और दूसरी ओर वर्षा ऋतु में दोनों तटों को उद्वेलित करती ऋषिपर्णा उफनती चली जाती है। सामने दिन-मणि की प्रखर किरणों से जगमगाता हिमालय का शिखर और पीठ पर चीड़ की महक से सुवासित शिवालिक। प्रकृति का सौन्दर्य जैसे यहाँ सिमट कर बैठ गया हो। जाड़ो में गुलाबी जाड़े पड़ते हैं और वर्षा में जम कर पानी बरसता है। लू तो खैर चलती नहीं पर गर्मी के दो मास काफी त्रास देने वाले होते हैं।

लोग कहते हैं यह आचार्य द्रोण की नगरी है और इसी कारण द्रोणदून कहलाती है और अब अपभ्रंश होकर देहरादून हो गयी है। वे लोग भी हैं जो साल के घने जंगलों को देख कर महाभारत-कालीन विराट की उस नगरी की तलाश करते हैं जिसकी साठ हजार गायें कौरवों ने चुरा कर यहाँ बाँध ली थीं। अन्धकार की उन परतों को चीर कर भूत के गर्भ में झाँकना सरल नहीं है। फिर भी अन्धड़ और धूल के पीछे, 1398 में तैमूर लंग की सेनाओं को हरिद्वार लूटते हुए हम देख सकते हैं। बिजनौर के पास से गंगा नदी को पार कर तैमूर के खूनी भेड़िये मोहन्ड दर्रे से देहरादून की घाटी में घुस आये। लोगों को लूटा गया, नागरिकों को गुलाम बनाया गया और तैमूर की सेनाएँ जोनसार बावर को रौंदती हुई सिरमोर के राजा पर जा चढ़ीं।

1654 तक इतिहास के पृष्ठ फिर इतने अस्पष्ट हैं कि कुछ जाना नहीं जाता। और हम देखते हैं शाहजहाँ के सिपहसालार खलीलुल्ला खाँ को जो 8000 लश्कर लेकर श्रीनगर (गढ़वाल) के जमींदार को कुचलने चला था। सिरमोर नरेश शाही सेना के साथ आ मिला। और एक बार मुगलों और सिरमोर की सेना फिर देहरादून को कुचलती हुई श्रीनगर की ओर चली गयीं।

इस आक्रमण के कुछ ही समय बाद 1699 में गुरु रामराय जी द्वारा गुरुद्वारे की स्थापना का समय आता है। समय स्थिर रहता नहीं, उतार-चढ़ाव चलते रहे और 1803 में देहरादून पर गोरखा सेनाओं ने कब्जा कर लिया। एक ओर अंग्रेज की चढ़ती कला थी जिसकी सैनिक शक्ति और कूटनीति के सामने भारतीय राजा एक के बाद एक घुटने टेकते चले जा रहे थे और दूसरी ओर मुट्ठी-भर गोरखा सेनाएं जो किसी भी तरह से देहरादून खाली न करने की प्रतिज्ञा किये बैठी थीं। अंग्रेज या तो उस सेना को धूलि-धूसरित कर देता तब इस दून घाटी पर अधिकार पाता या गोरखा सूरमा आप ही किला खाली कर देते तो अंग्रेज का वर्चस्व स्थापित होता। अन्य कोई मार्ग नहीं था।

1814—कर्नल मौबी ने खलंगा दुर्ग (नालापानी), देहरादून नगर से दो-ढाई मील दूर स्थित, को आत्म-समर्पण की चुनौती देते हुए लिखित सन्देश भेजा। दुर्ग के रक्षक बलभद्र थापा ने कागज का वह टुकड़ा फाड़ कर फेंक दिया। अंग्रेज के स्वाभिमान को जैसे किसी ने ठोकर मार दी हो।

हाथी पर सवार होकर कर्नल ने किले के चारों ओर चक्कर लगाया, कुछ राउण्ड भी चलाए और अगले दिन 31 अक्टूबर को प्रातःकाल किले से 600 गज दूर 2 बारह पौण्ड वाली, साढ़े पांच इंच वाली चार और 6 पौण्ड वाली चार तोपें तैयार कर दी गयीं। दुर्ग पर चारों ओर से आक्रमण किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्नल कारपेन्टर के साथ 611 जवान एक ओर से बढ़े। कर्नल फास्ट 363 सिपाही लेकर दूसरी ओर से चला, मेजर कैली अपने 541 जांबाजों के साथ तीसरी तरफ से हमलावर हुआ और कैप्टन कैम्पबेल चुने हुए 283 सैनिक लेकर चौथी तरफ से किले पर टूट पड़ा। 939 सिपाही रिजर्व में थे ताकि समय पर सहायता को भेजे जा सकें। चारों सेनाओं की कमान जनरल जैलस्पी के हाथ में थी। दुर्ग-रक्षक असावधान नहीं थे। सुबह 9 बजे सेनाएँ किले के सामने पहुँच चुकी थीं। उधर से बाढ़ मारी गई। सेनाएँ पीछे हटीं और उस समय तक आगे बढ़ना असम्भव हो गया जब तक किले पर चढ़ने के लिए सीढ़िया न आ जाएँ। सीढ़ियों के इन्तजार ही इन्तजार में ले० ऐलिस मारा जा चुका था, जनरल जैलस्पी, जो स्वयं तलवार हाथ में लेकर सबसे अगली पंक्ति में सिपाहियों का जोश बढ़ाने आया था, छाती पर गोली खाकर वहीं गिर पड़ा था और उसके प्राण पखेरू उड़ गये थे। उसका लेफ्टीनैन्ट ओ० हारा भी उसी के साथ मरा पड़ा था—तब कारपेन्टर की कमान में सेनाएँ निराश होकर वापिस लौट आयीं। अगली पंक्ति का ऐसा कोई भी योद्धा नहीं था जो मारा न गया हो या घायल न हुआ हो। गोलियाँ और तीर दोनों काम कर गये थे। गोरखा स्त्रियाँ दुर्ग-मार्ग की रक्षा कर रही थीं। द्वार तक पहुँचने वाले या तो पत्थरों की मार का शिकार हो गये या तीरों से छलनी हो गये। अंग्रेज इतिहासकार कहते हैं कि जनरल जैलस्पी की अधीरता और जल्दबाजी ने सब चौपट कर दिया था। एक जनरल, चार अफसर मारे जा चुके थे। 15 बुरी तरह घायल हुए थे जिनमें से कई बाद में मर गये। 27 नॉन-कमीशन्ड अफसर व जवान मारे गये थे, 213 घायल हुए थे, पैदलों में 100 में से 75 मारे जा चुके थे। सेनाएँ वापिस देहरादून आ गयीं। देहली से कुमुक माँगी गयी।

28 नवम्बर 1814 को नालपानी दुर्ग से 300 गज दूर दोबारा तोपखाना जमाया गया। 26 नवम्बर को दीवार एक जगह से कुछ टूट गई। अंग्रेज की सहायता के लिए टुकड़ियाँ बढ़ी चली आ रही थीं। परन्तु फल अब भी कुछ नहीं निकला था। उधर किले में मुट्ठी भर गोरखा स्त्रियाँ और बच्चे कब तक मौत का मुकाबला करते। धीरे-धीरे किले में राशन समाप्त हो गया, भूख प्यास से बिलख कर बच्चे और माताएँ मौत से भूझते रहे। गोरखों की अत्यल्प शक्ति ने अन्ततः तीसरे दिन दुर्ग खाली कर दिया। उनकी संख्या बहुत कम थी। केवल 70 जवान किले से बाहर निकले थे। हाथों में नंगी तलवारें लिये, हृदय में अजेय साहस और पागलपन संजोए अंग्रेज की सेनाओं को चीरते ये 70 जवान किले का फाटक खोल कर जंगल में घुसते चले गये। 30 नवम्बर की रात-भर अंग्रेज के 400 सिपाही उनका पीछा करते रहे।

मेजर केली ने खाली किले पर विजय प्राप्त कर ली। किले के अन्दर सड़ी लाशों, सिरकटी वृद्धाओं, माताओं के सूखे स्तनों से चिपटे बालकों के साथ ही साथ, कटे हाथ, टूटी-टाँगें, कटे सर, टूटे धड़ जहाँ-तहाँ बिखरे पड़े थे। किला अन्दर से भी श्मशान था और बाहर से भी श्मशान था।

भूखे-प्यासे वीरों से कलिंगा दुर्ग छीनने का श्रेय अंग्रेज को प्राप्त हो गया था। अंग्रेज के क्रोध ने कलिंगा दुर्ग को धराशायी कर दिया था—मिट्टी कर दिया था। पर उन वीरों की स्मृति सदा भारतीयों के हृदय में जीवन, और शत्रुओं के हृदय में भय और कम्पन पैदा करती रहेगी।

इन वीरों का यश और कीर्ति-गाथा आज भी नालापानी में कीर्ति-स्तम्भ में देखी जा सकती है। (विलियम्स)

कौन जानता है इस रत्नगर्भा भारत माता ने आज तक कितने वीरों को जन्म दिया है? कितने बलभद्र थापा उसकी गोद में खेले हैं? कितने शिलालेख और प्रश्तर खण्ड उसकी कीर्ति का गान करते हैं?

कालसी के पास महाराज अशोक का शिलालेख यदि यह घोषणा करता है कि कभी अशोक का प्रखर तेज यहाँ तक प्रभाववान् था तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है?

पृष्ठदाता

डा० कृष्ण कुमार चोपड़ा, 31 सी, राजपुर रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय के थप्पड़ अच्छे-अच्छों की अकल खराब कर देते हैं। कभी का विशाल देहरादून 1803[1] तक एक ऐसा छोटा सा ग्राम बन गया जिसकी कुल जनसंख्या 2500 आदमी तक सीमित थी।

कभी सभ्यता और संस्कृति का सिरमोर देहरादून वह स्थान बन गया जहाँ कुछ हिन्दू लोग भूतों के डर से उन्नीसवीं शताब्दी में भी अपने मुर्दों को जमीन में उल्टा[2] (सिर नीचे और पैर ऊपर करके) गाड़ना जरूरी समझते थे। कन्या पैदा होने पर उसका गला घोंट कर उसकी हत्या कर देना इस जिले की राजपूती शान गिनी जाती थी। विलियम्स ने अपने ग्रन्थ के पृष्ठ 297 पर लिखा है :—

"Female infanticide is believed to have been once frequent though nominally confined to the Rajpoots—it is now nearly if not altogether extinct."

---

1. **सिक्खों और गूजरों के लगातार आक्रमणों से बरबाद हो गया। पीछे 1803 से 1814 तक यहाँ गोरखों का शासन रहा।**

2. At one time men frequently died off suddenly, after having built houses inside fairy circles and Bhungis had to bury their dead head downwards feet upwards, lest the unclean spirits of the departed should wander about and annoy ... (*Williams, page 41*)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि दयानन्द का आगमन व समाज की स्थापना

ब्राह्मण ने अपने स्वार्थ के कारण ज्ञान के द्वार ब्राह्मणेतरों के लिए बन्द कर दिए थे। वेद सुनने पर शूद्रों के कानों में गरम-गरम सीसा पिघला कर भरने का विधान था। स्त्रियाँ वेद तो क्या साधारण अक्षर ज्ञान से भी वंचित कर दी गयी थीं। गार्गी और मैत्रेयी के देश में, सीता और लीलावती के देश में, स्त्रियों के लिए विद्या-प्राप्ति असम्भव हो गयी थी। अपने देश का, अपने धर्म, अपनी जाति का गौरव कोई कैसे करता, जब नीलकंठ शास्त्री जैसे दिग्गज विद्वान्, शिव की नाक के नीचे, काशी नगरी में ही ईसाई होने लगे थे। जब ईसाई खानसामा भी मालिक से पूछने का साहस करने लगा था कि कुन्ती और कर्ण का क्या सम्बन्ध है? इन्द्र और अहिल्या की क्या कथा है? और हमारा पढ़ा-लिखा समाज, हमारे कालेज के विद्यार्थी जब इन प्रश्नों के उत्तर अपने गुरुजनों से प्राप्त करने में असमर्थ हो जाते थे, तो धर्म के प्रति एक अनास्था, एक लघुत्व की भावना उनके अन्दर जन्म लेने लगती थी।

यही कुछ यहाँ देहरादून में हुआ। देहरादून के प्रसिद्ध धनी परिवार[1] के दो पुत्र ईसाईयों के स्कूल में पढ़ते थे। यह दोनों होनहार युवक थे श्री बलदेव सिंह व श्री मोहर सिंह[2]।

हिन्दू धर्म एक कच्चा धागा बना हुआ था। उन कोमल हृदयों पर नित्य चोट की जाती थी। वे हिन्दू धर्म पर उठने वाले प्रश्नों का समाधान कराने के लिए नित्य विद्वानों और पण्डितों की शरण में जाते थे, पर हाय! उनकी प्यास कोई न बुझा सका। इन दोनों ने घोषणा कर दी कि यदि 6 मास के अन्दर कोई हिन्दू हमारी शंकाओं का समाधान न कर सका तो हम दोनों स्वेच्छा से धर्म-परिवर्तन करके ईसाई हो जायेंगे।

जाति के लाल कहाँ जा रहें, हिन्दू को इसकी क्या चिन्ता होती। बस एक पंडित कृपा राम स्वामी जो उन दिनों वन-विभाग में कार्य करते थे—बेचैन थे। हाय! जाति के इस नाश को कैसे रोकूं? इनको कैसे बचाऊँ? वे इन बच्चों के माता-पिता से मिले। लड़कों के माता-पिता परेशान थे। इन लड़कों को समझाया गया कि एक विद्वान् संन्यासी कुम्भ मेले पर हरिद्वार आने वाला है, वह तुम्हारी सब शंकाओं का समाधान कर देगा। बाबू कृपा राम जी ने 1 फरवरी, 1879 को महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम एक पत्र लिखा और उनसे देहरादून पधारने की प्रार्थना की। आपने महर्षि

---

1. Nandlal Partap Singh is the more important firm of the two and is now represented by L. Balbir Singh, son of L. Partap Singh on one side and his uncles L. Baldev Singh and Seth Lachhmi Chand and the minor son of L. Mohan Singh. (देहरादून गजेटियर—पृष्ठ 119)

2. **पं. अमरनाथ वैद्य ने अपने लेख में मोहर सिंह के स्थान पर 'प्रतापसिंह' लिखा है। मुझे प्रतापसिंह के लिए कोई प्रमाण नहीं मिला। न उस परिवार के सदस्य कुछ बता सके। न कोई लिखित साक्षी उपलब्ध हो सकी। उत्तर प्रदेश के इतिहास में भी प्रतापसिंह ही लिखा है, उसका आधार भी पं० अमरनाथ वैद्य का ही लेख है जिसके लिए कोई प्रमाण नहीं है। हमारे रिकार्ड में मोहर सिंह लिखा है मैंने भी वही लिखा है।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को लिखा कि जाति के उन दो होनहार युवकों को बचा सकते हों तो बचा लें। महर्षि ने देहरादून आने का संकल्प प्रकट किया (पत्र-व्यवहार महर्षि द्वारा पत्रोत्तर 2.2.79)। महर्षि ने सहारनपुर पहुँचने के पश्चात् भी जो पत्र 2 अप्रैल, 1879 को लिखा था उसमें लिखा था कि 12 अप्रैल को देहरादून आएंगे, ऐसा कहा गया है। महर्षि ने पुनः अपने पत्र में पं० कृपाराम को लिखा "पर्वी से दूसरे दिन देहरादून को कूच करेंगे।"

महर्षि को दस्त लगे हुए थे। (देखो पत्र-व्यवहार पृष्ठ 139 में जो देहरादून से बाहर किसी को पत्र में महर्षि ने लिखा है।) गम्भीर शारीरिक कष्ट में थे। दिन में 10-12 बार लोटा उठा कर भागना पड़ता था। अपनी उस समय की हालत का वर्णन अपने 18-4-1879 के पत्र में इस प्रकार किया है—"हमको हरिद्वार में लगभग 400 दस्त हुए अब तक भी कुछ-कुछ आते हैं परन्तु यहाँ का वायु ठण्डा होने से कुछ-कुछ आराम होता आता है परन्तु शरीर बहुत निर्बल हो गया है।"

बाबू श्यामलालजी द्वारा पत्र मिला कि महर्षि से मिलने के लिये अमरीकी भक्त कर्नल अल्कॉट एवं मैडम ब्लैवेट्स्की भी देहरादून पहुँचेंगे। निवास के लिए स्थान की तलाश शुरू हुई। पं० कृपाराम ने महर्षि के निवास के लिए, अंग्रेज महिला मिस डिक का बंगला किराये पर तय कर दिया और कर्नल एवं मैडम के लिए दूसरा स्थान ढूंढ़ा जाने लगा (अंग्रेजी जीवन चरित्र पृष्ठ 323)। लेकिन पीछे पत्र आया कि कर्नल और मैडम देहरादून नहीं आयेंगे अतः केवल महर्षि के निवास और उपदेश के लिए पूर्व-निश्चित मिस-डिक का बंगला ही पर्याप्त समझा गया।

बैसाखी का स्नान कुम्भ-मेले की समाप्ति की घोषणा करता है। लगातार ढाई मास चलने हरिद्वार का शास्त्र-संगर, एक ओर समस्त भारत का विद्वत्-मण्डल, दूसरी ओर अकेला आदित्य ब्रह्मचारी दयानन्द। ढाई महीने के महायुद्ध से थकान तो होनी ही थी। लाखों यात्रियों का अनियन्त्रित हजूम, मल-मूत्र त्याग से फैलती सड़ांध और उस पर भी दस्तों से ग्रस्त दयानन्द, 12 अप्रैल तक कैसे हरिद्वार में वास करता रहा होगा, कौन कह सकता है? उधर स्नान सम्पन्न हुआ और इधर जाति के लालों को बचाने की धुन में मस्त दयानन्द राज्य-धर्म ईसाईयत के दुर्ग पर आक्रमण करने के लिए छकड़े पर सवार होकर शिवालिक पर्वत-माला को रौंदता 14 अप्रैल, 1879 की प्रातः-काल देहरादून नगर की सीमा पर आ पहुंचा।[1]

ऋषियों की भूमि में आज ऋषिराज का पदार्पण है। आर्यों की सेना का सेनापति! क्या शान है? न हाथी, न घोड़े, न सोने-चाँदी के ताम-झाम, न सेना है, न जमात है। पं० भीमसेन, नीलाम्बर और एक विद्यार्थी, केवल तीन साथी हैं।[2] पं. कृपाराम को प्रातः 10 बजे सूचना मिलती है। अपने अधिकारियों से आज्ञा लेकर हरिद्वार रोड की ओर भाग पड़ते हैं। अगवानी के लिए अपने भतीजे और दो नौकरों को पहले ही हरिद्वार रोड भेज चुके हैं। सुवह मुँह अन्धेरे से ही प्रतीक्षा में हैं। यही है बारात और उसका दूल्हा, और यही है बारात की अद्भुत अगवानी। अपना कहने वाला कोई नहीं। यारो मददगार कोई नहीं। केवल ईश्वर और सत्य का सहारा पकड़े देहरादून की सड़क को मध्यम गति से पार करते मिस डिक के बंगले में (संभवतः यह बंगला राजपुर रोड पर कहीं स्थित था। बंगला क्या था घास फूस का बना एक बड़ा शैड था।)

महर्षि ने आसन जमा दिया। बंगले पर पहुँचते न पहुँचते कुछ बंगाली बाबू भी वहाँ पहुँच गये। एक ने तो गाड़ी का किराया भी अपनी गिरह से दिया। पं० कृपाराम जी को दफ्तर से इतनी ही छुट्टी मिली थी। महर्षि को ठहरा कर चले गये और पुनः शाम को ही दर्शन किये।

जुलाब पूरी तेजी पर थे—बार-बार शौच जाना पड़ता था। बात करते-करते बीच में उठ कर जाना होता था। पर वह दयानन्द अपनी बीमारी की चिन्ता करता या कौम के रोग का इलाज करता? गाटा परिवार के वे दोनों

---

1. **हिन्दी जीवन चरित्र, पृष्ठ 465.**
2. **हिन्दी जीवन चरित्र, पृष्ठ 465.**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होनहार युवक बुलाये गये। महर्षि ने हिन्दू धर्म पर होने वाली समस्त शंकाएँ प्रस्तुत करने को कहा। युवक शंका करते थे—महर्षि उत्तर देते जाते थे। कुछ ही देर में शंकाएँ समाप्त हो गयीं, केवल उनके उत्तर गूँजने लगे। उनकी गूँज से ऋषिपर्णा से बिन्दाल तक का समस्त जनजीवन गुंजायमान हो गया। जिन प्रश्नों के उत्तर पाने में वर्षों प्रयत्न किया गया था और फिर भी समाधान नहीं हुआ था, छः मास की अवधि भी जिस उत्तर की प्रतीक्षा में उड़ी जा रही थी, आज योगिराज दयानन्द ने कुछ ही मिनटों में ईसा का भूत युवकों के सर से उतार दिया था।

पादरी लोग बोखला रहे थे। शिकार हाथ से निकल गया था। इसलिए अपनी ओर से सब कुछ करने के लिये उद्यत हो गये थे। बच्चों को डराया गया, धमकाया गया। अंग्रेजी जीवन-चरित्र में पृष्ठ 224 पर श्री शारदाजी ने लिखा है :—

Swamiji asked them to bring Padrees to him for discussion, but the Padrees refused to come. The mission aries then threatened the boys that the Collector of the district would be offended with them if they did not become Christian. But the boys did not care. To show his gratitude to Swamiji, their father offered a present of some money, but Swamiji declined to accept it and advised him, to open a Sanskrit School with it.

स्पष्ट है कोई बड़ी धनराशि थी जो युवकों के पिता ने महर्षि के समक्ष प्रस्तुत की थी परन्तु महर्षि ने उससे संस्कृत-विद्यालय खोलने का परामर्श दिया था। (बालक बलदेव सिंह महर्षि के संस्कृत पाठशाला सम्बन्धी इस आदेश को नहीं भूल सका। अपनी मृत्यु से पूर्व उन्होंने एक इच्छा-पत्र द्वारा इस कार्य की पूर्ति के लिए बहुत बड़ी सम्पत्ति लगा दी।

ईसाई पादरियों की चालें विफल

अंग्रेजों में खलबली थी। मुसलमानों में चेमेगोइयां थीं और हिन्दू हैरान थे। हिन्दू धर्म का कच्चा धागा, दयानन्द का हाथ लगते ही फौलाद कैसे बन गया? लोगों के झुण्ड के झुण्ड उस योद्धा को देखने के लिये आ रहे थे, जिसने कुछ ही क्षणों में अपने तर्क-वाणों से ईसाइयत के परखचे उड़ा दिये थे। लड़ाई तो जीती गई थी परन्तु दस्तों में अब भी कमी नहीं थी। लोगों ने राय दी कि डाक्टर बुलाया जाय। पर वाह रे दयानन्द! "यथा-सम्भव डाक्टरी दवा न खानी चाहिए।" (हिन्दी जीवन-चरित्र पृष्ठ 466) और नहीं खा कर दी डाक्टर की दवाई। लोग कहते हैं स्वदेशी का चलन गांधी युग की देन है। खद्दर का प्रचार, नमक सत्याग्रह, देशी का प्रचार, गांधी ने चलाया है। कोई भी चलाए वह स्तुत्य है। परन्तु इतिहास के पन्नों पर जब स्वदेशी की कहानी सुनायी जायेगी तो वह दयानन्द की जुवानी होगी। दयानन्द जब देशी जूते के अपमान को भारत की गैरत पर ठोकर समझता है, जब नमक पर लगाये गए सरकारी कर को जनता के शोषण की संज्ञा देता है। (देखो आदिम सत्यार्थ प्रकाश) भारतीयता के लिए जब दयानन्द मर-मिटने का आह्वान करता है तो देशभक्ति सीना तान कर खड़ी हो जाती है। भारत माता की गर्दन गौरव से ऊँची तन जाती है।

घण्टा, दो घण्टा बाद जब सब लोग चले गये तब पण्डित कृपाराम को महर्षि ने अपने पास बुलाया। "मुझे बुलाने के लिए जो चन्दा इकट्ठा किया गया है वह चन्दा देने वाले कौन-कौन लोग हैं?" चन्दे की सूची प्रस्तुत कर दी गई जिसमें दो को छोड़कर सभी बंगाली थे। बंगाली नहीं, ब्रह्म-समाजी थे। ऋषि क्रान्त-दर्शी होता है, दूर की देखता है। दयानन्द की भाँपने वाली आँखों ने मिस डिक के बंगले पर आए बंगाली सज्जनों को देखकर ही अनुमान कर लिया था। "कृपाराम, तुमने भूल की कि इनके भरोसे पर हमको बुलाया। इनके भरोसे यह भार तुम्हें अपने सर नहीं लेना था। यह आज तुम्हारे मित्र और सहयोगी हैं लेकिन कल तुम देखोगे कि यह तुम्हारे शत्रु होंगे। तुमने बड़ी भूल की।"

पृष्ठदाता

मिश्रीलाल जगन्नाथ एंड कम्पनी, आढ़त बाजार, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० कृपाराम जी ने दृढ़तापूर्वक निवेदन किया, "आप चिन्ता न करें। यदि यह सहायता नहीं करेंगे तो न करें। आपकी सेवा मैं अकेला ही कर सकता हूँ।"

दया का अवतार दयानन्द पिघल गया। "पं० कृपाराम! लेकिन मैं किसी अकेले को कष्ट देना नहीं चाहता।"[1]

लोगों के हजारों गुरु हैं और उन गुरुओं के हजारों-लाखों चेले हैं। एक ओर गुरु की नजर चेलों के माल पर है, चेलों के घर बिकवा दिए गुरुओं ने अपने घर भरने को। सोना-चाँदी, हीरे-मोती ले लिए, शिष्यों के। और एक ओर दयानन्द है जो किसी एक को अपने लिए कष्ट भी देना नहीं चाहता। जैसी माता की ममता बच्चे पर होती है वैसी ममता है सत्य के प्रत्येक प्रचारक पर दयानन्द की।

महर्षि द्वारा धर्म-प्रचार

दो तीन दिन विश्राम से दस्तों में कुछ कमी आई। शरीर कुछ संभला। पर अब तबीयत को कौन सँभाले? बेकाबू! व्याख्यानों की सूचना दी गई। इश्तिहार निकलवाकर बाँटे गये।

नक्कारा धर्म का बजता है आए जिसका जी चाहे।
सदाकत वेद अकदस आजमाए जिसका दिल चाहे॥

दयानन्द ने पहला प्रहार किया नास्तिकता पर। ईश्वर की सिद्धि पर महर्षि का व्याख्यान लोगों पर जादू का काम कर गया। लगभग 300 आदमी मौजूद थे। महर्षि ने नास्तिकता पर इतना तीखा आक्रमण किया कि नास्तिकता का ढोल पीटने वाले खामोश होकर बैठगए। महर्षि ने नास्तिकता पर गोला-बारी करके दूसरे दिन उसी स्थान पर "ईश्वरीय ज्ञान वेद" का ध्वज फहरा दिया। महर्षि जहाँ वेद को ईश्वरकृत सिद्ध करते जाते थे वहाँ साथ ही साथ बाइबल और कुरान की तुलना भी उससे करते जाते थे। तीसरे दिन "धर्म क्या है" यही व्याख्यान का विषय था। कल के बाइबल और कुरान के खण्डन की बात, दूर-दूर तक पहुँच गई थी इसलिए आज के व्याख्यान में एक अंग्रेज बार्कले भी आए थे। चौथे दिन महाराज ने पुराणों का जबरदस्त खण्डन किया और इसी के अन्तर्गत मूर्ति-पूजा पर भी ताबड़-तोड़ हमले कर दिए। लोग शान्ति से सुनते रहे। किसी ने कुछ ऐतराज नहीं किया। उसके पश्चात् 6 व्याख्यान महर्षि ने और दिए। उन व्याख्यानों का विषय था आर्यावर्त का प्राचीन गौरवपूर्ण इतिहास। इन व्याख्यानों में महाराज ने राजा सुग्रीव इत्यादि की जीवनियों और इतिहास पर प्रकाश डाला। नया खून करवटें लेने लगा। भारती का प्रसुप्त गौरव पुनः अंगड़ाई लेकर उठ खड़ा हुआ। मुसलमान की सात सौ साल की गुलामी से झुका मस्तक और कमर पर अंग्रेज का बोझ उठाने वाला भारतीय एक बार पुनः स्वाभिमान और आत्म-गौरव की अनुभूति में आप्लावित हो गया।

विधर्मियों में खलबली

सारे नगर में शोर मच गया। लोग पीछे से बड़बड़ा लेते थे पर सामने जाने का साहस न होता था। दयानन्द के तर्क और गाम्भीर्य ने उनके हौंसले पस्त कर दिये थे। जिनका सरेआम दयानन्द ने खण्डन किया था, जिनकी किले बन्दियों पर लगातार 10 दिन दयानन्द ने गोले बरसाए थे, वे कैसे शान्त रहते? हिन्दू तो खैर काशी में पानीपत की लड़ाई हार गया था लेकिन जिसके राज्य में दयानन्द रहता था वह ईसाई कैसे बर्दाश्त करता! दयानन्द ने ढाई घण्टे लगातार बाइबल और कुरान के सिद्धान्तों का खण्डन किया। पाँच सौ के लगभग सुनने वाले दम साधे बैठे थे। मगर अंग्रेज पादरी मोरीसन की छाती पर साँप लोट रहे थे। भाषण समाप्त होते ही उठ खड़ा हुआ। आपे से बाहर, क्रोध से काँप वह चिल्लाया

1. हिन्दी जीवन चरित्र, पृष्ठ 466।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पण्डित साहब ने केवल खाक उड़ाई—और उस खाक में वेद मत को तिरोहित कर दिया"। ये शब्द भी बड़े बेतरतीबी में थे। गुस्से में आखिर होश किसे रहता है ? "आज तक हमने किसी हिन्दू पण्डित को वेद के उसूल बयान करते नहीं सुना। क्या एक तुम ही जानकार और बाकी सब बेसमझ हैं ?" और इसके साथ ही महर्षि ने बाइबल के जिन खण्डों का खण्डन किया था उसका मण्डन पादरी साहब करने लगे। अजब युद्ध था। एक ओर क्रोध से लाल-लाल अंगारा बना, ईसा के प्रेम का प्रचारक। दूसरी ओर शान्त सौम्य दयानन्द। जब पादरी साहब बोल चुके, महर्षि आसन पर खड़े हो गए। उसकी गालियों को छुआ नहीं, क्रोध करने पर कोई गिला नहीं ! केवल पादरी साहब के तर्कों का उत्तर देने लगे। पादरी साहब क्रोध में उफन रहे थे। वह कुछ सुनने को तैयार न थे। बीच-बीच में जोश के मारे चिल्ला पड़ते थे। चार अंग्रेज वहाँ और भी मौजूद थे—मिस्टर पारमर, मिस्टर गार्टलेन, कर्नल ब्राइट, मिस्टर क्राउन। रैवरैण्ड डाक्टर डी० मौरिसन का यह व्यवहार जब मिस्टर पारमर से सहन न हो सका तो अंग्रेजी भाषा में अपने साथी को समझाते हुए वे कहने लगे—"डाक्टर मौरिसन ! जिस सुन्दरता से, जिस विनम्रता से, यह साधु अपनी बात को सिद्ध करता है उस बात को तुम अपने अनुचित क्रोध और कठोर शब्दों से कैसे रोक सकते हो ? मेरी राय में यह ठीक नहीं है। मेरा परामर्श है कि जिस योग्यता और आत्म-विश्वास से यह अपनी बात को सिद्ध कर रहा है अपने दावे की पुष्टि में और अपने दावे के खण्डन में जैसे तर्क और प्रमाण प्रस्तुत कर रहा है तुम्हें भी वैसे प्रमाण और तर्क देने चाहिएँ।"

उत्तर में पादरी साहब ने कहा—"मैं बहुत उचित तरीके से उत्तर दे रहा हूँ। यदि तुम्हें ठीक नहीं जंचते तो तुम भी इनके साथ मिल जाओ।" यह कहा और क्रोध के आवेश में उठकर चल दिए। शेष सब अंग्रेज बैठे रहे। पादरी साहब को जाता देख कर महर्षि ने मुस्कराहट बखेरते हुए पूछा, "पादरी साहब, कल तो आएंगे न आप ? पादरी साहब के मुख से क्या शब्द निकले और कोध की भट्टी में बिना किसी के पल्ले पड़े ही कब भस्म हो गए कोई नहीं समझ सका। उसके पश्चात् मिस्टर पारमर और मिस्टर गार्टलेन ने पं० कृपाराम जी से कहा कि स्वामी जी से हमारी बात करवा दें। स्वामी जी ने स्वीकार किया और आसन से उठ कर बरामदे में उनके पास चौकी पर बैठ गए। बात करना चाहते थे मिस्टर गार्टलेन और मिस्टर पारमर, कि बीच में टपक पड़े पादरी रामचन्द्र बोस के भाई, मिस्टर विपिन मोहन बोस। फिर बाइबल पर बातचीत शुरू कर दी। पाँच बजे से 7·30 बजे तक महर्षि ने व्याख्यान दिया था। आठ बजे लगभग यह बातचीत शुरू हुई। रात्रि को लगभग 10 बज गए। सारा ही समय मिस्टर बोस, जो कि मिशन स्कूल के हैडमास्टर भी थे, ही खा गए। परिणामतः हैडमास्टर और मिस्टर गार्टलेन में विवाद शुरू हो गया। अब तक स्थिति यह थी कि बोस साहब बोलते थे और ऋषिराज उत्तर देते थे। बोस बलपूर्वक बाइबल का मण्डन करते थे और महाराज अपने प्रबल तर्कों द्वारा उसको खण्डित कर देते थे परन्तु अब नक्शा ही कुछ और था। हैड मास्टर साहब बाइबल का प्रमाण प्रस्तुत करते थे, कुछ सिद्ध करते थे और गार्टलेन साहब उसका खण्डन कर रहे थे, जवाब दे रहे थे। बहुत प्रयत्न करने पर भी दोनों का विवाद शान्त न हो सका। रात के 11 बज गए। तब जाकर यह बातचीत बन्द हुई। आज के भाषण में महर्षि ने बाइबल और कुरान के साथ ही साथ ब्रह्म समाज के नियमों पर पूरी पकड़ के साथ चोट की। ईसाई पहले ही नाराज था। अब ब्रह्म-समाजी भी नाराज हो गए। महर्षि को उनकी ओर से मिलने वाली सब सहायता भी बन्द हो गई। महर्षि ने कृपाराम से पहले ही दिन चर्चा कर दी थी और बता दिया कि ऐसा दिन आने वाला है। सत्य जो कह सकता है वह धन्य है परन्तु सत्य को सुनने के लिए भी पत्थर का कलेजा चाहिए। दूसरे दिन के भाषण में मुसलमान अच्छी संख्या में उपस्थित थे। उनमें कुछ मौलवी भी थे। उनकी ओर से अजीब-अजीब चर्चाएँ चल रही थीं। कानाफूसियाँ चल रही थीं। नजदीक के बंगले के जिस भाग में महर्षि का निवास था वह फूंस का था। पं० कृपाराम जी ने घर आकर सुना आज रात को स्वामी जी का बंगला जला दिया जाएगा। उन्होंने तुरन्त स्वामी जी को सूचना दी परन्तु वह निडर संन्यासी, बेखौफ इंसान, ईश्वरेच्छा पर जीवित था। महर्षि ने उन्हें समझाया, "डर की कोई बात नहीं है।" पं० कृपाराम जी का दिल नहीं माना। बंगले पर रात की चौकीदारी के लिए दो चौकीदार नियुक्त कर दिए गए और दो-तीन नौकर वहाँ भेज दिये गए। दूसरे

पृष्ठदाता

नेशनल न्यूज एजेंसीं, पलटन बाजार, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन पं० कृपाराम अपने दफ्तर में गए। उन्हीं के पीछे उनका भतीजा हाँफता-हाँफता उनके दफ्तर में पहुँचा। उसने बताया कि दो तीन सौ मुसलमान स्वामी जी के बंगले पर पहुँच गए हैं। झगड़े पर उतारू मालूम होते हैं। पण्डित जी जोश में आ गए। साहब से आज्ञा लेकर बंगले पर पहुँचे परन्तु अब वहाँ कोई उपस्थित नहीं था। स्वामी जी ने बताया कि मुसलमानों की एक बड़ी भीड़ आयी थी, वे मुझसे शास्त्रार्थ करना चाहते थे और चाहते थे कि जो दोष मैंने इस्लाम में दिखलाए हैं उनको प्रमाणित करूँ। हमने उनसे कह दिया—हर एक से शास्त्रार्थ नहीं किया जा सकता, बिना शास्त्रार्थ के नियम स्वीकार किए तो शास्त्रार्थ संभव ही नहीं। तुम में से जो सबसे अधिक योग्य और विद्वान् हो वह मुझसे शास्त्रार्थ कर ले। उन लोगों ने शास्त्रार्थ के नियम बना कर लाने और फिर आने का वचन दिया है। पं० कृपाराम के मन को शान्ति मिली। सांयकाल के भाषण के समय मौलवी अहमद हसन साहब नियम लेकर उपस्थित हुए। नियम एकपक्षीय थे। महर्षि ने वे नियम समस्त उपस्थित सज्जनों के सामने पढ़ कर सुना दिए, और पूछा, कि यदि कोई जानता हो तो यह बताने का कष्ट करे कि यह मौलवी अहमद हसन साहब क्या शास्त्रार्थ करने योग्य हैं? लोगों ने स्वीकार किया "बेशक, यह एक विद्वान् पुरुष हैं। बाडीगार्ड में कर्मचारी हैं।" तब स्वामी जी ने उन नियमों में आवश्यक और उचित साधारण परिवर्तन करके नियम स्वीकार करने की घोषणा कर दी और नियमावली मौलवी साहब के हाथ में दे दी। परन्तु बस! नियम ही बन कर रह गए। शास्त्रार्थ करने कोई आया नहीं। इधर स्वामी जी का प्रवास-काल समाप्ति पर आ रहा था, उधर मुसलमान हीले-बहाने कर रहे थे। ईसाई शास्त्रार्थ-युद्ध से हताश थे और बस न चला तो इधर-उधर से दबाव डलवाए गए। मिस डिक ने किसी के बहकावे में आकर महर्षि को बंगला खाली करने का नोटिस दे दिया। लोग कहते थे पादरी साहब के जोर देने पर, मिस डिक ने बंगला खाली कराने को कहा था परन्तु ठीक नहीं कहा जा सकता कि इसमें वास्तविकता क्या है। क्या दयानन्द के प्यारे दूसरे स्थान का प्रबन्ध नहीं कर सकते थे? फिर ऐसा क्यों किया गया? पं० कृपाराम जैसा कर्मठ और साहसी कब शान्त बैठता! दौड़-धूप की और महर्षि के निवास के लिए गुन्थर साहब की कोठी का प्रबन्ध पक्का कर दिया। परन्तु दयानन्द तो पाखण्ड के गढ़ को ध्वस्त करने आया था। अन्तिम आक्रमण जितना आश्चर्यजनक और निराला था उसकी तुलना, भारत के समस्त मध्यकालीन इतिहास में कहीं नहीं मिलती। एक पढ़ा-लिखा मुसलमान, जो जिला सहारनपुर का रहने वाला था, ठेकेदारी करता था, नित्य महर्षि के उपदेश सुनता था और मनन करता था, वह महर्षि की सत्य-प्रियता, विद्वता, अद्भुत तर्क और मानवता के प्रति उनके प्रेम का दीवाना हो उठा। उसके समस्त संशय नष्ट हो गए। ग्रन्थियाँ खुल गईं। धर्म क्या है? कर्म क्या है? करणीय क्या है? अकरणीय क्या है? समझने की योग्यता उसे अब प्राप्त हो गई थी। उस मुहम्मद उमर ने इच्छा प्रकट की, ईश्वरीय नियमों का पालन करने, वेदमाता के बताए मार्ग पर चलने का अधिकार उसे भी प्रदान किया जाय। आज हजारों वर्षों से आर्यों के मन्दिर में प्रवेश के बन्द द्वार को, महर्षि ने अपने तर्कों की ठोकर से तोड़ डाला। दरवाजा चरमराया और गिर गया। द्वार में प्रवेश करने वाला मुहम्मद उमर[1] अलखधारी बनकर बाहर निकला था।[2] किसी विधर्मी के लिए आर्य मन्दिर के बन्द कपाट आज शताब्दियों के बाद खुले थे। दयानन्द की प्राणी-मात्र के प्रति दया की धारा शुद्धि के रूप में फूट पड़ी थी। गंगा हुई होगी शिव की जटा से निसृत, शायद कोई श्रद्धालु पौराणिक यह भी मान ले कि करती होगी मानवों का कल्याण भी, परन्तु दयानन्द ने शुद्धि की जिस गंगा को शिवालिक पर्वत खण्डों से प्रवाहित किया था वह कल्याणी धारा यदि वेग से बहती रहे तो संसार के करोड़ों-अरबों मानवों की ज्ञान पिपासा को ही तृप्त नहीं करेगी, उनके लिए सुख-शान्ति और अपवर्ग की दात्री भी होगी। दयानन्द ने दो आर्य युवकों को ही नहीं बचाया, मय व्याज के, दो के बदले, तीन फूल माँ भारती को अर्पण कर दिए थे। जो लोग केवल इस्लाम और ईसाइयत को तबलीग़ी मजहब कहते और समझते थे, दयानन्द ने उनके सामने वेद के धर्म को जिस

1. अंग्रेजी जीवन चरित्र, पृष्ठ 224।
2. हमारे रिकार्ड में मोहम्मद उमर नाम के एक व्यक्ति का प्रार्थना-पत्र मौजूद है जिसमें शुद्धि के लिए प्रार्थना की गयी है। इस पत्र की फोटो-स्टेट कापी आप देख सकते हैं। मैं नहीं कह सकता कि यह मुहम्मद उमर वही है। एक नाम के कई व्यक्ति भी हो सकते हैं। हिन्दी भाषा में लिखे इस पत्र के विषय में कई प्रकार से विचार करना होगा। 1903 से आर्य समाज की श्रद्धा-पूर्वक सेवा करने वाले बाबू आर्य किशोर जी ने एक बार बताया था कि मुहम्मद उमर यानी अलखधारी 1917 तक जीवित थे और सम्भवतः उर्दू जानते थे। प्रश्न यह है कि फिर इस पत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

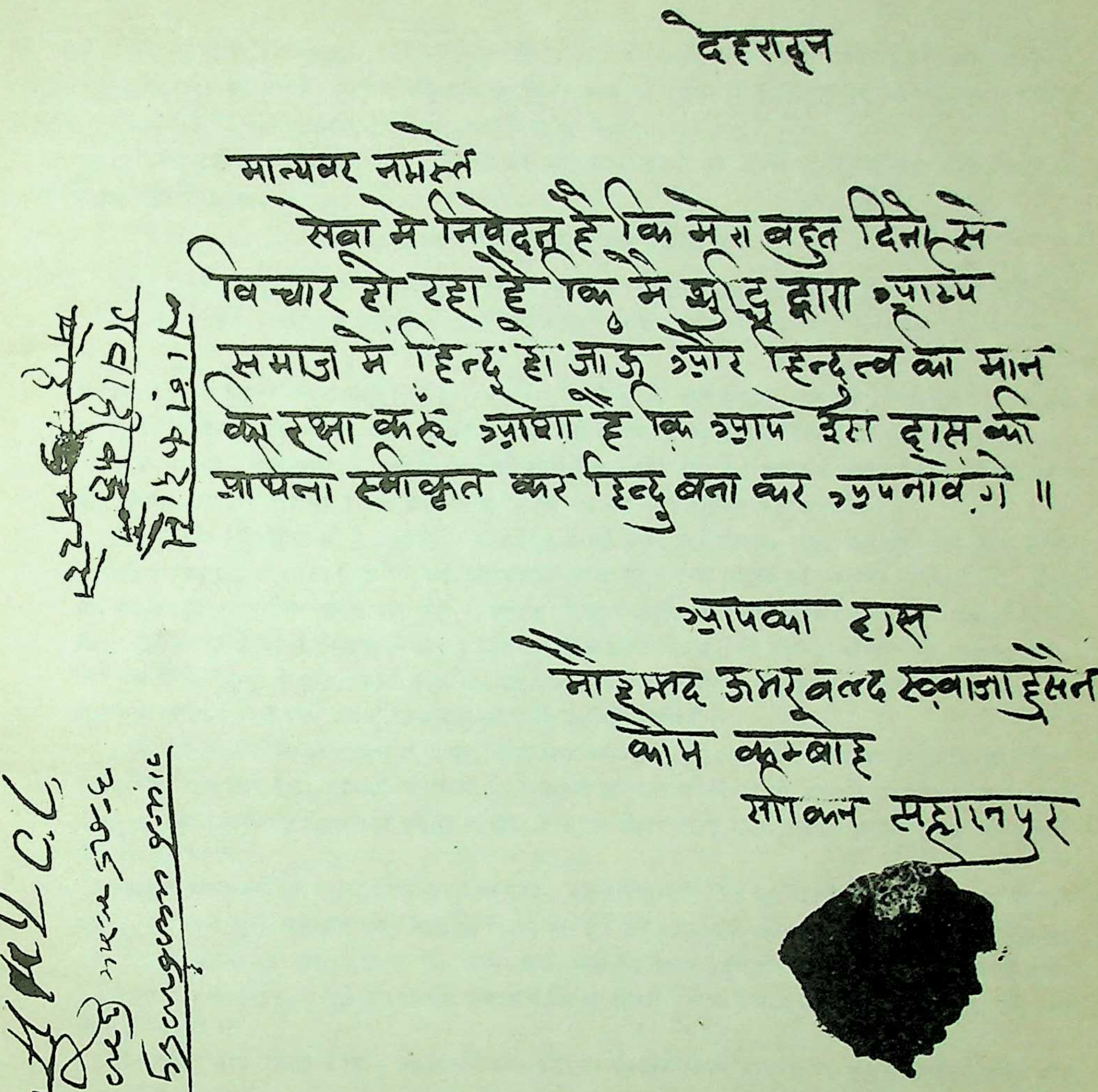

देहरादून

मान्यवर नमस्ते

सेवा में निवेदन है कि मेरा बहुत दिनों से विचार हो रहा है कि मैं शुद्धि द्वारा आर्य्य समाज में हिन्दू हो जाऊं और हिन्दुत्व का मान की रक्षा करूं आशा है कि आप इस दास को आपना स्वीकृत कर हिन्दू बना कर अपनावेंगे ॥

आपका दास
मोहम्मद उमर वल्द ख्वाजा हुसैन
कौम कुम्बोह
साकिन सहारनपुर

वह विवादास्पद पत्र

जिसे मुहम्मद उमर का बताया जाता है

(जिसकी शुद्धि महर्षि ने स्वयं की थी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये रूप में लाकर प्रस्तुत किया था उससे उनके होश उड़ गये। दूसरों को अपने में मिलाने के स्वप्न तो दूर, अपने बचाने के लाले पड़ गए। देहरादून को यह श्रेय महर्षि ने दिलाया कि किसी जन्म से मुसलमान को शुद्ध कर भारतीय मध्यकालीन इतिहास में प्रथम शुद्धि के रूप में देहरादून का नाम भी अमिट हो गया।

काश ! देश-वासियों ने दयानन्द के उस उपदेश को गांठ बाँधा होता तो भारत का राजनैतिक और भौगोलिक मानचित्र कुछ और ही होता।

क्या अन्य मतावलम्बी हिन्दू बन सकता है ?

मार्च 1879 में एक दस्ती पत्र काश्मीर-नरेश ने महर्षि को हरिद्वार भेजा था। पत्र-वाहक ने महर्षि से मौखिक कहा था कि किसी आदमी ने नरेश से झूठी बात कह दी कि स्वामी जी का देहावसान हो गया है इसलिए सत्यता जानने

पर हस्ताक्षर के बजाय अंगूठा क्यों लगा है ? यह पत्र हिन्दी में ही क्यों लिखा गया था ? वह इसके लिए उर्दू भाषा का भी प्रयोग कर सकता था। आखिर आर्य समाज के समस्त प्रारम्भिक रिकार्ड भी तो उर्दू में ही हैं।

दूसरे—पत्र पर कोई सरनामा नहीं है, यह किसे सम्बोधित किया गया है ? केवल मान्यवर नमस्ते कह कर काम चला लिया गया है। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि पत्र पर कोई तारीख भी नहीं पड़ी है।

परन्तु दूसरा दृष्टिकोण भी है। सरनामा और देहरादून से ऊपर पूरा कागज—कुछ लिखकर फटा हुआ प्रतीत होता है। सम्भव है सरनामा लिखने में कुछ कठिनाइयाँ आयी हों। आर्य समाज की स्थापना हुई नहीं थी। मंत्री या प्रधान को सम्बोधित करता तो कैसे ? सम्भव है ऊपर महर्षि का नाम लिखकर प्रार्थना की गयी हो—जो फट गयी है। रहा हिन्दी में लिखना—यह तो आज तक विवाद का विषय है कि वह उर्दू जानता भी था या नहीं। फिर पत्र-लेखक हिन्दी के प्रति, आर्य भाषा के प्रति, महर्षि के क्या विचार है यह भी तो जानता था। यदि वह हिन्दी में पत्र लिखता है और अंगूठा लगाता है तो इसमें कहाँ विसंगति है।

इसके अतिरिक्त निम्न महत्त्वपूर्ण बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए। इस पत्र का लेखक अपने को सहारनपुर निवासी बतता है और जिस मुहम्मद उमर की शुद्धि स्वामी दयानन्द जी ने की थी वह भी सहारनपुर का ही रहने वाला था। देवबन्द जिला सहारनपुर की ही तहसील है। इस प्रकार दोनों में कोई अन्तर नहीं है। पत्र का कागज एक दम पुराना है।

गवाह के हस्ताक्षरों पर ध्यान दें "नानक दास गवाही कहने मोहम्मद उमर के" यानी नानक दास गवाही तो कर रहा है, पर स्वयं नहीं, मुहम्मद उमर के कहने से कर रहा है। यह वह जमाना होना चाहिए जब लोग शुद्धि-पत्र पर गवाही करने का उत्तरदायित्व भी अपने ऊपर लेने को तैयार नहीं थे। समस्त रिकार्ड में मुहम्मद उमर (अलखधारी) के हस्ताक्षर नहीं है। जिससे पता चले कि वह हिन्दी-उर्दू में से क्या जानता था, जानता भी था या नहीं जानता था।

और यदि "आर्य समाज में हिन्दू हो जाऊँ" इन शब्दों पर विचार किया जाए तो यह मुहम्मद उमर कोई और है जो आर्य समाज की स्थापना के पश्चात् शुद्ध हुआ है।

बहरहाल मैंने इस पत्र के समस्त पहलुओं पर गहराई से विचार करने के पश्चात्—इस पत्र को संदिग्ध मानकर एक ओर रख दिया है। और इस पत्र को आधार बनाए बगैर, अन्य आधारों पर ही शुद्धि को स्वीकार किया है। मुहम्मद उमर की शुद्धि होने में तो कोई सन्देह नहीं है जिसे महर्षि ने किया था। उसके पर्याप्त प्रमाण मौजूद हैं। केवल इतनी ही बात विचारणीय है कि यह पत्र उसी मोहम्मद उमर का है या किसी अन्य का। हिन्दी जीवन-चरित्र तथा उर्दू जीवन-चरित्र दोनों में शुद्धि होना स्वीकार किया गया है। मोहम्मद उमर (अलखधारी) के समकालीन बाबू आर्य किशोर, पं० अमरनाथ जी वैद्य उसका मुसलमान से शुद्ध होकर आर्य बनना स्वीकार करते हैं। ये दोनों व्यक्ति शुद्धि के समय 1879 में चाहे मौजूद नहीं थे—लेकिन दसियों वर्ष अलखधारी के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य करते रहे थे। कम से कम अपने बारे में यह सूचना संभवतः अलखधारी ने स्वयं ही इन दोनों को दी होगी। और सबसे बढ़कर हमारा रिकार्ड इस बात की पुष्टि करता है कि मोहम्मद उमर को शुद्ध करके अलखधारी बनाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और आप से प्रार्थना करने महाराज ने स्वयं मुझे आपके पास भेजा है। महाराज को पूरा विश्वास था कि आप सही सलामत होंगे और ऐसी अवस्था में यह संभव नहीं है कि हरिद्वार कुम्भ पर न जाएँ। पत्र पर महाराज की मुद्रा अंकित थी—पत्र में लिखा था "स्वामी जी कृपा करके एक ऐसी पुस्तक बना दें कि जिसमें बिना पक्षपात के यह बात सिद्ध हो जाए कि जो हिन्दू धर्म छोड़ कर दूसरे मजहब में चले गये हैं वे फिर वापिस आ सकते हैं और यदि सम्भव हो तो यह भी सप्रमाण सिद्ध करें कि ईसाई-मुसलमान व अन्य जाति के लोग भी आर्य धर्म में आ सकते हैं और उनके साथ खान-पान में कुछ दोष नहीं आ सकता।" स्वामी जी ने पत्र-वाहक को मौखिक उत्तर दिया था। यह सत्य है। सत्य शास्त्रों से बड़ी सरलता से सिद्ध हो सकता है। आप यहाँ ठहरें, जब जावें मुझे सूचित कर दें। काश्मीर नरेश के नाम पत्र दे दूंगा।[1] उस बात को जिसे काश्मीर-नरेश ने समझा था, और अपनी पैनी नजर से देखा था—काश उनके उत्तराधिकारियों और देश के ब्राह्मणों ने भी समझा होता!

काश्मीर-नरेश के उत्तराधिकारी शायद आज भी उससे अवगत हों। अभी समय बीता नहीं है—सूर्य ढला नहीं है, खेतों को पानी दे लो—सूखे पौधे फिर लहलहाने लगेंगे। काश कोई भामाशाह आज होता जो दयानन्दी प्रताप के हाथों में अपना कोश अर्पण कर देता तो आज भी बिगड़ी बात बन जाती।

महर्षि के पास अधिक समय नहीं था। कार्याधिक्य से पुनः दस्त शुरू हो गए। मिस डिक का नोटिस सामने था। रही-सही कसर पूरी कर दी कर्नल अल्काट के तार ने, जो स्वामी जी का सहारनपुर में इन्तजार कर रहे थे। महर्षि ने तुरन्त प्रस्थान का निर्णय कर लिया।

जब स्वामी जी चलने को तैयार हुए तो पं० कृपाराम चालीस रुपए लेकर सेवा में उपस्थित हुए। इन चालीस रुपये में से पन्द्रह रुपए तो वह ही थे जो चन्दे की सूची में शामिल थे। महर्षि का दयावान् मन डोल गया। पं० कृपाराम के सिर पर हाथ फिराया, रुपया वापिस ले जाने को कहा। कहाँ से इकट्ठा करेगा रुपया एक गृहस्थ! पंण्डित जी बजिद कि रुपया ले लें और स्वामी जी भी कष्ट देना नहीं चाहते। बहुत जिद पर स्वामी जी ने खर्चे के लिए 30/-रु० ले लिए—10 वापिस कर दिए और 30 अप्रैल 1879 को मेलकार्ट में सहारनपुर के लिए प्रस्थान कर गए। (हिन्दी जीवन चरित्र, पृष्ठ 469)।

पं० कृपाराम आदि का न कोई धनवान् साथी था न कोई राजा-रजवाड़ा मददगार। न धार्मिक कृत्यों में सहयोगी, न कोई दुःख में धीरज बंधाने वाला। महर्षि जा चुके थे। बारात की विदायगी के बाद जो हालत कन्या-पक्ष की होती है, वही हालत देहरादून में इन ऋषि-भक्तों की थी। संसार का नियम है, कमजोर को सब दबाते हैं। बस चले तो चकनाचूर कर दें। और शक्तिशाली के सब सहायक होते हैं।

पवन जलावत आगि को दीपहु देत बुझाय।

फिर दयानन्द के यह शिष्य कमजोर क्यों रहे होंगे। जब अकेला दयानन्द स्वयं अपने हाथ से इस खेत के समस्त झाड़-झंकारों को फूंक गया, कूड़ा-कचरा अपने हाथों से जलाकर भूमि को तैयार कर गया, अपने हाथ से हल चला कर सत्य और ज्ञान के बीज बो गया तो क्या हम इतने होकर, इस खेत की रक्षा भी नहीं कर सकेंगे? पादपों का सिंचन भी नहीं कर सकेंगे?

आर्य समाज देहरादून की स्थापना

सत्य और धर्म के प्रति अटूट आस्था ने इन गिने-चुने नौजवानों के उत्साह को इतना उद्वेलित

1. उर्दू जीवन चरित्र, पृष्ठ 628

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया कि अन्ततः 29 जून के[1] 1879 को देहरादून में आर्य समाज की स्थापना हो गई। (हिन्दी जीवन चरित्र, पृष्ठ 469, उर्दू जीवन चरित्र, पृष्ठ 655) देहरादून के इतिहास का यह सुनहरी दिन है जब ऋषिराज के द्वारा डाले गये बीज से दून घाटी से आर्य समाजरूपी पहला पुष्प खिला था। आर्य समाज की वाटिका का प्रथम रक्षक (प्रधान) बनने का श्रेय मिला बाबू माधोनारायण को, कोषाध्यक्ष बनाये गए बाबू गोपालसिंह और मन्त्रित्व का भारी भार रखा गया चिर-परिचित पं० कृपाराम जी के मजबूत कन्धों पर।

पुराने समस्त कागजात देख लेने पर भी बाबू माधोनारायण तथा बाबू गोपाल सिंह जी के विषय में वैयक्तिक जानकारी नहीं मिल सकी परन्तु ऐसी सामग्री विद्यमान है जिससे पता लगता है कि पं० कृपाराम जी के पूर्वज रुड़की में रहते थे। पं० कृपाराम जी स्वयं देहरादून के वन-विभाग में सरकारी कर्मचारी थे। इनके बड़े भाई थे पंडित हरगू लाल जी। पं० कृपाराम जी के नाती थे भोगपुर-निवासी आर्य समाज के महान् विद्वान, कुशल व्याख्याता, अद्भुत तार्किक पं० बुद्धदेव विद्यालंकार जिन्होंने अपने युग में देश के एक कोने से दूसरे कोने तक महर्षि के सन्देश को अपने पूरी शक्ति से गुंजाया था और वही यह बुद्ध देव जी थे, जिन्होंने यथा-समय संन्यास ग्रहण कर, स्वामी समपूर्णानन्द नाम से संन्यासियों की यशः पताका को और ऊँचा फहराया था।

देहरादून में आर्य समाज की स्थापना के अनन्तर

आर्य समाज स्थापित हो गया। भिन्न-भिन्न स्थानों पर लोगों के घरों में यज्ञ, साप्ताहिक सत्संग होने लगे। जिले में धर्म-प्रचार की धूम मच गयी। दयानन्द के मतवाले सर पर कफन बांधे अलख जगा रहे थे। "वेदों के ओ जमाने इक बार फिर से आ जा" की अग्नि मन में प्रज्वलित किए, कुरीतियों और बुराइयों के विरुद्ध जहाद कर रहे थे। न स्वयं शांत थे न किसी को शांत बैठने देना चाहते थे। जब सारी जाति, सारा देश पीड़ा से कराह रहा हो तो कोई कैसे शांत बैठने का ढोंग कर सकता है ? खून से आर्य समाज के पादप का सिंचन करने वाले वे महापुरुष धन्य हैं। न दिन को चैन, न रात को आराम—जिले में जैसे एक भूकम्प आ गया था।

---

1. **हमारी समाज के कर्मठ कार्यकर्ता स्व० श्री अमरनाथ वैद्यशास्त्री का एक छपा लेख हमारे पास मौजूद है। इसमें भी वैद्यजी ने आर्य समाज देहरादून की स्थापना तिथि 29 अप्रैल 1879 लिखी है।**

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने जो सभा का इतिहास लिखा है उसके प्रथम भाग के पृष्ठ 30 पर तथा द्वितीय भाग के पृष्ठ 11 पर (सम्भवतः) उक्त वैद्य जी के लेख के ही आधार पर स्थापना की तारीख 29 अप्रैल 1879 ही लिखी है।

न तो सभा ने, न उपर्युक्त वैद्य महाशय ने अपनी बात की पुष्टि के लिए कोई प्रमाण दिया है, न पुराने मत के खण्डन में कुछ लिखा है।

विचारणीय यह है कि पं० लेखराम जी द्वारा लिखित जीवन-चरित्र में 29 जून 1879 को देहरादून की समाज की स्थापना-तिथि का जो आधार दिया गया है वह इतना प्रबल है कि उसकी उपस्थिति में दूसरी बात सोची भी नहीं जा सकती।" जब स्वामी जी चलने को उद्यत हुए तो मैं उनके पास 40/- रु. लेकर········उन्होंने न माना। और 30 अप्रैल सन 1879 को मेलकार्ट द्वारा यहाँ से चले गये। उनके चले जाने के पश्चात् 29 जून 1879 को यहाँ आर्य समाज स्थापित हुआ। जिसमें निम्नलिखित अधिकारी नियुक्त हुए। बाबू माधोराम प्रधान, बाबू गोपाल सिंह कोषाध्याक्ष और पं० कृपाराम मंत्री" देखिए उर्दू जीवन चरित्र पृष्ठ 469। यह हो गया है, कि यह तिथि, पं० कृपाराम जी ने स्वयं पं० लेखराम जी को बतायी थी। यही पं० कृपाराम स्वयं 40/- रु० लेकर उपस्थित हुए थे। यही पं० कृपाराम आर्य समाज के प्रथम मंत्री बने थे। यह प्रेस-प्रेतों की माया भी नहीं कही जा सकती क्योंकि वाक्यावली है—"उनके चले जाने के पश्चात 29 जून 1879 को यहाँ आर्य समाज स्थापित हुआ।" रेखांकित शब्द घोषणा कर रहे हैं कि महर्षि की उपस्थिति में स्थापना नहीं हुई, उनके चले जाने के पश्चात् हुई। अतः 29 अप्रैल स्थापना-तिथि ठीक नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि आर्य समाज मेरठ के दूसरे वार्षिक उत्सव पर पधारे। देहरादून के आर्य समाजी बैचेन हो उठे। यहाँ मेरठ आकर ही देहरादून नहीं आयेंगे क्या ? महर्षि मेरठ से मुजफ्फरनगर और वहाँ से सहारनपुर के लिए रवाना हुए। सहारनपुर रेलवे स्टेशन पर कितने ही भक्त स्वागतार्थ उपस्थित थे। इसी भीड़ में थे गवर्नमेन्ट स्कूल के हिन्दी अध्यापक पं० लक्ष्मीदत्त जो अपने को बड़ा ज्योतिषी बताते थे। कहने लगे कि मैं ज्योतिषी हूँ, प्रश्नों के सही उत्तर देता हूँ। महर्षि कब चूकने वाले थे। तपाक से बोले, "एक कौवा उड़ता जा रहा था। आम के पेड़ के नीचे से उड़ रहा था। पेड़ से आम गिरा, कौए को लगा, कौवा मर गया। न तो आम को ज्ञान था कि मैं कौवे पर गिरूँ। न कौए की इच्छा थी कि आम के नीचे आकर मरूँ। संयोगवश ऐसा हो गया। यही स्थिति तुम्हारे उत्तरों की है। संयोग से अभी कोई उत्तर ठीक हो जाता है ज्योतिषी तुम्हारा तब सत्य जानें कि जिस नियम के आधार पर तुम सत्य की घोषणा का दावा करते हो, उस नियम से सौ सवालों का एक साथ उत्तर दे दो। यदि सब उत्तर ठीक दे दो तो ज्योतिष ठीक, यदि कुछ उत्तर ठीक हों और कुछ गलत हों तो तुम्हार ज्योतिष छूमन्तर। क्योंकि गणित सदा सच्चा होता है।" ज्योतिषी जी का मुख लटक गया। लाला भोला नाथ वैश्य ने नगर-भर में चिपकाए गए उन पोस्टरों का ज़िकर किया जो जैनियों ने चिपकाए थे। जिसमें महाराज की गिरफ्तारी की बात थी। महाराज हँस पड़े—"सोने को जितनी भी आग दी जाती है उतना ही कुन्दन होता जाता है। मुझको यदि तोप के मुख से बाँध कर भी कोई प्रश्न करे कि क्या सत्य है तो वेद की ऋचाएँ मुख में निकलेंगी। अब तो मैंने जैनियों के और बहुत ग्रन्थ देख लिये हैं। वह मेरे प्रश्नों का क्या उत्तर दे सकते हैं।" महाराज से पूछा गया, "सत्यार्थ प्रकाश का दूसरा संस्करण कब छपेगा ?" महर्षि बोले—"यही तो कर रहा हूं। ईश्वर कृपा करे तो इसके पश्चात् स्त्री-शिक्षा की पुस्तकें बनाऊँगा।"[1] यह कह कर महाराज गाड़ी में बैठ गये और मेल कार्ट देहरादून मार्ग की ओर सरपट दौड़ने लगी।

महर्षि का पुनः देहरादून आगमन

7 अक्टूबर 1880 को योगिराज दयानन्द प्रातः आठ बजे दूसरी बार देहरादून नगर में पधारे। आर्यों के उत्साह का ठिकाना नहीं था। पाँव धरती पर न पड़ते थे। महर्षि की आज्ञा से नगर के भिन्न-भिन्न स्थानों पर इश्त-हार चिपका कर नगरवासियों को महाराज के आगमन का शुभ समाचार दिया गया। महाशय कृपाराम जी ने (पहले पं० जी थे अब महाशय हो गये थे) महर्षि के इस बार के देहरादून का समस्त आवश्यक वृत्तान्त "आर्य समाचार" में प्रकाशनार्थ भेज दिया था। मार्गशीर्ष सम्वत् 1937 के पृष्ठ 242 से 250 तक यह सम्पूर्ण वृत्त पत्रिका ने अपने नवम्बर अंक में छाप दिया था। समाचार-पत्र ने लिखा था—"कुछ सज्जन जो बिना सोचे-समझे, बिना देखे-भाले, अपने मताग्रह अथवा किसी स्वार्थवश जो कटु शब्द मुख पर लाते थे, व्याख्यान सुन कर और महर्षि से वार्तालाप करके सत्य मार्ग पर आ गये। वह अपनी भूल पर पश्चाताप करते थे और लज्जित होकर कहते थे "हमने झूठे समाचार सुनकर महर्षि के

महर्षि ने 24 अप्रैल 1879 को एक पत्र पं० माधोनारायण जी दानपुर को देहरादून से लिखा था—उसमें महर्षि जरूर लिखते कि यहाँ समाज की स्थापना का प्रबन्ध होने को जा रहा है। आखिर स्थापना का निश्चय 5-7 दिन पहले जरूर हुआ होगा और तो और 30 अप्रैल को महर्षि जब मेरठ पहुँचे तो मेरठ से 5 मई 1879 को अपने पत्र में देहरादून का वर्णन करते हैं परन्तु यह नहीं लिखते कि वहाँ हमने आर्य समाज की स्थापना 29 अप्रैल 1879 को कर दी है। महर्षि की अपनी शैली है, वे अवश्य लिखते कि देहरादून में आर्य समाज की स्थापना कर रहे हैं।

मैं समझता हूँ इस भूल का कारण मनोवैज्ञानिक है। हम चाहते हैं कि किसी तरह कोई यह कह दे कि हमारी देहरादून की समाज ऋषि ने अपने हाथों से स्थापित की थी। इससे हमें आत्म-तोष होता है। यही भूल का मूल है।

1. उर्दू जीवन चरित्र, पृष्ठ 798-799

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारे में कुछ दूसरी ही धारणा बना रखी थी। परन्तु वास्तविकता तो कुछ और ही निकली। आज भी उन लोगों की कमी नहीं है जो अपनी हठधर्मी के कारण या कुरान और इंजील के खण्डन के कारण, ब्राह्मण अपनी जीविका की चिन्ता से, कामी, लम्पट और झूठे अपने अनुचित कार्य के प्रति प्रेम के कारण बराबर बुरा-भला कहते रहते हैं। हाँ, सत्यान्वेषक, विचारक, चिन्तक महर्षि की स्पष्टवादिता, उनकी सत्य के प्रति अगाध निष्ठा, उनकी विचार प्रामाणिकता, उनकी निर्भीकता और साहस पर पहले से भी अधिक लट्टू हो गये हैं।" "महर्षि की ओर से सब पर खुल कर यह प्रकट कर दिया गया कि स्वामी जी केवल वेद मत को मानते हैं और अन्य नवीन मत-मतान्तरों यानी पुरानी, किरानी, जैनी, कुरानी आदि की त्रुटियाँ बुद्धि की कसौटी पर तौल कर, प्रमाण प्रस्तुत करके असली और नकली सिद्ध करते हैं इसलिए जो सज्जन किसी भी मत से सम्बन्ध रखते हों, अपने मत की पुष्टि करना चाहते हों या वेद मत का खण्डन करना चाहते हों और इसकी योग्यता रखते हों, सभा में आएँ और शास्त्रार्थ करें।" (उर्दू जीवन चरित्र पृष्ठ 799) ऋषिराज ने आज लंगार घुमा दिया है। कोई हो जिसे अपनी विद्या का घमण्ड हो, अपने मत का घमण्ड हो, अखाड़े में आये और सत्य से टक्कर लेकर देखे। वह अकेला ऋषि जिसने अकेले ही काशी में जाकर पौराणिक महारथियों के छक्के छुड़ा दिये थे, वह दयानन्द जिससे शास्त्रार्थ में पराजित होकर अंगद शास्त्री ने अपने शालिग्राम को गंगा में प्रवाहित कर दिया था, आज फिर ललकार रहा है। ब्राह्मण दुविधा में, न बोले तो रोटी गयी और बोले तो बिल्ली के गले में घण्टी कौन बाँधे ? ग्राहक हाथ से निकले जा रहे थे। लोगों के दिलों में बनी अन्ध विश्वास की दीवारें दयानन्द के तर्क के तेज से पिघलने लगी थीं। मनों में एक आशंका और अनिश्चय की स्थिति घर करती जा रही थी। महर्षि ने घोषणा की, "बीस न्यायप्रिय, सत्य-प्रेमी विद्वान्, अपने साथ ले जाओ, उन्हीं को पंच मान लो। अपने बीस विद्वान्, सत्यप्रेमी और न्याय में विश्वास रखने वाले हमारी ओर से हो जायेंगे और कुल चालीस पंच माने जावें। एक शीघ्र-लेखक मेरी ओर से एक शीघ्र-लेखक दूसरी ओर से और तीसरा पंचों की राय से नियुक्त किया जाये। प्रत्येक सवाल लिखा जाये, प्रत्येक उत्तर लिखा जाये। दोनों पक्षों के वक्ता अपने-अपने हस्ताक्षर उन पर करें। पंच भी अपने हस्ताक्षरों से उन्हें प्रमाणित करते जायें। शास्त्रार्थ की समाप्ति पर उन प्रमाणित प्रतियों में से एक एक, वादी और प्रतिवादी के पास रहेगी और तीसरी प्रति पंचों की राय लेकर न्यायालय में भेजी जाये। ताकि कोई भी उसमें परिवर्तन न कर सके। न गलत बात उड़ाने का अवसर शेष रहे।"

8151

शास्त्रार्थ की बातें और बस……

न्याय का तकाजा है कि दयानन्द के विवेक पर आफरीन कहा जाये। सत्य की माँग है कि सत्य के इस पुजारी का दामन मुरादों से भर दिया जाये। अब तो शास्त्रार्थ के नियम भी बता दिये गये। अब भक्तों को कैसे टाला जायेगा ? कब तक हीले-बहाने हो सकेंगे। मरता क्या न करता, लोक-लाज के मारे, लोगों को दिखाने के लिए, चर्चा तो करने लगे पर दयानन्द से टक्कर ले कौन ? हौंसले टूट जाते। एक दिन कहला भेजा गया कि आज दिन में दो बजे मिशन स्कूलों में आ जाइये, हम शास्त्रार्थ करने के लिये तैयार हैं। महर्षि ने कहलवा भेजा—"प्रथम तो मैं संन्यासी हूँ फिर अभ्यागत ! मेरे निवास-स्थान पर आने में आपको कोई अड़चन नहीं। यदि फिर भी यहाँ आने में संकोच हो तो थोड़ी दूर चलकर आप आ जाइये और थोड़ी दूर चल कर मैं आ जाऊँगा। और पूर्णचन्द सौदागर की दुकान के पास (जो सम्भवतः उस स्थान पर स्थित थी जिसे आज घण्टाघर कहा जाता है) जो दोनों पक्षों के लिए समान दूरी पर स्थित है और मौके की जगह है, वह स्थान शास्त्रार्थ के लिए रखा जाये। वहाँ सत्य और असत्य का निर्णय हो जायेगा। और यदि आप के मन में शंका हो कि उस स्थान पर सभा में कोई आदमी आप सज्जनों के प्रति अनुचित शब्दों का प्रयोग अथवा ठट्ठा, हँसी करेगा तो अपनी ओर के लोगों को सम्भालने का उत्तरदायित्व हम लेते हैं। आपकी राय से उसका

पृष्ठदाता

श्री ढल्ला राम एंड संस, सहारनपुर रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्तोषजनक प्रबन्ध कर देंगे। और इस पर भी यदि आप मुझे ही अपने स्थान पर सम्मानित करना चाहते हैं या और कारणों से वहीं बुलाना चाहते हैं तो मुझे इससे इन्कार नहीं है। परन्तु शर्त यह है कि उस समय पर मजिस्ट्रेट साहब का प्रबन्ध रहे। क्योंकि मैंने जहाँ-जहाँ पुराण मतानुयाइयों से उनके स्थान पर शास्त्रार्थ किया, वहाँ-वहाँ कटु भाषण तो क्या कई प्रकार के उपद्रव उनकी ओर से हुए और सारी व्यवस्था छिन्न-भिन्न कर दी गयी।"

दूध का जला छाछ को फूंक-फूंक कर पीता है। दयानन्द ने वे दिन देखे थे जब उसे परास्त करने के लिए शास्त्रार्थ के बहाने बुलाकर अपमानित ही नहीं किया गया था अपितु जान से मारने तक के प्रयत्न किये गये थे। काशी-नरेश के शासन तले क्या कुछ नहीं हुआ था? पत्थर फेंके गये थे, जूते फेंके गये थे और वेद के नाम पर नकली कागज पेश किये गये थे। दयानन्द इन चालों को खूब समझने लगे थे। "परन्तु दुःख इसी बात का है कि पंडितों की ओर से इस युक्ति-युक्त सुझाव का कोई उत्तर नहीं आया, या तो कहिए उत्तर न देना ही उत्तर था।" भक्त लोग पण्डितों की जान को आ रहे थे कि "यदि वेद में मूर्ति पूजा का विधान है तो झिझक क्यों है? शास्त्रार्थ करो—मूर्तियों को बचाओ।" कुछ दिन पश्चात् कुछ सज्जन फिर उपस्थित हुए। यदि आप एक सप्ताह ठहर जाएँ तो श्री राम लाल जी को शास्त्रार्थ के लिए बुला लेवें। स्वामी जी ने उत्तर दिया—"आप उन्हें बुलाइये। मैं एक सप्ताह क्या, दो महीने तक ठहर सकता हूँ।" परन्तु उसके बाद न कोई आया और न गया। केवल मन बहलाव और भक्तों की दिल-जमाई के लिए फिजूल के तल्ले उड़ाते फिरे। सर्व-साधारण में धाक जमी रहे, और नाक बची रहे; यही करते रहे।"

पण्डित राम लाल जी को बुलाने का अर्थ यह था कि देहरादून के पण्डितों ने एक प्रकार से स्वीकार कर लिया था कि—देहरादून में कोई पण्डित नहीं है जो वेद से मूर्ति-पूजा सिद्ध कर सके। समझने वाले समझते थे, जानने वाले जानते थे कि ये सब बहाने हैं। उधर, कुरान वालों का भी कुछ अच्छा हाल नहीं था। वे खुद परेशान थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि एक अकेला आदमी चारों ओर कैसे लड़ रहा है। न कुरान को छोड़ता है न बाइबल को बख्शता है और तौबा! कुरान मजींद पर भी हमले करता है। कितना ही पक्का मुस्लमान था, दयानन्द के तर्कों ने सबके मन में शक और सन्देह के बीज बो दिये थे। "मुहम्मदी लोगों की ओर से एक लेख द्वारा छेड़छाड़ आरम्भ की गयी परन्तु किसका शास्त्रार्थ, कैसा शास्त्रार्थ। केवल एक दिखावा था, प्रदर्शन मात्र था। निचोड़ इस लेख का यह था कि हम वेद के ईश्वरीय ज्ञान होने पर प्रश्न करते जायेंगे और जब तक हमारा सन्तोष नहीं होगा किसी की सुनेंगे नहीं। खूब रही! हम आक्रमण करते रहेंगे। तुम बचते रहना। तुम हम पर हमला नहीं करोगे सिर्फ हमले की रोक-थाम करोगे। वे दिन लद गये जब खलील खाँ फाख्ता उड़ाते थे। तुमने तो 700 वर्ष प्रश्न ही प्रश्न किये थे। अपने से जवाब किसे माँगने दिया था? और आज स्थिति भिन्न थी। दयानन्द इस्लाम पर प्रश्नों की झड़ी लगा रहा था और मुल्ला तौबा के सिवाय क्या कह सकता था? दयानन्द कब पीछे हटने वाला था। स्वामी जी ने वही कहा जो पण्डितों से कहा था। इतना और जोड़ दिया, "पहले आप वेद के सम्बन्ध में प्रश्न करें, मैं उत्तर दूंगा। फिर मैं कुरान पर सवाल करूँगा और आप उत्तर देंगे। यदि आपको केवल वेद पर ही प्रश्न करने हैं और वेद को ईश्वरीय ज्ञान होने में प्रमाण चाहिए तो मेरी ऋग्वेद आदि भाष्य भूमिका में सब कुछ लिखा है पढ़ने की कृपा कीजिए और पढ़ने के पश्चात् भी कोई शक या शंका रह जाये तो मुझसे प्रश्न कीजिए मैं उत्तर दूंगा।" महर्षि के उत्तर ने उन्हें मौन धारण करने के लिए विवश कर दिया। चहकना बन्द हो गया, फुसफुसाहट चलती रही। किस्सा यह कि यह छेड़छाड़ भी यहीं तक चलीं और फिर जरा भी न चली।

पृष्ठदाता

श्री कुलभूषण भाटिया, चकरोता रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झूठे के घर तक

पण्डित और मुल्ला दोनों हताश हो गये। ईसाई-पादरी अपनी हकूमत के जाम में थे। उनसे यह बरदाश्त न होता था कि हमारी रिआया, हमारा गुलाम, हम ही पर यों गुर्राये। यदि अभी-अभी सत्तावन न होकर चुका होता तो शायद ईसाई पादरियों का सही रूप प्रत्यक्ष हो जाता। उधेड़-बुन बराबर जारी थी। पादरी गिलबर्ट जिनका खिताब मैंकमासर था। एक दिन कुछ ईसाइयों को साथ लेकर आये। दिखाया यह जा रहा था कि शास्त्रार्थ करने को पधारे हैं। आते ही पादरी साहब ने सवाल पेश कर दिया, "तुम्हारी वेद के ईश्वरीय ज्ञान होने की क्या दलील है?" महर्षि तेवर देखकर ही यह जान गये कि यह सब छेड़-छाड़ है। सत्य और असत्य के निर्णय की इच्छा नहीं है। महर्षि ने तुरन्त उत्तर में प्रश्न यों दोहरा दिया और आपके पास इंजील के ईश्वरीय ज्ञान होने के क्या तर्क हैं? पादरी साहब बिगड़े "वाह! पहले तो हमारा सवाल है। स्वामी जी बोले—"वाह! मुझको भी तो पहले जवाब लेने का ख्याल है।" न शास्त्रार्थ के नियम तय, न शास्त्रार्थ का विषय तय और न कोई लेखक निश्चित। सिर्फ यह दिखाने के लिए कि हम भी दयानन्द से शास्त्रार्थ करने चले हैं। लोगों पर रोब कायम रहे। भेड़े भाग नहीं जाएँ। महर्षि इन चालाकियों को खूब समझते थे।

पादरी साहब उठकर चलने लगे। स्वामी जी ने टोका—"पादरी साहब! आप तो शास्त्रार्थ करने को आये थे फिर इतनी जल्दी क्यों जाते हैं?" "जब आप उत्तर ही नहीं देते तो हम बैठ कर क्या करें?" पादरी साहब का उत्तर था। स्वामी जी ने आश्वासन दिया, "तो पहले मैं ही उत्तर दूंगा। उसके बाद आप से इंजील पर प्रश्न करूंगा और आपसे उत्तर मागूंगा।" इस पर भी पादरी साहब जमे नहीं। उठ कर चलने को हुए। स्वामी जी ने फिर विघ्न डाला, "पादरी साहब! आप वेद पर एक नहीं दो तीन प्रश्न कर लीजिए परन्तु मेरे उत्तर सुनने के पश्चात् बाइबल पर मेरे प्रश्नों को सुनिये।" पादरी साहब ने "नहीं नहीं" कहा। "मैं सिर्फ प्रश्न करने आया हूँ।" और वे उठकर चलने का प्रयत्न करने लगे। स्वामी जी ने देखा मामला बिगड़ता है, भागने पर उतारू है, शास्त्रार्थ नहीं करना चाहता, मुफ्त की वाह-वाही चाहता है। फिर दाना डाला—"अच्छा! पहले आप 5 तक सवाल वेद पर कर लीजिए और जब मैं इनके उत्तर दे चुकूं मुझको अपने इंजील पर एतराज करने दीजिए।" पादरी साहब आवेश में बोलते चले गये "मुझे हरगिज स्वीकार नहीं है कि मैं इंजील पर एतराज सुनूं।" महर्षि ने फिर समझाया, "आप इंजील पर होने वाले प्रश्नों पर इतने भयभीत क्यों हैं? पहले आप वेद पर 10 प्रश्न कर लीजिए। मेरे उत्तर सुनने के पश्चात् मुझे इंजील पर प्रश्न करने की आज्ञा दीजिए—ताकि सुनने वाले भी सत्य-असत्य का निर्णय कर सकें और मानसिक तोष, ज्ञान-वृद्धि और आनन्द प्राप्त कर सकें। भला यह कौन सा सुनियम है कि आप अपनी ही अपनी कहे जाएँ और दूसरे की सुने भी नहीं।" उपस्थित श्रोतागण सब कुछ समझ चुके थे। शास्त्रार्थ के बगैर ही शास्त्रार्थ का परिणाम निकल चुका था। आखिर कुछ तो था जिसकी परदा दारी थी। अगर इंजील को खरा सोना कहा जायेगा तो बाजार में मौजूद हर खरीदार पथरी निकाल कर कसेगा ही और जो व्यापारी खरीदार के हाथ में कसौटी देखकर बिगड़ने लगे, नू-नुच करे, तो खरीदार समझ जाता है कि दाल में कुछ काला है। पादरी साहब उपस्थित लोगों की शरम के कारण रुकने पर मजबूर हो चुके थे।" "बहुत अच्छा" कह तो दिया प्रश्न भी पूछ लिये और ऋषिराज ने उत्तर भी दे दिये। पर इंजील पर प्रश्न करने का समय आया तो पादरी साहब की अजीब हालत थी। वही मुसलमान साहिबान का-सा वजीफा पढ़े जा रहे थे कि जब तक हम आपके उत्तर में अपनी सन्तुष्टि न कर लेंगे और स्वीकार न कर लेंगे, न तुमको बोलने देंगे और न तुम्हारी सुनेंगे।" स्वामी जी ने पूछा "जब आप अपने लिए ऐसा चाहते हैं तो मेरे लिए भी यही अधिकार देने में आपको क्या परेशानी है?" पादरी साहब ने सिर्फ ना में उत्तर दे दिया क्योंकि यह कुल बखेड़ा तो केवल अपनी विद्वत्ता प्रकट करने और दुनिया पर रोब गालिब करने के लिए था। वास्तव में तो शास्त्रार्थ से जड़ से ही इन्कार था। स्वामी जी ने पादरी साहब की अन्तिम 'नहीं' सुनकर कहा "पादरी साहब! आप न्याय से काम नहीं लेते।

पृष्ठदाता

डा० महावीर सिंह, धर्मपुर, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल शास्त्रार्थ का नाम करते हैं परन्तु यह होशियारी कि कहीं कलई न खुल जाये, चली नहीं। आपकी सारी वास्तविकता सब पर प्रकट हो चुकी है। आप उन नियमों का जो शास्त्रार्थ के लिए परम आवश्यक हैं उल्लंघन करते हैं। आप दूसरे की सुनना नहीं चाहते। देखिये मैं पहले भी कह चुका हूँ और अब फिर कहता हूँ कि आप वेद पर एक से लेकर दस तक प्रश्न पूछिए—और फिर मुझे प्रश्न करने दीजिए और आप उत्तर दीजिए। और उसके बाद चाहें तो आप और नये दस प्रश्न मुझसे कीजिए या अपने दस सवालों के उत्तर में रही शेष शंकाएँ कर लीजिए। उनका समाधान करूँगा। इससे उपस्थित लोगों को सत्य क्या है, असत्य क्या है पता चल जायेगा।" पादरी साहब के पास अब कोई बहाना नहीं बचा था। कहने लगे "बस आप मेरी ही सन्तुष्टि कर दीजिए, अपने प्रश्नों को रहने दीजिए वरना मैं जाता हूँ। आप बैठे रहिए।" पादरी साहब 'बस जाता हूं' कि गरदान पढ़े जा रहे थे। और तरीका भी क्या था आखिर दयानन्द से पीछा छुड़ाने का। स्वामी जी ने फिर पादरी साहब को सम्बोधित किया, "ये उपस्थित लोग तो आपसे बार-बार भागने की बात और किसी भी नियम पर न जमने की बात से अच्छी तरह समझ ही गये हैं कि इंजील पर प्रश्नों के नाम से आपको कंपकंपी आ जाती है और आप पीछा छुड़ाना चाहते हैं। अब आप जाने और आपका काम। अच्छा तो यही था कि आप शास्त्रार्थ करते और जी के अरमान निकाल लेते।" पादरी साहब गुस्से में तिलमिला उठे और बड़े रूखे तथा कठोर लहजे में बोले "आप जवाब देते ही नहीं। मैं जाता हूँ। मुझे काम है। स्वामी जी ने नम्रता से कहा कि आप प्रश्न का उत्तर लेना ही नहीं चाहते। लेकिन आपका लक्ष्य भी तो कुछ ओर ही है, शास्त्रार्थ का तो केवल दिखावा ही है। खैर जाइये, मुझे भी इस समय काम है।" शास्त्रार्थ न होना था और न हुआ। क्योंकि पादरी साहब के सारे व्यवहार से केवल प्रदर्शन की ही गन्ध आ रही थी। वे केवल अपनी ही हाँके जाते थे और दूसरे की सुनते ही न थे। वे तो न मानने का निश्चय किये थे। "परन्तु परिणाम शास्त्रार्थ होने से भी कहीं अच्छा रहा। क्योंकि समस्त धनी-मानी सज्जनों पर यह भली-भांति प्रकट हो चुका था कि पादरी लोग केवल अनपढ़ और जाहिलों को ही बहका सकते हैं। विद्वान के सामने न टिकते हैं और न टिक सकते हैं। न शास्त्रार्थ किया और न कर सकते हैं। इंजील तर्क की कसौटी पर खरी नहीं उतर सकती।"

जन्नत की हकीकत

पंडित, मौलवी और पादरी सब अपने-अपने जौहर दिखा चुके थे। दयानन्द के सामने सबके रंग फीके पड़ चुके थे। कोई शस्त्र काम न करता था। कोई तदबीर न चलती थी। दयानन्द पर बस न चला तो मुसलमानों ने बेचारे मुंशी अलखधारी को जा घेरा। मुंशी अलखधारी पिछले वर्ष शुद्ध होकर मोहम्मद उमर से अलखधारी बने थे। उसी समय से आर्य समाज देहरादून के सदस्य चले आते थे। अब और कोई दलील तो नहीं थी जो उसके सिर मढ़ते। कहा कि तेरा जन्नत में जाना असम्भव है, तुझे खुदा बड़ी से बड़ी सजा देगा, दोजख की आग में जलायेगा, तू दुःख और पीड़ा ही पाने के योग्य है क्योंकि तूने इस्लाम छोड़ दिया है।

हमको मालूम है जन्नत की हकीकत लेकिन—
दिल के बहलाने को गालिब ये ख्याल अच्छा है।।

मुंशी अलखधारी कुरान की जन्नत से खूब परिचित थे।

"सत्य के प्रेमी, चरित्रवान् मुंशी अलखधारी ने उन उपदेशक विरोधियों से सीधा प्रश्न ही तो कर दिया कि "आपका खुदा रब्बुल आलमीन है (सारे संसार का परमात्मा है) या केवल मुसलमानों का खुदा है? यदि तो सारे संसार का ईश्वर है तो वह मेरा भी है। मेरे हिन्दू हो जाने से कोई फरक नहीं पड़ता क्योंकि ईश्वर हिन्दू का भी है। और यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरी बात है कि यह केवल मुसलमानों का ही खुदा है, औरों का नहीं, तो वह खुदा ही नहीं हो सकता जो सबका नहीं है। आप लोग भी पवित्र वेद का धर्म स्वीकार कीजिए और सत्य धर्म को ही धर्म मानिये, वरना छुटकारा मुश्किल है। आगे आप कार्य करने में स्वतन्त्र है।"

दयानन्द का रंग चढ़ चुका था। अब अलखधारी आँखें बन्द करके कुरान पर यकीन नहीं कर सकता था। अब वह हर बात को तर्क और बुद्धि की कसौटी पर कस लेता। 'मजहब में अकल का दखल नहीं', यह नारा पुराना पड़ चुका था। वेद के प्रकाश से उसका अन्तःकरण प्रकाशित हो चुका था। अंधियारे अब उसे घेर नहीं सकते थे।

दयानन्द केवल ईश्वर और वेद के ही डंके बजाता रहा हो, ऐसा भी नहीं है। दयानन्द का 'वेद ईश्वरीय ज्ञान है' 'सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका सबका आदि मूल परमेश्वर है', 'वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है' ये थोथे नारे नहीं थे, जीवन की वास्तविकता थे। महर्षि की एक दिन मिस्टर हैन्सी साहब (सर्वे ऑफ इण्डिया देहरादून) से मुलाकात हो गयी। बात चल पड़ी सर्वे पर और महर्षि ने साहब बहादुर को बताया कि आर्यों की पुस्तकों में न केवल दूरवेक्षण यन्त्र और क्षुद्रवेक्षण यन्त्र आदि का वर्णन मौजूद है अपितु उनकी बनावट और प्रयोग की विधियाँ भी बतायी गयी हैं। साहब बहादुर हैरान थे। स्वामी जी को सर्वे की वेधशाला का एक यन्त्र साथ लेकर दिखलाया और उन यन्त्रों के सम्बन्ध में स्वामी जी से बात करते रहे और जानकारी प्राप्त करते रहे।[1]

देहरादून नगर में महर्षि का यह अन्तिम आगमन था। विरोधियों के हौंसले पस्त हो चुके थे। शास्त्रार्थ की डींग हाँकने वाले न जाने कहाँ जा छुपे थे। महर्षि का मूल्यवान् समय नष्ट करने के लिए नहीं था। शास्त्रार्थ चाहे न हुए थे परन्तु महर्षि के व्याख्यानों ने पाखण्ड और जहालत की जड़ों को पकड़ कर बुरी तरह से झकझोर दिया था। 20 नवम्बर 1880 तक महर्षि ने देहरादून में आवास किया। लाला कालीचरण को लिखे गए पत्र से पता चलता है कि देहरादून से चल कर महर्षि सीधे मेरठ पहुँच गए।

गुरुदेव स्वामी विरजानन्द का देहरादून-प्रवास

महर्षि की ये दो यात्राएँ देहरादून नगर में हुईं। देहरादून जिला भी भाग्यशाली है कि ऋषिराज की पद्-रज से पवित्र हुआ है। महर्षि ने स्व-कथित जीवन-चरित्रों में इसकी पुष्टि इस प्रकार की है—"सब यात्री चले गए और मेला हो चुका तो वहाँ से (हरिद्वार) ऋषिकेश को गया। वहाँ बड़े-बड़े महात्मा संन्यासियों और योगियों से योग की रीतियाँ सीखता और सत्संग करता रहा। तत्पश्चात् कुछ समय तक अकेला ऋषिकेश में रहा। इसी समय एक ब्रह्मचारी और दो पहाड़ी साधु मुझसे आन मिले और हम, सबके साथ मिल कर, टिहरी चले गए।" (पृष्ठ 31 हिन्दी जीवन-चरित्र) महर्षि सन् 1853 में कुम्भ-मेले की समाप्ति पर, अप्रैल के बाद ऋषिकेश पधारे थे। केवल ऋषिराज ही ऋषिकेश पहुँचे थे ऐसा भी नहीं है। पं० लेखराम जी ने महर्षि के जीवन-चरित्र में लिखा है कि महाराज रणजीत सिंह के शासन काल में एक नारायणदत्त ब्राह्मण (करतारपुर नगर के पास एक छोटे से ग्राम गंगापुर के निवासी) का एक अभागा पुत्र शैशव में ही शीतला रोग से ग्रस्त होकर अपनी दोनों आँखें खो बैठा। 12 वर्ष की आयु में माता-पिता का देहान्त हो जाने पर यह गरीब असहाय बालक अपने बड़े भाई और भावज के सहारे जीने लगा। परन्तु भाई-भावज के हृदय में उसके प्रति कोई स्थान न था, रोटियाँ माँगता गालियाँ मिलतीं, पानी माँगता तो पानी पी-पीकर कोसा जाता। भाई-भावज के दुर्व्यवहार से यह 15 वर्षीय अबोध असहाय बालक एक दिन ठोकरें खाता, घर छोड़कर निकल पड़ा। यदि ठोकरें ही खानी हैं, गालियाँ ही खानी हैं तो फिर यहाँ ही क्यों पड़ा रहूँ। बड़ी कठिनाई से यह बालक ऋषिकेश पहुँच गया। इस समय उसकी आयु सम्भवतः 15 वर्ष होगी। "समय की दशा और अपने तथा परायों की प्रतिकूलता से निराश और उदास होकर

---

1. दूसरी यात्रा का यह समस्त वर्णन "आर्य समाचार" मेरठ नवम्बर 1880 पृष्ठ 242 से 250 तक छपा था। यह हमने "उर्दू जीवन चरित्र से लिखा है।" यह लेख लिखा था पं० कृपाराम मंत्री आर्यसमाज देहरादून ने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगत्पति की उपासना में संलग्न होकर अपने दग्ध हृदय को शांति देने लगा। और कहते हैं कि तीन वर्ष गंगा में खड़े होकर गायत्री का परम जाप उत्तम रीति से करते हुए उसने अपना मन और अन्तःकरण रूपी चक्षु को ज्ञान-रूपी अंजन से प्रकाशित कर लिया।" "ऋषिकेश उस समय आजकल के समान बहुत बसा हुआ और निरापद स्थान नहीं था। बस्ती के न होने के कारण मांस-भक्षी पशु चारों ओर रात को गरजते और शान्ति-भंग करते थे परन्तु शूरवीर ईश्वर-आश्रित तो, ऐसे भयानक स्थान पर तपस्या द्वारा प्रज्ञा की आखों प्राप्त करने का यत्न कर रहा था।" पं० लेखाराम जी ने आगे लिखा है कि "जब तीन वर्ष निरन्तर साधना और तपस्या करते हुए व्यतीत हो गए तो एक रात स्वप्न में उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि तुमको जो कुछ होना था हो गया। अब यहाँ से चले जाओ। फलतः वह नवयुवक तपस्वी, वीरता से उस भयानक वन को पार करता हुआ 18 वर्ष की आयु में हरिद्वार आ पहुँचा। और यहाँ उसकी एक विद्वान् गौड़ स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से भेंट हुई। और यहीं विरक्त वीर ने संन्यास ग्रहण किया और अपना नाम विरजानन्द रखा।"[1]

इतिहास साक्षी है यही विरजानन्द, महर्षि दयानन्द सरस्वती की ज्ञान-पिपासा शान्त करने में सफल हुए। इसलिए आर्य समाज के इतिहास में जिला देहरादून बड़ा ऊँचा स्थान रखता है।

श्रीधर पाठक ने देहरादून का वर्णन करते समय ठीक ही लिखा था—

चारु हिमाचल-आँचल में एक शाल विशालन को वन है।
मृदु मर्मर शीरीं बहें जल-स्रोत, पर्वत और निर्जन हैं।।
लिपटे हैं लताद्रुम गान में लीन प्रवीन विहंगम को गन हैं।
सुधि खोये फिरें जहाँ रावरो सो, मन बावर षो अलि को मन है।।

भारत में वन पावन तूहि, तपस्वियों का तप आश्रम था।
जग तत्व की खोज में मग्न जहाँ ऋषियों ने अभय किया श्रम था।।

मैं बहक न जाऊं, पुनः विषय पर आ जाता हूँ।

बीज का अंकुरण

महर्षि के द्वारा लगाया गया देहरादून आर्य समाज का पौधा आरम्भ से 7 वर्षों में फल-फूल नहीं सका। समाज का अपना भवन या मन्दिर था नहीं इसलिए आज वहाँ सत्संग, कल वहाँ सत्संग, कभी खुड़बुड़े में, कभी धम्मू वाला में। खाना-बदोशी चलती रही। जिस प्रकार बोया हुआ बीज कुछ दिनों के लिए पृथ्वी में लोप हो जाता है और फिर सहसा उसमें अंकुर फुट निकलते हैं, उसी प्रकार सन 1886 में अर्थात् स्थापना के 7 वर्ष पश्चात् बाबू ज्योति स्वरूप जी के आगमन के पश्चात् समाज रूपी पौधे में कोपलें निकल आईं और वृक्ष बढ़ कर फल देने योग्य हो गया।"[2]

देदीप्यमान जीवन—बाबू ज्योति स्वरूप

बाबू ज्योति स्वरूप जी 1886 में देहरादून में आकर वकालत करने लगे थे। आरम्भ में आपने धामांवाला बाजार में एक चौबारा किराये पर लिया था और कार्य आरम्भ किया था। आप स्वभाव से विनम्र, गम्भीर, कार्यकुशल, समाजसेवी, कर्मठ और पुरुषार्थी सज्जन थे। अपने अध्यवसाय और मेहनत के कारण शीघ्र उन्नति करके जिले के सम्पन्नतम व्यक्तियों में गिने जाने लगे थे।

---

1. हिन्दी जीवन चरित्र, पृष्ठ 934-935
2. पं० चन्द्रमणी विद्यालंकार ने 11-1-1941 रजि० अन्तरंग में जो आर्य समाज के पुराने रिकार्ड की सूची अंकित की है वह भी 1886 से ही आरम्भ हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगभग ३० वर्ष (१९२० तक) आर्य समाज के प्रधान रहने वाले बाबू ज्योति स्वरूप
और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती महादेवी

पं० कृपाराम जी
(पं० बुद्धदेव विद्यालंकार के नाना)
दयानन्द जी सरस्वती का पत्र-व्यवहार
इन्हीं से होता था।

ला० फूलचन्द जैन
(ला० उग्रसेन के बड़े भाई)
इन्होंने यहां सर्वप्रथम 'उदय प्रकाश'
उपन्यास लिखा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भक्तराज बलदेव सिंह–देहरादून के नगर सेठ के पुत्र,
जिन्हें ईसाई होने से बचाने के लिए ऋषिराज
प्रथम बार १८७९ में देहरादून पधारे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'देहरादून गजेटियर' पृष्ठ 118 लिखता है—

"Babu Jyoti Swarup, a pleader of Dehra Dun, takes his place among the great landed proprietors chiefly owing to his purchases of the Markham grant in the eastern Dam"

"सम्पूर्ण मारखम इस्टेट जिसमें थेलवाल ग्रांन्ट और खालसा विलिजिज आफ लच्छीवाला, डोईवाला, हंसूवाला और घिसारपाठी हैं, 75,000 रु० नकद देकर बाबू ज्योति स्वरूप जी ने कुछ समय पूर्व खरीद लिया है।" (पृष्ठ 241) केवल रुपया ही बाबू जी के पास था ऐसा न समझा जाए। वे हिन्दी, उर्दू, फारसी और अंग्रेजी के उच्च कोटि के विद्वान् थे। आपने स्वामी महानन्द जी महाराज से नियमित रूप से संस्कृत पढ़कर संस्कृत की कमी भी पूरी कर ली थी। आर्य समाज के सिद्धान्तों को इतनी गहराई से समझते और व्याख्या करते थे कि एक बार आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध (उत्तर प्रदेश) ने बाबू जी को सर्व धर्म सम्मेलन में प्रतिनिधि बनाकर जापान भेजने का निश्चय किया था। परन्तु दुर्भाग्य से वह सम्मेलन हुआ ही नहीं और जाना रह गया। उत्तर प्रदेश के कोने-कोने से उनके पास पत्र आते थे कि समय निकालकर हमारे यहाँ सिद्धान्तों की व्याख्या कर जावें। (रिकार्ड में उल्लेख है)

आर्य समाज देहरादून को यह गौरव प्राप्त हुआ कि यही बाबू ज्योति स्वरूप 1894 में आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध के प्रधान बने। स्व० बाबू ज्योति स्वरूप जी के परिश्रम का ही फल था कि मेरठ में 1904 में स्थापित किया हुआ डी० ए० वी० कालेज मेरठ से देहरादून 8 जुलाई 1904 को स्थानान्तरित कर दिया गया और ठाकुर पूरण सिंह नेगी रईस व जमींदार, मार्नासिहवाला की दान की हुई भूमि में देहरादून में स्थापित किया गया। कुछ समय डी० ए० वी० कालेज समिति की स्थानीय प्रबन्धक कमेटी के मंत्री का कार्य आप ही करते थे। आपके बड़े भाई बाबू लक्षमण स्वरूप जी, जो कालेज सोसायटी के प्रथम प्रधान थे, स्वर्गस्थ हो गए। तब बाबू जी ने उनका स्थान ग्रहण किया और कई वर्षों तक उस पद को सुशोभित करते रहे। डोईवाला आर्य समाज के लिए भूमि देने वाले आप ही थे।

आर्य समाज देहरादून के अतिरिक्त आर्य समाज मसूरी के संस्थापकों में आप अग्रगण्य थे और वहाँ की समाज के भी प्रधान रहे थे।

अंग्रेज सरकार की नजर से ऐसा हीरा कब तक छिपा रह सकता था। परिणामतः अपनी पकड़ मजबूत करने की खातिर सरकार ने उन्हें प्रथम श्रेणी का मैजिस्ट्रेट बना दिया। यह बात अलग है कि दयानन्द का शिष्य इन प्रलोभनों में फंस कर भी देश और धर्म के प्रति अपने कर्तव्य को नहीं भुला सका। 1919 में रौलट ऐक्ट के विरोध में अप्रसन्नता प्रकट करने और दमन-नीति की निन्दा करने के लिए देहरादून के नागरिकों की जो विशाल जन-सभा हुई थी, उस सभा के आयोजन के लिए अपना अहाता देने वाला यही नर-रत्न था जिसकी चर्चा उन दिनों घर-घर हुई थी।

गढ़वाल का अकाल जब सारे हिम-प्रदेश को निगल रहा था उस समय आपकी सूझ-बूझ, सेवा-सहायता ने गढ़-देश वासियों का मन मोह लिया। आर्य समाज के प्रति उनके हृदयों में एक मधुर स्थान बन गया।

कटारपुर केस में फंसे अभियुक्तों के लिए आपने जो सेवा-कार्य किया था वह हिन्दू जनता कभी भुला नहीं सकेगी। इस प्रकार यह नर-केसरी अपने चरित्र, सेवा, योग्यता, साहस और कर्मठता के बल पर आर्य समाज की यश-पताका दिग्दिगन्त में फहराता रहा।

कन्या पाठशाला की स्थापना

सौभाग्य से आपकी धर्मपत्नी श्रीमती महादेवी जी भी बड़े पवित्र विचारों वाली आर्य महिला थीं। उन्हीं के अनुरोध और प्रयत्न से बाबू ज्योति स्वरूप जी ने देहरादून नगर में महादेवी कन्या पाठशाला की स्थापना की थी। आज

पृष्ठदाता

टारस म्यूचल बैनिफिट फाईनेनशियल, 9, राजपुर रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह पाठशाला उत्तर प्रदेश के सबसे बड़े एवं प्रतिष्ठित कालिजों में गिनी जाती है। जिसमें लगभग पाँच हजार-छात्राएँ पढ़ती हैं। बाबू ज्योति स्वरूप द्वारा प्रदत्त भूमि आज के हिसाब से शायद पचासों लाख की सम्पत्ति होगी।

सूर्योदय होता है, गरमी सब जगह पहुँचती है। फिर महाविद्यालय ज्वालापुर ही क्यों अछूता रहता। आप वर्षों महाविद्यालय के संरक्षक रहे और एक वर्ष तो मुख्याधिष्ठाता के पद को भी सुशाभित किया। 1916 में बाबू ज्योति स्वरूप जी की एक सुपुत्री का देहावसान हो गया और 1920 के पूर्वार्ध में यह नरपुंगव सदा-सदा के लिए हमसे विदा हो गया।

आपने 1886 से 1920 तक के जीवन के अमूल्य 34 वर्ष आर्य समाज की सेवा में लगा दिए। 1888 में पहली बार देहरादून आर्य समाज के प्रधान बने और फिर मृत्यु-पर्यन्त 1920 तक (सिवाय 1894 के) निरन्तर आर्य समाज के प्रधान-पद पर बने रहे।

परन्तु यह सब तो प्रसंग से वर्णन करना पड़ा। अन्यथा आर्य समाज देहरादून का इतिहास लिखते समय सबसे पहले जो मूर्ति दिखाई पड़ती है—वह है पं० कृपाराम स्वामी। 29 जून 1879 को आर्य समाज की देहरादून में स्थापना होने पर पं० कृपाराम मंत्री चुने गये थे। 1879 से 1886 के बीच के पूर्ण आलेख उपलब्ध नहीं हैं। केवल इतना पता चलता है कि 1879 में मन्त्री बनने वाले पं० कृपाराम जी 1888 तक लगातार आर्य समाज के मन्त्री पद की जिम्मेदारी निभाते रहे। 10 फरवरी 1889 को मन्त्री-पद से त्याग-पत्र दिया परन्तु आर्य समाज का कार्य लगातार उसी उत्साह से करते रहे। गम्भीर अध्ययन और जाति के लिए तड़प का क्या ठिकाना! आर्य समाज देहरादून की स्थापना का मुख्य श्रेय इन्हें ही प्राप्त है। 1894 में आपने प्रधान-पद को सुशोभित किया। हमारे रिकार्ड से पता नहीं लग सका इनका स्वर्गवास कब हुआ। केवल यह पता लगा कि 1907 में आपके सुयोग्य पुत्र श्री केशवराम स्वामी आर्य समाज देहरादून के मन्त्री रहे। पं० केशवराम, विधवा विवाह के इतने प्रबल पोषक थे कि स्वयं अविवाहित होते हुए भी आपने एक विधवा से विवाह कर लिया और उस समय के समाज के सामने एक नया उदाहरण प्रस्तुत कर दिया। छोटी आयु में ही देहान्त हो गया। 1886 से 1904 तक का आर्य समाज का इतिहास एक प्रकार से वैदिक कालिज स्थापना का ही इतिहास है। सारे आलेख पढ़ डालिये, सारे पत्रक खंगाल डालिए, मुख्यतया कालिज स्थापना के लिए दौड़-धूप के सिवाय और कुछ न मिलेगा। पं० कृपाराम जी 1888 तक इस दौड़ में सबसे अगली पंक्ति में देखे जा सकते हैं।

भवन-निर्माण

आर्य समाज का अपना भवन था नहीं। आर्य पुरुष चिन्तित थे। अन्ततः 30 अप्रैल 1889 को अन्तरंग सभा ने अपने निश्चय संख्या 5 द्वारा जमीन का एक टुकड़ा मय पुराना मकान खरीदने का निर्णय ले लिया। परिणामतः जुल्फिकार अली नामक व्यक्ति से एक हजार सत्रह रुपये छः आने (1000 भूमि-मूल्य + 17 रु० 6 आने खर्चा) में भूमि खरीद ली गई। यह स्थान श्री लालसिंह दरोगा—मंत्री आर्य समाज देहरादून के नाम से खरीदा गया। हमारे आलेखों में वह प्रामाणिक दस्तावेज मौजूद है जिसकी रजिस्ट्री 12 जून, 1889 को की गयी थी।[1] उस पर 10/- रु० का स्टाम्प-पेपर लगा है। इसके साथ ही आठ आने के कागज पर एक दूसरा दस्तावेज मौजूद है जिसमें श्री लालसिंह दरोगा ने इस बात की पुष्टि की है कि मुंशी जुल्फिकार अली से 1000/-रु० में खरीदा गया स्थान जिसका बैनामा 4 जून, 1889 को और रजिस्ट्री 12 जून, 1889 में हुई, चाहे मेरे नाम से खरीदा दिखाया गया। (वैसे उसमें भी स्पष्टतया "मंत्री आर्य समाज" लिखा है)। परन्तु वास्तव में यह आर्य समाज की सम्पत्ति है। इसके धन की अदायगी आर्य सामाज देहरादून ने चन्दे के धन से (चन्दा एकत्र करके) की है। इसमें बने पुराने मकान की बहाली-नया मकान तामीर करके की गई है। भविष्य में

---

1. **पृष्ठ 251 से 254, जिल्द···अस्पष्ट···12 जून 1889—लफ्ज—440 रजिस्टर्ड बयनामा**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमान.

समाज मंदिर के पूरा कर-
ने के विषय में मेरी यह सम्मति है
कि लगेही काम मैं जैसे हो सके पूरा
करना ही ठीक है- काम के छूट जाने से
फेर मुश्किल से तैयार होगा -
यदि रुपया न हो तो कहीं बिलासूद
रुपया ~~लेकर~~ मिले तो लेकर काम
लगाया जावे- नहीं तो २/४ आना सूद
पर भी रुपया लेकर भी दूसरी मंजि
ल पूरा हो सकता है- समाज के हितैषी
धनाढ्य जन से यह सहायता हो सक
ती है-

आपका कृपाभिलाषी

क्षेमानन्द -

२१-५-८०

पं० क्षेमानन्द उपाध्याय का पत्र २१-५-१९८० जिससे प्रमाणित है कि भवन बना बनाया नहीं मिला बनवाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई झगड़ा खड़ा न हो इसलिए यह दस्तावेज लिख दी है। 19 जुलाई 1893 को इस दस्तावेज की रजिस्ट्री पं० आनंद नारायण प्लीडर की मारफत करायी गयी जो सरकारी रिकार्ड में पृष्ठ 81-135 जिल्द 11 रजिस्टर 4 में दर्ज है।

उस समय समाज के पास भवन-निर्माण हेतु कोई कोष न था। अन्तरंग सभा में उपस्थित सज्जनों ने धन-संग्रह कर दिया :—पं० कृपाराम व मोहनलाल 100/- रु०, श्री गोपाल सिंह 100/- रु०, श्री दरोगालाल सिंह 70/- रु०, ठा० मित्र जीतसिंह 30/- रु०, मुंशी अलखधारी 20/- रु०, चौ० फतेहसिंह 10/- रु०, ठा० केदार सिंह 25/- रु०, लाला भानामल 10/- रु०, पं० प्यारेलाल 10/- रु०, ला० मंगल सेन 10/- रु०, बाबू ज्योति स्वरूप 150/- रु०, बाबू हरस्वरूप 25/- रु०, बाबू बीरबल 25/- रु०, ला० रूपराम 10/- रु०, शेष 18 सदस्यों से 51/- रु०। इस प्रकार कुल 646/- रु० संग्रह हो गये। इसके अतिरिक्त और सज्जनों ने भी धन दिया। 763/- रु० आर्य समाज के कोष में डी. ए. वी. कालेज का फण्ड जमा था। वह रुपया भी भूमि-क्रय और भवन निर्माण में लगा दिया गया।

स्वामी महानन्द जी का योगदान

भूमि तो क्रय कर ली गयी पर भवन बनाना कौन-सा सरल कार्य था। इन्हीं दिनों, फरवरी 1889 में देहरादून आ गये, स्वामी महानन्द जी, जो जयपुर राज्य के किसी ग्राम में जन्मे थे, सौभाग्य से देहरादून में ही थे। भूमि क्रय कराने, भवन का आग्रह करने और भवन-निर्माण हेतु धन-संग्रह करने वालों में वे अग्रणी थे।

श्री हरविलास शारदा ने अंग्रेजी जीवन-चरित्र में पृष्ठ 52 पर लिखा "Swami Mahanand, a Dadupanthi leader was a man of learning. He however saw the Vedas for the first time with Swamiji. Swamiji's teachings converted him to the Vedic Faith, and he become a Vedic preacher. Mahanand library in Dehra Dun building is named after him". स्वामी महानन्द जी को महर्षि का प्रथम दर्शन 1867 में हरिद्वार के कुम्भ के अवसर पर हुआ था। वहीं प्रथम बार उन्होंने वेद की पुस्तक देखी थी। यह विद्वान संन्यासी, महर्षि से इतना अधिक प्रभावित हुआ कि उसकी जीवन-धारा ही बदल गयी। आर्य समाज द्वारा संचालित संस्कृत पाठशाला में संस्कृत पढ़ाते थे। बाबू ज्योति स्वरूप के निवास स्थान पर वास करते थे। (बाबू आर्य किशोर जी ने बताया था—जब बाबू ज्योति स्वरूप जी ने इनसे अपने मकान पर रहने और वहीं भोजन करने की प्रार्थना की तो इस मस्त फ़कीर ने कहा "क्यों बंधन लगाते हो। स्वतन्त्र पंछी को मुक्त विहार करने दो।" परन्तु पीछे इस शर्त पर वास और भोजन स्वीकार किया कि इसके बदले में बाबू ज्योति स्वरूप इनसे नित्य प्रति कम से कम एक घण्टा संस्कृत पढ़ा करेंगे। बाबू जी को संस्कृत सिखाने का श्रेय इसी महात्मा को है।) पाठशाला के समय को छोड़कर, शेष समय आर्य समाज भवन के लिए घर-घर द्वार-द्वार अलख जगाते थे। आर्य समाज देहरादून ने भी, नगर के समस्त नागरिकों की वृहद सभा का दो बार आयोजन किया और देहरादून की जनता से मन्दिर-निर्माण के इस कार्य के लिए मुक्त हस्त से दान देने की प्रार्थना की।

परिणामतः नीचे की मंजिल 1890 में बन कर पूरी हो गयी। 10,000/रु० से ऊपर खर्चा आया। उस समय देहरादून की जनसंख्या के अनुपात में वह एक अति ही विशाल भवन था।[1]

श्री पं० क्षेमानन्द जी के हाथ का लिखा 21-5-1890 का एक पत्र मेरी नजरों से गुजरा है जिसमें उन्होंने (पं० क्षेमानन्द जी पीछे चार वर्ष आर्य समाज के कोषाध्यक्ष रहे) श्री मंत्री जी को परामर्श दिया है "दो चार आने सूद पर भी रुपया लेकर दूसरा मंजिल पूरा हो सकता है।" "काम के छूट जाने से फिर मुश्किल से तैयार होगा।" डी. ए. वी.

---

1. 1827 में देहरादून की जनसंख्या 2126 थी। 1872 में 7316 थी। 1881 में 18959 थी और 1891 में 25684 (जनगणना रिपोर्ट)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालेज का इमानती रुपया भवन में लग गया। हजारों रुपया दान में मिला वह भवन में लग गया और जब इससे भी काम न चला तो आर्य समाज के हितैषी सज्जनों से रुपया उधार[1] लेकर काम पूरा किया गया।

आर्य समाज भवन के इस निर्माण में अत्यन्त सहयोग के लिए श्री स्वामी महानन्द जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन हेतु आर्य समाज ने इस भवन के महराब पर 'महानन्द आश्रम' अंकित करवा दिया। मुझे याद है पुराने भवन के महराब पर सीमेन्ट से लिखा गया, "महानन्द आश्रम आर्यसमाज" (यह महराब सेठ लक्ष्मीचन्द जी के सहयोग से बनी थी—रिकार्ड)' पानी बहता रहता है, साधु चलते रहते हैं। एक स्थान पर टिकते कहाँ हैं ? यह महात्मा 3 दिसम्बर 1893 को देहरादून से विदा हो गया। आर्य समाज ने सम्मानार्थ 50/- रु० भेंट किए। इसके पश्चात् केवल मार्च 1898 में समाज के वार्षिक उत्सव पर स्वामी जी के दर्शन होते हैं। इसके पश्चात् आर्य समाज के रजिस्टर केवल यह बताते हैं "स्वामी जी को लिखा जाये कि आवश्यकता हो तो धन मंगा लें।" (लेकिन समस्त रजिस्टर देख लेने पर भी) न तो इस महात्मा ने कभी मंगाया और न समाज को भेजना पड़ा। हमारे समाज के लेखागार से यह पता नहीं चलता कि यह विद्वान् परोपकारी साधु आखिर कहाँ चला गया।

भवन तो बन गया अब कर्जे उतारने का समय था। डी. ए. वी. कालेज सोसायटी ने ऋण शनैः-शनैः उतारने की अनुमति देकर आर्य समाज के अधिकारियों का सिरदर्द दूर कर दिया। और, जहाँ तक मुझे कागजों की याद है, लगभग 20 वर्षों में यह कर्जा चुकाया जा सका। व्यक्तिगत कर्जे भी आहिस्ता-आहिस्ता चुकता किये गये।

दरोगा लालसिंह

इस अवसर पर यदि दरोगा लालसिंह जी का वर्णन न करूँ तो कृतघ्न गिना जाऊँगा। जिन लोगों ने आर्य समाज के पौधे को अपने खून से सींच कर, रात-दिन एक करके, दीवानों की तरह ऋषि के मिशन को पूरा करने में सर-धड़ की

---

1. भवन निर्माण के लिए 1500 रु० बारह आने के ब्याज पर सेठ लक्ष्मीचन्द से उधार लिया गया। 10 जुलाई 1892 का यह दस्तावेज रिकार्ड में है जिस पर साढ़े सात रुपये का कोर्ट-स्टाम्प लगा है। एक हजार रुपया भवन निर्माण के लिए श्री पूर्णसिंह नेगी से आठ आने सूद पर "बग़र्ज पूरा कर देने तामीर आर्य समाज वाकया धामावाला" इस दस्तावेज पर 5/- रु० का स्टम्प-पेपर लगा है और 19 जुलाई 1890 की तारीख पड़ी है। यह एक रजिस्टर्ड डीड है पृष्ठ सं० 86-87 लफ्ज 330। यह धन अन्तरंग सभा के प्रस्ताव दि. 6 जुलाई 1890 के आधार पर लिया गया। इन दोनों ऋणों की धन-अदायगी की पक्की प्रामाणिक रसीदें मौजूद हैं। एक है 14 सितम्बर 1897 की और दूसरी 1891 की।

28 फरवरी 1890 की कार्यवाही में लिखा है "हस्ब प्लान मंजूरशुदा श्रीमती अंतरंग सभा मन्दिर तामीर किया जावे" यदि एतराज करना हो तो कैसे करें ? "जिस किसी साहब को ऐतराज करना मंजूर होवे तो वो साहब अन्तरंग सभा को मार्फत सैकेट्री साहब........................" पुरानी तामीर या मकान का क्या किया जाये ? "कसरत राय ने कभी तजवीज हुआ कि मकानात अभी गिराये जावें और वहाँ प्लैटफॉर्म होना चाहिए।"

7 अप्रैल 1890 की कार्यवाही में "तामीर मकान आर्यसमाज धामावाला" की रिपोर्ट का बहरूफ अंग्रेजी होना बताया गया है। और बाबू ज्योति स्वरूप से प्रार्थना की गयी है कि हिन्दी में अन्तरंग में पेश करें। 10 अप्रैल 1890 की कार्यवाही बिल्डिंग-फण्ड की पुष्टि करती है।

इस सम्बन्ध में इतना अधिक लिखना इस कारण जरूरी हो गया कि ग़लतफहमी दूर हो जाये कि आर्य समाज का यह भवन हमें स्वामी श्री महानन्द जी महाराज ने बना-बनाया दान में दिया था या कुटिया मय भूमि के दान में दी थी। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के इतिहास के प्रथम भाग तथा द्वितीय भाग के पृष्ठ 11 पर जो यह लिखा है कि कुटिया दान दी थी ये सब सुनी-सुनायी बातें हैं। तथ्य मैंने ऊपर लिख दिए हैं। भूमि मय निर्माणों के एक हजार सत्रह रुपये 6 आने में खरीद की गई थी। निर्माणों को गिरा कर भवन बनाया गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

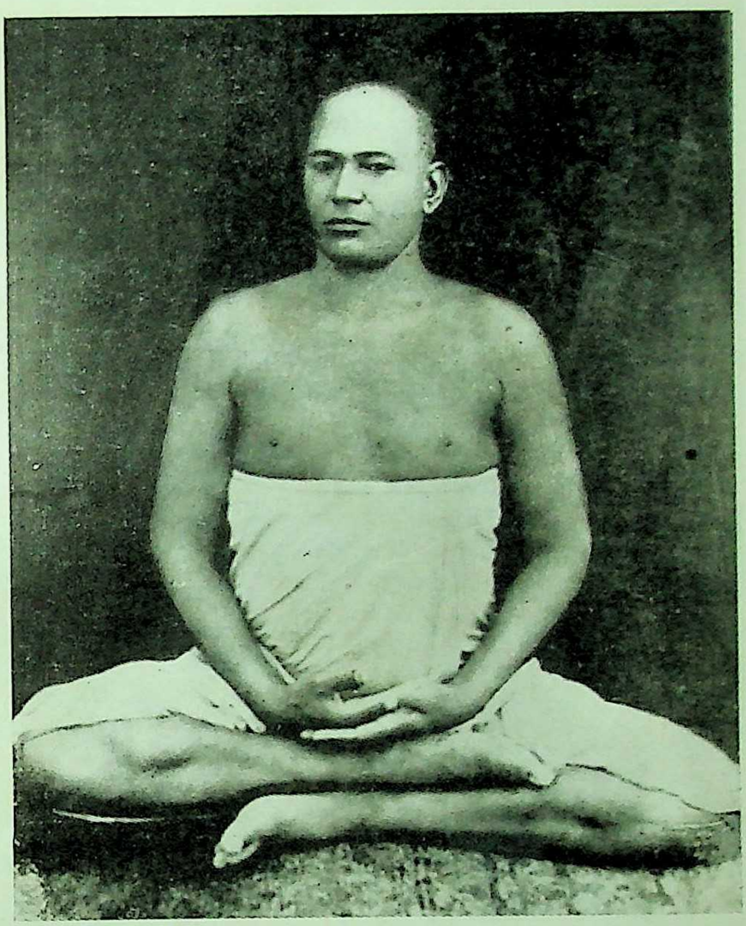

परमहंस - शिरोमणि विद्यानिधि
श्री १०८ स्वामी महानन्द जी महाराज, खंडेला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

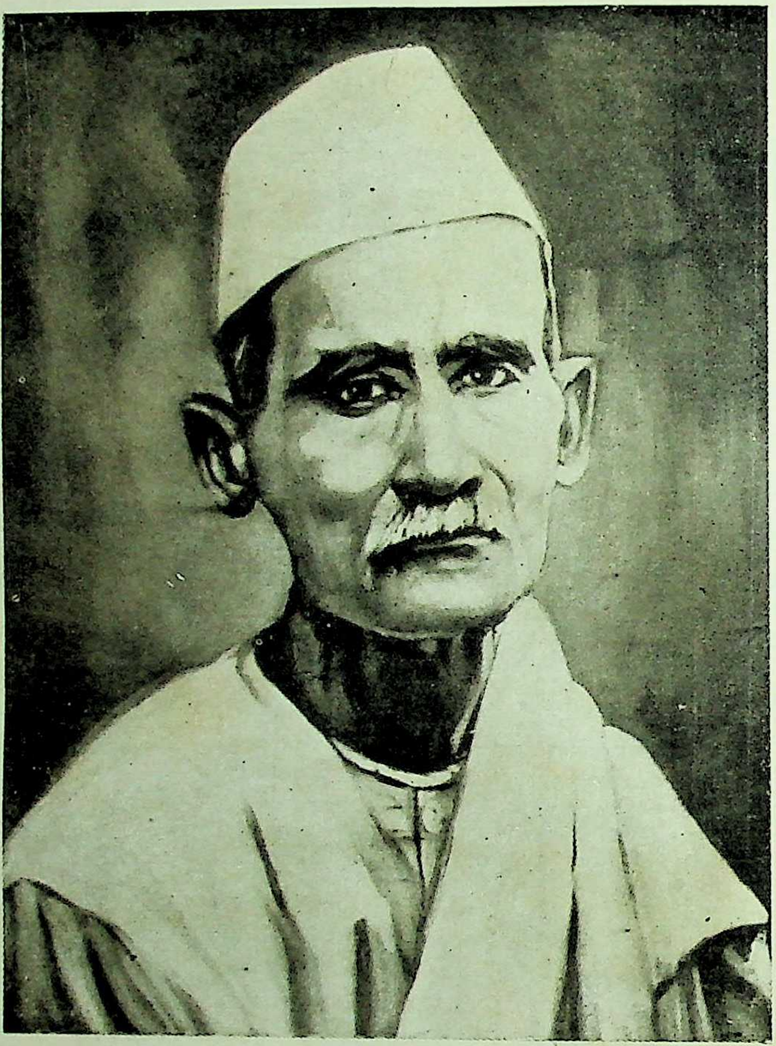

श्री नारायण दास भार्गव
(मुनि जी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाजी लगा दी थी, दरोगा लाल सिंह उन्हीं की तरह के एक नर-रत्न थे। आर्य समाज की स्थापना से लेकर जीवन-पर्यन्त यदि कोई एकरस काम में डूबा रहा है तो वह यही दरोगा लालसिंह है। मार्च 1903 में यह देदीप्यमान नक्षत्र अस्त हो गया। 5 अप्रैल 1903 पाँच बजे सायंकल जो प्रस्ताव बा० ज्योति स्वरूप ने प्रस्तुत किया था उससे पता चलता है कि उनके विछोह को कितनी भीषणता से लिया गया था, उनके वियोग से कितना गहरा घाव लगा था।" अगरचे वो एक मुद्दत दराज़ से बीमार होकर इस काबिल न रहे थे कि अपनी ताकत से चल-फिर सकें, फिर भी पालकी में सवार होकर समाज के वार्षिक उत्सव पर जो नगर कीर्तन हुआ उसमें भजन-मण्डलियों के हमराह शरीक होकर लगातार गश्त करते रहे और जो उपदेश आर्य समाज के पिण्डाल में 18-19 मार्च सन् 1903 को होता रहा उसमें बराबर मसनद के सहारे लेटे और बैठे हुए उपदेश और भजन सुनते रहे। ऐसे महापुरुषों के विछोह पर जिस कदर अफसोस किया जाय उचित है। आर्य समाज देहरादून दरोगा साहब का लगाया हुआ पौधा है—जिसकी सेवा दरोगा महोदय मन्त्री के रूप में सोलहा साल से बल्कि करीब उस जमाने से करते आ रहे थे जब से यहाँ समाज स्थापित हुआ है⋯⋯वफ़ात से जुदाई का अफसोस करता है⋯और उनके पुत्र बा० छज्जू सिंह आदि के प्रति सहानुभूति प्रकट करता है⋯" थोड़े ही समय के पश्चात् बाबू छज्जूसिंह का भी देहावसान हो गया और तब दरोगा लाल सिंह जी के पुत्रों महाशय सूरत सिंह, स्वरूप सिंह और अनन्त सिंह की देखरेख स्वयं समाज का कर्तव्य हो गया। जीवन भर जो कमाया आर्य समाज की भेंट करते रहे और दो पैसे जो हाथ में थे बीमारी की नजर हो गये। अन्तिम समय में बच्चों की रक्षा का कोई प्रबन्ध न रहा। अन्तरंग सभा के रजिस्टरों में वह प्रस्ताव दबा पड़ा है जिसमें इन बच्चों के लालन-पालन हेतु सहायता और स्कूल में मुफ्त शिक्षा के प्रयत्न की बात है। वाह रे दीवाने आर्य समाज के ! अपने बच्चों की भी सुध न ली। श्री सूरत सिंह का देहावसान भी हो चुका है।

मुंशी अलखधारी

दरोगा लालसिंह जी के समकालीन अलखधारी की याद बरबस आ जाती है। इस्लाम छोड़ कर वेद की शरण में आने वाले इस वीर ने क्या-क्या मुसीबतें नहीं उठायीं ? ठेकेदारी से जो कुछ कमाया, गुजारे से बचा, सो आर्य समाज की भेंट कर देना। मैंने हिसाब के कागजात देखे हैं जो बताते हैं कि कोई ऐसा मास नहीं है जिसमें अलखधारी ने अच्छी धन-राशि आर्य समाज को दान न दी हो। सरकारी नाली जो आर्य समाज मन्दिर के सामने है। (गेट के दोनों ओर बनी दुकानों के नीचे वाली नाली) उसके बन जाने से आर्य समाज की एक फुट जमीन, नाली की ओर आर्य समाज की छूट गयी थी। नाली के ऊपर कारनिस निकाली गयी—ताकि आर्य समाज का स्थान सुरक्षित रहे। यह कानिस बनाने का समस्त व्यय मुंशी अलखधारी ने अपने पास से दिया था। यह कारनिस 1909 में बनी थी। यानी इस नाली में एक फुट जमीन आर्य समाज की शामिल है, शेष नगर पालिका की है।

आर्य समाज के भवनों को अपने सामने खड़े होकर बनाने का समस्त श्रेय इसी महात्मा को है। अन्त समय में आर्थिक हालत यह थी कि अक्तूबर, 1917 में देहान्त होने पर 19/- रुपये सवा सात आने खर्च करके समाज ने इनकी अन्त्येष्टि की। (रिकॉर्ड के अनुसार)

हिन्दु जाति की संकीर्णता और तत्कालीन समाज की कमज़ोरी का यह हाल था कि हिन्दू वर न मिलने पर उन्हें अपनी बेटी का विवाह एक मुसलमान से ही करने पर बाध्य होना पड़ा। स्वयं जवानी में विधुर हो गये थे। हिन्दू लड़की देते न थे और मुसलमानों से शादी करते न थे। बस लंगोट बांध कर सारा जीवन निकाल दिया।

पं० क्षेमानन्द उपाध्याय

इसी पीढ़ी के आर्यों में एक देदीप्यमान नक्षत्र और है। वह हैं पं० क्षेमानन्द उपाध्याय। उपाध्याय जी नम्बर 8 ग्राण्ट में रहते थे। गोरखा जाति के ब्राह्मण थे। पुरोहिताई करते थे। एक बार रक्षाबन्धन के अवसर पर अन्य ब्राह्मणों को

पृष्ठदाता
कर्मशियल मोटर्स, गाँधी रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँगते और तिरस्कृत होते देख कर इस वृत्ति से अश्रद्धा हो गयी। पिताजी का देहावसान हो चुका था। रुपये की बड़ी तंगी थी, फिर भी आपने पुरोहिताई शुरू नहीं की। 16 वर्ष की आयु, आंग्ल भाषा का अध्ययन और फिर शीघ्र ही जीवनयापन की योग्यता प्राप्त कर ली। एक बार अतिसार रोग ने आ पकड़ा। गिड़गिड़ा कर शालिग्राम जी से प्रार्थना की, मिन्नतें माँगी पर अतिसार नष्ट न हुआ। तो शालिग्राम की मूर्ति उठा कर नदी में फेंक दी और आर्य समाज की ओर बढ़ चले। धीरे-धीरे स्वास्थ्य बढ़ा। शनैः-शनैः कट्टर आर्य बन गए। अपनी ही मेहनत से थोड़े ही दिनों में उन्नति करते-करते वन-विभाग में हैड-क्लर्क हो गए। विद्या-प्रचार की रुचि अब प्रकट होने लगी तो नम्बर आठ ग्रांट में एक पाठशाला खोली, दूसरी नालापानी में खोली, रायपुर में कन्याओं के लिए तीसरी पाठशाला खोल दी। सम्भवतः यह पाठशाला सरकारी प्रबन्ध में चली गयी हैं। कालेज ट्रस्ट सोसायटी के आजीवन सदस्य रहे। पेंशन लेने के पश्चात् आपने वैदिक परम्परा का पालन कर, वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश कर लिया और नालापानी में रहने लगे। प्रचार की धुन बढ़ती जाती थी—"सत्य नारायण की कथा" "पवित्र होली" "श्रीकृष्ण जन्माष्टमी" ये पुस्तकें हिन्दी में लिखी और प्रकाशित करायीं। "गोरखा धर्म प्रकाश" नेपाली भाषा में लिख कर प्रकाशित किया। इन्हीं के सुपुत्र पं० नित्यानन्द (राय साहब) जीवन-भर आर्य-समाज का कार्य बड़े उत्साह और लगन से करते रहे। आर्य समाज के रजिस्टरों में 19 जून 1906 का प्रस्ताव है जिसमें पं० क्षेमानन्द जी की धर्मपत्नी के स्वर्गवास पर दुःख प्रकट किया गया है। आगे फिर साप्ताहिक सत्संग की पुस्तक में 15 जून 1918 का वह प्रस्ताव अंकित है जिसमें पं० क्षेमानन्द जी उपाध्याय के निधन पर हार्दिक दुःख प्रकट किया गया है। समय की गति ही ऐसी है। जिनके बिना एक पल भी नहीं रहा जा सकता वे चले जाते हैं, फिर भी संसार के समस्त कार्य पूर्ववत् चलते रहते हैं। श्री पं० नित्यानन्द जी के सुपुत्र श्री शिवानन्द उपाध्याय हमारी समाज के सदस्य हैं। वे इस समय जिला को-आपरेटिव बेंक के किसी बड़े पद पर हैं।

श्री पूर्णसिंह नेगी

इसी पहली पीढ़ी में, श्री पूर्णसिंह जी नेगी का वर्णन करना अत्यन्त आवश्यक है। मोहल्ला मानसिंह वाला के प्रख्यात रईस और जमींदार श्री नेगी महाशय ने डी. ए. वी. कालेज के निर्माण के लिए लाखों रुपये की भूमि दान में दे दी। इस भूमि में डी. ए. वी. डिग्री कालेज—डी. ए. वी. इन्टर कालेज और डी. वी. एस. कालेज स्थित हैं। आपने स्कूल, पाठशाला और छात्रावास के लिए भवन-निर्माण करा कर डी. ए. वी. स्कूल, 'पूर्ण पाठशाला' और 'पूर्ण आश्रम' की स्थापना की। ऐसे दानवीर पुरुष आर्य समाज के गौरव हैं। लगभग ढाई लाख रुपये की सम्पत्ति उस समय के हिसाब से दान दी गयी थी। आज उसका मूल्य 70-80 लाख रुपये से क्या कम होगा ? उस दानवीर ने हाथ का अंगूठी तक उतार कर सर्वस्व दान कर दिया था।

इनके अलावा कुछ और भी स्मरणीय महात्मा हैं जो आर्य समाज की पहली पीढ़ी की नींव के पत्थर हैं—जिन पर आर्य समाज आन्दोलन की सौ साला इमारत का विशाल भवन खड़ा है।

बाबू लक्ष्मण सिंह

समाज के आरम्भ होने पर बड़ा काम करते रहे। सरकारी पेंशन लेकर जंगल में निवास करने लगे। आपका पुत्र हीरासिंह वन-विभाग में उच्च पद पर आसीन था।

पृष्ठदाता

एस० एस० गुप्ता एंड संस, 30–सी, सेवकाश्रम रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

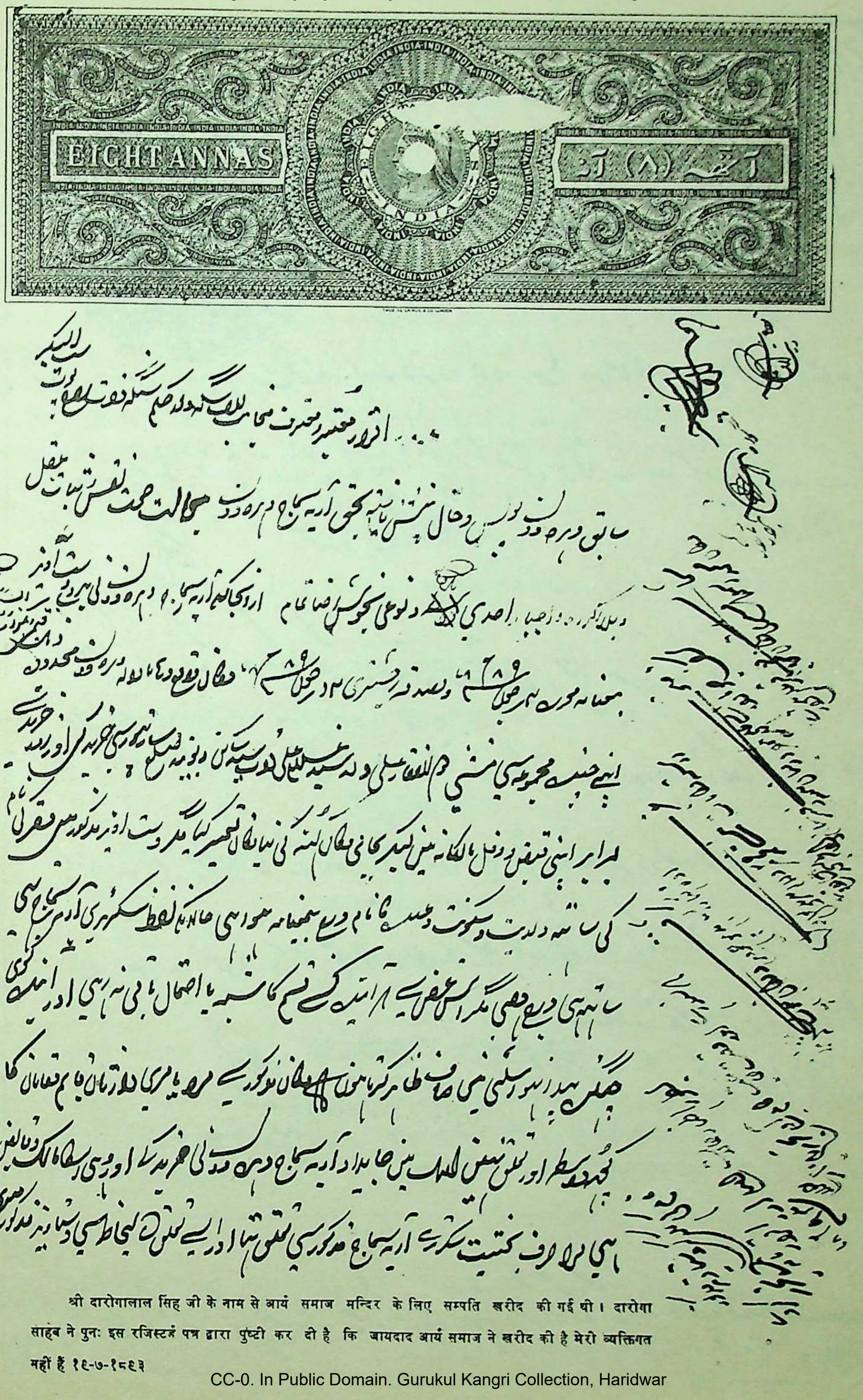

श्री दारोगालाल सिंह जी के नाम से आर्य समाज मन्दिर के लिए सम्पति खरीद की गई थी। दारोगा साहब ने पुनः इस रजिस्टर्ड पत्र द्वारा पुष्टी कर दी है कि जायदाद आर्य समाज ने खरीद की है मेरी व्यक्तिगत नहीं है १६-७-१८६३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

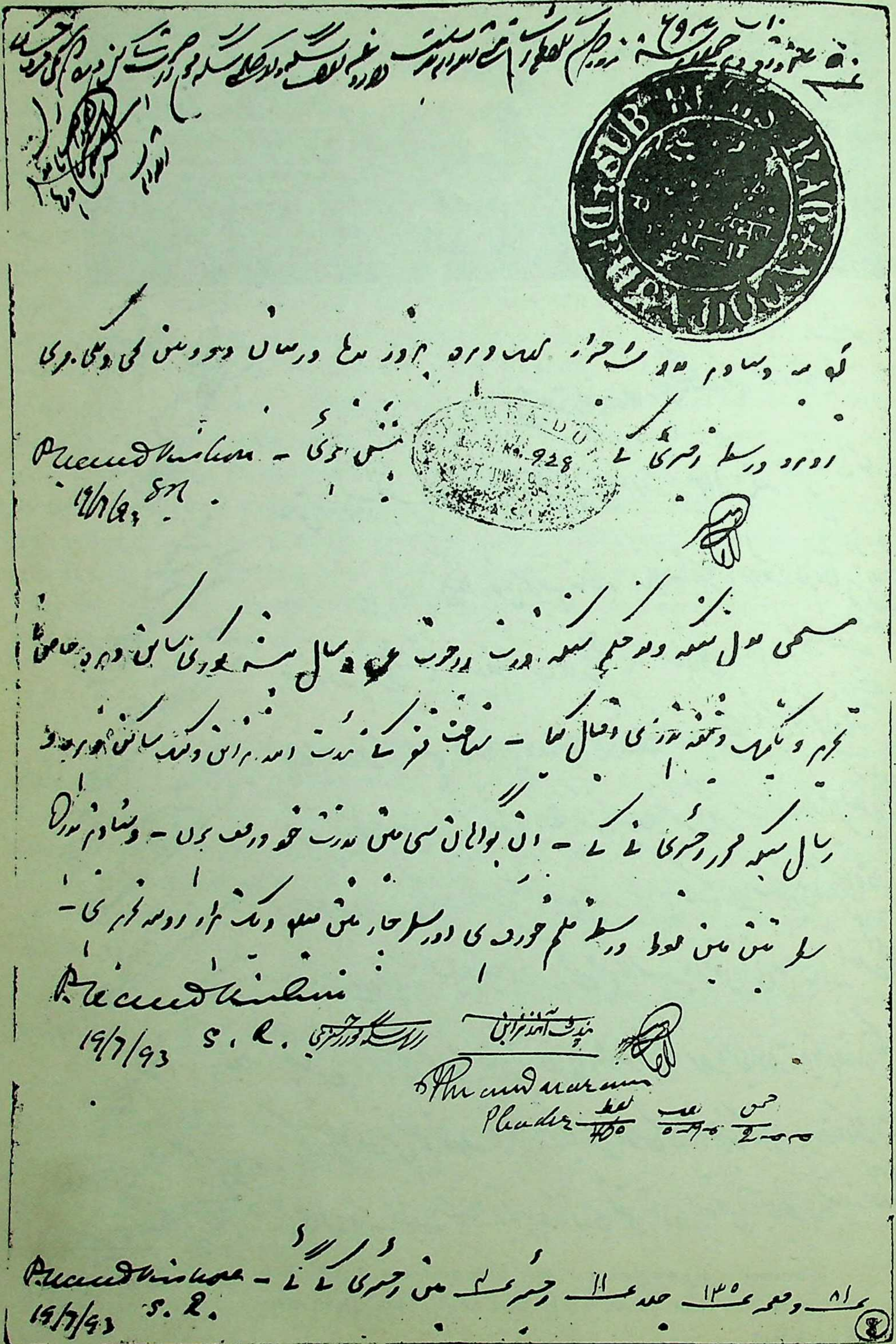

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठाकुर मित्रजीत सिंह

आर्य समाज देहरादून के आरम्भिक कार्यकर्त्ता थे। समाज के मन्त्री भी रहे। आपके सुपुत्र ठाकुर मनजीत सिंह अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि, उच्च कोटि के वक्ता और समाजसेवी थे। आर्य समाज का कार्य मरण-पर्यन्त करते रहे। ठा० मित्रजीत सिंह के देहावसान के समय मनजीत सिंह की उम्र बहुत कम थी। विधवा बहन पर बोझ पड़ा। बाबू ज्योति स्वरूप, मित्रजीत सिंह के मित्र थे। उन्हीं के प्रयत्न से पहले डी. ए. वी. कालेज में फिर पीछे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से बी. ए. किया। मनजीत सिंह 1921 में असहयोग आन्दोलन में अग्रणी रहे। उस समय वे कांग्रेस के एकछत्र नेता थे। दो बार एम. एल. सी. चुने गये। आर्य समाज के उप-प्रधान भी रहे। अन्तिम समय में अकेले डालनवाला में रहते थे। मुझे उनकी अंतिम यात्रा की याद है। 1940 और 45 के बीच की बात है जब आर्य समाज के कर्मचारी ने इनकी मृत्यु की सूचना दी थी। मुनि जी, वर्मा व वैद्य अमरनाथ जी के साथ मैं भी गया था। मृत्यु कई दिन पूर्व हो चुकी थी। शरीर फूल गया था। आर्य समाज के ही लोगों ने नदी किनारे उनका संस्कार किया था। दाह-संस्कार के समय उनकी बेटी मौजूद थी। देहरादून नगर के हजारों लोग और गढ़वाल के दुर्भिक्ष में हजारों पीड़ित ऐसे हैं जिनके मन से ठाकुर मनजीत सिंह की याद कभी न मिट सकेगी।

पं० गोवर्धन प्रसाद

महर्षि के उपदेश सुनकर आर्य समाजी बने थे। वन-विभाग में कार्यरत थे। बड़े उत्साही थे। 55 वर्ष की वय में शरीर छूट गया।

बाबू हुकम सिंह

उप प्रधान रहे, प्रधान रहे, सदा समाज के हित का ही ध्यान रखते थे। सदा समाज-सेवा के लिए व्यग्र रहते थे।

बख्शी कुन्दन लाल

यहाँ के रईसों में गिने जाते थे। मन्दिर निर्माण में अत्यन्त सहयोग दिया था।

श्री गंगाप्रसाद कायस्थ

1885 में देहरादून आये थे। सर्वे में उच्च पद पर आसीन थे। समाज के मंत्री रहे। डी. ए. वी. कालेज संचालन में अत्यन्त रुचि लेते थे।

बाबू हरस्वरूप कायस्थ

वन-विभाग में रेंजर थे—आर्य समाज के भवन-निर्माण में अत्यन्त सहायक सिद्ध हुए। लकड़ी का सारा प्रबन्ध इन्हीं ने कर दिया। पीछे इन्हें राय साहब की उपाधि मिली। भवन-निर्माण का कार्य अपने-आप खड़े होकर करवाते रहे। आर्य समाज की नींव में इन पवित्र आतमाओं ने अपने शरीर को गारा और मिट्टी बना कर खपा दिया है। आने वाली

पृष्ठदाता
श्रीमती विद्यावती नांगिया, 3, मोहिनी रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीढ़ियाँ इनके कार्यों को आदर्श बना कर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर चल सकने में समर्थ होंगी। आर्य समाज की इस पहली पीढ़ी ने कितने उत्साह और जोश व लग्न से कार्य किया होगा, इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि—"1891 की जनगणना में मुसलमान के बाद आर्य समाजी अल्प संख्यक वर्ग के रूप में उभर कर सामने आये। इनकी जनसंख्या 784 है जो 1911 में 1355 हो गयी।···आर्य समाज में अधिकतर ब्राह्मण राजपूत और बनिये हैं। कुछ सुनार, जाट और कायस्थ हैं।" (गज़ेटियर पृष्ठ 118)

पहली पीढ़ी के आर्य कार्यकर्त्ता

आर्य समाज की दूसरी पीढ़ी का आरम्भ होता है बाबू आर्य किशोर जी से। परन्तु इस दूसरी पीढ़ी पर आने से पूर्व 1879 से 1928 तक आर्यसमाज देहरादून ने क्या कुछ किया? आर्य समाज की गतिविधि किस प्रकार की रही? यह जानना अवश्य लाभप्रद होगा। 12-6-1886 को आर्य उपदेशक पाठशाला की स्थापना की गयी। इसका लक्ष्य संस्कृत का और सिद्धान्तों का प्रचार कर सकने वाले आर्य तैयार करना था। श्री स्वामी महानन्द जी भी इसी में पढ़ाते थे। 6-8-1893 को अन्तरंग सभा ने नगर में वाचनालय और पुस्तकालय की आवश्यकता को देखते हुए पूर्व की ओर का दुमंजिला कमरा इस निमित्त दे दिया। इसमें 'महानन्द पब्लिक लाइब्रेरी' खोल दी गई। ऊपर जाने के लिए पृथक सीढ़ी पक्की बनायी गयी। 1921 के लगभग आर्य समाज को स्थान की जरूरत पड़ी और तब यह संस्था टूट गई। बहुत-सी पुस्तकें खुशीराम जनता पुस्तकालय व वाचनालय को दे दी गई। बाबू गंगा प्रसाद इस संस्था के स्थायी मंत्री रहे।

8-10-1893 को अन्तरंग सभा ने प्रस्ताव पारित किया कि जब तक कोई मांस-भक्षण न छोड़ेगा, आर्य समाज का अन्तरंग सदस्य, अधिकारी, सभासद, उपदेशक, प्रतिनिधि या परोपकारी सभा या कालेज-कमेटी का सभासद् नहीं रह सकेगा। निश्चय ही इस प्रस्ताव से मांसाहार में कुछ कमी हुई होगी।

आर्य समाज का भवन बनाने में एक व्यक्ति चौबे जगजीवन लाल ने कुछ सहायता देना आरम्भ किया। आर्य समाज ने उन पर विश्वास करके धन का अधिकार भी उनके अधिकार में दे दिया। उन्होंने इस विश्वास का अनुचित लाभ उठाया और कुछ धन अपने काम में लगा लिया जो उनसे कभी वसूल न हो सका।

17-12-1894 को गवर्नर बहादुर के आगमन पर आर्य समाज ने भी द्वार बनवाया था। शायद यह दिखाना मकसद था कि हम लोग भी राजा के शुभचिन्तक हैं।

दारोगा जानकीदास ने अपनी एक दुकान जो अस्पताल से लगी अज़मलखां रोड पर थी आर्य समाज को दान दे दी। यह दुकान 25-11-1917 को 519/- रु० पौने सात आने में बेच दी गई। इसी में से 500/- रु० स्थायी कोष में जमा कर दिये गये।

7-6-1897 को विक्टोरिया महारानी के राज्यारोहण के 60 वर्ष पूर्ण होने पर सारे देश की भाँति आर्य समाज देहरादून ने भी राज-भक्ति दिखाने हेतु दीपमालिका की। 24-1-1901 में रानी की मृत्यु पर शोक प्रकट करने हेतु तार भी दिया गया।

1899 में प्रसिद्ध विद्वान पं० गणपति शर्मा को आर्य समाज की प्रचार-सहायता हेतु रखा गया। इससे समाज के प्रति लोगों की बड़ी श्रद्धा उत्पन्न हुई। यह तो रिकार्ड से पता नहीं चलता कि यह वही पण्डित गणपति शर्मा हैं जिनका,

पृष्ठदाता

श्री सुरेन्द्रकुमार, 33, तिलक मार्ग, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीछे स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज से 'वृक्षों में जीवन' विषय पर शास्त्रार्थ हुआ था। सम्भावना है कि यह वही होंगे। 20-5-1917 का एक प्रस्ताव है जिसमें पण्डित गणपति शर्मा उपदेशक आर्यसमाज यू० पी० की असामयिक मृत्यु पर शोक प्रकट किया गया है। आर्यसमाज अजमेर की ओर से उनकी माता की सहायतार्थ एक फण्ड खोला गया और 5/- रु० एक साथ, तथा 2/- रु० मासिक 12 मास तक देने तय किये गये।

20-10-1900 को एक क्षत्रिय विधवा का विवाह किया गया। महाराज टिहरी श्री कीर्तिशाह बहादुर विदेश यात्रा से लौटे। आर्य समाज ने बड़े समारोहपूर्वक उनका सत्कार किया। महाराज ने 200/- रु० समाज को दान दिया। यह वह समय था जब विदेश की यात्रा करने वाला धर्म से च्युत माना जाता था।

16-10-1900 में पुराने सभासद् मास्टर गोपालसिंह का छोटी आयु में देहावसान हो जाने पर एक रात्रि-पाठशाला उनकी स्मृति में आर्य समाज मन्दिर में स्थापित करने का प्रयत्न किया गया और मृत्यु पर शोक प्रस्ताव किया गया।

1901 में पं० आर्य मुनि जी तथा पंडित देवदत्त जी ने यहाँ रहकर संस्कृत पुस्तकें लिखीं।

29-4-1902 को सर कर्नल प्रतापसिंह का, जो पीछे जनरल हो गए, बड़े समारोहपूर्वक स्वागत किया गया और उन्हें मानपत्र दिया गया।

14-12-1902 को दिल्ली दरबार में प्रचार-हेतु आर्य समाज ने अपने कोष से 20/- रु० और एक शामियाना भेजा था।

1903 में जहाँ दरोगा लाल सिंह हमसे बिछुड़ गये वहीं लाला बलदेवसिंह जी रईस के युवा और होनहार पुत्र मोहन की मृत्यु भी हो गयी। इस मृत्यु ने बलदेव सिंह जी को भक्तराज बलदेव सिंह बना दिया। आर्य समाज के शोक-प्रस्ताव से भक्तराज को बहुत सन्तोष प्राप्त हुआ। भीमगोड़ा (हरिद्वार) के पास बना 'मोहन आश्रम' इसी युवक की स्मृति में है।[1]

पं० जगत सिंह उपदेशक सनातन धर्म सभा ने शास्त्रार्थ की चर्चा की। पं० आर्य मुनि जी को बुलाया गया। उनके आने पर सबने मौन धारण कर लिया।

26-1-1904 को श्री पूर्णसिंह नेगी द्वारा स्थापित की गयी संस्कृत पाठशाला की प्राण-प्रतिष्ठा की गयी।

कालेज-कमेटी को 763/- रु० कर्ज का प्रोनोट मय 5/- रु० ब्याज के लिख कर दिया गया।

---

1. श्रीकृष्ण मुनि जी वानप्रस्थी (पूर्व नाम ला० किशोरी लाल जी) भूतपूर्व कोषाध्यक्ष आर्य समाज देहरादून ने बताया कि भक्तराज बलदेव सिंह जी आर्य समाज के काम में निरन्तर लगे रहते थे। एक भजनोपदेशक अपने खर्चे से अपने यहाँ रखते थे। "एक बार हम एक बारात में कालसी से देहरादून आए थे। वेश्याओं का नाच होना था। हमने विरोध किया। वर-पक्ष ने नाच बन्द कराने की शर्त यह रख दी कि—यदि नाच बन्द कराना होगा तो आर्य समाज के किसी भजनोपदेशक के भजनों का प्रबन्ध बदले में हो। हम उसी समय प्रबन्ध कैसे करते? किसी ने सुझाया कि आर्य समाज तो नहीं परन्तु भक्तराज बलदेव सिंह इस कार्य में सहायता कर सकते हैं। हम भागे उनके पास पहुँचे। उनके पुत्र मोहन का स्वर्गवास हो चुका था। भक्त जी ने मेरा नाम पूछा। मैंने बताया 'किशोरी लाल'। बोले बहुत अच्छा नाम है किशोरीलाल 'मोहन'। अच्छा किशोरीलाल 'मोहन' आप हमारे भजनोपदेशक जी को ले जाओ। बारात की सब समस्या हल हो जाएगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

8-7-1904 को डी० ए० वी० स्कूल का उद्घाटन बड़े समारोह से किया गया। इस स्कूल के प्रथम हैड मास्टर बाबू हीरालाल जी सूद बी० ए० नियुक्त हुए। यह सज्जन पीछे जाकर कोटा राज्य के चीफ जज बने। बाद में श्री कान्तिप्रसाद व प्रिन्सिपल लक्ष्मण प्रसाद जी की देख-रेख में यह संस्था दिन-प्रतिदिन उन्नति पथ पर चलने लगी।

1905 में देहरादून में बड़ा भयंकर भूकम्प आया, जिससे बड़ी हानि हुई। बहुत से मकान गिर गये। आर्य समाज मन्दिर भी एक स्थान से फट गया जिसकी पीछे मरम्मत करा दी गयी।

1905 में कुमार सुबोधनी सभा की स्थापना की गयी जिसके मंत्री बाबू आर्य किशोर बनाये गये। आर्य समाज देहरादून व डी० ए० वी० कालेज का वार्षिक उत्सव आधे-आधे व्यय पर सम्मिलित रूप से मनाया गया।

1907 में डा० जयचन्द जी की अकाल मृत्यु हो गयी। इन्होंने आर्यसमाज की सेवा बड़ी लगन से की थी और देहरादून में ही बस गये थे। यह लाला लाजपतराय के दामाद थे।

1908 में सोसायटी (डी० ए० वी०) का 380/- रु० आठ आने कर्ज में से लौटा दिये गये। इसके बाद सोसायटी का बकाया धन चुकाया गया। और प्रोनोट वापिस ले लिया गया।

3-1-1909 की अन्तरंग सभा में आर्यसमाज मसूरी की अन्तरंग सभा ने निश्चय करके एक पत्र भेजा कि यदि आर्य समाज मसूरी टूट जाये तो देहरादून समाज को पूर्ण अधिकार रहेगा कि मसूरी आर्य समाज की जायदाद व धर्मशाला का प्रबन्ध यह समाज अपने हाथ में ले ले। अन्तरंग से यह स्वीकार किया।

इसी वर्ष में डी० ए० वी० कालेज के निमित्त 2000/- रु० धन-संग्रह का निर्णय किया गया। श्री कान्ति प्रसाद जी हैड मास्टर अत्यन्त उत्साह से घर-घर धन-संग्रह भी करते और पारिवारिक सत्संग भी करते थे। आर्यसमाज का प्रचार खूब बढ़ा।

हिन्दुओं की जनसंख्या

12-12-1910 की जनगणना में अपने को हिन्दू लिखाने का निर्णय किया गया।

12-12-1910 आर्यसमाज के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता लाला लालचन्द जी की मृत्यु हो गयी। इसी वर्ष बाबू बलदेव प्रसाद जी भी परलोक सिधार गये। बाबू द्वारिकादास भी स्वर्गस्थ हुए। पंजाब के सुप्रसिद्ध आर्य राय साहब सोहनलाल जी की मृत्यु पर शोक-प्रस्ताव पारित किया गया। इसी वर्ष लार्ड हार्डिंग पर फेंके गये बम की निन्दा की गयी।

वर्ष 1913 ई०

13 अप्रैल 1913 को डोईवाला में आर्य समाज की स्थापना हो गई। स्त्री आर्य समाज का कार्य भी शुरू हो गया। प्रति शनिवार अधिवेशन लगने लगा जो आज तक उसी रूप में चल रहा है।

1914 में राय साहब हीरा सिंह जी सर्वे में बड़े अधिकारी थे और आर्य समाज देहरादून के मजबूत स्तम्भ थे, उनकी सेवाओं के बदले सरकार ने उन्हें राय साहब की उपाधि प्रदान की। आर्य समाज ने प्रस्ताव द्वारा उपाधि प्राप्ति पर प्रसन्नता व्यक्त की।

पृष्ठदाता
काशीराम फूलचन्द एन्ड सन्स, पीपल मंडी, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

25-9-1914 को उपदेशक पुरोहित महोदय को आज्ञा दी गयी कि संस्कारों में जो कुछ प्राप्त हो उसमें से केवल एक रुपया रख कर शेष समाज को दिया करें। पं० भद्रदत्त जी के साथ एक भजनोपदेशक रखने का भी निर्णय किया गया। हारमोनियम खरीदने के लिए 25/- रु० स्वीकार किए गये।

13-12-1914 को आंगन में ईंट लगाने के लिए 200/- रु० व्यय स्वीकृत किया गया। यह फर्श 1918 में 180/- रु० साढ़े पाँच आने में लगा, उस समय पं० अमरनाथ जी वैद्य मंत्री थे।

30-8-1915 को आर्य समाज मन्दिर में बिजली और पंखा लगाने की स्वीकृति दी गयी।

वर्ष 1917 ई०

1916-1917—डी० ए० वी० सोसायटी में प्रतिनिधित्व हटाये जाने पर बराबर लिखा-पढ़ी चलती रही। उस दिन से आज तक निरन्तर हमारा प्रतिनिधित्व घटता रहा है और हम उस पर हमेशा विरोध प्रकट करते रहे हैं। इसी वर्ष हमारे कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री मदन सिंह गोरखा जी ने अपनी सम्पत्ति का एक ट्रस्ट बनवा दिया।[1] पं० बद्रीनाथ त्रिपाठी 30/- रु० मासिक पर जिला-प्रचार हेतु नियुक्त किये गये। इनके साथ भजनोपदेशक रखने के लिए भक्तराज बलदेव सिंह जी ने खर्चा देना स्वीकृत किया।

धौलपुर आर्य समाज का मन्दिर महाराजा की आज्ञा से गिरवा दिया गया था। 25-8-1918 को 50/- रु० सत्याग्रह हेतु भेजे गये। स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी के सत्याग्रह के पश्चात् समझौता हो गया। महाराज ने मन्दिर बनवाना स्वीकार कर लिया। ओल्ड डिस्पेन्सरी रोड पर स्थित जो मकान आर्यसमाज को दरोगा जानकी दास द्वारा दान में मिला था, 519/- रु० पौने सात आने में बेच दिया गया।

वर्ष 1918 ई०

1918—लाला अनिरुद्ध कुमार जी से 300/- रु० प्रचार के निमित्त प्राप्त हुए।

पं० क्षेमानन्द जी का देहावसान इसी वर्ष हो गया।

इस वर्ष भयंकर इन्फ्लूएंजा फैल गया, और सैकड़ों लोग काल के गाल में चले गये। जनता की सहायता हेतु "आर्य सेवक मण्डली" का निर्माण बुद्ध शरण जी के नेतृत्व में किया गया जिन्होंने बड़ी लगन से यह कार्य सम्पन्न किया। पं. गोवर्धन जुयाल निवासी हाथी बड़कला की पत्नी तथा उनके अन्य सम्बन्धियों की इन्फ्लूएंजा से मृत्यु हो जाने के कारण, उनके नवजात शिशु का पालन-पोषण एक समस्या बन गयी। पं० अमरनाथ जी वैद्य ने इस बालक को पुत्रवत् पाला और इसका नाम सुरेन्द्र नाथ रखा। अब श्री सुरेन्द्रनाथ जी बम्बई में हैं और फिल्म उद्योग में कार्यरत हैं। श्री देवेन्द्र प्रभाकर पं० अमरनाथ जी वैद्य के अपने पुत्र हैं। आर्य समाज ने इस कष्ट के अवसर पर जनता की खूब सेवा की। आर्य समाज के आंगन में ईंटों का फर्श लग गया इससे प्रांगण में बड़े उत्सव मनाने का स्थान हो गया। एक शौचालय इस वर्ष और बनाया गया।

---

1. काजी मदन सिंह के वसीयतनामे की छपी प्रति हमारे रिकार्ड में हैं। यह वसीयतनामा 23 जून 1917 को लिखा गया। उनकी मृत्यु के पश्चात् 21-9-1917 को रजिस्ट्रार के सम्मुख प्रस्तुत हुआ और 14-11-1917 को रजिस्टर्ड हुआ। रजिस्टर्ड सं० 17 पुस्तक III, खण्ड 5, पृष्ठ 84 से 89, 14-11-1917।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय में 225 पुस्तकें तथा एक अलमारी बाबू गोवर्धन प्रसाद जी ने दी। जमनीपुर ग्राम के आर्यों पर आरोप लगाया गया कि इनके कुएँ पर चढ़ने से कुआँ खराब हो गया। इन्हें मामला चलाने के लिए 50/- रु० सहायता दी गई।

वर्ष 1920-21

1920—बा० ज्योति स्वरूप जी का इसी वर्ष स्वर्गवास हो गया।

1921—बिजली लगाने के लिए 200/- रु० स्वीकृत हुए और 9 बत्तियाँ लेने का निर्णय किया गया।

पं० बद्रीदत्त जी उपदेशक तीन वर्ष कार्य करके वापस प्रतिनिधि सभा को लौटा दिये गये। नये उपदेशक पं० विद्याव्रत जी रखे गये। वेतन 30/- रु० निश्चित किया गया और यह भी निश्चय किया गया जो भी संस्कारों से आय हो वह आर्य समाज के कोष में जमा की जावे।

आर्य कुमार सभा के अधिवेशन कुछ प्रतिबन्धों के साथ करने की अनुमति दी गयी।

'महानन्द लाइब्रेरी' इस वर्ष टूट गयी और इसके स्थान पर आर्य समाज ने एक पृथक् पुस्तकालय खोल दिया। इस वर्ष अंग्रेज सरकार के विरुद्ध असहयोग आन्दोलन तेजी पर रहा। आर्य समाज के अनेक वीरों ने अदम्य साहस तथा उत्कृष्ट राष्ट्रभक्ति का परिचय दिया। चौधरी हुलास वर्मा जी, मंत्री आर्य समाज, पर मुकद्दमा चलाया गया और उन्हें जेल भेज दिया गया। गांधी जी के आदेशानुसार आपने मुकदमे की पैरवी नहीं की। आर्य समाज ने इन्हें बधाई दी और कुटुम्ब का भार वहन करने का आश्वासन दिया। पंजाब-केसरी लाला लाजपतराय भी इन्हीं दिनों जेल भेजे गये। आर्य समाज ने उन्हें भी बधाई दी। श्री हुलास वर्मा जी के स्थान पर बाबू रामप्रसाद जी समाज के मंत्री बनाए गए।

इसी वर्ष के अन्त में मालाबारान्तर्गत "मोपला विद्रोह" नाम से पुकारे जाने वाली दुःखद घटना घटी। आर्य समाज ने पृथक् रूप से अपील निकाली। जो धन-संग्रह हुआ वह मालाबार-फण्ड में पूज्य महात्मा हंसराज जी को, जो इसका अखिल भारतीय स्तर पर संचालन और प्रबन्ध कर रहे थे, भेज दिया गया।

वर्ष 1922 ई०

22-7-1922 मास्टर हुलास वर्मा जी जेल से वापस आ गए। आर्य समाज ने हार्दिक स्वागत किया। वार्षिक उत्सव पर अछूत कहे जाने वाले भाई बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए।

1-10-1922 की साधारण (चुनाव) सभा में निश्चय किया गया कि आर्य समाज देहरादून की समस्त सम्पत्ति की रजिस्ट्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के नाम करा दी जाए।

8-10-1922 को पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को 16 मास के लिए जेल भेज दिया गया। आर्य समाज ने बधाई दी।

पृष्ठदाता

इण्डिया हाउस, 66, सुभाष मार्ग, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्धि-सभा आगरा (मलकानों की शुद्धि) को ठोस सहयोग दिया गया। एक स्वयंसेवक कार्य करने के लिए आगरा भेजा गया। उसका व्यय भी हमारी समाज ने दिया। भिक्षा-मण्डली प्रतिदिन सायंकाल इस निमित्त भिक्षा के लिए निकलती रही।

1923—वृहद् सहभोज चारों वर्णों का किया गया।

श्रीमद् दयानन्द जन्म शताब्दी मथुरा के निमित्त 500/- रु० देने का वचन दिया गया। इस निमित्त धन-संग्रह शुरू कर दिया गया।

अनाथालय की स्थापना

17-2-1924 को अन्तरंग सभा ने एक आर्य अनाथालय खोलने का निर्णय किया और इसके लिए अधिकारी भी नियत कर दिए गए जो कार्य को पूर्ण कर सकें। श्री गुलाब नबी, सेक्रेटरी, अहमदिया जमात से शास्त्रार्थ हुआ परन्तु झगड़े की स्थिति हो जाने पर बन्द कर दिया गया।

माजरा में हरिजन भाइयों के कुएँ पर चढ़ने पर आपत्ति की गयी। आर्य समाज द्वारा उनकी सहायता की गयी।

इस वर्ष अति वृष्टि होने के कारण देहरादून में जन-धन की बड़ी भारी हानि हुई, जिससे आर्य समाज को अपना वार्षिक उत्सव स्थगित करना पड़ा।

1924 में 14 से 21 फरवरी तक दयानन्द जन्म-शताब्दी मथुरा में मनायी गयी। आर्यों के उत्साह का कुछ ठिकाना न था। स्पेशल ट्रेनें धड़ाधड़ मथुरा जा रही थीं। स्त्री-पुरुष, बच्चे उत्सुकतापूर्वक नया उत्साह, नयी उमंग लिए मथुरा पहुँचे। आर्य समाज देहरादून से भी 150 लोग सम्मिलित हुए। ऋषिराज के प्रति कितना प्रेम, कितनी श्रद्धा है, देखते ही बनता था। मथुरा का शताब्दी-समारोह का जलूस दर्शक जीवन-भर न भूल सकेंगे।

20-10-1924 को पुनः साधारण सभा ने आर्य समाज भवन की रजिस्ट्री सभा के नाम कराने का प्रस्ताव दोहराया।

2-3-1925—आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन 1926 को देहरादून में करने का निमन्त्रण भेजा गया। 1926 में ही हरबर्टपुर के चाय बगीचे के अंग्रेज मालिक ने हरिजनों का कुएँ पर चढ़ना रोका। आर्य समाज ने मुकदमे की। पैरवी की और विजयश्री पायी। विपक्ष का मामला खारिज हो गया।

इसी वर्ष मिस्टर फ्लावर जिलाधीश ने मसूरी आर्य समाज के नगरकीर्तन पर प्रतिबन्ध लगा दिया। हमारे प्रयत्नों के बावजूद प्रतिबन्ध न हट सका।

शुद्धि-कार्य

आर्य समाज अपने जन्म-काल से शुद्धियाँ करता आया है और उसमें कभी भी शिथिलता नहीं आने दी। परन्तु इस वर्ष एक कटु अनुभव हुआ। हेनरी जान विलियम नामक ईसाई की शुद्धि की गयी। उसकी पत्नी और 5 बच्चे भी साथ

पृष्ठदाता
इण्डिया क्राफ्ट्स इम्पोरियम, 1—ए, रेसकोर्स, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही शुद्ध हो गए। बीमार था, आर्थिक सहायता भी दी गयी। बच्चों को शिक्षा और पोषण हेतु बरेली भेजा गया। परन्तु इस कृतघ्न ने बीमारी से ठीक हो जाने पर आरोप लगाया कि समाज ने मेरे बच्चों को बहका कर गायब कर दिया है। पुलिस छान-बीन से जब मामले की सत्यता प्रकट हुई तब कहीं जाकर यह मामला आगे जाने से रुका। इसी वर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा ने यह निश्चय किया कि आर्य समाज के सदस्य कांग्रेस में भाग ले सकते हैं। इस प्रस्ताव से आर्य समाज में खुशी की लहर दौड़ गयी। लोग खुल कर सामने आने लगे।

प्रतिनिधि सभा अधिवेशन

3, 4, 5, व 6 अप्रैल 1925 को प्रतिनिधि सभा का अधिवेशन बड़ी धूमधाम से देहरादून में सम्पन्न हुआ। इस उत्सव पर बड़े संन्यासी, महात्मा और उपदेशक पधारे थे। एक विशाल, प्रभावशाली जलूस निकाला गया था। जिले की समस्त समाजों ने आर्थिक सहयोग दिया था जिसमें डी० ए० वी० कालेज का विशेष सहयोग था। अतिथियों का सेवा-भार बाबू लक्षमण स्वरूप जी प्रिंसिपल डी० ए० वी० कालेज के अनुभवी व बलिष्ठ कन्धों पर था। सब सुचारु रूप से सम्पन्न हुआ। कुल 1500/- रु० व्यय हुआ।

1926—वैद्य अमरनाथ जी द्वारा प्रदत्त धातु निर्मित्त ओ३म् पताका इस वर्ष आरोपित की गयी। नया भवन बनने पर अब वह नहीं रही। फुलसनी आर्य समाज को 30/- रु० सहायता दी गयी। (अब यह समाज नष्ट हो गया है।)

आपसी फूट का अभिशाप

यही वह अभागा वर्ष है जिसमें आर्य समाज में फूट की आग भड़क उठी और बात-बात में झगड़े होने लगे। इस वर्ष के चुनाव से पं० विद्याव्रत जी व उनके साथी सन्तुष्ट न हो पाए। अब जैसे आग में घी पड़ गया हो, गृह-युद्ध चरम सीमा पर पहुँच गया। एक के बजाय दो आर्य समाजें बन गयीं। एक यही आर्य समाज और दूसरी सिटी आर्य समाज। आधे लोग वहाँ चले गए और आधे यहाँ रह गए। एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप खुलकर होने लगे। यह गृह-युद्ध लगभग 6 वर्ष तक चलता रहा। इससे आर्य समाज की प्रतिष्ठा को गहरी चोट पहुँची। इस सारे कलह का वर्णन करने का कोई लाभ नहीं है। केवल संक्षेप में यह गाँठ बाँध लेने की बात है कि आर्य समाज का कोई वेतन-भोगी या लाभ उठाने वाला आर्य समाज का सभासद् (वोटर) न होना चाहिए। यदि इस बात का ध्यान रखा गया होता तो सम्भवतः यह स्थिति उत्पन्न ही नहीं हुई होती जिससे इतना भयंकर विस्फोट हुआ।

अंग्रेजी शासन से टक्कर

वर्ष 1927 :—बरेली में आर्यसमाज मन्दिर का अपमान और मसूरी में प्रतिबन्ध का समाज ने डटकर विरोध किया। उस समय के उत्तर प्रदेश के गवर्नर के विरुद्ध समाज ने जो प्रस्ताव स्वीकार किया था, वह सब समाचारपत्रों को प्रकाशनार्थ भेजा गया था।

Whereas Sir William Marris, Governor, United provinces had failed to do his duty impartially and to hold the balance even between different communities inhabiting united provinces, this public meeting calls upon him to resign his office and thus help in restoration of peace,tranquility in this province, 8-8-1927.

प्रस्ताव का समर्थन किया था पंडित अमरनाथ जी वैद्य, स्वामी विचारानन्द, श्री महावीर त्यागी व पंडित भद्रदत्त ने।

पृष्ठदाता

गुजराल प्रोविजन स्टोर, न्यू मंडी, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज के सेवकों की दूसरी पीढ़ी

पहली पीढ़ी समाप्त हुई। उन्होंने जो कुछ किया और जो रिकार्ड पर था सो मैं लिख चुका। दूसरी पीढ़ी का आरम्भ उन लोगों के द्वारा हुआ जिन्होंने पहली पीढ़ी से कार्य-पद्धति सीख ली थी, जान ली थी और समझ ली थी। सौभाग्य यह था कि यह दूसरी पीढ़ी देशभक्ति के रंग में रंगी, त्यागवृत्ति की धनी, सेवा के क्षेत्र में जिस लग्न और उत्साह से उतरी, उसने आर्य समाज को आर्य समाज की चार दीवारी से निकाल कर घर-घर में श्रद्धा का पात्र बना दिया। स्वतन्त्रता-आन्दोलन की धुरी यह समाज हो गयी। हिन्दी-आन्दोलन की सर्वेसर्वा हो गयी। समाज-सेवा का प्रत्येक क्षेत्र आर्य समाज के कार्यकर्ताओं की कार्यस्थली बन गया। आर्य समाज रूपी पादप पर फूलों की बहार आई।

दूसरी पीढ़ी के कार्यों का ब्योरेवार वर्णन करने से पूर्व, आगे बढ़ने से पूर्व, कुछ मुख्य कार्यकर्ताओं का वर्णन करना चाहूंगा।

श्री केदार नाथ जी

आप रिटायर्ड सर्जन थे। पल्टनों के साथ विदेशों में यात्राएँ किया करते थे। उसी समय आप सूबेदार बना दिये गए। ब्रह्मदेश में भी कार्य किया। चाहे कहीं रहे, किसी रूप में रहे, आर्य समाज की सेवा और प्रचार के कार्य लग्न से करते रहे। एक बार समाज के प्रधान भी रहे।

लाला मुन्शी राम जी

देहरादून में सन् 1900 में रेल-लाईन आ गयी थी। आप नार्थ वैस्टर्न रेलवे में स्टेशन मास्टर थे। रिटायर्ड होने पर देहरादून में ठेकेदारी आरम्भ कर दी। बड़े ठेकेदारों में गिनती होने लगी। समाज के बड़े उत्साही कार्यकर्ता थे। दो बार समाज के प्रधान भी रहे। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती निहाल देवी भी वर्षों आर्य समाज की अन्तरंग सदस्या रहीं। आपके सुपुत्र बाबू काशी नाथ (जो बहुत दिन नगर पालिका में प्रतिनिधि रहे) आर्य समाज की सेवा करते रहे और आपके पोते श्री सत्य प्रकाश 'नवनीत' भी हमारे सदस्य हैं।

प्रिंसिपल लक्ष्मण प्रसाद जी

इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सर्वप्रथम एम० ए० करने वाले तीन छात्रों में से आप एक थे। डिप्टी कलक्टर बनाये गये परन्तु नौकरी पसन्द नहीं आयी। त्यागपत्र स्वीकार भी हो गया और आप खालसा कालेज अमृतसर के उप-प्रधानाचार्य नियुक्त हुए। वहाँ से छोड़ने पर डी० ए० वी० स्कूल देहरादून के प्रिंसिपल बने। आपके उत्साह और उद्योग से डी० ए० वी० स्कूल इण्टर कालेज बन गया। अत्यन्त सुन्दर व्यवस्था थी। आपके नियन्त्रण की सारा नगर प्रशंसा करता था। कॉलेज का सहयोग आर्य समाज के प्रत्येक कार्य के लिए मिलने लगा। पत्नी का देहावसान हुआ तो उस समय आप 35 वर्ष के थे। उसके पश्चात् पूर्ण निष्ठापूर्वक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए सारा जीवन विद्या के प्रचार-प्रसार और आर्य समाज के कार्यों में लगा दिया। एक वर्ष आर्य समाज के मंत्री रहे। वर्षों प्रधान रहे। प्रान्तीय सभा का अधिवेशन देहरादून में बुलाना, आप ही का कार्य था। 1886 में प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा के प्रथम प्रधान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनने का श्रेय भी आप ही को प्राप्त है। 19 मई 1936 को देहरादूर में ही स्वर्ग सिधारे। हजारों दून वासियों ने अत्यन्त श्रद्धापूर्वक श्रद्धांजलियाँ अर्पित की थीं।

श्री उमराव सिंह

श्री उमराव सिंह जी के देहावसान पर मन्त्री जी ने 1932 में अपनी वार्षिक रिपोर्ट में लिखा—"इनकी असामयिक मृत्यु से आर्य समाज को भारी क्षति पहुँची। वे आर्य समाज के एकमात्र कार्यकर्ता थे। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि आर्य समाज का 50 वर्षीय इतिहास अवश्य प्रकाशित किया जाये। परन्तु यह इच्छा, पूरी न हो सकी।" लुधियाना के नामी रईस थे। जैन परिवार में जन्मे थे। आर्य समाज के सारे प्रचार-तन्त्र का संचालन यही करते थे। संस्कृत पाठशाला में अध्यापक थे।

बाबू राम प्रसाद जी व माता लक्ष्मी देवी जी

यह आर्य समाज का एक ऐसा युगल था जिसे पुराने आर्य कभी भी विस्मरण न कर सकेंगे। कर्णपुर से चल कर आर्य समाज में आना, आंधी हो या तूफान, कभी व्यवधान नहीं ! वर्षों आर्य समाज के कोषाध्यक्ष रहे। इनके दो पुत्रियाँ और एक पुत्र हैं। इनकी एक बेटी सत्य भामा फौजदारी के नगर के प्रसिद्ध वकील श्री पूर्णसिंह से विवाही गयी हैं।

श्री मदन सिंह जी

'गोरखा प्रेस' के संचालक श्री मदन सिंह आर्य समाज के उप-प्रधान व मन्त्री रहे। इसी शताब्दी समारोह पर जिस 'वैदिक धर्मशाला' का शिलान्यास किया जा रहा है वह साढ़े चार बीघे भूमि में निर्मित भवनों सहित इन्ही मदन सिंह जी द्वारा छोड़ी जायजाद पर बनेगी। ट्रस्ट के डीड की एक छपी प्रति हमारे लेखागार में है। भाई लक्ष्मण देव जी के सतत् प्रयत्न से, बड़े मुकदमे लड़ने के पश्चात्, यह सम्पत्ति वापस ट्रस्ट को मिली है।

श्री निरंजन नाथ जी

आप लाहौर से आकर देहरादून में रहने लगे थे। डी० ए० वी० छात्रावास में मुख्य अधिष्ठाता थे। कई बार समाज के मन्त्री बने। बड़े उत्साही थे। पीछे जम्मू-तवी चले गये।

मास्टर देवी दयाल

हमारे बहुत उच्च कोटि के कार्यकर्ता थे। धन संग्रह की कला में अति निपुण थे। चकरौता में आर्य समाज की स्थापना करने वालों में मुख्य रहे। सेना-विभाग में स्टोर कीपर थे। पीछे बदली हो जाने पर कलकत्ता चले गये।

श्री रामचन्द्र सहाय

तहसीली स्कूल में मुख्य अध्यापक थे। अच्छे कार्यकर्ता थे। समाज के कई बार मन्त्री भी रहे।

पृष्ठदाता

श्री मुलखराज बत्रा, निरंजनपुर, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० नरदेव शास्त्री

वेद के प्रसिद्ध विद्वान् तथा आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। जिले में कांग्रेस आन्दोलन के प्राण थे। सुदूर दक्षिण हैदराबाद में जन्मे थे। कार्यक्षेत्र यह जिला बन गया। महाविद्यालय ज्वालापुर का सारा प्रबन्ध वर्षों आपके हाथ में रहा। आर्य समाज के प्रधान रहे। सिकन्दराबाद गुरुकुल के भी अधिष्ठाता रहे। आजन्म ब्रह्मचारी रहे। स्वतन्त्रता-आन्दोलन में न जाने कितनी बार जेल यात्राएँ कीं। चरित्र के धनी थे। देश स्वतन्त्र होने पर देहरादून नगर के पहले विधानसभा-सदस्य चुने गये। परन्तु पीछे राजनैतिक तिकड़मों से इतने खिन्न हो गए कि कांग्रेस का टिकट दूसरी बार लेने से इन्कार कर दिया। पं० अमरनाथ जी वैद्य का कचहरी मार्ग पर स्थित मकान सदा इनकी रैन बसेरा था। वे अनेक ग्रन्थों के प्रणेता हैं।

लाला रूड़ामल

आपने अपनी समस्त सम्पत्ति आर्य समाज के कार्यों में दान कर दी और स्वयं वानप्रस्थ ग्रहण कर लिया।

लाला फूलचन्द

देहरादून के प्रख्यात रईस थे। बड़े उत्साही और समाज-सेवी थे। वर्षों समाज के कोषाध्यक्ष रहे। जैन परिवार में जन्मे थे परन्तु सारा जीवन ऋषि-मिशन को पूरा करने में लगा दिया। श्री उग्रसेन बैरिस्टर जिनसे हम सब भली-भाँति परिचित हैं, लाला फूलचन्द जी के भाई हैं। श्री फूलचन्द जी स्थानीय डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध-समिति के मन्त्री थे। इन्होंने एक उपन्यास भी लिखा था "उदय प्रकाश"।

लाला आर्य किशोर

1926 से 1932 तक का समय आर्य समाज देहरादून के जीवन में अत्यन्त कठिन समय था। आर्य समाज का कार्य चल भी रहा था और बढ़ भी रहा था परन्तु आपसी झगड़ों और कलह के कारण हमारा गौरव अवश्य घटा था।

बाबू आर्य किशोर जी के हौंसले से यह संकट का समय भी उत्साह से पार हो गया। आर्य समाज भवन की संलग्न भूमि (जिस भाग में नयी संगमरमर की यज्ञशाला बनी है और गली में चार दुकान हैं) खरीद ली गयी। 1-9-1930 को रजिस्ट्री आर्य समाज के नाम हो गयी (नं० 665 बुक नं० 1 वोल्यूम 185 पृष्ठ 152)। यह भूमि कालू कहार से खरीदी गयी थी। इसकी रजिस्ट्री का दस्तावेज मौजूद है। कालू कहार की वंशावली भी हमारे रजिस्टर में मौजूद है। रजिस्ट्री वगैरा का समस्त व्यय मिला कर 2394/- रु० इस भूमि की खरीद पर व्यय किया गया था। हम खरीद का समस्त श्रेय भी बाबू आर्य किशोर जी को ही है।

उधर श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम के निमित्त श्री लाला मुकन्दलाल रईस से चार बीघा डेढ़ बिस्वा भूमि दान में प्राप्त करना भी आपका ही काम था। इसी भूमि पर 16 अक्टूबर 1929 को आश्रम की नींव आदरणीय मोहनदास कर्मचंद गाँधी ने रखी। बाबू जी ने न केवल भूमि का ही प्रबन्ध किया बल्कि अथक परिश्रम करके आश्रम का पूरा भवन बनाकर खड़ा कर दिया और इसे आदर्श संस्था बना दिया। हमारे कागजात साक्षी हैं। बाबू जी 1906 में आर्य कुमार सभा के मन्त्री बने और 1910 से आर्य समाज की अन्तरंग सभा के सदस्य थे। कुछ ही वर्ष पूर्व सितम्बर 1970

पृष्ठदाता
कैलाश इलैक्ट्रिक ट्रेडिंग कम्पनी, पल्टन बाजार, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में उनका देहली में देहावसान हो गया और अगले ही वर्ष सन् 1971 में उनकी धर्मपत्नी भी परलोक सिधार गयीं। परन्तु उनकी यश-पताका श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम के रूप में सदा लहराती रहेगी। श्री हरिशचन्द जी, इनके दामाद, देहली में रहते हैं।

मास्टर गौरी शंकर

1910 की याद आई तो मास्टर गौरी शंकर भी याद आयेंगे ही। 1910 की आर्य समाज की अन्तरंग सभा में यह नाम पहली बार सम्मिलित हुआ है। कौन जानता था कि यह उत्साही नवयुवक भविष्य में आर्य समाज की दूसरी पीढ़ी में आर्य समाज की समस्त गतिविधियों का केन्द्र बन जाएगा ? कार्य को सुचारु रूप से चलाने, संगठन को मजबूत बनाने, और वर्षों मन्त्री रहकर आर्य समाज को उन्नति के पथ पर अग्रसारित करने का श्रेय इन्हें प्राप्त है।

महन्त मेहर दास तथा बाबूराम प्रसाद जी

आपने इस समाज की शुद्ध भाव से बड़ी सेवा की। ये लोग 1911 में अन्तरंग सभा के सदस्य बने थे। आर्य समाज के मन्त्री, उपमन्त्री, और कोषाध्यक्ष रहे और बहुत सेवा की।

पं० अमरनाथ वैद्य

1912 में अन्तरंग सभा में एक नया नाम दिखायी देता है वह है श्री अमरनाथ वैद्य शास्त्री का। पंजाब प्रान्त को छोड़कर जिन्होंने देहरादून को अपना घर बना लिया। सिद्धान्तों के प्रचार के लिए न दिन देखा न रात। प्रचार ही मानो जिनका जीवन बन गया था। ये हिन्दी के प्रबल समर्थक थे।[1] वर्षों आर्य समाज के मन्त्री रहे, प्रधान रहे। अन्तरंग सभा ही क्या जिस भी सभा में यह श्वेत दाढ़ी वाली भव्य मूर्ति आ विराजे—वह सभा, सभा बन जाए ! ऐसी शुद्ध हिन्दी कि ढूंढ़ने पर भी उर्दू या अंग्रेजी का शब्द उसमें न मिले ! धोती-कुर्ते के अतिरिक्त कभी दूसरे वेश में मैंने उन्हें देखा नहीं। शीतकाल में गरम चादर और ऊपर आ जाती थी। किसी सभा में जावें, किसी के दुःख-सुख में सम्मिलित हों, सब जगह आर्य समाज की ही बात कहेंगे। स्वतन्त्रता-आन्दोलन में जेल-यात्राएँ भी कीं। समाज-सेवा रक्त में इतनी रम गयी थी कि मुझे याद नहीं पड़ता कि कभी किसी मृत्यु की सूचना वैद्य जी को मिली हो और वैद्य जी उस शव-यात्रा में न गए हों। दूसरों के दुःखों को बाँट लेने वाला यह महात्मा अब हमको छोड़कर सदा के लिए चला गया।

पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार पालि-रत्न

पं० अमरनाथ वैद्य जी का नाम आया तो पं० चन्द्रमणि जी का साथ आएगा ही। वेदों के प्रसिद्ध विद्वान्, निरुक्त के भाष्यकार, पाली भाषा के मर्मज्ञ विद्वान्, गुरुकुल कांगड़ी के प्रारम्भिक स्नातक, मूलतः जालन्धरवासी थे परन्तु ट्रंक-फैक्टरी खोल बैठे देहरादून में। कहाँ वह वेद का पाण्डित्य और कहाँ यह ठक-ठक ? मेल बैठा नहीं। अन्ततः 'भास्कर प्रेस' नाम से एक मुद्रणालय चलाना आरम्भ किया (यह छापाखाना उनके बड़े पुत्र सुमेध कुमार जी चला रहे हैं। हमारे सदस्य हैं।) "दून समाचारपत्र भी निकालना शुरू कर दिया (अब भी निकल रहा है)। बीसियों ग्रन्थ लिखे। बाल्मीकि के रामायण के प्रक्षिप्त अंश निकालकर शुद्ध रामायण कई भागों में हिन्दी भाष्यसहित प्रकाशित की। आर्य समाज की ओर से एक शास्त्रार्थ भी सोलन में किया। गूढ़ विषयों पर खोजपूर्ण भाषण करते थे। वर्षों समाज के मन्त्री व प्रधान रहे।

---

1. जो निमन्त्रण पत्र हिन्दी में न आते थे उन संस्कारों, कार्यों और पर्वों में सम्मिलित होने से वैद्य जी इन्कार कर देते थे। जीवन-पर्यन्त यह प्रण निभाया। परिणाम यह निकला कि सैकड़ों लोगों ने अंग्रेजी छोड़कर हिन्दी में निमन्त्रण-पत्र छपवाने आरम्भ कर दिए। अंग्रेजी के छपे निमन्त्रणों में शामिल न होने की प्रेरणा लेखक को इन्हीं से मिली है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

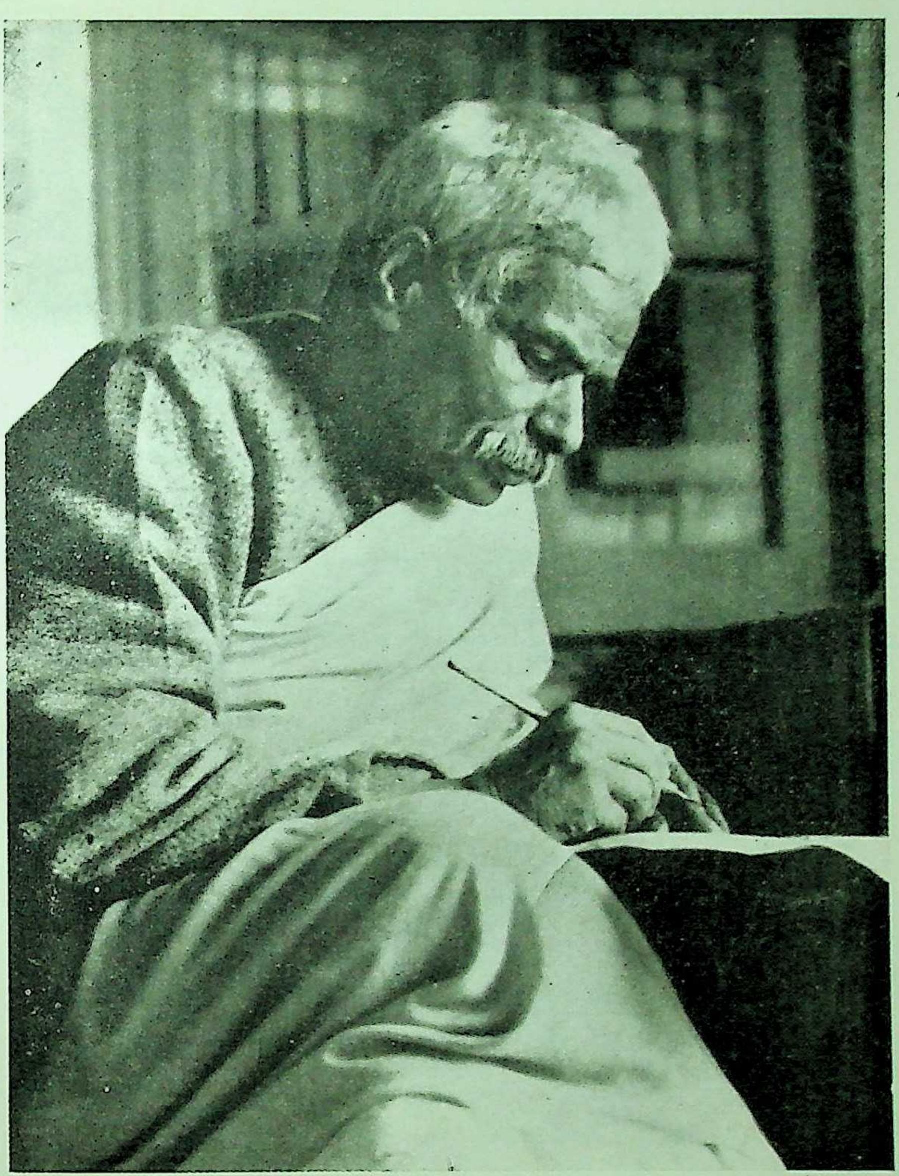

आचार्य पं० नरदेव जी शास्त्री

वेद तीर्थ सदस्य विधान सभा, पूर्व प्रधान आर्य समाज देहरादून,
कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री पन्ना लाल मित्तल

संस्थापक आर्य इन्टर कालेज, सुभाष नगर, देहरादून

इसी परिवार ने सुभाष नगर आर्य समाज के लिए
भूमि दान दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितनी ही बार अंग्रेज के कोप-भाजन बने और जेल यात्राएँ कीं। हैदराबाद सत्याग्रह के लिए देहरादून से प्रथम जत्था लेकर गए। साहसी, स्पष्ट-वक्ता और निडर व्यक्ति थे। स्वभाव से जिद्दी थे, सत्य से प्यार था। मुझे याद है कि 1942 में जब सरकार ने वार्षिक उत्सव पर निकलने वाले हमारे जलूस को नियन्त्रित करना चाहा तो पण्डितजी ने घोषणा की थी—"न जलूस का समय बदला जाएगा, न जलूस का मार्ग बदला जाएगा। हम कोई प्रतिबन्ध स्वीकार नहीं करते। सरकार गोली चलाना चाहे, शौक से चलाए। मैं सबसे आगे रहूँगा।"

मुझे याद है धारा 144 तोड़कर जलूस निकाला गया और जलूस वास्तव में जलूस था। मैं स्वयं जलूस में शामिल था।

चौधरी हुलास वर्मा

बिजनौर में जन्मे। महाविद्यालय ज्वालापुर में अध्यापक नियुक्त हो गए। बस उसी दिन से मास्टर जी प्रसिद्ध हो गए। साहस के अद्भुत धनी, दिल के साफ, खरी कहने में कभी चूके नहीं। देश और धर्म के लिए ऐसी तड़प कि चैन से सोने न दे! स्वतन्त्रता-आन्दोलन चला तो आपकी कपड़े की दुकान सरकार ने जब्त कर ली। दो बार आपका प्रेस नीलाम हो गया। पर बाह रे दीवाने! उमंग और बढ़ गयी। स्वतन्त्रता का ऐसा कोई आन्दोलन नहीं जिसमें ये जेल न गए हों। जेल से बाहर पीछे आते, अन्दर जाने की तैयारी पहले शुरू हो जाती। अनाथालय को कभी रुपये की कमी कैसे पड़ती जब वर्मा जी अधिष्ठाता थे? आर्य समाज के वर्षों मन्त्री रहे, वर्षों प्रधान रहे, उपप्रधान तो शायद बीसियों वर्ष रहे। अपना कोई स्वार्थ नहीं। जब तक वर्मा जी आर्य समाज मन्दिर में रहे नित्य का संध्या हवन कभी टला नहीं। व्यायाम वृद्धावस्था में भी कभी छूटा नहीं। जनता की सेवा में सारा जीवन अर्पण करने वाले वर्मा जी छठे दशक में प्रभु को प्यारे हो गये।

श्री नारायण दास भार्गव

'मुनि जी' के नाम से प्रसिद्ध देहरादून का यह समाज सेवी कभी भुलाया न जा सकेगा। रिवाड़ी से आकर देहरादून में बस गए थे। देहरादून में लोगों पर जितने ऋण इस महामानव के हैं उनकी गिनती नहीं है। आर्य समाज के सामाजिक कृत्यों को देखकर और उनसे प्रभावित होकर आर्य समाज की ओर आकृष्ट होने वाली यह विभूति, अद्भुत योग्यता, साहस, कार्य-कुशलता, एकाग्रता की धनी थी। बी० ए० पास थे। व्यापारी थे। अपनी पत्नी श्रीमती रमा देवी की स्मृति में आर्य समाज मन्दिर में रमा अतिथिशाला अपने दान से बनवायी थी। देहरादून जिले में हिन्दी-प्रचार हेतु पहली वाद-विवाद प्रतियोगिता के लिए "रमा हंस चलविजयोपहार" आपने ही प्रदान किया था। इस रजत हंस का अनुमानित वजन 100 तोले होगा।

धर्मपुर में कई बीघा जमीन में कमरे बनवा कर रमा औषधालय की स्थापना की। हजारों रोगी इससे लाभ उठाते रहे। इस औषधालय का संचालन वर्षों आर्य समाज करता रहा। यह औषधालय अब देहरादून नगर पालिका द्वारा संचालित हो रहा है। औषधालय को नगरपालिका के हवाले करते समय मुनि जी ने जो अभिलेख बनाया, उसमें लिखा कि यदि कभी नगरपालिका इसे चलाने में असमर्थ हो जाए तो आर्य समाज देहरादून इसे सम्भाल ले। मसूरी में रमा देवी इन्टर कालेज के लिए 50,000/-रु० भी इसी पुण्य आत्मा ने दान दिए थे।

पृष्ठदाता

श्री गोपी चन्द नागलिया, प्रभात सिनेमा, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोटा बेढंगा डण्डा हाथ में उठाए दुबली-पतली देह, पैनी आखों और प्रभावशाली आवाज, सत्य ही कहने की कसम, जन-सेवा की ललक, साहस और निर्भीकता को, यदि कोई चित्रकार चित्रित कर सके तो जो चित्र बनेगा वह 'नारायण मुनि जी' का होगा।

पाकिस्तान बनने पर लाखों भाई उजड़ कर भारत आए। इस महामानव ने जितनी निस्वार्थ सेवा उनकी की है, कोई क्या करेगा ?

अनाथ-आश्रण का काम हो मुनि जी सबसे आगे, चन्दा या धन संग्रह करने चलें तो मुनि जी की शक्ल देख-कर दो देने वाला 5/- देकर भी हाथ ही जोड़ता रहे। शुद्धि-संस्कार मुनि जी के बिना होगा कैसे ? उद्धार-विभाग के करीब तीसियों साल तो वह प्राण ही रहे। राजकीय अधिकारियों से जिस ढंग से बात करते थे वह देखते ही बनता था। क्या मजाल जो जिलाधीश, नगराधीश या पुलिस-अधीक्षक उनकी बात टाल दे। स्वतन्त्रता-युद्ध का ऐसा कोई आन्दोलन नहीं जिसमें वह जेल न गए हों। मजेदारी इसमें है कि इस सबके बावजूद उनके जीवन में ऐसा कोई वर्ष नहीं है जब उन्होंने आर्य समाज का कोई पद ग्रहण किया हो। छठे दशक का उत्तरार्ध इन्हें भी लील गया।

इन्हीं की पुत्री शकुन्तला देवी जी और पुत्र श्री राजपाल जी इसी नगर में राजपुर मार्ग में निवास कर रहे हैं। दोनों ही हमारी समाज के सदस्य हैं।

श्री महावीर त्यागी

बिजनौर जिले का यह उत्साही नवयुवक एक दिन देहरादून का बेताज बादशाह था। आर्य समाज का उत्साही सभासद देशभक्ति के रंग में रंगा, उच्च कोटि का वक्ता था। स्वतन्त्रता-संग्राम में इतना योगदान किया कि देहरादून के इतिहास-लेखक जब जिले के, स्वतन्त्रता-संग्राम में, योगदान का वर्णन करेंगे तो इस महावीर का नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित करेंगे। कांग्रेस का कोई आन्दोलन नहीं जिसमें जेल में न गए हों। स्वतन्त्रता से पूर्व आपकी धर्म-पत्नी श्रीमती शर्मदा त्यागी हमारे नगर से एम० एल० सी० चुनी गयीं। अब स्वतन्त्र भारत हो जाने पर त्यागी जी संसद-सदस्य चुने जाते रहे। भारत सरकार के अर्थ-मन्त्री रहे, रक्षा-मन्त्री रहे। 1980 में इनका देहावसान देहली में हो गया।

चौधरी बिहारी लाल

आर्य समाज के प्रमुख कार्यकर्ता, राष्ट्र-भक्त, स्वतन्त्रता-आन्दोलन में अग्रणी आर्य समाज के एक रत्न थे। जीवन-भर समाज-सुधार एवं स्वतन्त्रता-आन्दोलन में लगे रहे। आर्य समाज और कांग्रेस के प्रान्तीय स्तर के नेता थे। कहने को हरिजन परिवार में जन्मे थे परन्तु गुण कर्म से ब्राह्मण थे। इनके छोटे भाई चौधरी गिरधारी लाल भी हमारे सदस्य थे। पीछे ये भारत स्वतन्त्र होने के पश्चात् उत्तर प्रदेश सरकार में मन्त्री बने।

पं० गौतम देव सर्राफ़

गुरुकुल कांगड़ी के यशस्वी स्नातक, सफल व्यापारी, अच्छे वक्ता, विचारक और समाज सेवी हैं। देशभक्ति खून में है। आर्य समाज का प्यार दिल में है। लगभग अस्सी वर्ष की वय में भी आर्य समाज का हित चिंतन करते रहते हैं। इनकी धर्मपत्नी विद्यावती जी भी इसी क्षेत्र में उत्साह पूर्वक जुटी हैं।

पृष्ठदाता

श्री शम्भुदयाल, 440, खुरबुरा, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मास्टर रामस्वरूप

इस नगर के सर्वश्रेष्ठ वक्ता के रूप में, एक निश्छल राजनीतिज्ञ के रूप में, एक चरित्रवान् समाज-सेवक के रूप में और एक ईमानदार व्यक्ति के रुप में उनकी ख्याति आज भी घर-घर में फैली हुई है। आर्य समाज की अंतरंग सभा के वे प्रस्ताव मैंने देखे हैं जिसमें मास्टर जी से, वेतन लेकर भी, आर्य समाज की ओर से नशा-निवारण का कार्य करने को कहा गया है। सच पूछिए तो नशा-निवारण का कार्य जब से मास्टर जी के हाथ से छूटा था उसकी गति मन्द पड़ गई थी। सन् 1979 में इसी कार्य को मास्टर दलीप सिंह जी ने उसी उत्साह और जोश से उठाया है। कोई ऐसा राष्ट्रीय आन्दोलन नहीं जिसमें मास्टर रामस्वरूप जी ने जेल-यात्रा न की हो। जीवन का अधिकांश अमूल्य समय इस देश-भक्त ने कारागार के बन्द सींखचों की नजर कर दिया। जिले में स्वतन्त्रता-आन्दोलन को गति देने, उसका संचालन करने और अपने खून से सींचने का श्रेय इस वीर को है। वर्षों देहरादून नगरपालिका के अध्यक्ष रहे, एक बार उत्तर प्रदेशीय विधान सभा के सदस्य भी चुने गए। सरलता और अर्थ-शुचिता की यह मूर्ति एम० एल० ए० बनने के पश्चात् धर्मपुर के उसी पुराने मकान में स्थित रही जिसमें पद-प्राप्ति से पूर्व थी। मास्टर जी सातवें दशक में हमें छोड़ गये।

दूसरी पीढ़ी के कार्य-कलाप

व्यक्तियों की बात छोड़ कर पुनः आगे बढ़ता हूँ।

1928 में श्री श्रद्धानन्द अनाथ वनिता आश्रम के लिए किराए का मकान तलाश करने के लिए अन्तरंग सभा ने प्रस्ताव किया।

2-9-1928 को आर्य समाज की आपसी फूट का फल, दूसरी समाज के रूप में प्रकट हुआ। नई समाज, जिसे सिटी समाज कहते थे, मोती बाजार में बनी। चौ० प्रताप सिंह प्रधान, श्री सूर्य प्रकाश शर्मा मंत्री तथा श्री वीरसिंह कोषाध्यक्ष चुने गए।

18-11-1928 को आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता पंजाब-केसरी लाला लाजपतराय जी के बलिदान पर सारा बाजार बन्द रहा। फालतू लाइन में एक अत्यन्त विशाल जन-सभा आयोजित की गई।

नवम्बर 1929—आर्य समाज की स्वर्ण जयन्ती बड़े उत्साह से मनायी गयी। 1879 में स्थापित हुई इस समाज के 50 वर्ष पूरे हो गए थे। उस स्वर्ण-जयन्ती के कोई इश्तहार आदि रिकार्ड में उपलब्ध नहीं हैं। हिसाब-किताब के लेखों से पता चलता है कि 776/- रु० नौ आने खर्च किये गये थे।

श्री श्रद्धानन्द अनाथ वनिता आश्रम हेतु लाला मुकन्दलाल रईस ने भूमि का दान-पत्र 12-10-1929 को लिखा और दान-पत्र की रजिस्ट्री 18-10-1929 में हो गई। पूज्य महात्मा गांधी जी ने आश्रम के भवन की आधारशिला 16-10-1929 को रखी थी। लाला किशोरीलाल जी कोषाध्यक्ष का एक नोट 1934 के छपे एक पत्रक पर है, "जिस तश्तरी व करणी से नींव रखी गई थी वह चाँदी की है और साढ़े इक्कीस तोले वजन की है।" ये दोनों वस्तुएँ अब भी आश्रम में सुरक्षित हैं। इस अवसर पर दानी लोगों ने दिल खोल कर दान दिया था।

लाला कृष्ण लाल जी रईस पुत्र लाला शंकर लाल जी ने 1125/- रु०, डा० बांके लाल जी ने कमरे के लिए 1000/- रु०, श्रीमती बस्सो देवी धर्मपत्नी ला० राजाराम ने 1000/- रु०, श्रीमती कमला देवी धर्मपत्नी श्री शिवलाल

पृष्ठदाता
निहालचन्द रामेश्वर दास, 222–ए, लूनिया मोहल्ला, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

500/- रु०, श्रीमती निहाल देवी धर्मपत्नी मुन्शीराम जी ठेकेदार 500/- रु०, श्रीमती माता रंगीलाल कृष्णचन्द्र आड़ती 500/- रु०, ला० मथुरा दास शिव प्रसाद (दर्शनलाल चाय वाले) 700/- रु०, लाला सन्त लाल जी की बहन 125/- रु०, श्रीमती हुकमीदेवी पत्नी स्व० भन्डूलाल वैश्य ने अपनी समस्त सम्पत्ति का दान-पत्र आश्रम के नाम लिख दिया जो 7-12-1929 को रजिस्ट्री किया गया। इस दान-पत्र में चल, अचल दोनों सम्पत्तियाँ शामिल हैं।

1930—कालू राम कहार से आर्य समाज मंदिर की साथ लगी भूमि 2250/- रु० में खरीदने का प्रस्ताव 29-8-1930 को किया गया। 1-9-1930 को 2394/- में भूमि मयखर्चा खरीद कर रजिस्ट्री भी करवा दी गयी।[1] यह वही भूमि है जिसमें इस समय यज्ञशाला व नहर वाली गली की चार दुकानें स्थित हैं। यह भूमि 48×48 फुट से कम नहीं है।

देश में स्वतन्त्रता-आन्दोलन की तेज लहर चल रही थी। आर्य समाज जैसा राष्ट्रीय आन्दोलन इससे कैसे अप्रभावित रहता। आर्य समाज की अन्तरंग सभा में उल्लेख है, "इस समाज के तीन मुख्य कार्यकर्ता इस समय जेल में हैं चौ० हुलास वर्मा, मास्टर रामस्वरूप, तथा चौ० बिहारी लाल।"

1931 में आर्य समाज के श्रेष्ठ कार्यकर्ता श्री उमराव सिंह जी का देहावसान हो गया।

1932 में, आर्य समाज के रजिस्टर में पहली बार पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार, पाली-रत्न का उल्लेख है जिन्होंने पीछे आर्य समाज का बहुत कार्य किया। आर्य वीर दल की स्थापना के लिए कई वर्षों से प्रयत्न हो रहा था पर सफलता न मिल रही थी। इस वर्ष सार्वदेशिक सभा तथा प्रान्तीय सभा के विशेष आदेश से 27 फरवरी 1932 को आर्य वीर दल की स्थापना हो गई और श्री शान्ति स्वरूप जी इस आर्य वीर सेवा दल के पहले दलपति बनाए गए। और इस प्रकार दल की नींव पड़ गयी।

16-6-1932 को श्री कुन्दनलाल जी पुत्र श्री बंशीलाल अग्रवाल ने एक दान-पत्र रजिस्टर्ड[2] करवा दिया जिसके अनुसार चुक्खूवाला की सम्पत्ति आर्य समाज को प्राप्त हुई।

2-11-1932 को अन्तरंग सभा ने सिटी समाज के कुछ उत्साही सदस्यों को सशर्त वापिस लेना स्वीकार कर लिया। यानी टूटी कड़ियाँ फिर जुड़ने लगीं, बिछुड़े भाई फिर गले मिलने को आतुर हो उठें।

20-11-1932 को राजर्षि पुरुषोत्तमदास जी टण्डन द्वारा श्री श्रद्धानन्द अनाथ वनिता आश्रम के भवन का विधिवत् उद्घाटन सम्पन्न हो गया। आर्य समाज भवन से उठ कर आश्रम, पूर्ण रूपेण तिलकमार्ग स्थित अपने मौजूदा भवन में चला गया।

23-9-1932 को आर्य समाज देहरादून का इतिहास छापने हेतु 200/- रु० का खर्चा स्वीकार किया गया। इतिहास-लेखन का प्रयत्न होता रहा परन्तु छपने न पाया। इसी अन्तरंग सभा में आर्य समाज मन्दिर की सुरक्षा के लिए दो लोहे के गेट और ईंटों का फर्श लगाने हेतु भी 200/- रु० स्वीकार किए गए थे। इस समय तक आंगन कच्चा था। वर्षा ऋतु में कीचड़ ही कीचड़ रहा करता था। इसी अन्तरंग सभा ने एक विशाल सहभोज करने का निर्णय किया था जिसमें समस्त हिन्दू समाज, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, भंगी, चमार सब एक पंक्ति में बैठ कर भोजन करेंगे। केवल नहा-धोकर आने और साफ धुले कपड़े पहन कर आने की शर्त थी। भोजन का मूल्य प्रति व्यक्ति तीन आने रक्खा गया

---

1. **बुक/वोल्यूम 185, पृष्ठ 152—1 सितम्बर 1930—रजिस्ट्री संख्या 461.**
2. **(असल पत्र 5/- रु० के कागज पर लिखा गया है।) रजिस्ट्री देखें नं० 665, पुस्तक सं० 1, जिल्द 195, पृष्ठ 179 16 जून 1932**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। छुआ-छूत पर यह प्रबल प्रहार था, जन्मना जाति-पाति पर कठोर कुठाराघात था। पौराणिक दल में खलबली मची—भूकम्प आया। लेकिन करते क्या ? लोगों को रोकने के सब प्रयत्न बेकार गए। हजारों हिन्दू, समस्त वर्णों के, इस सहभोज में सम्मिलित हुए। यह वह समय था जब लोग इस प्रकार के सहभोज की कल्पना भी न कर सकते थे। भोजन परोसने वाले वे लोग जिन्हें सब हरिजन कहते हैं—और खाने वाले समस्त हिन्दू चाहे किसी भी वर्ण के हों।

21-11-1932 में श्री जगदर्शन सेवल जी का नाम पहली बार अन्तरंग सभा के रजिस्टर में मिलता है। जिन्होंने पीछे बरसों आर्य समाज देहरादून की गाड़ी को मजबूती से खींचा है।

16-12-1932 में ही श्री महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री की धर्मपत्नी श्रीमती अक्षय कुमारी जी (जो अब गुरुकुल हाथरस की आचार्या हैं) की सदस्यता स्वीकार की गई।

1933—7-5-1933 को श्री पं० पूर्ण चन्द्र जी एडवोकेट प्रधान प्रान्तीय सभा के देहरादून पधारने पर उनके विशेष प्रयत्न से दोनों समाजें फिर एक हो गयीं। सब कड़वाहट खतम हो गयी। आर्य समाज का सौभाग्य ही है, इस फूट की डायन से पिंड छूटा। सिटी समाज के साथी, हमारी समाज के सदस्य बन गए और सिटी समाज का अस्तित्व समाप्त होकर, दोनों एकाकार हो गए।

31-5-1933 को—"आर्य समाज मंदिर में ड्रामा नहीं खेला जा सकता।" यह स्वीकार हो गया। और इस मुद्दे को लेकर जो आपसी तनाव आ गया था, खत्म हो गया।

14-7-1933—श्री श्रद्धानन्द अनाथ वनिता आश्रम में बैण्ड-विभाग स्थापित करने की स्वीकृति प्रदान की गयी।

24-9-1933—अजमेर अर्धशताब्दी के लिए रेलवे डिब्बा रिजर्व कराने का कार्य मास्टर गौरी शंकर जी को सौंपा गया। बहुत बड़ी संख्या में स्त्री और पुरुष अजमेर गए।

15-11-1933—कालसी से ट्रांसफर करा कर तीन आर्य सज्जन आर्यसमाज देहरादून के सभासद् बने :—(1) श्री माधोराम जी जो पीछे वर्षों आर्य समाज और आश्रम की सेवा करते रहे, (2) लाला किशोरी लाल जी जो वर्षों कोषाध्यक्ष रहे और अब कारोबार बच्चों के सुपुर्द करके आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर में वानप्रस्थी होकर निवास कर रहे हैं। वहाँ भी निरन्तर ऋषि के मिशन को पूरा करने में लगे हैं। (3) इन्हीं के बड़े भाई श्री रामचन्द्र जी।

1934-35—वार्षिक रिपोर्ट :—"इस वर्ष एक घटना आर्य समाज के सामने स्थित सती की समाधि तथा पीपल के बारे में हुई। यह ज्ञात होने पर कि उन्हें नष्ट किया जा रहा है, समाज की ओर से हिन्दू जनता को चेत कर आन्दोलन किया गया कि इससे दोनों वस्तुओं की रक्षा हुई। इस बारे में, तथा सामने की मस्जिद की रक्षा के बारे में प्रधान जी जिलाधीश से मिले जिसका परिणाम अच्छा निकला।" यह लेख उस समय के आर्य समाज के मंत्री पं० अमरनाथ जी वैद्य का लिखा हुआ है। और रिपोर्ट के अन्त में पं० महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री जी ने अपने हाथ से लिख कर जोड़ा है। यद्यपि शास्त्री जी के हस्ताक्षर नहीं हैं परन्तु उनके लेख को पहचानने वाले बिना सन्देह के देखकर पहचान सकते हैं।

पृष्ठदाता

श्री देवदत्त बाली वाच कं०, पल्टन बाजार, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पं० अमरनाथ जी वैद्य ने मुझे स्वयं बताया था कि उन दिनों—इस सती-मन्दिर पर कई मास तक घी का दिया जलाने का कार्य, आर्य समाज अपने खर्चे से चलाता रहा ताकि हिन्दुओं का यह अधिकार सुरक्षित रहे।)

चोहड़पुर आर्य समाज के नए मन्दिर निर्माण हेतु इस वर्ष 100/- रु० भेजे गए।

इसी वर्ष शामियाने की चादरें बनाई गयीं। लगभग 1950 तक ये चादरें न केवल आर्य समाज के शामियाने का काम करती रही अपितु नगर के लोग अपने यहाँ इन्हीं शामियानों को ले जाकर विवाह आदि उत्सवों में प्रयोग करते थे। उस समय नगर में शामियाने किराये पर न मिलते थे।

धर्मपुर में नवीन समाज की स्थापना की गयी पर स्थानाभाव के कारण चली नहीं।

इसी वर्ष गरीब योग्य छात्रों को छात्रवृत्तियाँ देनी आरम्भ की गयीं।

6-4-1937 —दर्शनी गेट पर एक बढ़िया व्यायामशाला स्थापित की गयी। जब आर्य समाज का कार्य पुन: गति पकड़ चुका था। फूट के घाव भर गए थे।

8-1-1937 को प्रस्ताव स्वीकार किया गया कि प्रत्येक नए बनने वाले सदस्य को आर्य समाज अपने पास से 'सत्यार्थ प्रकाश' भेंट किया करे।

13-2-1937 को अन्तरंग सभा ने स्वीकृति दी कि कर्णपुर समाज के, प्रतिनिधि सभा में प्रवेश पर हमें एतराज नहीं है लेकिन कर्णपुर समाज नियमों का उचित ढंग से पालन करे! इस समाज को सभा में प्रवेश देने की सिफारिश की गई।

24-2-1937 बकरा-ईद पर सजी हुई गायों का विशाल जलूस निकाला गया जिस पर समाज ने सख्त एतराज किया। नगर के गण्य-मान्य व्यक्ति रायबहादुर उग्रसेन, महन्त लक्ष्मण दास, श्री खुर्शीद लाल, पं० नरदेव शास्त्री, चौ० बिहारीलाल, सरदार अमर सिंह, ला० त्रिलोकी नाथ, लाला दिगम्बर प्रसाद, ठा० किशन सिंह, चौ० शेर सिंह, श्रीमती शर्मदा त्यागी वगैरह को शामिल करके हमारा यह प्रभावी प्रतिनिधि मण्डल जिलाधीश से मिला कि भविष्य में ऐसी शरारत न हो सके। इस घटना से नगर में भयंकर तनाव और आपसी वैमनस्य की विस्फोटक स्थिति पैदा हो गयी थी।

27-4-1937 श्री जग दर्शन जी की नियुक्ति, वैतनिक प्रवन्धक मंत्री के रूप में, सर्वसम्मति से 6 मास के लिए की गयी थी। कार्य बहुत अधिक था, सहयोग की जरूरत थी। 8-7-37 को श्री जगदर्शन जी ने वैतनिक कार्य से त्यागपत्र दे दिया और उसके बाद से पहले से भी अधिक उत्साह[1] के साथ आर्य समाज के कार्य में जुट गए।

---

1. **अनमेल विवाहों के बारे में आर्य समाज का अपना एक दृष्टिकोण रहा है। एक मासूम नाबालिग लड़की का विवाह, एक बड़ी आयु के पुरुष से, जिसकी पहली पत्नी और संतान भी मौजूद थी, होना तया पाया। 6-5-1937 को लड़की के नाना ने आर्य समाज में प्रार्थना-पत्र भेजा। हमने देहली से आने वाली बारात को भी समझाया, लड़की के माता-पिता को समझाया और विफल होने पर स्टेशन पर, जनवासे में, लड़की के घर पर जबरदस्त प्रदर्शन किया। 17-5-37 को ही इन प्रदर्शनों के अलावा देहरादून के नागरिकों की एक विशाल जन सभा भी समाज मंदिर में हुई। प्रदर्शन की उग्रता का अनुमान इस बात से ही किया जा सकता है कि पुलिस ने हमारे 39 कार्यकर्त्ता गिरफ्तार किये थे।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

27-6-1937 "आर्य समाज के भवन में ही कहीं उचित ओर उपयोगी स्थान देख कर आयुर्वेदिक धर्मार्थ औषधालय" खोलने का प्रस्ताव स्वीकार किया गया। एक महाशय ने इस निमित्त को 30/- मासिक देना स्वीकार कर लिया।

7-10-37 की नारायण दास जी भार्गव 'मुनि जी' ने 1500/- रु० दान दिए। "रमा अतिथि शाला" का पत्थर लगाना स्वीकार किया गया। परन्तु इस निर्माण पर अधिक व्यय होने की दशा में 24-7-38 में 200/- रु० और देना स्वीकार किया। 17-1-1939 तक यह कार्य पूरा हो गया।

5-11-1937—अंजुमन नस्रतुल इस्लाम से शास्त्रार्थ की चर्चा चली, पर हुआ नहीं।

30-1-1938—नशा-निवारण के लिए आर्य समाज के सारे प्रचार का कार्य-भार मास्टर रामस्वरूप जी के कन्धों पर था।

महादेवी कन्या पाठशाला से प्रत्येक दसवीं पास करने वाली छात्रा को "सत्यार्थ प्रकाश" भेंट करने का निर्णय किया गया। प्रथम आने वाली छात्रा को ऋषि की पुस्तकों का पूरा सैट भेंट स्वरूप देना तय किया।

1938 आर्य समाज देहरादून का पुस्तकालय, जो आरम्भ में "श्री महानन्द पुस्तकालय के नाम से स्थापित हुआ था, पीछे टूटने पर पुनः एक पुस्तकालय की स्थापना की गयी थी। यह पुस्तकालय आज तक चल रहा है। हजारों ग्रन्थ पुस्कालय में हैं। आर्य धार्मिक साहित्य का सुन्दर संग्रह यहां विद्यमान है। 1938 में होने वाले अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन में प्रदर्शनी के लिए हमारे इस पुस्तकालय से दो अमुद्रित हस्तलिखित पुस्तकें भेजी गयी थीं। एक पुस्तक तो बांस की खपचियों पर लिखी हुई थी, कई सौ वर्ष पुरानी मालूम होती थी। दूसरी कागज पर थी। मैंने स्वयं भी पुस्तकाध्यक्ष बनने पर वह पुस्तकें देखी हैं।

इस पुस्तकालय को धार्मिक साहित्य के पुस्तकालय के रूप में विकसित किया जा सकता है। देहरादून जैसे विशाल नगर के लिए यह काफी नहीं है।

पुस्तकालय में अत्यन्त मूल्यवान अप्राप्य ग्रंथ बाबू ज्योति स्वरूप जी द्वारा दिए गए हैं और पीछे पं० तेज कृष्ण कौल जी और पं० हीरानन्द जी शर्मा ने बहुत सी मूल्यवान् पुस्तकें समय-समय पर पुस्तकालय को भेंट की हैं। वैसे भी समाज प्रति वर्ष अच्छी पुस्तकें एकत्र करता रहता है।

पुस्तकालय के लिए स्थान कम था—पीछे डॉ० बांकेलाल जी के दान से पुस्तकालय के लिए भवन की समस्या कुछ समय के लिए हल हो गयी। परन्तु फिर कमी महसूस की गयी और जब नया हॉल बन जाने पर यह पुस्तकालय भी वहीं स्थानान्तरित कर दिया गया है। केवल मुख्य रूप से विक्रय (प्रचार) विभाग की पुस्तकें वहाँ रह गई हैं।

हैदराबाद सत्याग्रह

13-11-38—हैदराबाद के शासक निजाम के कृत्यों से तंग आकर वहां की जनता युद्धपथ पर अग्रसर हो गयी। नये हिन्दू मंदिर बनाने की इजाजत तो दूर पुराने मंदिर की मरम्मत करने में भी कठिनाई पैदा हो गयी थी। आर्य समाज ने प्रयत्न किया कि किसी भी प्रकार शासक को समझाया जा सके और वह सत्य व न्याय का पल्ला न छोड़ें। 'प्रभुता

पृष्ठदाता

जय प्रकाश सिंघल, तिलक रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाय काहू मद नाहीं' शासन और शक्ति का घमण्ड तो अच्छे-अच्छे को अन्धा कर देता है। परिणामतः 20-12-1938 को शोलापुर में कांग्रेस (सम्मेलन) का आयोजन आर्य समाज को करना पड़ा। उस सम्मेलन के निमित्त 100/- रु० आज भेज दिए गए और 400/- रु० जरूरत पड़ने पर भेजने का आश्वासन दिया गया। प्रो० महेंद्र प्रताप शास्त्री, श्रीनारायण दास भार्गव, वैद्य अमरनाथ, पं० चन्द्रमणि जी, श्री कृष्णचन्द्र वकील, श्री जगदर्शन सेवल, श्री चेतराम, सेठ रामकिशोर, श्री काशीनाथ, बाबू किशनलाल को सम्मेलन में जाने के लिए प्रतिनिधि बनाया गया था।

1939—बड़ा प्रयत्न करने पर समस्या सुलझी नहीं, जन-अधिकार मिले नहीं। फलतः आर्य समाज ने देशव्यापी स्तर पर हैदराबाद में अपने अधिकार प्राप्त करने हेतु मोर्चा लगा दिया।

आर्य समाज अपने जीवन काल से ही टक्कर पर टक्कर का आदी रहा है। कभी चैन से बैठा नहीं है, आराम की सांस इसे मिली नहीं है। परन्तु हैदराबाद सत्याग्रह की तो बात ही कुछ निराली थी। नगर में अद्भुत जोश, एक अविस्मरणीय चेतना विद्यमान थी। घर-घर की चर्चा का यही विषय था। लोगों के दिलों में यह बात बैठाने में आर्य समाज सफल हो गया था कि न्याय के विरुद्ध लड़ना, निर्बल की सहायता करना हमारा धर्म है।

हैदराबाद में विजय प्राप्त करने का अर्थ था अंग्रेज के एक मजबूत साथी का धराशायी होना, अंग्रेज की रीढ़ की हड्डी टूटना। बड़े ठाठ से जलूस निकाले गये। आंदोलन बढ़ता जाता था, लोगों के उत्साह और हौंसले और उन्नत होते जाते थे। देहरादून से चार जत्थे सत्याग्रह में भेजे गए। पहला जत्था पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार जी के नेतृत्व में गया। हमारी समाज के उत्साही सदस्य भाई धारासिह जी भी उस जत्थे में उनके साथ गये थे। हमने इस आंदोलन में कितने जोश से भाग लिया था इसका अनुमान इस बात से ही सकता है कि इस सत्याग्रह के निमित्त 6651.61 रुपये-पैसे खर्च किये थे। पुलिस और सरकारी प्रतिबन्धों के बावजूद हमारे बढ़ते कदम उस समय तक नहीं रुके जब तक सफलता प्राप्त नहीं कर ली गई।

इस धर्मयुद्ध में अपने प्राण देने वाले हुतात्माओं की नामावली ताम्रपत्र पर अंकित करके आर्य समाज भवन में लगायी गयी है। मौजूदा देहरादूनवासियों में से अधिकांश पुराने लोगों के लिए यह घटना और आंदोलन आज भी नये के समान ताज़ा होगा।

अन्य कार्य-कलाप

माता लक्ष्मीदेवी जी से भूमि-खरीद में जो 500/- रु० उधार प्रोनोट पर लिए थे इस वर्ष चुकता वापिस कर दिए गए।

14-2-1941—बाल विवाह विरोध के कानून बनाने में आर्य समाज ने बड़ा भारी प्रयत्न किया था। उत्तर प्रदेश में भी इसी आवश्यकता पूर्ति के लिए कानून बन जाने पर चाइल्ड मैरिज ऐक्ट के अन्तर्गत आर्य समाज देहरादून ने पहली रिपोर्ट 14-2-1939 को दी थी। श्री प्यारेलाल जी कौलागढ़ निवासी ने 18-6-1939 को अपना भवन और भूमि दान देने की इच्छा प्रकट की थी। 10-9-1939 को अन्तरंग सभा ने दान की स्वीकृति दे दी।

इसी वर्ष गढ़ी आर्य समाज ने श्री लक्ष्मण सिंह व कृपाराम आदि ने भूमि दान दी जिसकी रजिस्ट्री 17/19-3-1940 को हो गयी। मूल दान-पत्र हमारे रिकार्ड में सुरक्षित है। 17-3-1940 तारीख पड़ी है।

पृष्ठदाता
भारत पेन्ट मार्ट, हनुमान चौक, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रार्य वीर सेवा दल १९४२

पहली पंक्ति (खड़े) बाएं से दाएं- नं. ६ यशपाल आर्य

दूसरी पंक्ति (,,) ,, ,, २ मा. दलीपसिंह, ५ श्री चन्द्रप्रकाश, ६ श्री ओमप्रकाश गुप्त, १० श्री देवेन्द्रप्रभाकर, १३ श्री सुरेन्द्रनाथ वैद्य

कुर्सी पर (बैठे) ,, ,, २ मा. छुट्टनलाल, ३ पं अमरनाथ वैद्य, ४ श्री महेन्द्रप्रताप शास्त्री, ५ श्री चन्द्रमणी विद्यालंकार

जमीन पर (बैठे) ३ श्री प्रेमसिंह वर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

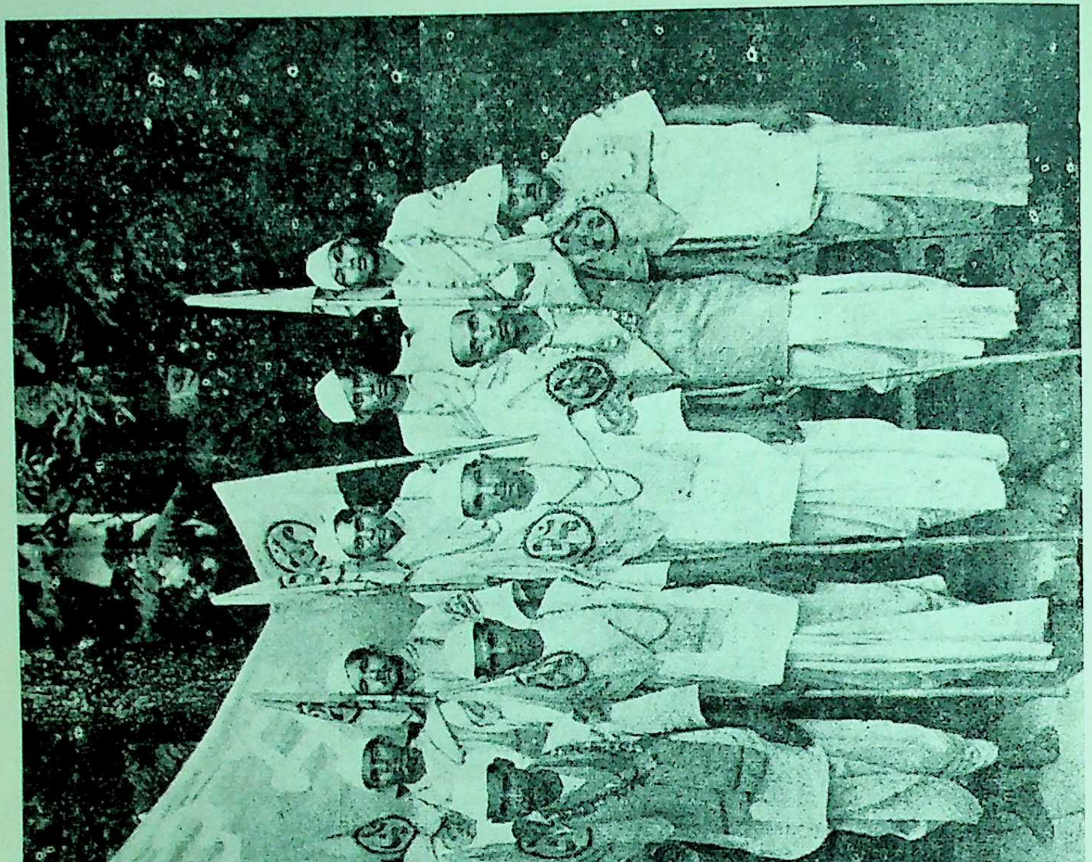

हैदराबाद सत्याग्रह का दूसरा जत्था (देहरादून से गया) । १९३९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1940 से 1947 तक आर्य समाज का कार्य बड़े उत्साह से चलता रहा। आर्य समाज देहरादून को यह गर्व है कि जहां उसने प्रान्तीय सभा को बाबू ज्योति स्वरूप के रूप में प्रथम प्रधान दिया था, वहीं प्रो० महेन्द्र प्रताप शास्त्री के रूप में एक योग्य मंत्री भी प्रदान किया था। श्री शास्त्री जी के पिता ठा० माधोसिंह आर्य जगत् के प्रसिद्ध नेता थे। आर्य समाज के लिए उन्होंने बहुत काम किया था। उन्हीं के अनुरूप और कई अंशों में उनसे भी बढ़कर आर्य समाज का कार्य उनके पुत्र प्रो० महेन्द्र प्रताप शास्त्री ने किया है। शास्त्री-दम्पति जहां भी गए—वहां समाज को एक नया जीवन, नयी चेतना, एक नयी ज्योति दी और उसमें नये प्राण फूंक दिए। मुझे स्मरण है कि शास्त्री जी के कारण ही देहरादून की कुलफी जमा देने वाली ठण्ड में आर्य समाज की प्रभात-फेरियों में डी० ए० वी० कालेज के दो-दो सौ छात्र प्रातः 5 बजे मन्दिर में पहुंच जाया करते थे। होस्टल में भी नित्य सन्ध्या-वन्दन होता था। आर्य समाज की एक आवाज पर कालेज के सैंकड़ों विद्यार्थी समाज की रक्षा और सहयोग के निमित्त उपस्थित होते थे। अंग्रेजी राज्य था। नगर में स्थित हमारा समाज मन्दिर और मस्जिद दोनों आमने-सामने बने हैं। हर दम किसी न किसी झगड़े का अंदेशा बना रहता था। वार्षिक उत्सव पर आर्य-वीर लाठियां लेकर पहरा देते थे। उधर से यदा-कदा छेड़-छाड़ चलती रहती थी। पत्थरबाज़ी भी होती रहती थी। हम सबका मुकाबला करने को उद्यत रहते थे। यह आर्य समाज का एक उन्नत युग था। आचार्य नरदेव शास्त्री, चौधरी हुलास वर्मा, पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार, पं० अमरनाथ वैद्य, प्रिंसिपल बद्रीनाथ छिब्बर, पं० धर्मदेव दर्शन केसरी, श्री नारायण दास 'मुनि', श्री जगदर्शन सेवल, महेन्द्र प्रताप शास्त्री, श्रीमती अक्षय कुमारी, पं० सोमदत्त विद्यालंकार, बाबू कृष्ण लाल गुप्त, मास्टर रामस्वरूप, बाबू रामप्रसाद, माता लक्ष्मी देवी, माता निहालदेवी, लाला किशोरी लाल सरीखे दूसरी पीढ़ी के परिश्रमी, लग्नशील और उत्साही कार्यकर्त्ता मैदान में थे। नगर में समाज का दबदबा था। मेरा निश्चित मत है कि इस सारी स्थिति का कारण था हमारे कार्यकर्त्ताओं का चरित्र, देश के लिए त्याग, राष्ट्रोन्नति हेतु कष्ट-सहन, और मानव-मात्र का दुःख दूर कर देने की तत्परता।

स्वतंत्रता-आन्दोलन में योगदान

कांग्रेसी तो अक्सर जेल में रहते थे और उनके पीछे स्वतंत्रता का सारा आंदोलन जिले में चलाता था—आर्य समाज! एक प्रकार से स्वतंत्रता-आंदोलन के संचालन में आर्य समाज दूसरी पंक्ति में था जिसने सब नेताओं के जेल जाने के पश्चात् भी स्वतंत्रता आंन्दोलन को अपने लहू की आहुतियां देकर भी जीवित और जागृत रखा। सच पूछा जाए तो आर्य समाज देहरादून का इतिहास वास्तव में देहरादून जिले के स्वतंत्रता-आंदोलन के इतिहास की सबसे मूल्यवान कड़ी है, चाहे व्यक्तियों की परख कर लो चाहे समष्टि की जांच करा लो।

आर्यों के विवाद अपनी ही न्याय-सभा में

आर्य समाज देहरादून का अपना न्याय-विधान था। आपसी रंजिश-झगड़े, यदि दोनों पक्ष स्वीकार करते तो निबटा दिए जाते थे। मैंने स्वयं अपना एक विवाद उससे सुलझवाया था। न्याय सभा में झगड़े ले जाना परन्तु न्यायालय में न ले जाना एक प्रकार से ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध ठोस बगावत थी।

आर्य वीर दल

आर्य वीर दल का जो रूप उन दिनों रहा वह अविस्मरणीय है। 1932 से मास्टर विजय कृष्ण, मास्टर टीकाराम, इलमचन्द जी आदि के सहयोग से आर्य वीर सेवा दल श्रद्धा-पूर्वक सेवा कार्यों में जुटा रहा। परन्तु सार्वदेशिक सभा में दल की बागडोर जब श्री ओम् प्रकाश जी त्यागी के युवा हाथों में आई तो यहां भी नक्शा कुछ और ही हो गया।

पृष्ठदाता

श्री प्रेम अग्रवाल, तिलक रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिक्ख, जैन, सनातनी, आर्य समाजी सभी उत्साही युवक बड़ी संख्या में उसमें सम्मिलित होने लगे। मुझे याद है, भाई सुदर्शन जी नगर संचालक थे और भाई श्रीकृष्ण जी जिला-संचालक। मुझे याद है एक बार आर्य वीर दल की सम्मिलित सब शाखाओं का एक स्थान पर एकत्र होना। शाखा लगी थी लक्ष्मण-चौक में। और उसी के एक मास बाद चुक्खुवाला में। दोनों शाखाओं में सम्मिलित होने वाले आर्य वीरों की संख्या दोनों बार 1200 से ऊपर थी। 1200 जवान एक वेश में प्रातःकाल जब व्यायाम करते थे, परेड करते थे, लाठी चलाना सीखते थे, तलवार और भाले चलाते थे या मस्त होकर राष्ट्र भक्ति और प्रभु भक्ति के गीत गाते थे तो एक अजब नज़ारा होता था। वह सारा दृश्य आंखों में घूम रहा है क्योंकि मैं उसका प्रत्यक्षदर्शी-घटक हूं। प्रान्त और जिले में दल-प्रचार के लिए बड़े पैमाने पर प्रान्तीय स्तर के शिविर लगाये गये। कालसी में शिविर लगा, फिर देहरादून में माता वाले बाग में शिविर लगा। प्रान्त-भर से चुने हुए सैंकड़ों युवकों ने इस शिविर में शिक्षा-ग्रहण की और दल-दीक्षा ली। इस प्रकार प्रान्त को सैंकड़ों आर्य वीर दल, कार्यकर्ता प्रदान करने का श्रेय आर्य वीर दल देहरादून को है। मुझे वह घटना भी याद है जब स्थानीय आर्य वीर दल की सांय-कालीन राजा रोड शाखा का झगड़ा—राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की सांयकालीन शाखा से हो गया था और अगले दिन प्रातः 5 बजे उस झगड़े का जो भयंकर रूप प्रकट हुआ था, वह जीवन भर याद रहेगा। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के 500-600 जवान और दल के 24-25 वीर एक दूसरे के विरुद्ध पिल पड़े और परिणाम निकला पचासों के सिर फट गये। (मेरा सिर भी फटा था)। शहर में कोहराम मच गया। मामला पुलिस तक पहुंचा। इस झगड़े का विस्तार से वर्णन नहीं करना है न वर्णन करने से कोई लाभ ही है, केवल यह बताना था कि आर्य वीर दल जवानी पर था। 25 आदमी 500 से भिड़ने का साहस कर सकते थे और जवानों में जो उतावलापन, दीवानापन, कुछ कर गुज़रने की चाह जो होती है, वह सब दल में भी थी।

आर्यवीर दल समाज का मजबूत कवच था। समाज के तथा देश के दूषित वातावरण को देखते हुये, आज फिर आर्यवीर दल को अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए। आज उससे भी कहीं मजबूत दल की जरूरत है। यह समय की पुकार है।

केवल लाठी-चालन सिखा कर ही दल को संतोष न था। चरित्र-निर्माण की दिशा में यह एक मजबूत कदम था। व्यायाम, लाठी, भाला आदि तो केवल एक आकर्षण था जिससे युवक खिंचा चला आता था। आसन और योग की अन्य प्रारम्भिक क्रियाएं भी सिखाई जाती थीं। बौद्धिक विकास के लिए विशेष प्रबन्ध किया गया था। मुझे इस बात का व्यक्तिगत ज्ञान भी पूर्ण रूपेण है क्योंकि मैं तो आदि से अन्त तक नगर तथा जिला दोनों का "बौद्धिक नायक" रहा था। अधिक विस्तार छोड़ता हूं।

8-4-1945 को एक वृहद् सभा का आयोजन किया गया था ताकि डी० ए० वी० इण्टर कालेज को डिग्री कालेज में परिवर्तित किया जा सके। इस समय तक श्री महेन्द्र प्रताप शास्त्री नगर छोड़कर लखनऊ जा चुके थे। वे वहा डी० ए० वी० कालेज के प्रिंसिपल बनाकर भेजे गये थे।

देश-विभाजन

उधर अंग्रेजों की कुटिलता सफल हो गयी। 15 अगस्त 1947 को जहां भारत स्वतन्त्र हुआ, वहां भारत माता के दो खण्ड भी हो गये। पाकिस्तान बनने पर वहां हिन्दू का रहना असम्भव हो गया। मार-काट शुरू हो गयी, लाखों हिन्दू कत्ल हुए और बदले में इधर भारत में भी खूनी होली खेली जाने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरणार्थी हिन्दुओं के झुण्ड के झुण्ड पाकिस्तान छोड़ कर भारत आने लगे। न तन पर कपड़ा, न पैर में जूता। लुटे-पिटे, सेना की सहायता से भारत पहुंचे और जहां जिसके सींग समाये वहां डेरा डाल लिया।

इस समय उन्हें इन्सानी हमदर्दी की ज़रूरत थी। आर्य समाज ने अपने मन्दिर के द्वार उनके लिए खोल दिये। सैंकड़ों शरणार्थी आर्य समाज मन्दिर की अतिथिशाला में—बरामदे में—आंगन में रहने लगे। रमा औषधालय, धर्मपुर में भी टैण्ट लगा दिये गये। हमारे दिल में उनकी सहायता की प्रबल इच्छा थी। उनके दुःख से हम दुखी थे। हमारे कार्यकर्ताओं ने केवल समाज में ठहरे शरणार्थी की ही सेवा की हो सो बात नहीं। जिले-भर में कोई ऐसा शरणार्थी कैम्प न था कि जहां हमारे बड़े कार्यकर्ता चौ. हुलास वर्मा, नारायण मुनि जी, पं. चन्द्रमणि जी विद्यालंकार और मास्टर रामस्वरूप जी न पहुंचे हों। इस बात को पूरे विश्वास से कहा जा सकता है कि आर्य समाज ने अपने कर्तव्य को बड़ी जिम्मेदारी और योग्यता के साथ निभाया था।

पंजाब में होने वाली मार-काट से हम भी नहीं बचे। देहरादून नगर में भी वह बीमारी फूट पड़ी थी और देखते ही देखते सारे नगर के अधिकांश मुसलमान पाकिस्तान चले गये। ज़िले में भी गरमाहट आयी और वहां भी मार-काट होने लगी। मनुष्य रुपया छोड़ सकता है, धन-धान्य को लात मार सकता है। गले गले आ जाये तो बहिन, बेटी, बच्चे और पत्नी को भी छोड़ देता है परन्तु हर मूल्य पर अपने जीवन को बचा कर रखना चाहता है। समाज ने जिले के मुसलमानों को बचाने का पूरा प्रयत्न किया। ग्राम-ग्राम में पहुंच कर आश्वासन दिया, समझाया पर अधिकांश लोग मृत्यु के भय से कम्पित थे। फिर भी आर्य समाज लगातार उन्हें बचाने में लगा रहा था। यद्यपि आर्य समाज ने इस वर्ष स्वयं शुद्धियों को प्रोत्साहन नहीं दिया फिर भी इस वर्ष शुद्धियां होती रहीं। यदि मैं भूल नहीं करता तो शुद्ध होकर हिन्दू बनने वालों की संख्या 5000 से अधिक थी।

आर्य कार्यकर्ताओं की तीसरी पीढ़ी

आर्य समाज की पहली पीढ़ी जहां बाबू कृपाराम, बाबू ज्योतिस्वरूप, दरोगा लालसिंह से आरम्भ होती है वहां दूसरी पीढ़ी के लाला आर्य किशोर, पं० अमरनाथ वैद्य, चौ० हुलास वर्मा 1911 में आर्य समाज में आ चुके थे। आर्य समाज की बागडोर इस दूसरी पीढ़ी के हाथ में आयी 1920 में जब प्रिंसिपल लक्ष्मन स्वरूप जी मंत्री बने और 1921 से 1925 तक चौ० हुलास वर्मा ने आर्य समाज का मंत्री बन कर इस दूसरी पीढ़ी के कदम मजबूती से जमा दिये। सन 1947 तक अबाध गति से पूरी तेज़ी से आर्य समाज प्रत्येक क्षेत्र में फैलता चला गया।

आर्य समाज देहरादून की तीसरी पीढ़ी का आरम्भ मैं 1948 से मानता हूं। जब 1940 में पहली बार आर्य समाज का सदस्य बनने वाला मैं (यशपाल) मंत्री बना। इस पीढ़ी में भाई धर्मेन्द्र सिंह जी, श्री देवदत्त बाली, श्री तेज कृष्ण कौल, श्री ओमप्रकाश वकील, श्री ललिता प्रसाद, श्री देवदत्त आर्य, मास्टर दलीप सिंह, श्री पृथ्वीराज जी नारंग डा० सोमनाथ ढींगरा, श्री प्रेमसिंहजी, श्रीमती डा० ब्रह्मवती जी नारंग, श्रीमती रामप्यारी जी, श्रीमती कौशल्या विद्यालंकृता, श्रीमती सुशीला शर्मा आदि अनेक शामिल हैं।

आर्य समाज की तीसरी पीढ़ी अभी चल रही है। दूसरी पीढ़ी के कुछ मोती आज भी चमक रहे हैं। बाबू कृष्णलाल जी, लाला किशोरी लाल जी, पं० गौतम देव जी, श्री लक्ष्मनदेव जी, पं० विश्वनाथ विद्या-मार्तण्ड, पं० महेन्द्र प्रताप शास्त्री, बहिन अक्षय कुमारी, पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, आचार्य बृहस्पति शास्त्री, श्री जगदर्शन सेवल, महाशय रामशरण। डा० केदारनाथ का देहावसान 1945 में हो गया।

पृष्ठदाता
लाo दर्शन लाल एंड संस, पल्टन बाजार, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1946—10-8-1946 की एक अन्तरंग सभा का प्रस्ताव यह बताने के लिए पर्याप्त होगा कि हममें उस समय कितना जीवट था। जिलाधिकारियों ने समाज के मंत्री से बातचीत की और कुछ आश्वासन भी ले लिये कि, मस्जिद में नमाज का ध्यान रख कर, आर्य समाज मन्दिर के प्रोग्राम रखे जायेंगे परन्तु जब अन्तरंग सभा में इस विषय पर चर्चा चली तो निर्णय हुआ—"......यह भी जोरदार शब्दों में बताना चाहती है कि वह किसी भी अपने धार्मिक अधिकार में किसी प्रकार का हस्तक्षेप, विशेषकर आर्य समाज मन्दिर में होने वाले धार्मिक कृत्यों में किसी प्रकार का प्रतिबन्ध बरदाश्त नहीं करेगी। उपर्युक्त कारणों से समाज को यह आश्वासन मान्य नहीं है।" परिणाम यह हुआ कि शासन झुका, हमने अपने कार्यक्रमों में कोई परिवर्तन स्वीकार नहीं किया। इस प्रकार की दसियों घटनाएं आज मुझे याद हैं पर, स्थानाभाव से, लेख में लाने से मजबूर हूं।

1947—संक्रमण काल चल रहा था। शासन-सत्ता अंग्रेज के हाथ से निकल भारतीयों के हाथ में आ गयी थी। देश-भर में गर्मी थी। उधर बंगाल में नोआखाली में भयंकर अत्याचार हुए थे। समाज ने इन अत्याचार-पीड़ितों की सहायता हेतु 1/-, 5/-, 10/-, 50/-, और 100/- के टिकट छपवाये, धन-संग्रह किया और बड़ी धनराशि बंगाल को पीड़ितों की सहायतार्थ भेजी। श्री कृष्ण जी, दलपति, आर्य वीर दल एवं (मैं) यशपाल आर्य सेवा-कार्य के लिए कलकत्ता गये थे। तीसरी पीढ़ी अभी जम कर कार्य कर रही है। चौथी पीढ़ी की बड़ी बैचेनी से प्रतीक्षा की जा रही है। इस चौथी की तैयारी हमें करनी चाहिये। इतने युवक चाहिए कि जो अगले 30-40 वर्षों के लिये आर्य समाज का कार्य कुशलतापूर्वक चला सकें। जब यह चौथी पीढ़ी पूर्ण रूपेण तैयार हो जायेगी तब तीसरी पीढ़ी अपने उत्तरदायित्व से मुक्त हो सकेगी। मुझे याद है कि जगदर्शन जी उस समय तक अपना कार्य सम्भालते रहे जब तक नई पीढ़ी उत्तरदायित्व निभाने और विश्वास करने योग्य नहीं हो गयी। खूब नये युवक लाये जाने चाहिएं और मुझे विश्वास है कि नयी पीढ़ी इस समय तैयारी में लगी है शीघ्र ही प्रकट हो जायेगी।

खैर, मैं विषयान्तर नहीं करना चाहूंगा। 1947 में शरणार्थियों के आगमन के साथ ही, नगर की जनसंख्या बढ़ने लगी और आर्य समाज मन्दिर का कलेवर छोटा पड़ने लगा। नये भवन की आवश्यकता तीव्रता से अनुभव की जाने लगी। 29-5-1948 की अन्तरंग सभा में अगले भाग में दुकानें बनाने और बड़ा भवन निर्माण कराने का प्रस्ताव मैंने स्वयं रखा था। 4-11-1948 को इसी विषय पर पुनः प्रस्ताव आया था। तीसरी बार 9-5-1955 को नया भवन निर्माण करने के लिए प्रस्ताव पर बहस हुई थी। 1958 तथा 1961 में भी इस विषय के प्रस्ताव अन्तरंग सभा में रखे गये थे।

26-5-1947 को पंजाब-रिलीफ-सोसायटी के कार्यालय के लिए कमरा देना स्वीकार किया गया। निश्चय हुआ कि औषधालय (धर्मपुर) वाली भूमि में भी टैन्ट लगा दिये जाएं और वहां शरणार्थियों के ठहरने की व्यवस्था करना स्वीकार हो गया।

28-9-1947—टीजुडेल नाम के लाइन-इन्सपेक्टर ने उन दिनों हिन्दुओं पर बड़े अत्याचार किए। उनके विरुद्ध आवाज उठायी गयी (शरणार्थियों को रेलवे-स्टेशन पर बेंतें लगायी गयी थीं।) 5-10-1947 को हमने जुडिशियल इन्क्वारी की मांग की और दोषी लोगों को दण्डित करने की मांग की।

शरणार्थियों की तलाशियां ली जाने, संभ्रान्त लोगों को हथकड़ियां पहनाने, पुलिस द्वारा जूते सहित मन्दिर में प्रवेश करने तथा लाइन-इन्सपेक्टर की गोली मारने की धमकी देने के विरुद्ध आन्दोलन किया गया। प्रस्ताव पूर्व ही स्वीकार

पृष्ठदाता

दून फैन ट्रेड्स, पल्टन बाजार, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री पं० ठाकुरदत्त जी

बा० कृष्णलाल गुप्त

श्री जगदर्शन सेवल
(मन्त्री जी के नाम से प्रसिद्ध)

श्री पं० गौतमदेव जी सर्राफ

पं० केशवराम स्वामी
(विधवा विवाह प्रचारक)
स्व० कृपाराम के पुत्र
इन्होंनें स्वा० दयानन्द जी को
देहरादून में बुलाया था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐ

विशेष दान दाता

श्री अशोक नाथ सेखरी

डा० सोमनाथ ढींगरा

कुंवर बृज भूषण

श्री घनश्यामदास गुप्ता

श्री प्रेमचन्द मित्तल

श्री देवदत्त आर्य

डा० टी० सी० नन्दवानी

श्री यू० के० बेरी

श्री शिवनाथ अहूजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया जा चुका था। हिन्दू-सहायता समिति शिष्ट-मण्डल के साथ दुर्व्यवहार करने के कारण 14-10-1947 को जिलाधीश के विरुद्ध निन्दा-प्रस्ताव पारित किया गया।

आर्य वीर दल के जिला संचालक श्री कृष्ण जी को 6 मास के लिए भारत सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत जेल भेज दिया गया।

1948 में डाक्टर बांके लाल जी का 5000/- रु० का दान 19-9-1948 को भवन निर्माण हेतु स्वीकार किया गया। (इस भवन में इस समय पुस्तकालय का विक्रय-विभाग है।)

1949 में माता कान्तेश्वरी देवी जी आर्य समाज की सदस्या बनीं जो पीछे वर्षों आर्य समाज की उप-प्रधान रहीं।

1950—वैश्याओं को नगर के मध्य से उठाने के लिए प्रबल आन्दोलन किया गया—भाई गोबिन्दराम जी ने जो अब मेरठ में निवास करते हैं, सत्याग्रह किया। वे आज वहां भी उत्साहपूर्वक कार्य कर रहे हैं। मेरठ शताब्दी समारोह पर कुछ वर्ष पूर्व मैं इनसे मिला था। जो लग्न इनमें पहले थी वह आज भी मौजूद है।

1951, 6 जून—जिला-सभा के पुनः निर्माण का प्रस्ताव स्वीकार किया गया। श्री बृहस्पति शास्त्री इस समय आर्य समाज के प्रधान थे तथा श्री जगदर्शन सेवल मंत्री। समाज की ओर से आश्वासन दिया गया कि यदि जिले की समस्त समाजें अपने-अपने अंश की अदायगी नियमित रूप से करती रहेंगी तो आर्य समाज देहरादून इस निमित्त 600/- रु० वार्षिक सहायता जिला सभा को देता रहेगा। यही 600/-रु० वार्षिक सहायता आज भी जिला-सभा को दी जा रही है।

पं० हरिनन्द जी शास्त्री

इसी वर्ष पंजाब प्रान्त से शरणार्थी बन कर आने वाले संस्कृत के उच्च कोटि के विद्वान पं० हरिचन्द जी शास्त्री को आर्य समाज ने अपना स्थायी निवासी बनाने की स्वीकृति प्रदान की। ये श्री हरिनन्द शास्त्री मृत्यु-पर्यन्त आर्य समाज के अवैतनिक पुरोहित के रूप में जिस श्रद्धा, योग्यता और प्रेम-भाव से कार्य करते रहे वह एक उदाहरण और आदर्श है। शास्त्री जी की मृत्यु के पश्चात उनकी हजारों रुपये की चल सम्पत्ति की स्वामिनी भी आर्य समाज देहरादून बनी।

31-12-1969 के चिट्ठे से पता चलता है कि उस समय लगभग 14 हजार रुपये नकद व 14000/- रु० के शेयर पं० हरिनन्द शास्त्री स्मारक निधि में जमा थे। शास्त्री जी को संस्कृत से बहुत प्यार था। मैंने आचार्य नरदेव शास्त्री जी को व उन्हें सदैव संस्कृत में ही बात करते सुना। मैंने इन दोनों का पत्र-व्यवहार भी देखा जो संस्कृत में ही होता था। एक चरित्रवान्, निर्लोभ विद्वान् ब्राह्मण पुरोहित के रूप में पं० हरिनन्द जी शास्त्री को आर्य समाज कभी भी विस्मृत नहीं कर सकेगी। आर्य समाज भवनों के निर्माण के साथ उनका नाम जोड़ कर समाज उनकी स्मृति को स्थायी बना देगा।

प्रतिनिधि सभा देहरादून म दूसरी बार

आर्य प्रतिनिधि सभा का बृहद् अधिवेशन 16-17 व 18 मई सन 1952 को दूसरी बार देहरादून में हुआ। डी० ए० वी० कालेज तथा आर्य समाज देहरादून के संयुक्त प्रयास के कारण यह आयोजन सफल रहा।

पृष्ठदाता

श्री रमेश बत्रा, 19–ए, महन्त रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न कार्य

9-11-1952 को एक विशाल गोशाला, जो देहरादून के नागरिकों के लिए शुद्ध दूध की समस्या को हल कर सके, खोलने का प्रस्ताव स्वीकार किया गया। गोरक्षा के नारे को मूर्त रूप से प्रदान करने की यही उत्तम रीति थी।

16-9-1953 राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री, श्री ओम् प्रकाश त्यागी, व लाला हरदेव सहाय गोरक्षा आन्दोलन के सिलसिले में यहां पधारे। एक विशाल सभा का आयोजन किया गया।

7-4-1954 को अन्तरंग सभा ने पं० सत्यव्रत विद्यालंकार द्वारा लिखित अंग्रेजी ट्रैक्ट के प्रकाशन का निर्णय किया। पं० सत्यव्रत जी लेखन-कला में अत्यन्त सिद्धहस्त हैं, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वर्षों आचार्य रहे हैं। इनकी लिखी पुस्तकें उच्च शिक्षा-क्षेत्र में बड़े आदर और श्रद्धा से पढ़ी जाती हैं। आप वर्षों देहरादून आर्य समाज के प्रधान रहे और संसद् की राज्य परिषद् के सदस्य भी रहे। इस अंग्रेजी लघु पुस्तक का नाम है Question on the Bible. पीछे यह ट्रैक्ट प्रकाशित कर दिया गया।

आर्य समाज देहरादून को स्थापित हुए 75 वर्ष हो रहे थे। 24 से 28 अक्टूबर 1954 तक हीरक जयन्ती मनाने का निर्णय 30-5-1954 को किया गया। 2250/- रु० का बजट स्वीकार किया गया। इस अवसर पर कलकत्ता से प्रसिद्ध रिसर्च-स्कॉलर श्री अयोध्या प्रसाद वैदिक मिशानरी पधारे थे। श्री धर्मेन्द्र सिंह जी मंत्री थे।

1954 की एक मुख्य घटना है—शास्त्रार्थ। आर्य समाज चूहड़पुर (अब यह विकासनगर कहलाता है) में ईसाई पादरियों की छेड़छाड़ चल रही थी। परिणामतः चूहड़पुर के आर्य समाज मन्दिर में ईसाई पादरी अब्दुल हक और आर्य समाज के शास्त्रार्थ-महारथी श्री ठा० अमर सिंह जी के मध्य (सहयोगी थे पं० रुद्र दत्त शास्त्री) पुनर्जन्म पर एक उच्च-स्तरीय शास्त्रार्थ हुआ। दूसरे दिन पादरी साहब नहीं पहुंचे। मुझे याद है इस शास्त्रार्थ के लिए मैं विद्वानों की तलाश में कितनी जगह भटकता फिरा था। परन्तु कोई विद्वान् साथ के लिए नहीं मिल सका था। अकेले ठाकुर अमर सिंह जी पर्याप्त थे। एक बार पुनः शास्त्रार्थ की पुरानी यादें ताजी हो गयीं और समाज के कार्य को बड़ा बल मिला।

1957—राष्ट्र भाषा के प्रचार में आर्य समाज सदा अग्रणी रहा। महर्षि दयानन्द ने जिसे आर्य भाषा कहकर पुकारा, आर्य उसके प्रचार व प्रसार में क्यों न लगता। देहरादून में वाद-विवाद प्रतियोगिताएं (हिन्दी में) रमा हंस चल विजयोपहार के रूप में, सर्वप्रथम आर्यसमाज देहरादून में आरम्भ हुई थीं। बड़े अनूठे—ऊंचे स्तर के कवि-सम्मेलन और साहित्य-गोष्ठियों का आयोजन आर्य समाज करता था। हिन्दी प्रचार-प्रसार के लिए, हिन्दी साहित्य का स्थायी कार्यालय लगभग 25 वर्ष पूर्व तक, आर्य समाज मन्दिर में ही था। हिन्दी साहित्य समिति के सारे कार्य-कलाप यहीं से संचालित होते थे। समिति के समस्त उत्सव, आयोजन समाज मन्दिर में ही मनाये जाते थे। समिति का पुस्तकालय भी यहीं पर था। इस समस्त कार्य को बल मिलता था आर्य समाज के समस्त सदस्यों से, जो इसे राष्ट्र का पुनीत कार्य समझ कर सम्पन्न करते थे।

आर्य समाज देहरादून कर्तव्य पालन को सदा उद्यत रहा है, सजग रहा है। त्याग की पुरानी परम्पराओं पर उसने चलना सीखा है। बलिदान की ललक सदा उसे बेचैन किए रहती है। 1957 में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली द्वारा संचालित हिन्दी रक्षा आन्दोलन और सत्याग्रह बड़े उत्साह से आरम्भ किया गया था। ऐसे अवसर पर देहरादून समाज कैसे शान्त बैठता ? जिले भर में जोरदार सभाएं की गयीं और चार जत्थे सत्यग्रह में भेजे गये। एक जत्थे

पृष्ठदाता

झब्बा लाल एंड कम्पनी सर्राफ, पल्टन बाजार, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के नायक भाई कृष्ण सिंह जी थे जो अब डी० ए० वी० कालेज चण्डीगढ़ में हैं। आर्य समाज के पुरोहित श्री आर्य भिजु जी अत्यन्त उत्साह से कार्य में लगे थे। वे स्वयं जत्था ले कर सत्याग्रह के लिए गए।

28-12-58 की अन्तरंग सभा में सिटी बोर्ड देहरादून के तत्कालीन प्रधान श्री मा० रामस्वरूप जी द्वारा बोर्ड के चेयरमैन की हैसियत से लिखा पत्र सं० 7154-55/22-9-58 प्रस्तुत किया गया। उस पत्र में हमारी समाज से सम्बन्धित अंश इस प्रकार हैं :—

"यह कि इस सम्पत्ति में द्वितीय पक्ष की ओर से केवल औषद्यालय का ही कार्य होता रहेगा। जिस समय तक कार्य होता रहेगा—यह सम्पत्ति द्वितीय पक्ष के अधिकार में रहेगी। जिस तारीख से द्वितीय पक्ष यह कार्य बन्द करे—उस तारीख से उसकी स्वामिनी आर्य समाज देहरादून धामावाला होगी और द्वितीय पक्ष बाध्य होगा कि वह इसका अधिकार आर्य समाज धामावाला को दे दे।"

निश्चय हुआ कि इसकी सत्य प्रतिलिपि न्यायालय देहरादून से प्राप्त करके उसको फाइल कर लिया जाये।

स्पष्ट है कि यह रमा धर्मार्थ औषद्यालय (जो धर्मपुर में स्थित है) के विषय में है। श्री नारायण दास जी भार्गव 'मुनि जी' प्रथम पक्ष में हैं और सिटी बोर्ड देहरादून द्वितीय पक्ष हैं।

श्री पं० हरिनंद शास्त्री जी का देहावसान वर्षारम्भ में ही हो गया था। इस वर्ष उनकी सम्पत्ति का उत्तराधिकार आर्य समाज को प्राप्त हो गया। शमशेर गढ़ में आर्य समाज स्थापना हेतु श्री मदन सिंह जी ने भूमि दान दी। वार्षिकोत्सव की समाप्ति पर वहां जाकर आर्य समाज की स्थापना कर दी गयी। श्री मदन सिंह ट्रस्ट का विषय भी इस वर्ष अन्तरंग सभा में उठा। ट्रस्ट की भूमि को प्राप्त करने के लिए न्यायालय में चल रहे वाद के लिए आर्थिक सहायता की मांग की गयी थी।

1959 जून में सिक्खों द्वारा बड़े पैमाने पर—बंजारों को सिक्ख बनाने का अभियान शुरू किया गया। जिला सहारनपुर में बिहारी गढ़ के पास ग्रामों में इनका जोर था। सिक्ख धर्म में दीक्षा का दिन तय हो गया था। आर्य समाज देहरादून की ओर से श्री पं० रुद्रदत्त जी शास्त्री एवं भाई प्रेम सिंह वर्मा को भेजा गया। हमारे प्रचार का परिणाम यह हुआ कि दीक्षा के दिन, एक भी बंजारा सिक्ख-मत में दीक्षित नहीं हुआ।

इसी वर्ष आर्य समाज देहरादून का एक दृढ़ स्तम्भ, श्री नारायण दास भार्गव (मुनि जी) गिर गया। इनके निधन से आर्य समाज को पूरी न हो सकने वाली क्षति पहुंची। श्री देवदत्त जी बाली इस वर्ष मंत्री थे। 1961 में अन्तरंग सभा ने अपने कर्मठ, वृद्ध, आजीवन आर्य समाज की सेवा करने वाले, चौ० हुलास वर्मा जी के निधन पर शोक प्रस्ताव स्वीकार किया। आर्य समाज का यह दूसरा मजबूत स्तम्भ भी गिर गया।

जनगणना के सम्बन्ध में दस हजार इश्तहार बांटे गये ताकि सर्वसाधारण अपने कर्त्तव्य का निर्णय करने में भूल न करे। श्री प्रभु दयाल जी ने लक्ष्मण चौक स्थित भूमि की रजिस्ट्री आर्य समाज देहरादून के नाम कर दी ताकि इस भूमि में लक्ष्मण चौक में आर्य समाज की स्थापना की जाये। इस समय लक्ष्मण चौक में समाज के सत्संग, सदस्यों के घरों पर लगते थे। मन्दिर बनाने के लिए जो एक बीघा भूमि वहां खरीदी गयी थी वह 4850/- रु० में बेचकर धन बैंक में जमा कर दिया गया ताकि भवन-निर्माण के काम आ सके। यह 1962 की बात है। 3-6-61 को अन्तरंग सभा

पृष्ठदाता

श्री पृथ्वी राज नारंग, 9, नेमी रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने सैद्धान्तिक रूप से इस बात का विरोध किया कि देहरादून स्थित एक कॉलेज का नामकरण डी० ए० वी० के स्थान पर डी० बी० एस० कर दिया जाये। सभा के विचार से महर्षि के नाम के साथ दूसरा नाम जोड़ना उचित नहीं था।

9-7-61 की अन्तरंग सभा ने सर्वसम्मत्ति से स्वीकार किया कि आर्य समाज के वेतन-भोगी आर्य समाज के सदस्य न हो सकेंगे।

1962 में स्वामी भास्करानन्द जी का धन जो चूहड़पुर में श्री आनन्द कुमार जी के पास सुरक्षित था और पीछे उन्होंने आर्य समाज देहरादून को दे दिया, के विषय पर प्रथम बार 17-6-62 की अन्तरंग सभा में चर्चा हुई। आर्य समाज शमशेर गढ़ के भवन-निर्माण में सहायता का वचन भी दिया।

1962 का वर्ष कई दृष्टियों से उल्लेखनीय है। आर्य समाज के भवन-निर्माण का कार्य इस वर्ष जैसे शुरू कर दिया गया। श्री जयराम सिंह ओबराय, प्रधान आर्य समाज के सद्प्रयत्न से लगभग 15000/- रु० नकद तथा इतने ही वचन प्राप्त हो गये। इस वर्ष में हरिनन्द स्मारक निधि में 22,000/- मौजूद थे।

भारत पर चीनी आक्रमण

इसी वर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा की हीरक जयन्ती हेतु सभा-प्रधान श्री प्रकाश वीर शास्त्री जी को 1001/- की थैली भेंट की गयी।

26 अक्तूबर हमारे उत्सव का प्रथम दिन था। दुर्भाग्य से उसी दिन चीन ने हमारे राष्ट्र पर भयंकर आक्रमण कर दिया। सारा देश अवाक् रह गया। राष्ट्र युद्ध के लिए तैयार नहीं था पर गले पड़ा ढोल बजाना ही पड़ता है। सारे देश में नवीन प्राण का संचार हो गया। सोई हुई राष्ट्रीयता और देश-भक्ति एक बार पुनः उठ खड़ी हुई। आर्य समाज देहरादून, जिसने कभी पग पीछे धरना सीखा ही नहीं, कैसे शान्त बैठता ?

उत्सव के प्रथम दिन ही रात्रि में श्री पं० प्रकाश वीर शास्त्री ने देश के प्रति हमारे कर्त्तव्य पर जो ओज-पूर्ण भाषण दिया उसका परिणाम यह था कि राष्ट्र की सहायता हेतु 5000/- रु० उसी समय संग्रह हो गया जो तीसरे ही दिन भारत के प्रधानमंत्री को भेज दिया गया। आर्य समाज देहरादून की कर्मठता का अनुमान इससे ही लगाया जा सकता है कि आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली की ओर से भारत के प्रतिरक्षा मंत्री श्री यशवन्तराव चव्हाण महाशय का स्वागत करने के लिए जो सभा आयोजित की गयी थी, उसमें आर्य समाज देहरादून की ओर से 1008 ग्राम सोने की तलवार एवं 5100/- रु० का एक चैक उस समय के समाज के प्रधान—श्री जयराम सिंह ओबराय ने भेंट किया था। फरवरी 1963 तक आर्य समाज देहरादून नकद व सोना मिला कर 30,000/- रु० से ऊपर रक्षा-कोष में दे चुका था। धन इसके बाद भी दिया जाता रहा। जिले की अन्य सम्पन्न संस्थाएं इस ऊँचाई तक पहुंच सकीं या नहीं, मैं नहीं जानता। इस धन संग्रह का और उन्नति का श्रेय हमारे तत्कालीन प्रधान श्री जयराम सिंह ओबराय को जाता है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की हीरक जयन्ती पर 1963 में देहरादून आर्य समाज के पचासों सदस्य लखनऊ पहुँचे। आर्य वीर दल के वीर भी, सेवा-कार्य हेतु लखनऊ गये। उन्होंने बड़े उत्साह से सेवा के कार्य में भाग लिया। 25 वीरों के आने-जाने का व्यय आर्य समाज ने वहन किया। भाई धर्मेन्द्र सिंह मन्त्री थे।

पृष्ठदाता
आर्य वस्तु भंडार, 46, डिस्पेंसरी रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज देहरादून द्वारा वृद्धों का सम्मान १९७५

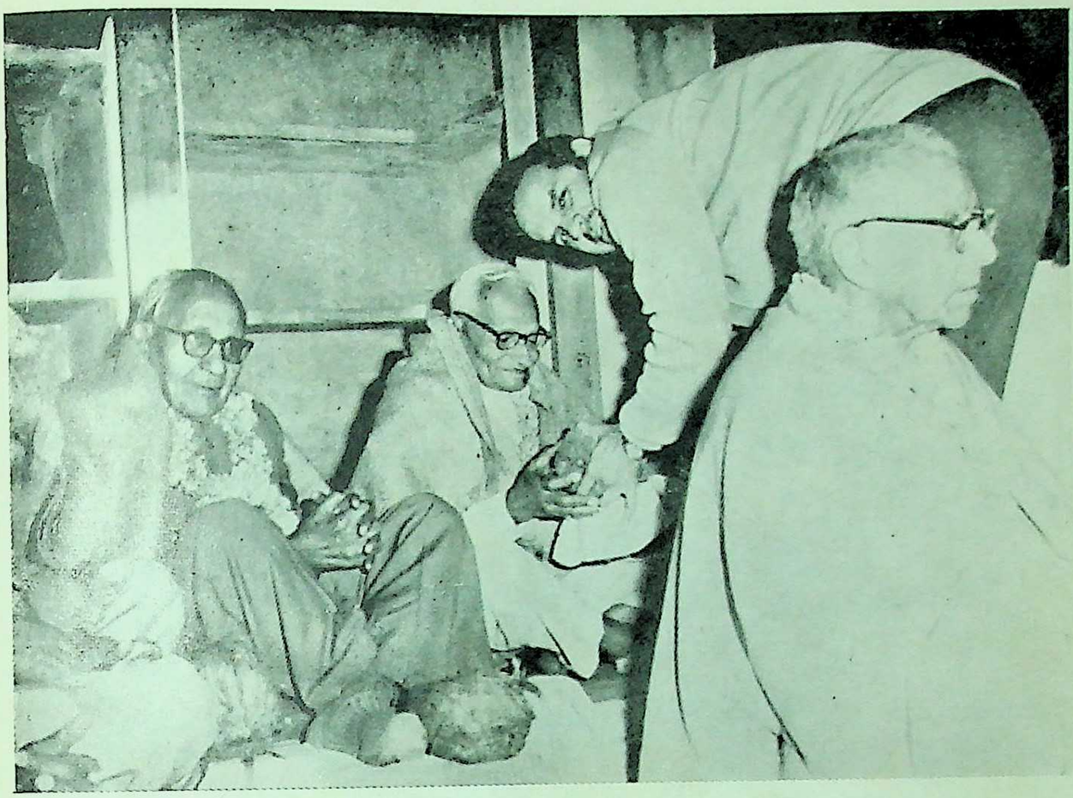

श्री डॉ० सोमनाथ जी प्रधान आर्य समाज श्री हंसराज जी सोनी का सम्मान करते हुए।
पं० हीरानन्द शर्मा साथ बैठे हैं।

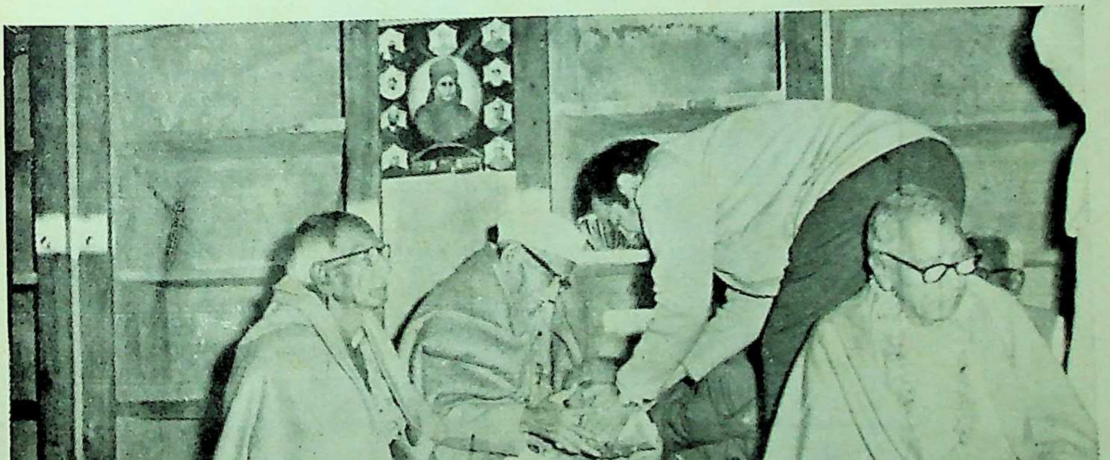

श्री डा० सोमनाथ जी प्रधान आर्य समाज श्री मा० रामस्वरूप जी का सम्मान करते हुए।
पं० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड साथ बैठे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्त्री मण्डल आर्य समाज देहरादून

देहली समारोह में प्रतिरक्षा मन्त्री श्री यशवन्तराव चह्वाण को स्वर्ण तलवार भेंट करने से पूर्व

बाय से दाय—सवश्री धर्मेन्द्रसिंह जी मंत्री, पं० हीरानन्द जी उप-प्रधान, जयरामसिंह जी ओवराय प्रधान, पं. तेजकृष्ण जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस वर्ष शमशेर गढ़ आर्य समाज के भवन-निर्माण के लिए, हमारे सदस्यों ने 626/- रु० 46 पै० संग्रह करके दिए ।

1964---यह वर्ष आर्य समाज देहरादून के इतिहास में एक महत्वपूर्ण वर्ष है । श्री देवदत्त बाली के मंत्री बनने से एक नवजीवन आ गया । जिले में प्रचार कार्य बढ़ाने के लिए "सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा" नाम से एक नया प्रयोग आरम्भ किया गया । प्रथम, द्वितीय, तृतीय वर्ग—रत्न, भूषण, प्रभाकर में प्रथम रहने वाले छात्रों के लिए 60/- रु०, 84/- रु०, एवं 120/-रु० वार्षिक की छात्रवृत्तियाँ देने का आयोजन किया गया । मेहनत की गयी, दौड़-धूप हुई और परिणामतः 124 छात्र-छात्राएँ आर्य साहित्य पढ़ने-पढ़ाने लगे और परीक्षा में बैठे । यह एक अत्यन्त उपयोगी कार्य है । इसे और उपयोगी, और व्यापक और प्रभावित बनाया जाना जाहिए ।

आर्य समाज के तीसरे मजबूत स्तम्भ पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार का निधन इस वर्ष हो गया । पं० नित्यानन्द भी स्वर्ग सिधार गये ।

ऐतिहासिक अभिलेखों की ढूंढ़

1965—इस वर्ष अन्तरंग सभा ने एक प्रस्ताव में जायदाद के, सम्पत्ति के समस्त क्रय-पत्र, दान-पत्र, लेखा-पत्र या उनकी प्रतिलिपियाँ प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की थी । 1965 का यह प्रस्ताव 1975 में अनायास ही उस समय कार्य रूप में परिणत हो गया जब मैं यह इतिहास-लेखन करने लगा और उपलब्ध पत्रकों की छानबीन करने लगा—मैंने समस्त मूल्यवान आलेख को एक स्थान पर एकत्र कर दिया है । एक सूची पत्र भी बना दिया है । भविष्य के लिए यह अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकता है । इन मूल्यवान् कागजों को बैंक-लॉकर में रखना चाहिए और साधारण प्रयोग के लिए इनकी फोटो-स्टेट कापी प्रयोग करनी चाहिए । फोटो-स्टेट कापियां भी मैंने बनवाई हैं । प्रारम्भिक रिकॉर्ड का समस्त लेखा शिक्स्ता उर्दू में है उसे पढ़वाकर हिन्दी रूपान्तर भी कराना चाहिए । श्री रामस्वरूप वर्मा, पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार, श्री रामदास पाहवा, श्री पं० नित्यानन्द तथा श्री शंकर लाल जी इस वर्ष हमसे बिछुड़ गये ।

21-11-75 को रामप्यारी आर्य कन्या पाठशाला को 2000/- ऋण देना स्वीकार किया गया । आर्थिक स्थिति की बाध्यता थी ।

1966—श्री राम चन्द्र जी सर्राफ, जो वर्षों हमारे कोषाध्यक्ष और मंत्री भी रहे थे, लक्ष्मण चौक में आर्य समाज बन जाने के कारण, इस वर्ष वहां के सदस्य हो गए । पीछे कुछ दिन पश्चात् 1968 में अचानक दिल का दौरा पड़ने से इनका देहान्त हो गया । उन जैसा मिलनसार, चरित्रवान्, मिष्टभाषी, निश्छल आर्य समाज का हितैषी कोई विरला ही मिलेगा । कार्य के प्रति ईमानदारी, हृदय में दया का लहराता सागर, जो बाहर से वही भीतर से, ऐसे सच्चे आर्य के जाने से आर्य समाज को गहरी चोट लगी ।

1966--**गोरक्षा आन्दोलन** :—जैसा कि मैं पहले निवेदन कर चुका हूं कोई राष्ट्र-हित का कार्य हो और आर्य समाज देहरादून पीछे रहे, यह कैसे सम्भव है ? अब गोरक्षा आन्दोलन चला तो आर्य समाज देहरादून क्यों पीछे रहता । मन्त्री जी ने अपनी रिपोर्ट में लिखा था "दिन-रात एक करके आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं ने आन्दोलन की धूम मचा दी । नौ जत्थे सत्याग्राहियों के भेजे गये । इनमें से एक जत्थे में तो 55 सत्याग्रही थे । और जत्थे के नायक थे मच्छी बाजार

पृष्ठदाता

किशन इलैक्ट्रिकल्स, कमल मार्किट, देहरादून

बाय से दाय—सर्वश्री धर्मेन्द्रसिंह जी मंत्री, पं० हीरानन्द जी उप-प्रधान, जयरामसिंह जी श्रीवराय प्रधान, पं. तेजकृष्ण जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थित झण्डे के महन्त श्री 'भगवान' जी आर्य समाज डोभरी के प्रधान श्री मोहर सिंह (जो जिले के प्रमुख आर्य कार्य कर्त्ता हैं) भी एक जत्थे के नायक बन कर सत्याग्रह में गए थे।

श्री पं० ठाकुर दत्त शर्मा (अमृतधारा)

पंजाब प्रान्त में समस्त प्रान्तीय सभा का प्रचार-तंत्र वर्षों जिनके इशारे पर संचालित रहा, वर्षों जिसके वे कर्त्ता-धर्त्ता, सर्वे-सर्वा रहे, उस सबको छोड़कर पाकिस्तान बनने पर देहरादून उनकी कार्य स्थली बन गई।

हमारी समाज का दुर्भाग्य था कि जिस वर्ष वे हमारी समाज के प्रधान बने—उसी वर्ष उन्हें फालिज ने आ दबोचा। जिसने जीवन में लाखों रुपये दान दिये, आर्य समाज के बड़े से बड़े पद को सुशोभित किया यह सातवाँ दशक बलात् उन्हें भी हमसे छीन ले गया।

ऐसे कर्मठ, विचारशील आर्य अब कहाँ मिलेंगे ? इनके लाखों रुपये से बनाया गया अमृत धारा ट्रस्ट अब भी जनोपयोगी कार्यों को इन्हीं के छोटे भ्राता और हमारी समाज के आदरणीय सदस्य (जो प्रधान भी रहे हैं) पं० हीरानन्द शर्मा की देख-रेख में चला रहा है।

श्री जयराम सिंह ओबराय

पाकिस्तान बनने पर रावलपिण्डी छोड़ कर देहरादून को अपना स्थायी निवास बनाने वाले श्री 'शाह जी' एक विभूति थे। दान देने में खुला हाथ, आर्य समाज़ के कार्यों में अत्यन्त श्रद्धा, चरित्रवान् और कर्मठ थे। समाज के 5 बार प्रधान बने। हर बार समाज आगे बढ़ता गया। आर्य समाज में 1950 के बाद होने वाले विशाल सहभोज आप ही के उत्साह का परिणाम थे। भवन-निर्माण के लिए आपने 1964 में ही 15000/- रु० नकद और 15000/- रु० के वायदे प्राप्त कर लिए थे। सच पूछो तो नये भवन की एक प्रकार से तैयारी उन्होंने ही की थी। लक्ष्मण चौक आर्य समाज का भवन बनाना भी सम्भव न था यदि शाह जी ने वहाँ का प्रधान बनने पर सहारा न दिया होता। लक्ष्मण चौक का वह आलीशान भवन भी सदा आपकी याद दिलाता रहेगा।

बीसवीं सदी का यह सातवां दशक—इन्हें भी हमसे छीन ले गया। उनके पुत्र श्री अमोलकराम ओबराय देहरादून में ही 10 म्युनिसिपल रोड पर निवास करते हैं।

श्री पं० धर्म देव दर्शन-केसरी

विद्वान्, लेखक, समाज-सेवी के अतिरिक्त उच्च कोटि के देशभक्त थे। न जाने कितनी बार जेल-यात्रा की। कन्या गुरुकुल देहरादून में वेद और दर्शन-शास्त्र का अध्यापन किया। उच्च कोटि के वक्ता थे। अखिल भारतीय आदिम जाति संघ के महामंत्री रहे। हिमालय की जनजातियों की सेवा हेतु अशोक आश्रम कालसी नामक संस्था की स्थापना की जिसका संचालन वे जीवन पर्यन्त करते रहे। श्री देवदत्त बाली, श्री पृथ्वीराज नारंग और श्री लक्ष्मण देव जी अभी इस संस्था के उत्साही के कार्यकर्त्ता हैं।

पृष्ठदाता

पं० आज्ञाराम शिशु निकेतन, नैशविला रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिनिधि सभा अधिवेशन तीसरी बार

1966 में ही आर्य प्रतिनिधि सभा का उत्तर प्रदेश का वार्षिक वृद्ध अधिवेशन, जो दो बार पहले देहरादून में हो चुका था, तीसरी बार देहरादून में किया गया। इस बार अधिवेशन का स्थान डी०ए०वी० कॉलेज के बजाए महादेवी कन्या पाठशाला था। अधिवेशन व्यय हेतु 2908/- रु० दान से प्राप्त हुए। और व्यय 3328/- रु० 67 पै० हुआ। उत्सव को सब प्रकार से सफल बनाने का प्रयत्न किया गया।

इस अधिवेशन से जितना लाभ उठाया जा सकता था, हम नहीं उठा सके। तत्कालीन मंत्री महोदय ने अपनी 2-4-67 की वार्षिक रिपोर्ट में ठीक ही लिखा था—"भविष्य के लिए उचित होगा कि ऐसे बड़े आयोजन को करते समय स्थानीय प्रचार के लाभ को अवश्य दृष्टि में रखा जाए।"

अन्य कार्य

कौलागढ़ सम्पत्ति के किरायेदारों पर दावे किए गए थे। इस वर्ष एक किरायेदार से सब प्राप्तव्य धन प्राप्त हो गया थे। दूसरे से कुछ प्राप्त कर लिया गया। शेष की 21/- रु० मासिक की किस्तें की गयीं। इसी वर्ष मंत्री जी ने अपनी वार्षिक आख्या में स्पष्ट किया था कि हमारा वार्षिक सदस्य-शुल्क इतना भी नहीं है जिससे इस कर्मचारी का वेतन भी निकल सकता हो जो यह शुल्क इकट्ठा करने के लिए नियुक्त किया गया है।

1967 में अखिल भारतीय दयानन्द साल्वेशन मिशन के प्रचारक पं० तोता राम (जो बाद में श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम में प्रबन्धक भी रहे और अब डाक पत्थर आर्य समाज में हैं) ने कई बार यहां रह कर ईसाई प्रचार-विरोध का कार्य किया। समाज ने उक्त मिशन का सदस्य 500/- रु० देकर बनना इस वर्ष स्वीकार कर ये धन 50/- रु० वार्षिक की किस्तों में दिया।

16-3-1969 की साधारण सभा होने पर जो पहला अभाव नजर आया वह श्री पं० अमरनाथ वैद्य शास्त्री का था। वर्षों समाज की सेवा करने वाले ये तपस्वी अब नहीं रहे। समाज का अन्तिम मजबूत स्तम्भ टूट गया यह वर्ष हमारे अनेक महात्माओं को लील गया। आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान पं० भगवत दत्त जी, स्वामी समर्पणानन्द, स्वामी गंगागिरी जी, सर गोकुल चन्द नारंग इसी वर्ष स्वर्गस्थ हो गए।

22-3-1970 प्र० सं० 4—काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह हेतु आर्य समाज देहरादून ने 600 रुपये भिजवाए।

13-12-70 प्र० सं० 3—बड़े अस्पताल के सामने बनी कबर पर हिन्दू लड़कियां चढ़ावे चढ़ाती हैं। इसे रोकने के लिए हजारों इश्तहार बांटे गए।

30-5-1971 को अन्तरंग सभा में लगभग 5 घण्टे खुलकर बहस हुई कि नवीन भवन-निर्माण करना है या नहीं, आगे दुकानें बनानी हैं या नहीं। भवन निर्माण में तो शीघ्र ही सहमति हो गयी परन्तु दुकानें बनाने का निर्णय मतदान से किया गया। दुकान बनाने के विरोध में केवल एक मत आया। निर्माण उप-समिति का गठन कर दिया गया।

पृष्ठदाता

श्री जे० जे० दत्त, 12, नेशनल रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

5-9-1971 प्रस्ताव सं० 6 भवन निर्माण उप-समिति ने भवन-निर्माण के लिए मानचित्र स्वीकार कर लिया है। यह सूचना दी गयी है।

2-5-71 प्र० सं० 14—19, 20, 21 मई को अलवर में होने वाले अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन के लिए प्रधान जी व मंत्री जी तथा चार अन्य सदस्य जावें। 15-7-72 को पुन: इसी विषय पर चर्चा हुई और तय हुआ कि मंत्री जी यदि कोई धन देने का वचन अलवर में देकर आयेंगे तो समाज उसे पूरा करेगी।

1972 आर्य समाज के उन कार्य-कलापों का जिकर मैंने नहीं किया है जिनके बिना समाज निष्प्राण हो जाता है। संध्या चलती रही, यज्ञ होते रहे, वेद-प्रचार करते रहे, पुस्तकालय, वाचनालय चलते रहे, संस्कार और शुद्धियां चलती रहीं। एक दूसरे के दु:ख-सुख में सम्मिलित होने लगे। इन सबका का वर्णन केवल प्रसंग आने पर ही किया है अन्यथा छोड़ दिया है क्योंकि मेरा विश्वास है कि यदि समाज इन उपकारी कार्यों को नहीं करता तो उसका इतिहास लिखने की ही क्या आवश्यकता है ?

मानव-मात्र की सेवा, उसकी उन्नति में सहयोग और सहायता यही तो है जिसके लिए आर्य समाज जीवित है।

वेद का प्रचार, चरित्र निर्माण, मानवता का कल्याण और जन-जन के मोक्ष का मार्ग-प्रशस्तीकरण, यही तो है जिसके लिए आर्य समाज को जीवित रहना है। जैसे किसी का जीवन-चरित्र लिखते समय यह लिखना हास्यास्पद है कि वह प्रतिक्षण सांस लेता था उसी प्रकार आर्य समाज का इतिहास-लेखन करने वाला यदि यह सब कुछ गिनाने लगे, तो उपहास का ही पात्र बनेगा। परोपकार ही धर्म का सार है, आर्य समाज का प्राण है। उसके बिना इसके अस्तित्व की कल्पना ही कैसे हो सकती है ?

भवन का नव-निर्माण

मुझे पद लेने की कभी चाहना नहीं रही परन्तु 1972 के वार्षिक चुनाव में मैंने मंत्री-पद के लिए स्वयं अपना नाम प्रस्तुत किया। और स्वेच्छा से यह पद मांग कर ले लिया। यह तो समाज का मुझ पर प्रेम था कि किसी ने मुझसे पूछा नहीं कि क्यों पद चाहते हो। परन्तु मेरे मन में यह बात स्पष्ट थी कि भवन-निर्माण के निमित्त जो धन-संग्रह किया गया था वह 10 वर्षों से हमारे कोष में जमा है। मुझे उन पत्रों का भी ज्ञान था जो दानदाताओं ने लिखे थे और मांग की थी कि उनका धन वापिस कर दिया जाए क्योंकि भवन का निर्माण अब नहीं होना है। मैंने ऐसे कितने ही पत्र स्वयं पढ़े थे और अन्तरंग सभा में समय-समय पर उनकी चर्चा भी हुई थी। लोग समझ बैठे थे कि भवन अब नहीं बनेगा और कि इस नाम पर इकट्ठा किया धन भवन-निर्माण के नाम पर एक धोखा-मात्र था।

परन्तु वास्तविकता कुछ और ही थी। भवन-निर्माण इसी स्थान पर किया जाए। (इसी स्थान का नाम लेकर धन संग्रह किया गया था) या किसी दूसरे स्थान पर नया भवन बनाया जाए, प्रारम्भ में तो यह विवाद देरी का कारण बना। और यह निबटने पर, भवन-निर्माण होने पर, अपने लोगों की होने वाली छींटाकशी कोई बरदाश्त करने को तैयार न था। भवन बनेगा, लाखों खर्च होंगे। कोई कहेगा फलाना यह खा गया, फलाना वह खा गया। इसे कोई सहन करने को तैयार न था। मेरे मन में तो यह आया कि यह तो ईश्वरीय कार्य है, प्रभु का कार्य है, आखिर कब तक खटाई में पड़ा रहेगा ? मैंने जी कड़ा किया, अपनी खोपड़ी के उड़े बालों का ध्यान किया, और सब बरदाश्त करने के लिए उद्यत हो

पृष्ठदाता

श्री राममूर्ति, 48, नेशनल रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

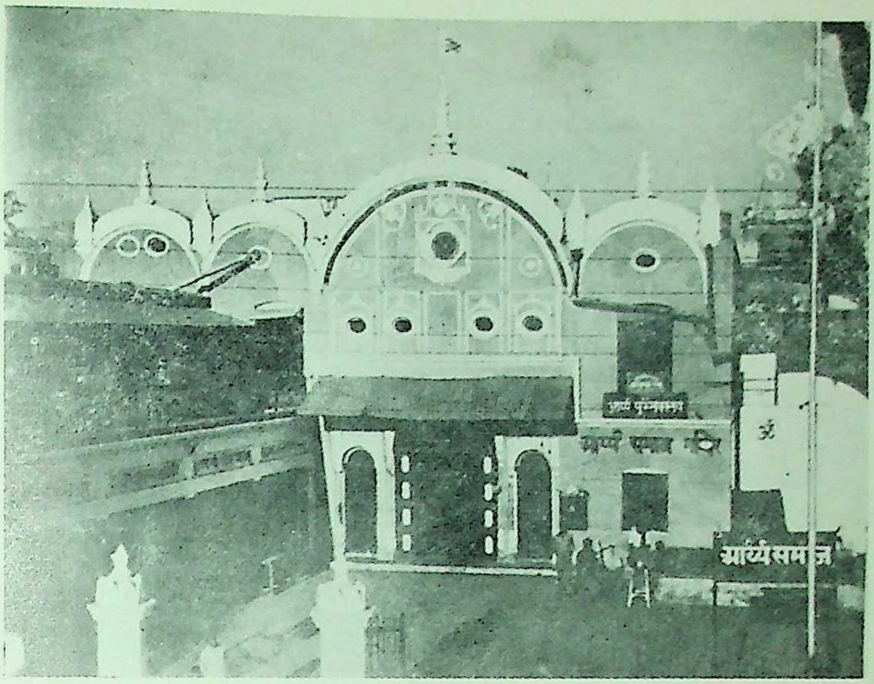

आर्य समाज मन्दिर
पुराना भवन १८९१, इसे गिराकर अब नया भवन
उसी स्थान पर बन गया है।

आर्य समाज देहरादून का नया भवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आर्य समाज मन्दिर, देहरादून का नया हाल

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

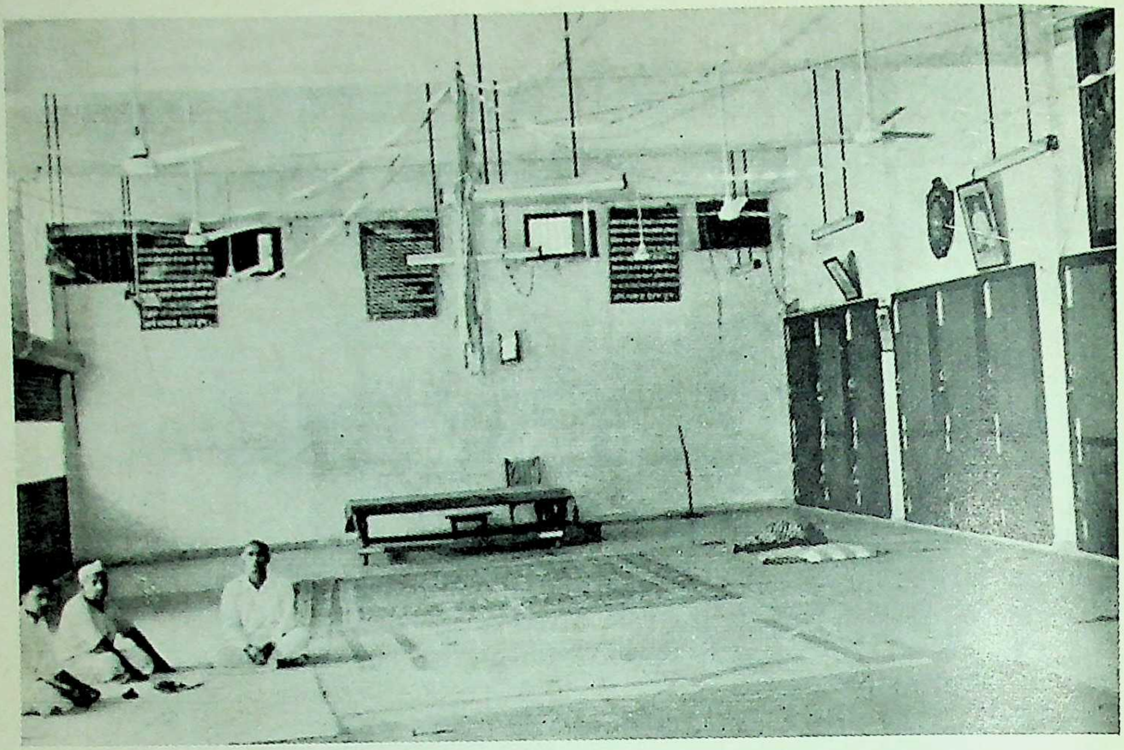

अन्तरंग सभा आर्य समाज देहरादून

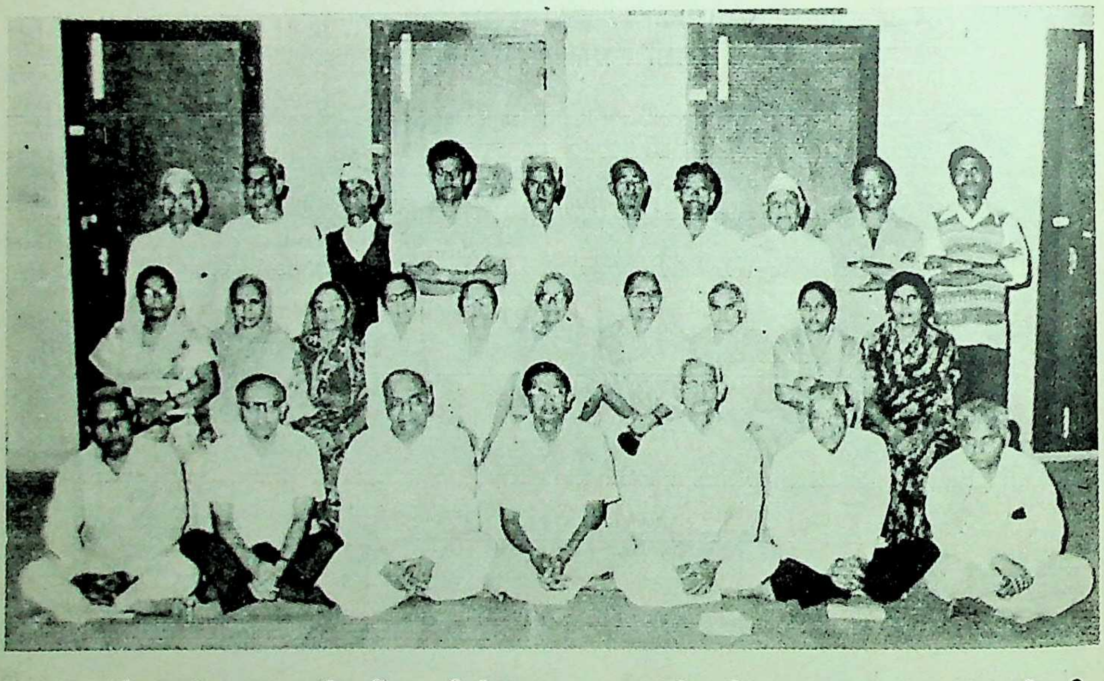

खड़े बाएं से दाएं—मा० दलीप सिंह, श्री वेदप्रकाश गुप्त, श्री ललिता प्रसाद, श्री अशोकार्य, श्री बालकृष्ण आर्य, श्री दयाचन्द, श्री टीकाराम, श्री धारासिंह, श्री आदित्यवर्धन, श्री ऋषि राज।

महिलाएं—श्रीमती सुशीला शर्मा, सरला बाली, कृष्णा माय, अविनाशवती, लीलावती सेखरी यशोदा देवी, ब्रह्मवती नारंग, राजरानी खरवन्दा, कमला नांगिया ।

नीचे—श्री देवेन्द्रनाथ वैद्य, बलराज, यशपाल आर्य (मंत्री), देवदत्त बाली (प्रधान) पृथ्वीराज नारंग (उपप्रधान), रणवीर सिंह बाहरी, पारसनाथ प्रिंसिपल ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। प्रभु का नाम लेकर आग में हाथ झोंक दिया। मैंने अपना कार्य शुरू कर दिया। विजय दशमी 1973 के शुभ दिन आर्य समाज का पुराना भवन गिरा कर उसके स्थान पर—नया भवन आर्य समाज मंदिर के लिए बनाने का, शिलान्यास कर दिया गया। उस शिलान्यास के समय दबाए गए ताम्रपत्र पर यह शब्दावली उत्कीर्ण है—

"ओ३म्—महर्षि दयानन्द सरस्वत्याः पावन प्रयत्नात् विक्रमाब्दे षट्त्रिंशदुत्तरेकोनविंशतितम संस्थापितस्य देहरादूनस्थास्य आर्य समाजस्यास्थ ऐतिहासिकमहानन्दाश्रमाभिधानस्य भवनस्य जीर्णोद्धाराय समादरणीय प्रधान पदासीनेन सोमनाथ महोदयेन आर्यसमाजस्यास्य नवीन भवनस्य शिलान्यासो विहितः—यशपालः मंत्री।

तिथि—आश्विन शुक्ला दशविजय दशमी विक्रमाब्दः 2030"

शङ्का-समाधान

7-4-1973—साप्ताहिक संत्सगों में प्रश्नों के उत्तर देने की नई परम्परा सफल सिद्ध होने की सूचना दी गयी

प्रकीर्ण

श्री पं० हीरानन्द जी व माता प्रीतम देवी जी ने हॉल के लिए कपड़े की नई चादर बनाने हेतु 501/- रुपए दिए।

10-6-73—मेरठ शताब्दी समारोह के लिए जाने वाले आर्य वीरों के लिए 300/- रु० धन की स्वीकृति।

यशपाल जी की देख-रेख में 2 बसों में भर कर हमारे सदस्य मेरठ शताब्दी पर बड़े उत्साह से भाग लेने गए। सुन्दर आयोजन के लिए मेरठ वालों को धन्यवाद दिया गया।

2-9-1973, प्र० 6क—सेंट ऐंनीस स्कूल में अनुचित रूप से परिवर्तन पर क्षोभ प्रकट किया गया। जिलाधिकारियों से पत्रोत्तर और उचित कार्यवाही न होने पर प्रत्येक उचित कदम उठाने की धमकी। आन्दोलन का निश्चय। इस प्रस्ताव की प्रतियां प्रान्तीय सरकार व समाचारपत्रों को भी भेजी जावें। वार्षिकोत्सव पर श्री पं० ओम् प्रकाश जी शास्त्री एवं पूज्य स्वामी रामेश्वरानन्द जी के मध्य एक महान् शास्त्रार्थ हुआ। दोनों सज्जनों को महीने पहले तैयारी के लिए कह दिया गया था। आंगन खचाखच भर गया। यथासमय शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ। तीन घण्टे चलता रहा। दोनों ने अपना-अपना पक्ष प्रस्तुत किया (ओम प्रकाश शास्त्री जी वृक्षों में अभिमानी जीवन का खण्डन करते थे, श्री स्वामी जी मण्डन)......इस शास्त्रार्थ को, श्री सोमनाथ ढींगरा ने टेप कर लिया था। इसे छपवाने के लिए प्रस्ताव स्वीकार हो गया था। परन्तु दुर्भाग्य से यह टेप नष्ट हो गया। और वह शास्त्रार्थ छपने से रह गया।

प्र० 6 :—पं० हरिदत्त जी को भवन-निर्माण के कार्य में ऑनरेरियम (मानदेय) देने के लिए प्रधान जी को अधिकार दिया गया। 18-9-74 के प्रस्ताव सं० 10 द्वारा 150/- मासिक ऑनरेरियम देना स्वीकार हुआ। सती मंदिर के आगे दीवार बना कर उसे घेरने की कोशिश मस्जिद वालों ने की। इस पर अन्तरंग सभा का एक विशेष अधिवेशन उसी समय बुलाया गया और सर्वसम्मति से गम्भीरतापूर्वक विचार करके निम्न प्रस्ताव स्वीकार किया गया :—

पृष्ठदाता

श्री निरंजन शर्मा, 7, सहारनपुर रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आर्य समाज मंदिर धामांवाला के ठीक सामने मस्जिद की दीवार से लगा हुआ एक सती का मन्दिर है। देश स्वतन्त्र होने के पूर्व भी इसी सती मन्दिर को लेकर हंगामे होते रहे हैं और यह मन्दिर हिन्दुओं का मन्दिर समझा जाता रहा है।

आज 9-12-73 को जब लोगों ने देखा कि मन्दिर में जाने वाले मार्ग को पक्की दीवार बना कर बन्द करने का प्रयास किया जा रहा है और मस्जिद की चार-दीवारी में घेरा जा रहा है तो वातावरण में काफी उत्तेजना फैल गयी। नगर की शान्ति तथा साम्प्रदायिक सौमनस्य बना रहे इसके लिए जहां प्रत्येक नागरिक जिम्मेदार है वहां सरकार अपने विशेष दायित्व से मुक्त नहीं हो सकती। अतः आर्य समाज की यह सभा देशहित में शासन से यह प्रार्थना करती है कि तुरन्त ऐसी व्यवस्था की जाए कि जिससे सती का यह मन्दिर सुरक्षित रहे। जो लोग गलत काम करने के लिए उत्तरदाता हैं उन्हें रोका जाए ताकि शरारत न पनपे और शांति और भाई चारे का पवित्र वातावरण बना रहे।"

निश्चय हुआ कि इसकी प्रतियां जिलाधीश, सिटी मैजिस्ट्रेट, एस० पी०, प्रधान नगरपालिका को दी जाएँ।

प्र० सं० 4 :—समाचारपत्रों, गीताभवन अधिकारी, सनातन धर्म सभा, पंचायती मन्दिर, हिन्दू सभा, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद् को भी सूचना दी गयी।

16-6-74 अन्तरंग सभा प्र० सं० 16 :—

107/117 सती मन्दिर मुकदमा 9-5-74 को खारिज हो गया।

रिवीजन सती मन्दिर (जो विरोधियों ने की थी) वह भी खारिज हो गई। अब 147 का केस चलेगा।

20 शांति देवी सिन्धी महिला थी, जिसने भवन निर्माण हेतु धन का वचन देकर धोखा दिया था। विषय प्रस्तुत हुआ समस्त समाजों को इस धोखे बाज स्त्री से सावधान किया जाय। यह स्वीकार हुआ।

अन्तरंग 8-9-74—सती मन्दिर मामले के लिए आर्य समाज खर्चा करे। वकील कर ले। हाई कोर्ट में विरोधियों के दावे का मुकाबला किया जाय।

15-6-75 को साधारण सभा में मैंने एक आख्या प्रस्तुत की थी उसमें कहा था "...सीमेन्ट की केवल 10 बोरी प्रति माह मिलती थी, भाव 15/- रु० प्रति बोरी था। भवन तो 10 वर्ष में भी न बन पाता।

पृथ्वीराज जी नारंग की दौड़-धूप से एक बड़ा रेलवे वेगन सीमेन्ट का हमको 12/50 रु० की दर से घर पहुंचता मिल गया।" अब भवन लगभग बन कर तैयार है। पुराने भवन में यज्ञशाला भवन के मध्य में स्थित थी। इस कारण बैठने का स्थान अत्यन्त कम था। इस नए भवन में पहले से चार गुणा आदमी बैठ सकते हैं।...हाल का फर्श इस मास तक पूरा हो जाने पर—संगमरमर की एक यज्ञशाला का निर्माण किया जाएगा। अहमरा आंगन भी अब पहले प्रांगण से 650 फुट बड़ा हो गया है। पहले की अपेक्षा कई गुणा मनुष्य किसी भी उत्सव में आराम से बैठ सकते हैं।

पृष्ठदाता

श्री एस० के० हरि, 59, राजपुर मार्ग, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब तक भवनों पर लगभग 18 टन लोहा—डेढ़ लाख ईंटे, 1800 बोरी सीमेन्ट खप चुका है। बजरी-रेत सिंगल-रोड़ी सैकड़ों ट्रक खरीदा गया है। आज की तारीख तक के सब परचों का भुगतान हम कर चुके हैं। आगे निर्माण के लिए पूर्ण धन की व्यवस्था भी हमने कर दी है। इसमें अभी और होने वाले कम से कम 70-80 हजार के खर्च से घबराने की बात नहीं है। हम कार्य पूरा करने के लिए कृत-संकल्प हैं। प्रधान जी तो खैर बड़े जीवट के आदमी हैं। हिम्मत हसमें भी पूरी है। हमारी कामना है कि नगर की शान के अनुरूप ही यह भवन बने।"

नहर वाली गली की ओर का निर्माण पूरा हो चुका है। सब्जी मण्डी की दुकानें बन चुकी हैं। गेट के दूसरी ओर की दुकानें वैद्य हरिश्चन्द जी का वाद निपटने पर पूर्ण की जा सकेंगी।

स्त्री आर्य समाज के प्रयत्न से एक कमरा बनाने हेतु 6000/- रु० का दान आर्य समाज को प्राप्त हो चुका है। अन्तरंग सभा ने उस दानदाता के नाम का पत्थर लगाना स्वीकार किया है।

कमला देवी जी (श्री बलवन्त सिंह जी निवासी आढ़त बाजार देहरादून की धर्मपत्नी) ने जो वसीयत आर्य समाज के हक में की थी उसके कागजात मौजूद हैं। इसमें श्री महेन्द्र भूषण एडवोकेट से मशवरा किया गया है। एक जनरल पावर आफ एटोरनी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से ली जाये ताकि सभी मामले निपटाये जा सकें। अन्तरंग के इस निर्णय के अनुसार श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री ने स्वयं चन्दोसी रजिस्ट्रार, के कार्यालय में उपस्थित होकर एक अधिकार-पत्र हमारे प्रधान डॉ० सोमनाथ ढींगरा के हक में लिख दिया।

मार्च 1975 को अन्तरंग सभा एक रिकार्ड प्लेयर खरीदने की स्वीकृति दे चुकी थी ताकि प्रातःकाल इस भवन से वेद मन्त्रों और गीतों को प्रचारित किया जा सके। 75 का वह प्रस्ताव अब 1980 में कार्यान्वित हो सका।

नवम्बर 1975 में अन्तरंग सभा ने प्रस्ताव संख्या 5 द्वारा तय किया कि 'आर्य समाज स्थापना शताब्दी देहली की व्यवस्था श्री यशपाल जी करें।" 22-12-75 को तीन बसें लगभग 180 आर्यों को लेकर देहली गयीं। उत्साह का कोई पारावार न था। कुल 25/ रु० आने-जाने का किराया प्रति व्यक्ति पड़ता था। देहली की आर्य समाजों ने जो सेवा की उसे आजीवन भुलाया नहीं जा सकता। कितना प्यार, कितना उत्साह। जलूस 17 किलोमीटर लम्बा—मनुष्यों का एक ठाठें मारता समुद्र। प्रान्तीय वेशों में सजे आर्य पुरुष और महिलाएं ऋषि-ऋण से उऋण होने को उतावली माताएं, बहिनें, बेटियाँ, बच्चे-बच्चियां। जिधर देखो सिर ही सिर दिखायी देते थे। दयानन्द का लगाया पौधा एक शताब्दी में ही वट-वृक्ष बन गया। उस समारोह की समस्त यादें-स्मृतियां अन्तस् में समाए हम देहरादून वापिस आ गये। कागज का कलेवर अनुमति नहीं देता, वहां का वर्णन नहीं करता। केवल यही लिखना पर्याप्त होगा कि आतिथ्य की जो उच्च परम्परा देहली वालों ने स्थापित की है वह हमारे यहां भी चले।

भवन-निर्माण हो जाने से हमारा उत्साह भी उतना ही बढ़ा था। 15-6-75 को मेरी आख्या में कहा गया था "इस वर्ष हमने जिले भर में प्रचार की धूम मचा दी। शमशेर गढ़, ऋषिकेश, वीर भद्र सभी जगह अपनी बसें लेकर गये। ईदगाह, सहसपुर जस्सोवाला, छरबा, सोरना में दो-दो दिन के आयोजन किये गये। सैकड़ों रुपये का साहित्य बांटा गया। "सत्यार्थ प्रकाश की विसंगतियां" नामक पुस्तक का उत्तर मैंने स्वयं लिख दिया था।" वह मसौदा सुरक्षित हैं पर अभी छपा नहीं है।

पृष्ठदाता

डा० एम० एल० पेशिन, पेशिन हास्पीटल, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

16-5-76 उन आर्यों का जिन्होंने आर्य समाज की लगातार सेवा की है और अब 80 वर्ष से ऊपर के हो गये हैं अभिनन्दन किया जाये। अतः श्री पं० हीरानन्द शर्मा, पं० विश्वनाथ विद्या मार्तण्ड एवं श्री मा० रामस्वरूप को एक-एक दुशाला, एक-एक नारियल और एक स्मारिका भेंट की गयी। भवन निर्माण हेतु धन-संग्रह के लिए एक स्मारिका छापने का निर्णय हुआ था। उसके लिए धन-संग्रह विज्ञापन प्राप्त करने का समस्त कार्य अत्यन्त योग्यता से श्री डॉ० सोमनाथ ढींगरा ने अकेले ही किया था।

14-1-76, प्रस्ताव सं० 5 द्वारा श्री महेन्द्र भूषण सहाय की तरफ वाली गली में दुकानें बनाना तथा उसके लिए आवश्यक खर्च करना स्वीकार हुआ।

3-4-77—श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम के 50 वर्ष पूरे हो गए। अर्द्ध शताब्दी हेतु 501/- रु० समाज के कोष से आश्रम को देना स्वीकार किया गया।

1943 से स्टॉक-रजिस्टर बनने के प्रस्ताव अन्तरंग सभा कर रही थी—इस वर्ष वह कमी पूरी कर दी गई। रजिस्टर तैयार कर दिए गए।

भवन-निर्माण में केवल यज्ञशाला पर कलश लगना व हाल के खम्बों पर थोड़ा काम शेष है

11-4-77—"आर्य समाज देहरादून का प्रधान पदेन, राम प्यारी आर्य कन्या पाठशाला का भी प्रधान होता है। परन्तु सुनने में आया है कि बहुत अर्से से विधान में परिवर्तन करके हमारा यह अधिकार निरस्त कर दिया गया है।" इसकी वास्तविकता जानने हेतु एक जांच-समिति का निर्माण किया गया है।

11-7-77—स्थानीय सरकारी हस्पताल में रोगियों की सेवार्थ हमारे सदस्यों द्वारा किये जाने वाले कार्य की सराहना की गयी और लगातार सहयोग का आश्वासन दिया गया।

26-3-78—चक्खूवाला सम्पत्ति का सौदा कर 8000/- रु० बकाया लेना दिखाया जाय।

4-5-78—सती मन्दिर मुकदमे हेतु गीता भवन ने 100/- रु० भेजे हैं। यह सूचना दी गई है। श्री बलवीर सिंह वेधड़क की पौत्री के विवाह पर 251/- रु० की भेंट दी जाए। उनका पत्र पढ़ा गया था।

7-5-78 को मन्त्री ने अपनी आख्या में बताया था "कि साधारण सभा ने वर्ष में कम से कम एक पिकनिक के लिए कहा था। इस बार जौली ग्रान्ट तथा हरिद्वार समाज के उत्सव में हम सदल-बल सम्मिलित हुए।" हरिद्वार में श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी की बलिदान अर्द्ध शताब्दी पर हमारे सदस्यों ने अत्यन्त उत्साह से भाग लिया। आंध्र प्रदेश और केरल में समुद्री तूफान ने भयंकर विनाश लीला उपस्थित कर दी। खण्ड-प्रलय का सा दृश्य उपस्थित हो गया। भूकम्प, दुर्भिक्ष आदि के दुष्काल में आर्य समाज कैसे शांत बैठे ? आगे-आगे बैण्ड और सड़क के दोनों ओर चादरें फैलाए आर्य नर-नारी धन-संग्रह को निकल पड़े। लोगों ने दिल खोल कर सामान भी दिया और नकद भी। 1139 1·52 रु० एकत्र किए गए जिसमें 11100/70 उसी समय भेज दिए गए, शेष पीछे भेजे गए।

14-5-78—आर्य समाज देहरादून की शताब्दी 28 से 31 अक्तूबर तक मनाने का निर्णय किया गया। (पर मनाई नहीं गई)

पृष्ठदाता

पं० गौतम देव सर्राफ, 17, पुरुषोत्तम दास मार्ग, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

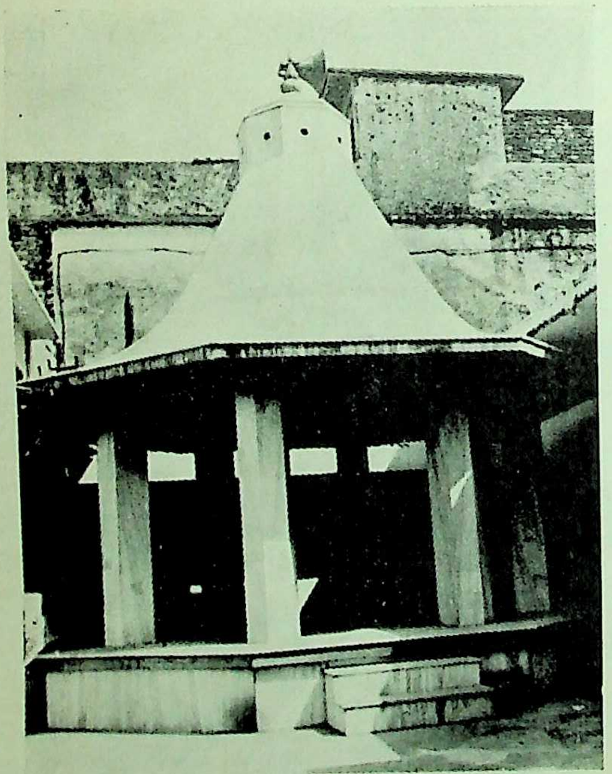

ग्रार्य समाज देहरादून की
संगमरमर की नवनिर्मित यज्ञशाला

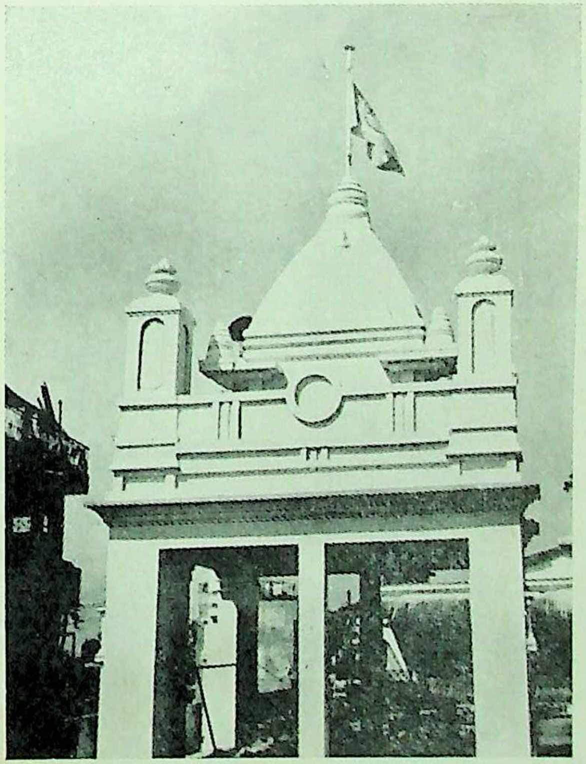

ग्रार्य समाज भवन देहरादून के
मुख्य द्वार का उपरि-भाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय महिला आश्रम, लक्ष्मण चौक, देहरादून

स्त्री आर्य समाज, धामावाला, देहरादून की पदाधिकारी एवं अंतरंग सदस्यायें
नीचे बैठी दाएं से बाएं-नं० ३ श्रीमती राजखरबन्दा (प्रधाना)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

30-7-78—प्रस्ताव सं० 20 द्वारा अन्तरंग सभा ने निर्णय किया कि शताब्दी-समारोह दिल्ली के आस-पास 1979 में मनाया जाय। (नहीं मनाया गया)

प्रस्ताव सं० 3 द्वारा आर्य गुरुकुल तपोवन को फिलहाल 250 रुपया मासिक 6 माह देना स्वीकार किया गया।

21-12-78—कौलागढ़ के किरायेदारों के विरुद्ध कार्यवाही करने एवं वहां समाज के भवन में अधिवेशन करने का निर्णय किया गया।

31-12-78 को कौलागढ़ में अधिवेशन किया गया। समाज के सैंकड़ों सदस्य वहां पहुंचे। समारोह के अध्यक्षता कौलागढ़ के वयोवृद्ध प्रतिष्ठित नागरिक श्री चन्द्र मोहन नोटियाल ने की। संयोजन वहीं के श्री ईश्वरदत्त डंगवाल ने किया। भवन पर आर्य समाज मन्दिर का नामपट्ट लगाया गया, ध्वजारोहण किया गया। कौलागढ़ के नागरिकों ने न केवल अत्यन्त उत्साह से भाग लिया अपितु आग्रह किया कि यहां पर यज्ञ, सत्संग और आर्य समाज के अन्य लोकोपकारक कार्यक्रम निरन्तर चलते रहने चाहिएं। निश्चय किया गया कि ज्यों ही पूरा भवन खाली हो जाए वहां पर विधिवत् आर्य समाज की स्थापना का कार्य हाथ में लिया जाय। (अन्तरंग सभा 4-2-79 प्रस्ताव सं० 7)

"ग्रीष्म ऋतु में मन्दिर की ड्योढ़ी में पानी का प्याऊ चलाया गया।"

"पश्चिमी गली में सात दुकानें बनने का कार्य चल रहा है।" मद्य-निषेध के लिए अत्यन्त परिश्रम किया गया। पचासों जन सभाएं आयोजित की गयीं।

इस वर्ष श्री झब्बा लाल जी, मालदार गुलाबसिंह और वैद्य कृष्ण दत्त जी का सम्मान किया गया। दुशाला, नारियल भेंट किए गए। पांवटा व विकास नगर का भ्रमण दो बसों में किया गया। विधान सभा चुनाव में विजयी तीनों विधायकों का अभिनन्दन किया गया।

श्री विश्वबन्धु शास्त्री प्रान्तीय सभा प्रधान का अभिनन्दन किया गया। उपर्युक्त बाढ़-पीड़ितों के सहायतार्थ 11100/- 70 रु० का ड्राफ्ट भेंट किया गया।

डा० ढींगरा ने वह धन 4880/- रु० जो आर्यसमाज पर कर्जा था माफ कर दिया।

श्री घनश्याम गुप्त का इमारती सामान का 2300/- रु० लगभग बकाया था उन्होंने भी यह धन छोड़ दिया।

25-3-1979 आर्य समाज डाकपत्थर को भवन-निर्माण हेतु 1000/- रु० ऋण दिया जा चुका है। 1000/- रु० 2 अप्रैल को और दिए जायेंगे।

बाढ़-पीड़ितों के लिए 604/- रु० 55 पैसे इस वर्ष दिए गए। आर्य गुरुकुल तपोवन के हेतु 1000/- रु० सहायतार्थ दिया गया। कौलागढ़ की जायदाद का भाग रामचन्द्र फरासी किरायेदार से मुकदमा जीत कर खाली करा दिया गया। इस वर्ष में भी गर्मी में प्याऊ लगाया जाय।

पृष्ठदाता

श्रीमती श्यामा देवी, 18, पुरुषोत्तम दास मार्ग, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रिश्चियन रिट्रीट एण्ड स्टडी सैण्टर "राजपुर में ईसाई धर्म का प्रचार करने वाली संस्था द्वारा आयोजित सर्व-धर्म-सम्मेलन में जिसका विषय था Life after death । "मृत्यु के पश्चात् जीवन" उसमें हमारे प्रधान जी ने आर्य समाज की ओर से भाषण किया कि जो अत्यन्त प्रभावशाली और विचारोत्तेजक रहा ।"

1-6-1979 वन-विहार के लिए इस वर्ष डाक पत्थर दो बस लेकर गए। वहां का आर्य समाज मन्दिर अभी निर्माणाधीन है। वहीं सत्संग लगाया गया। हमारे सदस्यों ने लगभग 800/- रु० आर्य समाज मन्दिर के निर्माणार्थ संग्रह कर, उसी समय अपने पास से दान दिए।

विदेशी ईसाई मिशनरियों ने सेंट जोजफ्स स्कूल के मैदान में जो राष्ट्र-विरोधी प्रचार किया था उसका भाण्डा फोड़ करने के लिए "अन्तर्राष्ट्रीय संगीत द्वारा मज़हबी प्रचार की ओट में भारत के प्रति घृणा का प्रसार" विज्ञापन मन्त्री श्री देवदत्त बाली जी ने लिख कर प्रसारित किया। विरोधियों में खलबली मच गयी। खेमे उखड़ गये।

एक सिन्धी विधवा महिला को एक सिलाई मशीन (श्री ओम प्रकाश हरिप्रदत्त) दी गई ताकि वह अपने पैरों पर खड़ी हो सके।

विधर्मियों से एक हिन्दू महिला को बचाया गया। श्री नित्यानन्द स्वामी एडवोकेट ने बहुत सहयोग दिया।

बिजनौर जिले के ग्राम गुनिया खेड़ी पो० राजा का ताजपुर की स्थिति से प्रान्तीय सभा को अवगत कराया गया। वहाँ के हिन्दुओं को संगठित करने का प्रयास जारी है।

सती-मन्दिर वाले मामले की जो अपील हाई कोर्ट में मस्जिद वालों ने की थी वह खारिज हो गयी। अब स्थानीय कोर्ट में दावा चल सकता है।

15-5-1978 को राजस्थान से पधारने वाले 56 आर्यों का उचित आतिथ्य किया गया।

तपोवन-उत्सव पर पधारे दिल्ली के आर्यों का (दो बसे थीं) भी उत्साहपूर्वक आतिथ्य किया गया।

श्री रामचन्द्र जी मालिक 'राम शॉप' पल्टन बाजार ने 51,000/- इक्यावन हज़ार रुपये स्थिर निधि पंजाब नेशनल बैंक में जमा किए और इच्छा-पत्र लिख कर इस धन का उत्तराधिकारी (अपनी ओर अपनी पत्नी की मृत्यु के पश्चात्) आर्य समाज देहरादून एवं श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम को घोषित कर दिया। बिल हमारे पास है।

फूट रूपी डायन का पुनः आक्रमण

25-3-1979 को आर्य समाज का नया चुनाव हो गया। 1932 के पश्चात् से आर्य समाज देहरादून एक सुसंगठित और मज़बूत समाज था जिसमें कभी पार्टीबाज़ी नहीं पनपी थी परन्तु इस वर्ष शताब्दी-समारोह के कारण आपसी फूट उग्र रूप में फूट पड़ी। आर्य समाज में झगड़ों का आरम्भ उस पत्र से हुआ जिसके द्वारा "महिला सदस्यों" को वोट के अधिकार से वंचित किया गया।

पृष्ठदाता

दून भूसा स्टोर, 1, मालवीय रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज का एक चुनाव हॉल में हुआ जिसमें से वाक-आउट करने वाले 15 लोगों के जाने के पश्चात् भी उपस्थिति 72 थी। दूसरा चुनाव वाक-आउट कर वाचनालय की तीन बेंचों पर बैठे लोगों ने किया। प्रान्तीय सभा के प्रधान श्री विश्वबन्धु शास्त्री के सामने पृथक्-पृथक् वाद प्रस्तुत किये गये। आपसी झगड़ा निबटाने के लिए सभा-प्रधान जी ने दोनों चुनावों को रद्द घोषित कर दिया और श्री यशपाल आर्य को आर्य समाज देहरादून का प्रशासक नियुक्त कर दिया और अपने आदेश द्वारा अगले 6 मास के अन्दर आर्य समाज का चुनाव कराने का भी अधिकार दे दिया।

24-6-1979 को दूसरी बार आर्यसमाज का चुनाव हुआ। इसमें श्री डा० सोमनाथ ढींगरा सर्वसम्मति से प्रधान चुने गये। और "शेष चुनाव—उप-प्रधानों समेत वे सब चुनाव—जो आज की इस साधारण सभा को करने थे उनको इस साधारण सभा की ओर से घोषित करने का अधिकार नव-निर्वाचित प्रधान डॉ० सोमनाथ ढींगरा को दिया गया। यह सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया कि इस प्रकार डॉ० सोमनाथ जी द्वारा जो नाम घोषित किए जाएंगे वे सब इस साधारण सभा द्वारा सर्वसम्मति से चुने हुए माने जायेंगे।"

श्री प्रधान जी ने श्री देवदत्त (वाली) को मंत्री घोषित कर दिया तथा अन्य सब स्थानों की भी घोषणा यथासमय कर दी।

विवाद सुलझाने का यही एक उचित मार्ग था जिसका अवलम्बन किया गया था परन्तु कुछ बना नहीं। कुछ ही दिनों बाद डॉ० सोमनाथ ढींगरा द्वारा निजी व्यक्तिगत कारणों से 20-9-1979 को प्रधान-पद से त्यागपत्र देने पर फूट की दबी चिनगारी फिर से धधकने लगी। आपसी समझौते के सब प्रयास विफल हो गये।

3-6-1979 की अन्तरंग सभा में श्री धर्मेन्द्र सिंह अनिल गोस्वामी के पत्र पढ़े गए थे, 10,000/- एवं 14,000/- रु० के आरोप पढ़े गए और अन्तरंग सभा ने गम्भीरतापूर्वक विचार करके सारी स्थिति के स्पष्ट हो जाने पर अत्यन्त सन्तोष व्यक्त किया और प्रधान जी को पत्र-लेखकों से बातचीत करने का अधिकार दे दिया। उचित कार्यवाही करने का अधिकार भी दे दिया।

15-7-79 की अन्तरंग सभा ने शताब्दी-समारोह की तिथियाँ 23, 24 व 25 मई सन 1980 निर्णय कर दीं। (प्रस्ताव सं० 10)

14-10-79 की अन्तरंग सभा ने डॉ० सोमनाथ ढींगरा का प्रधान-पद से त्यागपत्र स्वीकार कर लिया। और 18-11-79 को अस्थायी रूप से बाबू[1] कृष्ण लाल जी को प्रधान चुन लिया गया।

9-11-79—अन्तरंग सभा ने अशोक आश्रम कालसी के सम्बन्ध का श्री पृथ्वीराज नारंग का पत्र पढ़ा गया। खूब विचार के पश्चात् उस पत्र को छपवा कर समस्त आर्य सभासदों तक भेजने की स्वीकृति दी गई और पत्र में अंकित तथ्यों पर विचार करने के लिए एक तीन सदस्यीय तथ्यान्वेषण-समिति बनाई गई जिसके सदस्य श्री यशपाल आर्य (संयोजक), श्री अनूपसिंह एवं श्री लक्ष्मी चन्द नियुक्त किये गये। पीछे नियमानुसार पत्र छाप कर भेजा गया और यथासमय समिति की बैठक हुई और सर्वसम्मति से प्रस्तुत (जिस पर तीनों सदस्यों के हस्ताक्षर हैं) आख्या को अन्तरंग सभा ने सुना और सन्तोष प्रकट किया।

चुक्खूवाला की सम्पत्ति का कृष्णा पैलेस वालों की तरफ जो 8000/- रु० शेष था उसमें से 4000/- रु० इस वर्ष प्राप्त हो गया। इस पूरे वर्ष मुहल्ला-प्रचार यानी पारिवारिक सतसंग नियमित रूप से चलता रहा। पुस्तकाध्यक्ष श्री टीकाराम जी बड़े उत्साह से जुटे रहे। मास्टर दलीपसिंह जी की कार्य-कुशलता का यह परिणाम है।

---

1. **डा० सोमनाथ ढींगरा का त्यागपत्र स्वीकार कर लेने के बाद अन्तरंग सभा अपना कार्य करती रह सकती है और नियमानुसार प्रधान का रिक्त पद स्वयं भर सकती है। यह लिखित आदेश प्रान्तीय सभा के प्रधान से प्राप्त हो जाने पर रिक्त स्थान की पूर्ति कर दी गयी।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1943-44 के बाद से किसी वर्ष भी हम इतने अधिक ग्रामों में वेद प्रचार कार्य नहीं कर पाये हैं जितना इस वर्ष प्रचार किया गया। बालावाला, गंगवा, सहसपुर, जस्सोवाला, छरबा, बरोटीवाला, रुद्रपुर, लांघा, बड़वा, रजौली, तिलवाड़ी, उपरला सोरना, तरला सोरना, चाँदपुर, प्रेम नगर, फतेहपुर, तुनवाला आदि ग्रामों में प्रचार किया गया। (2) न्यू फोरेस्ट में भी वेद-प्रचार पखवाड़ा चलाया गया।

कुष्ठ-रोगियों की सहायता की गई। और उन्हें ईसाईयों के हथकण्डों से बचाने का पूरा प्रयत्न किया गया।

शताब्दी-समारोह मई 1980 में होना था। परन्तु आपसी खींचातानी में अधिक समय निकल जाने के कारण यह उचित समझा गया कि समारोह नवम्बर में किया जाय।

1 जून, 1980 को आर्यसमाज का नया चुनाव विधिवत् हो गया। श्री प्रधान जी (प्रान्तीय सभा) ने, अपना प्रेक्षक चुनाव के समय भेजा और नव वर्ष के लिए श्री देवदत्त पत्रकार प्रधान एवं श्री यशपाल मंत्री सर्वसम्मति से चुने गए।

परन्तु फिर भी रुकावटें आती रहीं। भंग प्रान्तीय सभा के मंत्री जी के एक अनाधिकार-पूर्ण पत्र ने फिर सुधरते सम्बन्धों को पलीता लगा दिया। यदि श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री (भंग प्रान्तीय सभा के प्रधान) ने थोड़ी सी लापरवाही बरती होती तो गजब हो गया होता। उन्हीं दिनों प्रान्तीय सभा का विवाद उच्च न्यायालय इलाहाबाद से निर्णय हो गया। और सुलगती चिंगारी राख में दब गयी।

शताब्दी-समारोह की तैयारी

आज हम सब मिलकर शताब्दी-समारोह को सफल बनाने में लगे हैं। 15 जून से निरन्तर प्रत्येक मोहल्ले में प्रतिदिन किसी न किसी गृहस्थ के घर पर प्रातः 7 से 8 बजे तक पारिवारिक सत्संग होता है।

इधर अगस्त से प्रतिदिन एक के बजाय दो सत्संग होने लगे हैं। एक मुख्य नगर में दूसरा नगर के दूसरे भाग धर्मपुर में। दोनों प्रातः सात से आठ बजे तक होते हैं। सारे नगर में लहर दौड़ गयी। सैकड़ों नये सदस्य बने हैं। सैकड़ों सत्यार्थ प्रकाश अब तक केवल 2-2/- रु० में बेचे जा चुके हैं। यह मास्टर दलीप सिंह, श्री टीकाराम, श्री नैन सुख, श्री अशोक आर्य एवं श्रीमती सुशीला शर्मा के अथक परिश्रम का फल है कि सारे नगर में एक चेतना आ गयी है। शताब्दी-समारोह हमने प्रत्येक मौहल्ले में चर्चा का विषय बना दिया है।

श्री मदन सिंह गोरखा ट्रस्ट भूमि में इसी समारोह के अवसर पर "वैदिक धर्मशाला" का शिलान्यास किया जा रहा है। श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम में एक औषधालय का उद्घाटन किया जा रहा है। जिनके लिए सेठ हुकम चन्द जी ने 50000/- रु० का सात्त्विक दान दिया है।

सैकड़ों लोग जिले के और जिले से बाहर से हमारे अतिथि बनेंगे। उनके स्वागत, निवास, भोजनादि के प्रबन्ध हेतु सब आर्य जन उत्साह से जुट गये हैं। सम्पूर्ण अग्रवाल धर्मशाला 1-2-3 नवम्बर के लिए, सम्पूर्ण शिवाजी धर्मशाला 31 अक्तूबर व 1, 2, 3, 4 नवम्बर के लिए अधिगृहीत कर ली गई हैं। धन-संग्रह का कार्य भी प्रधान श्री देवदत्त (बाली) की देख-रेखों में चल रहा है। जिला-सभा कार्य में सहयोग को उत्सुक है। शताब्दी-समारोह-समिति की दो

पृष्ठदाता

अशोक कुमार ढंड, अशोक कुटीर, मालवीय मार्ग, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शताब्दी-समारोह के लिए धन-संग्रह हेतु छपवाए गए नोट
On the occasion of Centenary celebrations such-like notes were issued to raise funds

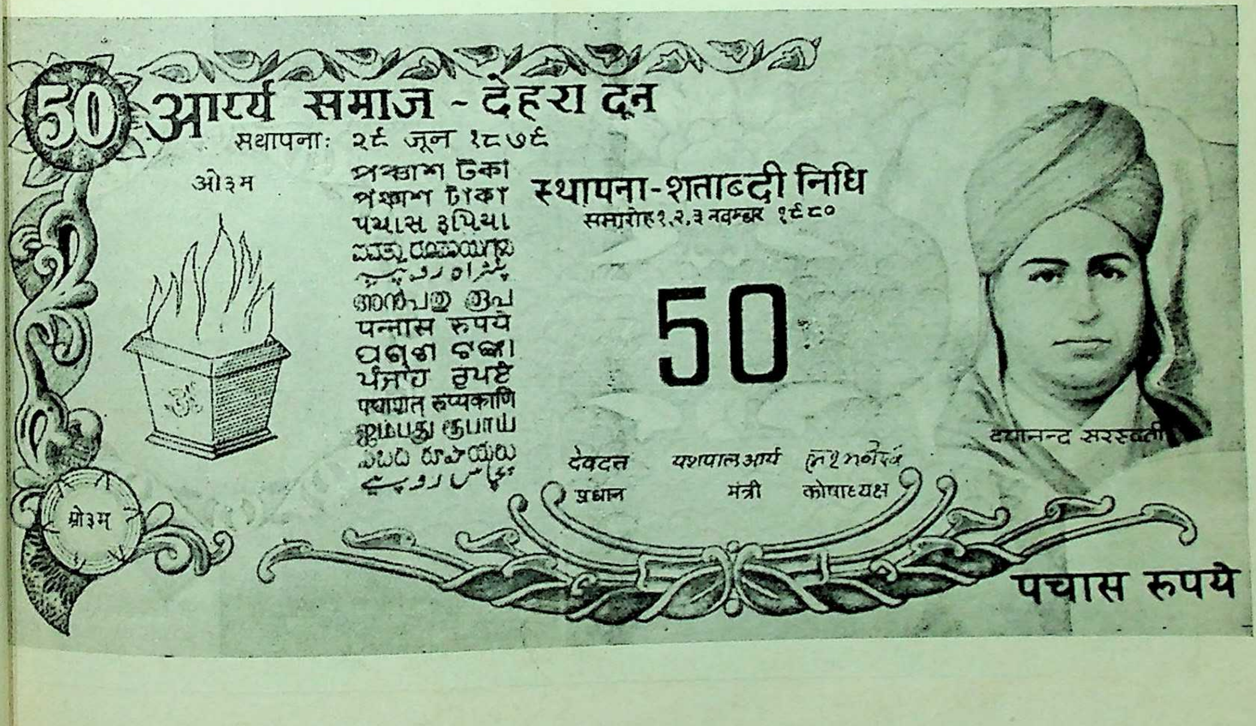

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

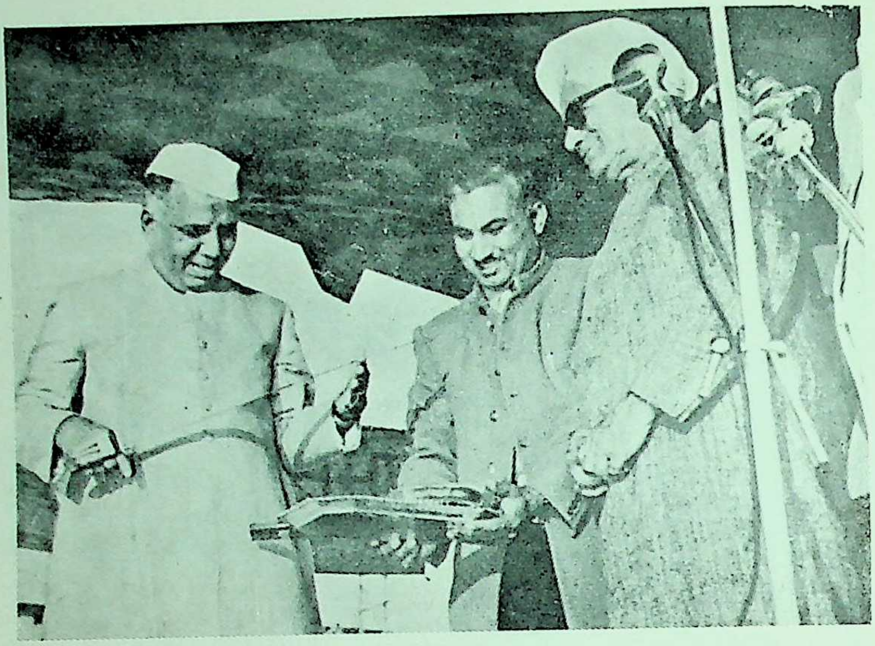

श्री वाई बी चह्वाण रक्षा मंत्री भारत सरकार को सोने की १००८ ग्राम की तलवार भेंट करते हुए आर्य समाज के प्रधान श्री जयराम सिंह ओबराय तथा श्री धर्मेन्द्र सिंह आर्य मंत्री ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठकें बड़े पैमाने पर हो चुकी हैं। केन्द्रीय या प्रान्तीय मंत्रियों को बुलाने का प्रयत्न चल रहा है। उपदेशक महानुभावों की स्वीकृतियां प्राप्त हो चुकी हैं। स्मारिका के रूप में यह सौ वर्षीय इतिहास छप रहा है।

इस विषय में यह लिख देना अत्यन्त आवश्यक है कि आर्य समाज कार्यालय में जो भी लिखित साक्षी उपलब्ध थी मुख्यता उसी के आधार पर इतिहास की यह रूपरेखा तैयार की गई है। 1940 के पश्चात् की बहुत-सी घटनाएँ मेरी स्मृति में ताजा हैं। उनकी पुष्टि कागजों से कर ली है। परन्तु इस एक सौ वर्ष में कितने लोग आर्य समाज में आए होंगे, कितनों ने समाज की कितनी सेवा की होगी ? एक से एक कर्मठ और चरित्रवान् लोग होंगे। मैं उनका उल्लेख इसमें कैसे करता ? कागजों में केवल कुछ नाम होते हैं। इस नाम-मात्र से मेरा काम चल नहीं सकता। उनके बारे में जो कुछ कागजा कहते हैं वह मैं लिखता रहा हूँ। यदि कागज नहीं बोलते तो मेरी लेखनी भी मौन साध लेती है। उन पर लिख नहीं सकती। इसके अतिरिक्त बहुत से ग्रन्थों का वर्णन मैं आरम्भ में कर चुका हूँ जिनसे मैंने सहायता ली है। उन्हें दोहराना नहीं है।

वर्तमान पीढ़ी पर टिप्पणी नहीं

परन्तु एक दूसरी बात है, वह भी महत्त्वपूर्ण है। 1947 के पश्चात् के कार्यकर्त्ता, जिन्हें मैं आर्य समाज की तीसरी पीढ़ी कहता हूँ। इस तीसरी पीढ़ी के लोगों की आलोचना मैंने नहीं की है। न गुण-दोष का वर्णन किया है। कारण उसका स्पष्ट है। मैं इसी तीसरी पीढ़ी में हूँ। अपने बारे में स्वयं न्यायाधीश बनना न न्याय के सिद्धान्त के अनुकूल है और न सांसारिक चलन के अनुसार है। हमारी इस पीढ़ी के कृत्यों पर सामूहिक और वैयक्तिक मूल्यांकन करने का अधिकार उस चौथी पीढ़ी को है जो हमारे समस्त क्रिया-कलापों की दर्शक है या यह अधिकार उस दर्शक को है जो इस दौड़ में स्वयं शामिल नहीं है, परन्तु इस दौड़ की समस्त गतिविधियों को बारीकी से समझता है और उदारतापूर्वक हमारे कृत्यों की समालोचना आर्य समाज के हित में करना चाहता है।

दूसरी पीढ़ी के अनेक चमकदार सितारे हमारे मध्य हैं। श्री पं० विश्वनाथ विद्या मार्तण्ड, लाला किशोरी लाल वानप्रस्थी, श्री बाबू कृष्ण लाल, श्री पं० महेन्द्र प्रताप शास्त्री, श्री पं० हीरानन्द शर्मा, श्री आचार्य वृहस्पति शास्त्री, श्री लक्ष्मण देव, श्री पं० हरिदत्त शर्मा, पं० गौतमदेव। तीसरी पीढ़ी जी-जान से कार्य में जुटी है। चौथी की बेसब्री से प्रतीक्षा की जा रही है। मुझे विश्वास है कि यह चौथी पीढ़ी बड़ी तीव्रता से उभर रही है और शीघ्र ही प्रकट हो जायेगी।

भविष्य की आशा

इसलिए तीसरी पीढ़ी के वे कार्यकर्त्ता जो आज कर्म क्षेत्र में हैं, यदि इस ग्रंथ में अपना नाम न देखें तो क्षमा कर दें। मैंने तीसरी पीढ़ी के तथ्यों मात्र का वर्णन किया है, अधिक कुछ नहीं।

उपोद्घात

जो-जो भूलें अल्पज्ञता के कारण अथवा अज्ञानता के कारण रह गयी हैं उन्हें बताने पर यथा-समय संशोधन करूँगा।

पृष्ठदाता

डा० रामनाथ सूद, सुभाष नगर, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभु-कृपा समाज पर बनी रहे। उत्साही युवकों से यह समाज भरा रहे। यदि किसी अंश में भी इस लेखन से आर्य समाज को लाभ पहुँचेगा तो इस समाज के कार्यकलापों के संस्मरण पृथक से प्रकाशित करने का विचार है।

आज तक के समस्त अधिकारियों की नामावली आगे पृथक परिशिष्ट में दे दी है। दूसरे परिशिष्ट में महर्षि का पत्र-व्यवहार छपा है (केवल वह अंश जिसका देहरादून से किसी प्रकार का सम्बन्ध है)। उसने बहुत सी बातें स्पष्ट हो जाएँगी। इन पत्रों के बिना यह इतिहास अधूरा ही रह जाता। तीसरे परिशिष्ट में जिले की समाजों का मोटा वर्णन है। यथा-स्थान आवश्यक चित्र देने का प्रयत्न किया है फिर भी बहुत से चित्र, बहुत सी जीवनियां छूट गई हैं सम्प्रति समयाभाव व स्थानाभाव के कारण वह सब छापना संभव न था। मैंने प्रयत्न किया है कि कम से कम स्थान में अधिक वर्णन कर दिया जाय। आवश्यक छूटे नहीं अनावश्यक आए नहीं। फिर भी भूले संभव हैं। मानव समझ कर क्षमा करें।

पृष्ठदाता

श्री पृथ्वीराज भाटिया, स्टेट बैंक कालोनी, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशिष्ट-1

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज देहरादून के सूत्रधार प्रधान 1879 से 1980 तक

श्री माधो नारायण	1879 से 1885 तक
श्री मुंशी होरी लाल	1886 से 87-88
श्री बाबू ज्योति स्वरूप	1888 से 1893 व 1895 से 1920 तक निरन्तर
श्री कृपाराम स्वामी	1894
श्री बाबू चण्डी प्रसाद	1921
श्री बाबू निरंजन नाथ	1921
श्री डा० केदारनाथ	1922 से 1923
श्री पं० नरदेव शास्त्री	1924 से 1925
श्री बाबू हुकम चन्द	1926
श्री बाबू मुंशी राम	1927 व 1933
श्री प्रिंसिपल लक्ष्मण प्रसाद	1928 से 32 तक
श्री पं० महेन्द्र प्रताप शास्त्री	1934-35-36-37-39 व 41
श्री अमरनाथ वैद्य शास्त्री	1938, 1949, 1950
श्री पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार	1940-42-44-47-48-52
श्री बद्रीनाथ छिब्बर हैड मास्टर	1943
श्री सोमदत्त विद्यालंकार	1945-1946
श्री बृहस्पति शास्त्री	1951-57-71
श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार	1953-1954-1955
श्री जयराम सिंह ओबराय	1956, 62, 63, 64, 65
श्री पं० तेज कृष्ण कोल	1958-59-60-67-69-70-1972
श्री पं० ठाकुर दत्त शर्मा	1961
श्री पं० हीरानन्द शर्मा	1966
श्री धर्मेन्द्र सिंह आर्य	1968
श्री सोमनाथ ढींगरा	1973-74-75-1976-79
श्री यशपाल आर्य	1978

श्री यशपाल आर्य अन्तरंग सभा तथा सभी पदाधिकारियों के पद भंग हो जाने पर समाज के प्रशासक, प्रान्तीय सभा के प्रधान द्वारा, नियुक्त हुए 1979

श्री पृथ्वी राज नारंग	1977
श्री देवदत्त पत्रकार, पत्रकार (बाली)	1980

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज देहरादून के सूत्रधार—मंत्री 1879 से 1980 तक

श्री पं० कृपाराम जी स्वामी	1879-1888 तक निरन्तर
श्री दरोगा लाल सिंह जी	1889-1901 तक निरन्तर
श्री बाबू मदन सिंह	1902-1903-1904-1905
श्री हीरा सिंह	1906
श्री पं० केशवराम स्वामी	1907
श्री बाबू प्यारे लाल गुप्त	1908-9-10-11
श्री पं० रामचन्द्र	1912
श्री बाबू निरंजन नाथ	1913-14
श्री बाबू मिट्ठन लाल	1915
श्री पं० अमरनाथ वैद्य	1916-18-30-31-32-34
श्री बाबू राम प्रसाद	1917
श्री बाबू गंगा प्रसाद	1919
श्री प्रिंसिपल लक्ष्मण प्रसाद	1920
श्री चौ० हुलास वर्मा	1921-22-23-24-25
श्री मास्टर गौरी शंकर	1926-28-29
श्री आर्य किशोर	1927
श्री पं० कृष्ण देव	1933-36
श्री पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार	1935
श्री डा० धर्मानन्द	1937
श्री जगदर्शन सेवल	1938 से 41 तक, 43-44-45-47-49-50-51
श्री लक्ष्मण देव	1942-46
श्री यशपाल आर्य	1948-55-56-72-73-74-76-77-80
श्री धर्मेन्द्र सिंह आर्य	1952-53-54-61-62-63-69
श्री प्रेम सिंह वर्मा	1957
श्री रामचन्द्र सर्राफ	1958
श्री विद्याभास्कर शास्त्री	1965-66
श्री ईश्वर दयालु आर्य	1968
श्री अनूप सिंह	1975
श्री देवदत (बाली) पत्रकार	1959-60-64-67-70-71-78-79

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज के सूत्रधार—कोषाध्यक्ष 1879 से 1980 तक

श्री बाबू गोपाल सिंह	1879 से 1894 तक
श्री पं० क्षेमानन्द	1895 से 1899 तक
श्री लाला फूलचन्द	1900 से 1911 तक निरन्तर
श्री बाबू रामप्रसाद (स्मिथ रोडवेज)	1912 से 1917 तक निरन्तर
श्री बाबू आर्य किशोर	1919 से 1926 तक निरन्तर
श्री बाबू रामप्रसाद	1918, 1927 से 1933 तक तथा 36-46-47-48
श्री लाला किशोरीलाल	1934-35-42-45
श्री लक्ष्मण देव सर्राफ	1937-38-39-40-41-43-44-49-50-51-52-53 79-80
श्री रामचन्द्र सर्राफ	1954-55-56-57-61-62-63-64
श्री प्रहलाद स्वरूप	1958-59
श्री पं० विष्णुदत्त शर्मा	1960
श्री बाबू कृष्ण लाल	1965
श्री ज्ञानचन्द रंगन	1968
श्री बाबू लक्ष्मीचन्द	1966-67-72-73-74-75-76-77
श्रीमती विमला देवी	1969
श्री पृथ्वीराज नारंग	1970 व 71
श्री ओम् प्रकाश नांगिया	1978-79

पृष्ठदाता

चौ० पूर्ण सिंह एडवोकेट, सुभाष रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: परिशिष्ट--2 :

वे पत्र जो महर्षि ने लिखे या लिखाए,
या महर्षि को देहरादून में प्राप्त हुए,
या जिनमें देहरादून का वर्णन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

देहरादून से सम्बन्धित महर्षि का पत्र-व्यवहार

श्री कृपाराम स्वामी द्वारा महर्षि को लिखा गया एक पत्र—उर्दू जीवन-चरित्र पृष्ठ 242 उत्तरार्ध में दिया है। महर्षि द्वारा अन्य लिखे गए पत्र जिनका देहरादून से सम्बन्ध है।

हमारा पत्र क्रमांक	पत्र व्यवहार पृष्ठ संख्या	पत्र व्यवहार पत्र संख्या	पत्र कहां से कहां को लिखा
1.	135	153	हरिद्वार से देहरादून
2.	136	159	हरिद्वार से देहरादून
3.	137	160	देहरादून से दानापुर को, अंग्रेजी में
4.	139	163	देहरादून से
5.	140	164	देहरादून से दानापुर को, अंग्रेजी में
6.	143	166	मेरठ से
7.	237	279	—
8.	239	280	मुजफ्फर नगर से बा० दुर्गाप्रसाद को
9.	242	284	देहरादून से पं० भीमसेन को
10.	242	285	देहरादून से पं० भीमसेन को
11.	244	287	देहरादून से ला० रामशरण दास को
12.	245	288	देहरादून से आर्य समाज गुजरां वाला को
13.	245	289	देहरादून से फरूखाबाद को
14.	246	290	देहरादून से गुजरांवाला, आत्मा राम जी को
15.	247	291	देहरादून से भीमसेन को
16.	248	292	देहरादून से आत्माराम जैनी को
17.	251	293	देहरादून से भीमसेन को
18.	252	294	देहरादून से विज्ञापन-पत्र, प्रकाशानार्थ
19.	253	296	अलीगढ़ से कालीचरण जी को
20.	277	334	कालीचरण फरूखाबाद को
21.	285	348	सवाई जयपुर से, पं कृपाराम को देहरादून
22.	130	143	सहारनपुर से देहरादून, पं० कृपाराम को
23.	139	162	हरिद्वार से देहरादून, पं० कृपाराम को
24.	228	270	मेरठ से देहरादून, पं० कृपाराम को
25.	260	304	आगरा से देहरादून, पं० कृपाराम को
26.	285	348	सवाई जयपुर से देहरादून, पं० कृपाराम को
27.	315	391	बम्बई से देहरादून, पं० कृपाराम को
28.	375	460	उदयपुर से देहरादून, पं० कृपाराम को
29.	494	655	—
30.	23	11	प्रयाग से बलदेव सिंह शर्मा को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि दयानन्द द्वारा लिखे पत्र—जिसमें देहरादून का जिक्र है :—

1— हमको पन्द्रह दिन से दस्त आते हैं। दिन-भर में दस-बारह। अब दिन-दिन से आराम है। परन्तु निर्बलता बहुत है। **सो यहां से 12 ता० की देहरादून के पर्वत को जाएंगे**—वहां से बम्बई आने का प्रबन्ध करेंगे।

चैत्र शुक्ला 11 (सं० 1936) दयानन्द सरस्वती
8 अप्रैल 1879 हरिद्वार

2— तुम्हारे जाने के पीछे हमारा शरीर अच्छा नहीं रहा। अर्थात् 400 से अधिक दस्त हुए। इससे शरीर अति दुर्बल हो गया। विचार था कि शरीर अच्छा रहा तो हम हरिद्वार से ही बम्बई को अवश्य आते, परन्तु **अब यहां (से) देहरादून जाने का विचार है। सो वहां जाकर थोड़े दिनों में शरीर अच्छा हो जाएगा।** तब आने के विषय में लिखेंगे···।

बैशाख सु० 2 संवत् 1936 दयानन्द सरस्वती
हरिद्वार

(स्पष्ट है उपर्युक्त दोनों पत्र बम्बई मे किसी को लिखे गए हैं)

3 :— Hardwar
10-4-78

Baboo Madho Lal
Arya Samaj, Dinapore.
Dear Sir,

Informs that American Mission (Col. H.S. Olcott and Countess H. Blavatsky) is comming to see me at Dehra Dun, about the 14th current and I hope will stay with me for same months.

Sd/- Dayanand Saraswati
ह० : दयानन्द सरस्वती

इस पत्र में बाबू माधो लाल दानापुर को महर्षि ने सूचित किया है कि कर्नल अलकाट एवं मैडम ब्लेवेट्स्की 14 तारीख के करीब मुझसे मिलने आ रहे हैं—शायद कुछ मास साथ ठहरें।

(यह पत्र आर्य समाज दानापुर में सुरक्षित है)

4— हरिद्वार में ओंकार मल और सुन्दर राज हमको नहीं मिले। रामगढ़ से भी बहुत से प्रेमी लोग पहुँच गए। हरिद्वार में बहुत लोगों से बात-चीत हुई। साधु लोगों ने उपदेश सुना, लाभ भी बहुत-सा हुआ। हैजा बहुत-सा नहीं है, थोड़ा-सा हुआ। जब अमरीका वाले सुनेंगे और उनसे बात-चीत होगी तब सब भ्रम निकल जावेंगे। हमको हरिद्वार में लगभग 400 दस्त हुए और अब तक भी कुछ-कुछ आते हैं। परन्तु यहां की वायु ठण्डा होने से कुछ-कुछ आराम होता आता है परन्तु शरीर बहुत निर्बल हो गया है। आज दस्त बन्द हुआ दीखता है। जो बन्द हो जावेंगे तो शरीर भी 15-20 दिन में अच्छा हो जावेगा।

बैशाख बदी 12 शुक्रवार संवत 1936 दयानन्द सरस्वती

(पं० लेखराम जी के उर्दू जीवन चरित्र से—18 अप्रैल 1879 को लिखा गया।)

पृष्ठदाता
डा० टी० सी० नन्दवानी, 2, मोहिनी रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

5— Dehra Dun 24th April 1879

Sir,

I am very glad to receive your letter of 20th instant by this day's post. You were quite right in remitting the value of Ved Bhashya Bhoomika to Pt. Sunderlal at Allahabad who can supply you as many more copies as you will want. I have also received the price of the books you had taken from Delhi.

I have great pleasure to hear of your intention for opening Sanskrit School, but before you take this most advantageous work in hand, I should be informed as to what arrangements you have made about the standard of various sciences to be studied at the school, have you got all the necessary books ready yet, think not ! I mean to say that before you go into the work, you should have all the books printed first of all. The "Koran" in Nagri is entirely ready but has not been printed yet.

The Astadhayee has not met the sufficient number of subscribers yet, the 4 adhaya (ya)s of this are just ready but the work is going on quite well though not (a) copy (has) passed in the press up-to-date.

The great dishonesty and misconduct on the part of Babu Harish Chandra Chintamani has been the cause of delay in getting the Ved Bhashya out of the press in the proper time. Now the man has been turned out and another man has been appointed in his stead and it is hoped that he will carry out the work very satisfactorily.

I intend setting up a press at Moradabad under the auspices of Munshi Indramani for which purpose a subscription to the amount of Rs. 5000/- is necessary to be raised by shares of Rs. 100/- each, of this sum Rs. 2500/- has already been raised. I hope it will be a great help to the work should you be inclined to take as many shares as you can. In this case you should apply to Lallah Ram Saran Dass of Meerut who is authorised to receive money when the time comes.

Yours Truly,
Dayanand Saraswati.
(दयानन्द सरस्वती)

पृष्ठदाता

दर्शन लाल एण्ड सन्स, पल्टन बाजार, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोट :—

(*i*) यह मूल पत्र आर्य समाज दानापुर में सुरक्षित है। बा० माधोलाल को लिखा गया है।

(*ii*) "कुरान" का नागरी अनुवाद एक दम तैयार होने की सूचना दी गयी है—केवल छपने की देरी है। इस हस्त लिखित कुरान के अन्तिम पृष्ठ पर यह लेख है।

"सं० 1935 कार्तिक शु० 9 रवि वासरे कुराणस्योऽयं ग्रन्थः सम्पूर्णः।

इन्द्रप्रस्थ नगर……" इस पर जिल्द सं० 119 है—पृष्ठ संख्या 722 सिपारे 30 में सूरत 114.

—पत्र व्यवहार से

(*iii*) अष्टाध्यायी के भी चार अध्याय छपने के लिए तैयार होने की सूचना दी गयी है।

(*iv*) बा० हरीशचन्द्र चिन्तामणी की बेईमानी और चरित्र हीनता का ज़िकर है।

(*v*) मुरादाबाद में 5000/- की लागत से एक प्रेस लगाने की इच्छा है। 100/- प्रति शेयर का मूल्य है। 2500/- अब तक संग्रह हो चुके हैं। इससे प्रकाशन कार्य में सुविधा हो जाएगी।

(*vi*) संस्कृत पाठशाला चालू करने से पूर्व पढ़ाए जाने वाले ग्रन्थों का छपना जरूरी है।

6. हम देहरादून से चल कर सहारनपुर आए और वहां पर अल्काट साहब और ब्लैवेट्स्की लेडी व मूल जी ठाकरसी से, जो अमरीका से आए हुए हैं, समागम हुआ। दो दिन वहां ठहर कर हम मेरठ आ गए हैं।

बैशाख सु० 14 सं० 1936। दयानन्द सरस्वती

यानी अंग्रेजी तिथि 5 मई 1879 की पत्र पर तारीख पड़ी है। अन्य पत्रों के पढ़ने से लगता है। यह पत्र 3 मई 1879 को ही लिखा गया होगा।

ओ३म्

7. ………नमस्ते इत्येष मदुक्तशब्दस्तस्मै प्रयुक्तोऽथ न वा प्रयुक्तः।

प्रस्थातुकामो मतिमश्च देहरादूनं पुरं नूनमितोऽहमस्मि ॥ 8 ॥

दयानन्द सरस्वती

यह महर्षि ने भारतीय क्रांतिकारियों के आदिगुरु श्यामजी कृष्ण वर्मा को संस्कृत में ही छन्दोबद्ध लिखा है। पत्र बहुत बड़ा है, 23 श्लोकों में है। इस पत्र में महर्षि ने देहरादून आने का संकल्प व्यक्त किया है। 25, सितम्बर 1880।

पृष्ठदाता

श्रीमती डी० डी० सिंधवानी, 14, डालन वाला, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उर्दू-पत्र

8.

ओ३म् तत्सत्

बाबू दुर्गा प्रसाद जी आनन्द रहो।

पत्र आपका आया। समाचार मालूम हुआ। राजनाथ पहुँच गया। सो विदित हुआ—हम यहां आठ दिन और रहेंगे और तीन अक्तूबर को (मेरठ के) वार्षिकोत्सव पर जायेंगे। बाद इसके शायद देहरादून को जायें।

दयानन्द सरस्वती

यह पत्र 25-9-80 को मुजफ्फरनगर से लिखा गया होगा।

9. पं० भीमसेन जी आनन्दित रहो।

आश्विन सुदि 7 रविवार को लिखे हुए पत्र तुम्हारे आए तथा अक्तूबर 12 का लिखा पत्र मुंशी बखतावर का आया। हाल विदित हुआ। पुस्तकों का हिसाब तुम से वा 2/4 रुपये लग कर भी किसी पुरुष की सहायता से जैसा हो सके वैसा करो और पुस्तक तथा और पदार्थों को अच्छी प्रकार गणकर ताला कुंजी अपने हाथ कर लो और मुंशी बखतावर सिंह लिखते हैं कि किसी मनुष्य को शीघ्र छापेखाने में भेज दो, क्योंकि प्रेस-मैन आदि कारीगर चालाक होते हैं। उनके सब काम के (को) वह अच्छे (प्रकार) समझ ले। सो मेरठ वा फरूखाबाद आदि को हम पत्र भेज चुके हैं। तुम्हारी सहायता के लिए कहीं से कोई मनुष्य आया जाता है। वह सब काम समझेगा। परन्तु तुम अच्छे होशियारी के साथ सब काम की जाँच रखना। तुम किसी तरह हा (गा) फिल न होना। आर्य दर्पण इस महीने का छप जाने दो। परन्तु आगे को कोई भी और काम बाहरी न रहे। जो रुपये 300/- जमा किए हैं उनका आठ आने सैंकड़े से ब्याज मिला करेगा। हममें और मिरजापुर के भवानी राम जी के बेटे से पहले इस मामले की बात हो गयी है। फिर भी उनके मुनीम से कहना कि मिरजापुर से चिट्ठी मंगा लेंगे और फरूखाबाद निर्भयराम जी को भी लिख दिया है। वहाँ से भी उनकी चिट्ठी आ जाएगी।

पुस्तक काव्यप्रकाश जो सटीक छपी है—वह भेज देना और सर्वदर्शन संग्रह तथा जैन प्रभाकर सेवा और जगह से जो जैन वा बौद्ध मत वालों के ग्रन्थ जैसे हमने लिखें हैं भेज देना।

दयानन्द सरस्वती

(सम्भवतः 14 अक्तूबर 1880 को देहरादून से लिखा गया)

नीचे लिखे पत्र महर्षि ने देहरादून से लिखे और बाहर वालों को भेजे—

10. पं० भीमसेन के नाम एक पत्र अक्तूबर 1880 में भेजा गया। सम्भवतः 15 से 21 अक्तूबर के बीच लिखा गया होगा। यह पत्र कटा-फटा है फिर भी पत्र व्यवहार में मौजूद है। हमने पूरा पत्र यहां प्रकाशित नहीं किया है।

पृष्ठदाता
डा० रामप्रकाश गुप्त, 30, कर्नल रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

11. ला० रामशरण दास जी आनन्दित रहो।

मुन्शी इन्द्रमणि के मामले के खर्च में तुमको अख्तयार है। जो मुनासिब जानो सो देओ। और अपील जरूर हाई कोर्ट में जाय और पाँच जजों के बीच यह मामला हो। ऐसा बन्दोबस्त कर देना इसके खर्च के लिए जहाँ-जहाँ चन्दा होता है और तुम योग्य जानो तो···उस उस जगह को और भी चन्दा होने के लिए लिखो। मेरठ समाज में पहले बहु। खर्च हो चुका है। इसलिए तुम वहाँ चन्दा न करना और मुंशी जी को लिखना कि घबड़ावे नहीं। किन्तु अपने पक्ष पर श्रेष्ठ प्रमाण राजघर में दें। दूसरों के बहुत दोष दिखाने से भी अच्छी तरह कार्य सिद्धि नहीं होती है, यह विचार पूरा-पूरा रखो।

फरूखाबाद से दो सदस्य तोताराम और लाला सुन्नूलाल काशी वैदिक यन्त्रालय में गए हैं। वे सब हिसाब का बन्दोबस्त यथावत् करेंगे। तुम अब किसी आदमी का खोज न करना। परन्तु वहाँ रहने के लिए किसी मुंशी का बन्दोबस्त अवश्य करना, जो हमेशा छापेखाने में रहे और योग्य हो। तीनों भाषाओं का यथायोग्य काम करे और मातवर हो।

(दयानन्द सरस्वती)

मि० आ० 14

यदि यह आश्विन बदी 14 है तो 3 अक्तूबर 1980 रविवार को लिखा गया। और यदि आश्विन सुदी 14 है तो रविवार 17 अक्तूबर को लिखा गया होगा। मेरठ भेजा गया था।

12. बाबा दुर्गा प्रसाद जी आनन्दित रहो।

नमस्ते ! पत्र आपका 21 अक्तूबर सन् 80 को हमारे पास पहुंचा। समाचार सब मालूम किया। मास्टर शादी राम जी को जो अंग्रेजी और फारसी में खूब होशियार और रईस आदमी है, उनको मेरठ से बनारस को भेजा गया है। मास्टर मज़कूर, काम अंग्रेजी और फारसी का, और तोताराम जी नागरी का, और भीमसेन जी शोधने वगैरह का काम करेंगे। और सुन्नू लाल वापिस आवेंगे। मगर माहवारी खर्च कि जैसे मुंशी और शोधने वाले के 35 रु० है। जिनमें से 30/- बख्तावार सिंह लेता था और 5/- भीमसेन को मिलते थे। सो अब दोनों आदमियों को वह रुपये, जैसे मुनासिब मालूम होंगे, हस्व लियाकत दिए जायेंगे। और मास्टर शादीराम बिल्फेल वास्ते देखने और समझने काम के भेजे गए हैं। अगर वहां का काम उनसे चला और समझ में आ गया तो रहेंगे, वर्ना खैर कुछ और तजवीज मुनासिब की जायेगी।

और पं० गोपाल राव हरि को हम अलहदे पत्र लिखेंगे और पाठशाला की पुस्तकों की बावत जो लिखा है, सो ऐसा करना चाहिए कि जो-जो पुस्तक तैयार होती जाय, सो-सो ज्यामत बन्दी में शामिल करते रहना यथायोग्य और हमको फुर्सत कम रहती है। हम भी कक्षा बनावेंगे और दूसरा निवेदन जो बाबू शिव प्रसाद ने छापा है उसका उत्तर भी तैयार हो गया है। सो पं० ज्वाला दत्त के नाम से अब जारी किया जायेगा।[1]

यजुर्वेद का आठवां अध्याय पूरा होने को आया है। ज्वाला दत्त के आए पश्चात् 3 अध्याय का भाष्य बन चुका है।

दयानन्द सरस्वती

तारीख 21 अक्तूबर सन् 1880

13. पूज्यवर आत्माराम पंचायत सरावमियाँ लुधियाना और ठाकुरदास रईस गुजरांवाला।

जैन मतानुयायी सज्जनों के प्रश्नों के उत्तर :—

प्रश्न—जो सत्यार्थ प्रकाश में श्लोक लिखे हैं जैनों के किस शास्त्र या ग्रन्थ के हैं ?

1. यह उत्तर अनुभ्रमोच्छेदन के नाम से पं० भीमसेन की ओर से छपा है। यह मूल पत्र फरूखाबाद समाज में सुरक्षित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर—यह सब श्लोक बृहस्पति मतानुयायी चारवाक्—जिसके मत का नामान्तर लोकायत भी है और यह जैन मतानुयायी हैं उनके मतस्थ शास्त्र व ग्रन्थों के श्लोक हैं। (श्लोका)

यावज्जीवं सुखं जीवेन्नास्ति मृत्योरगोचरः । भस्मि भूतस्य देहस्य

पुनरागमनं कुतः ॥1॥

तथा तदन्तर्गत श्चाभाणकोऽप्याह—

अग्निहोत्रं त्रयोवेदास्त्रिदण्डं भस्मगुण्ठनम् । प्रज्ञापोरूषहीनानां जीविकेति बृहस्पतिः । ॥2॥

अग्निरूष्णों जलं शीतं शीतस्पर्शस्थानिलः । केनेदं चित्रितं तस्मा त्स्वभावात्नद्व्यवस्थिति । ॥3॥

न स्वर्गो नापवर्गो वा नैवात्मा परलौकिकः । नैव वर्णाश्रमादीनां क्रियाश्च फलदायकः । ॥4॥

अग्नि होत्रस्त्रयो वेदास्त्रिदण्डं भस्म गुण्ठनम् । बुद्धिपोरूषहीनानां जीविकाधातृ निर्मिता । ॥5॥

प्रशुश्चेन्निहितः स्वर्ग ज्योतिष्टोमे गमिष्यति । स्वपिता यजमानेन तत्र कस्मान्न हिंस्यते । ॥6॥

मृतानामपि जन्तूनां, श्राद्धं चेतृप्ति कारणम् । गच्छतामिहजन्तूनाम् व्यर्थं पाथेयकल्पनम् । ॥7॥

स्वर्गस्थिता यदा तृप्तिं गच्छेयुस्तत्र दानतः । प्रासादस्यो परिस्थानामत्र कस्मान्न दीयते । ॥8॥

यावज्जीवेत्सुखं जीवेदृणं कृत्वा धृतं पिबेत् । भस्मिभूतस्य देहस्य पुनरागम नं कुतः । ॥9॥

यदि गच्छेत्परं लोकं देहादेष विनिर्गतः । कस्माद्भूयो न चायाति बन्धुशोकसमाकुलः । ॥10॥

ततश्च जीवनोपायो ब्राह्मर्मैविहतस्त्विह मृतानांव्रतकार्याणि नत्वन्य विधते क्वचित् । ॥11॥

अश्वास्यत्र हिशिश्नं तु पत्नी ग्राह्यं प्रकीर्तितम् । भण्डैस्तत्परं चैव ग्राह्यजातं प्रकीर्तितम् । ॥12॥

त्रयोवेदस्य कर्त्तारो धूर्त्त भाण्डनिशाचराः । जर्फरी तुर्फ रीत्यादि पण्डितानां वचःस्मृतम् ।

मांस्तन्नां खादनंत द्वन्निशाचर समीरितम् ॥

एतदादि जो जो मैंने सत्यार्थ प्रकाश में जैन मत विषयक लिखा है। सो सो समस्त यथार्थ है। प्रथम पत्र का उत्तर ला० ठाकुर दास आदि को लिखवा दिया था कि जैन मत की कई एक शाखाएं हैं। यदि आपने प्रत्येक शाखा के प्राति तंत्र सिद्धान्त जाने होते तो आपको सत्यार्थ प्रकाश लेख में भ्रम कभी नहीं होता। आप लोगों के प्रश्नों के उत्तर में विलम्ब इसलिए हुआ कि जो कोई सज्जन सभ्य विद्वान् जैसा कि श्रेष्ठ पुरुषों को लेखा करना चाहिए वैसे करता तो उसी समय उत्तर भी लिख दिया जाता क्योंकि सज्जनता-पूर्वक लेख के उत्तर में स्वामी जी विलम्ब कभी नहीं करते। देखिये अब पंचायत सरावगियां ने योग्य लेख किया तो स्वामी जी ने उत्तर भी शीघ्र लिखवा दिया और अब भी लिख दिया गया था कि जितने आप लोगों के सत्यार्थ प्रकाश विषयक प्रश्न हों, सब लिख कर भेज दीजिए जो सब के उत्तर एक संग लिख दिए जावें।

पृष्ठदाता

बालस्वरूप मित्तल एंड कं०, 31, लक्खी बाग, देंहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसा स्वामी जी ने लिखवाया था कि आत्माराम जी को जैन मत वाले शिरोमणि पण्डित गिनते हैं। उनका और स्वामी जी का पत्र लेखानुसार समागम होता तो सब बातें शीघ्र ही पूरी हो जातीं। परन्तु ऐसा न हुआ और यह भी शोक की बात है कि इस विषयक रजिस्ट्री पत्र आप पंचायत सरावगियां लुधियाना को भेजी थी और उसका उत्तर भी अब तक नहीं मिला, न प्रश्न भेजे, किन्तु जो ठाकुर दास ने एक बात लिख भेजी थी कि यह श्लोक जैन मत के किस शाखा और किस ग्रन्थ के अनुसार है जो बात करने के योग्य आत्मा राम जी है उनका शास्त्रार्थ करने में निषेध लिख भेजना है और ठाकुर दास जी का यह हाल है कि प्रथम पत्र में संस्कृत और भाषा के लिखने में अनेक दोष लिखे थे। अब आप लोग धर्म न्याय से विचार लीजिए कि क्या यह बात ऐसी होनी योग्य है जब जब पत्र ठाकुरदास ने लिखे तब तब स्वामी जी के पास और उसमें जो बात शिष्ट पुरुषों के लिखने योग्य न थी सब लिखी और जो योग्य है अर्थात् आत्माराम जी उनको बात करने और लिखने वा पत्र पर हस्ताक्षर करने से भी पृथक् रखते हैं और एक ठाकुर दास से स्वामी जी का सामना कराते हैं, क्या ऐसी बात करनी शिष्टों को योग्य है। अब उचित बात करनी हो तो आप अपने मत के किसी योग्य विद्वान् को प्रवृत्त कीजिए कि जिससे हम और आप लोगों को सत्यासत्य का निर्णय होकर सर्वोत्तम ज्ञान हो सके। बुद्धिमानों के सामने अधिक लिखना आवश्यक नहीं किन्तु अपनी सज्जनता, उदारता, अपक्षपातता, बुद्धिमत्ता और विद्वत्ता से थोड़े लिखने से बहुत जान लेते हैं।

सं० 1937 मिति कार्तिक शुदी 4 शनिवार,

कृपाराम मंत्री आर्य समाज़
देहरादून

यह पत्र 6 नवम्बर, 1880 को लिखा गया।

14. पण्डित भीमसेन जी आनन्दित रहो।

नमस्ते, तुम अपने शरीर का हाल लिखो कि अब कैसा है। और बड़े अफसोस की बात है, देखो कि तुमको आज कल वहाँ पर रहना जरूर्यात से था। क्योंकि काम की कसरत इस वक्त हुई थी। मगर खैर क्या किया जावे। तुम बीमारी की ज्यादती की वजह से चले आए होंगे अब तुम यह लिखो कि जो जो चीज कपड़ा या पुस्तक व और कुछ वस्तु जो सकीरी हो या रुपया जहां जहां तुम्हारे हाथ से जमा हो या तुम्हारी समझ में और जिस किसी का जमा कराया हुआ हो फौरन अपने हाथ से वा अपने भाई के हाथ से लिखवा कर ठीक-ठीक काशी जी पं० ज्वालादत्त के पास भेज दो। ताकि उनको सब हाल मालूम हो जाये और ज्वाला दत्त को हमने हमेशा के लिए काशी जी में भेज दिया है जो हमारे पास था। और अगर अब तुम्हारी तबीयत दुरुस्त हो गई तो तुम लिखो कि हम आजकल आग्रे की तरफ आने वाले हैं। जो तुम आना चाहो तो दूसरा आदमी तुम्हारी जगह न रक्खा जावे। मगर पहले तुम हमको लिख भेजो और जहाँ-जहाँ जो चीज रक्खी है या तुम जो तोताराम के सुपुर्द कर आए हो सब का ब्योरा पूरा पूरा लिखो और शीघ्र ज्वालादत्त को मिल जावे और हमने तेरे लिखे मुताबिक यह काम हमने किया है। क्योंकि तुम कहते थे हमारा पढ़ना नहीं होता इसलिए ज्वाला दत्त को हमने वहां भेज दिया है। अब तुम अपने आने की कैफियत मुफसिल लिखो कि आवोगे या नहीं। मगर जहां तक मुमकिन हो। सब चीजों की फहरिस्त कपड़ा-रुपया, पुस्तक इत्यादि वस्तु छापेखाने की जो कुछ होवे महाभारत वगैरह की पुस्तक सब चीजें जहाँ-जहाँ और जिस-जिस के पास जमा वा तुम्हारा रखा हो। सबकी कैफियत लिख दो। इन सब बातों का जवाब (कि मैं तुम्हारे पास आना चाहता हूं या काशी जी जाऊंगा और कुल चीजों की फहरिस्त कि मैंने वहाँ पर उनके पास भेज देई) हमारे पास भेजना जल्दी। देरी नहीं करना।

तारीख 7 नवम्बर, सन् 1880

(दयानन्द सरस्वती)
मुकाम देहरादून

यह पत्र बहुत अनाड़ी लेखक का लिखा हुआ दिखता है। बहुत अशुद्धियां रह गयी हैं।

पृष्ठदाता
चिल्ड्रन्स ऐकेडमी, चकरोता रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

15. पूज्यवर आत्माराम जी नमस्ते।

पत्र आपका तारीख 4 नवम्बर 1880 का लिखा हुआ 10 नवम्बर 1880 को सायंकाल मेरे पास पहुंचा। देखकर आनन्द हुआ अब आपके प्रश्नों के उत्तर क्रमवार लिखता हूं।

प्रश्न 1. सत्यार्थ प्रकाश सम्मुलास 12 पृष्ठ 396 पंक्ति 16 में लिखा है कि जब प्रलय होती है तो पुद्‌गल पृथक-पृथक् हो जाते हैं—ऐसा नहीं है।

उत्तर—मैंने ठाकुर दास जी के उत्तर में, एक पत्र आर्य समाज गुजरोंवाला के भेजा था जो आपके पास पहुँचा होगा। उसमें यह बतलाया गया है कि जैन और बौद्ध दोनों एक ही हैं। चाहो उनको बौद्ध कहो चाहे जैन कहो। कई स्थल पर महावीर आदि तीर्थंकरों को बुद्ध और बौद्ध आदि शब्दों से कहा गया है और कई स्थलों पर जिन, जैन—जिनवर—जिनेन्द्र आदि नाम से बोलते हैं। (विवेकासाद पृष्ठ 65 पंक्ति 13) बुद्ध—बौद्ध यह एक सिद्ध भगवान हैं (पृष्ठ सं० 113 पंक्ति 7) चार बुद्ध की कथा (पृष्ठ 137 पंक्ति 8) प्रत्येक बुद्ध की कथा (पृष्ठ 138 पंक्ति 21) स्वयं बुद्ध की कथा (पृष्ठ 152 पंक्ति 14) चार बुद्ध समकाल मोक्ष को गये। इसी प्रकार और भी आपके ग्रन्थों में कथा स्पष्ट विद्यमान है। जिनको आप या कोई जैन श्रावक विरुद्ध न कह रुकेंगे और ठाकुर दास के पहले पत्र में (उन श्लोकों समेत जो मैंने इससे पहले पत्र में लिखकर आपके पास भिजवाया है) आप लोग कई श्लोक स्वीकार भी कर चुके हैं उस पत्र की प्रतिलिपि मेरठ में है और आपके पास भी होंगी। (कल्प भाष्य भूमिका जिसमें राजा शिवप्रसाद जी ने अपने जैन मतस्थ पिता और पूर्वजों का वर्णन किया है उनकी साक्षी भी लिख भेजी और इतिहास तिमिरनाशक खण्ड 3 पृष्ठ 8 पंक्ति 21 से लेकर पृष्ठ 9 की पंक्ति 32 तक) स्पष्ट लिखा है कि जैन और बौद्ध एक ही नाम हैं।

बहुत से स्थलों पर महावीर आदि तीर्थंकरों को बौद्ध कहते हैं। उन्हीं को आप लोग जैन जिन आदि कहते हैं। अब रहे बौद्ध की शाखाओं के भेद जो चारवाक अभाणादि हैं। जैसा कि आपके यहां शवेताम्बर, दिगम्बर, दुढियां आदि शाखाओं के भेद हैं—उनमें कोई शून्यवाद—कोई क्षणिक स्थायी जगत को नित्य मानने वाला, कोई अनित्य मानने वाला, कोई स्वभाव से जगत की उत्पत्ति और प्रलय मानते हैं कोई आत्मा को पाँच भूतों से बनी हुयी मानते हैं। और उनका नाश हो जाना भी मानते हैं। (देखो रत्नावली ग्रन्थ पृष्ठ 32 पंक्ति 13 से लेके पृष्ठ 43 पंक्ति 10 तक) कि उस स्थल पर सब जगत की उत्पत्ति स्थित और प्रलय भी लिखा है व नहीं। इसी प्रकार चारवाकादि भी, कई शाखाओं वाले जिसको आप पुद्‌गल कहते हैं उसको अणु आदि के नाम से लिखते हैं और उनके परस्पर मिलने से जगत की उत्पत्ति और पृथक् होने से प्रलय होना ही मानते हैं। और वह जैन व बौद्ध से पृथक् नहीं हैं। किन्तु जैसे पौराणिक मत में रामानुजी आदि वैष्णवों की शाखा और पाशुपत आदि शैवों की और वाममार्गियों के दस महाविद्या की शाखाएं और इसाईयों में रोमन, कैथलिक आदि और मुसलमानों में सिया सुन्नी आदि कुछ के कुछ भेद हैं और तब भी वेद—बाइबल और कुरान के मत में वे एक ही समझे जाते हैं। वैसे ही आपके अर्थात् जैन व बौद्ध मत की शाखाओं के भेद चाहे पृथक्-पृथक् लिखे जा सकते हैं, परन्तु जैन और बौद्ध मत में एक ही है।

अपने बौद्ध, जैन मत के प्रत्येक सम्प्रदाय के तन्त्र सिद्धांत अर्थात् कथन करने वाले ग्रन्थ देखे होते तो सत्यार्थ प्रकाश में जो लेख और उत्पत्ति और प्रलय के सम्बन्ध लेख है उस पर शंका कभी न करते।

प्रश्न 2. सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ 397 पंक्ति 24 प्रश्न मनुष्य आदि को ज्ञान है—ज्ञान से वे अपराध करते हैं। इससे उनको पीड़ा देना कुछ अपराध नहीं। यह बात जैन मत में नहीं है।

पृष्ठदाता
श्री अनिल बहल, एडवोकेट, 76|1, नैशविला रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर : ग्रन्थ विवेकसार में पृष्ठ 228 पंक्ति 10 से लेकर 15 तक देख लीजिए। क्या लिखा है ? अर्थात् गुणामीयोग और स्वजन आदि समुदाय की आज्ञा जैसे विष्णुकुमार, कुछ की आज्ञा से बौद्ध रूप रचना करके नामुचि नाम पुरोहित को की वह जिनका विरोधी था लात मारके साथ में नरक में भेजा साथ ही और भी बातें।

प्रश्न 3. सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ 399 पंक्ति 3 उसके ऊपर (अर्थात् पदम्शिला पर) बैठकर चराचर को देखना ?

उत्तर—पुस्तक रत्नसार भाग पृष्ठ 23 पंक्ति 13 से लेके पृष्ठ 24 पंक्ति 24 तक देख लीजिए कि महावीर और गौतम के परस्पर वार्त्तालाप में क्या लिखा है।

प्रश्न 4 : सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ 401 पंक्ति 23 और उनके मत में नहीं वह श्रेष्ठ भी हुए तो भी, उसकी सेवा नहीं करते अर्थात् जल तक भी नहीं देते।

उत्तर—पुस्तक विवेकसार पृष्ठ 221 पंक्ति 3 से पंक्ति 8 तक लिखा है—देख लीजिए कि अन्य मत की प्रशंसा व इनका गुणकीर्तन नमस्कार सत्कार व उनसे थोड़ा बोलना व अधिक बोलना व उनसे बैठने के लिए आसन आदि देना उनको खाने पीने की वस्तु सुगंध, पुष्प देना व अन्य मत की मूर्ति के लिए चन्दन पुष्प आदि देना यह 6 बातें नहीं करनी चाहिए।

प्रश्न 5. सत्यार्थ प्रकाश 401 पंक्ति 27 किन्तु साधु जब आता है तब जैनी लोग उसकी दाढ़ी मूछें और सिर के बाल सब नोंच लेते हैं ?

उत्तर—ग्रन्थकल्प भाष्य पृष्ठ 108 पंक्ति 4 से लेकर पंक्ति 9 तक देख लीजिए और प्रत्येक ग्रन्थ में दीक्षा के समय 5 मुट्ठी बाल नोंचना लिखा है। यह काम अधिकतर चेला व गुरु के हाथ से होता है और अधिक ढुंढियों में है।

प्रश्न 6 : सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ 402 पंक्ति 20 से लेकर जो श्लोक जैनियों के बनाये लिखे हैं वह जैन मत के नहीं है।

उत्तर—मैं इसका उत्तर इससे पहले पत्र में लिख चुका हूं (कि मिती कार्तिक सुदी 4 शनिवार) आपके पास पहुंचा होगा देख लीजिए।

प्रश्न 7 : सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ 403 पंक्ति 11 अर्थ और काम दोनों पदार्थ मानते हैं ?

उत्तर—यह मत जैन मत सम्बन्धी सम्प्रदाय चारवाक नामक का है जिसमें ऐसे-ऐसे श्लोक कि जब तक जिएं सुख से जीएं कोई प्राणी मृत्यु से अगोचर नहीं है। भस्मीभूत का देह में पुनः आना नहीं आदि अपने मत के बना लिए हैं। इसी प्रकार से नीति और कामशास्त्र के अनुसार अर्थ और काम देव ही पदार्थ पुरुषार्थ और बुद्धि से माने गये हैं।

यहां संक्षेप से आपके प्रश्नों का उत्तर दिया गया है। क्योंकि पत्रों द्वारा पूरा स्पष्टीकरण नहीं हो सकता। जब कभी मेरा और आपका समागम होवे तब आपको मैं ग्रन्थों के प्रमाणों पंक्तियों के साथ स्पष्ट ठीक-ठीक निश्चय करा सकता हूँ। आपको और भी कुछ सन्देह सत्यार्थ प्रकाश के बारहवें सम्मुलास में होवे। (मेरठ की आर्यसमाज द्वारा) लिख कर भेज दीजिए सबका ठीक उत्तर दे दिया जायेगा। अब मैं यहां थोड़े दिन तक रहूंगा। यदि आप अम्बाला तक आ सकें तो तारीख 7 नवम्बर 1880 तक आठ बजे से पहले देहरादून में उसके पश्चात् आगरा मुझको तार में सूचना देनी चाहिए कि मैं आपसे शास्त्रार्थ अर्थात् परस्पर वार्तालाप के लिए पहुंच सकूं। बुद्धिमान मनुष्य के लिए इतना पर्याप्त है। अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं।

सं० 1937 मिति कार्तिक सुदी 13 रविवार।

दयानन्द सरस्वती—देहरादून

(यह पत्र 14 नवम्बर 1880 को लिखा गया था)

पृष्ठदाता

गोयल स्टूडियो, राजपुर रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

16.

तारीख 15 नवम्बर सन् 80 ई०
मिति कार्तिक सुदी 14 सं० 1937
चन्द्रवार—देहरादून से।

पं० भीमसेन जी आनन्दित रहो।

नमस्ते। तुम हमारे दोनों बेग कि जिसमें हमारे वस्त्र साल जोड़ी आदि और बरतन रसोई आदि कहां पर और किस के सुपुर्द करके आए हो और जो रुपया कोठी से लाए हो उसका ब्यौरा की किस-किस कदर और कितना कितना किसको सौंपा है। और मुंशी जी की निस्बत छापेखाने में गड़बड़ करने के मामले में जानता हो या नौकरों चाकरों से सुन रखा हो और या जो कोई (ई) चीज फाउन्डरी वगैरा लकड़ी आदि को बनाते या बनवाते देखा है, सो सबका एक पत्र पर ठीक-ठीक ब्यौरा लिख कर काशी जी को भेज दो और एक पत्र मुझको शीघ्र लिख दो क्योंकि वह सब बातों में यूं कहता कि मुझको कोई चीज मालूम नहीं है। सब बातों का हाल भीमसेन जी जानते हैं। क्योंकि उसका कोई हिसाब किताब तो दुरुस्त है ही नहीं और सब बातों में गड़बड़ कर रखा है ठीक-ठीक जवाब दे नहीं सकता है। उल्टा लड़ने को दौड़ता है। परन्तु मास्टर शादीराम जी और ज्वालादत्त जी योग्य आदमी हैं वे उसके कहने पर बुरा नहीं मानते अपना काम उनसे निकालते हैं। वह अपनी साथ तुमको भी लपेटना चाहता है और अपनी बदनामी तुम्हारे ऊपर रक्खा चाहता है। क्योंकि उसकी कई एक बातें वहां पर पकड़ी गई हैं। और मास्टर जी ने मालूम कर लई है। उनको उसने यह ही जवाब दिया है कि मुझको कुछ मालूम नहीं। भीमसेन जाने। देखे जैसे कि उसने अंग्रेजी फर्मा चढ़ा रक्खा था। और तुमने कहा था कि तुम बिना आज्ञा स्वामी के क्यों चढ़ाया। तब उसने जवाब दिया था कि अब जो मैं यहां से दूसरी जगह ले जाऊँ तो मेरा चार-पांच सौ रुपया का नुकसान होता है। और यह भी कहा कि कोठी से रुपया लाने या ले जाने की निस्बद मुझे कुछ भी मालूम नहीं है। और यह भी हमको यकीन है कि तुम्हारे पास ऐसी लिखित मितिवार नहीं होगी जैसा कि कब और कितना रुपया और किसके देने को आया। और किसको दिया गया है। मितिवार है या नहीं यदि ऐसी किसम की हो तो बहुत अच्छी बात है क्योंकि ऐसी लिखित के मौजूद होने से बहुत मतलब हासिल होगा अगर तुम्हारे पास न हो तो कोठी पर तिथि-वार सब रुपए का आमदोरफत मालूम हो सकती है। वहां से हो सकता है। और तुम वस्तु की तैदाद लिखकर जो जो तुम्हारी दर्निश्त में हो बहुत ही शीघ्र लिख एक पत्र काशी को और दूसरा हमको लिख भेजो। ताकि वह तुम्हारा नाम से बरी न हो पावे। और सब चीजों का पता ठीक-ठीक बतला देवे जो-जो हिसाब रुपया जमाकर आने या मुंशीजी को काम कर आने की निस्बत तुमको मालूम हो वह भी और जो हिसाब चलती बेर बावत मौजूदगी रुपयों की जो मुंशी जी के पास जमा थे। और जो कोठी पर थे। हम तुमको लिखवा आए थे। वह भी सारी बातों का हिसाब लिखकर जल्दी हमारे पास भेज दो। और काशी वालो को भी इतला दो कि जिससे वह लोग सब बात जानकर मुंशी की निस्पद अदालत में दावा कर दें और मुंशी जी भी तुम्हारे निस्वत कुछ झूठ न कह सकें। जिन-जिन बातों का सबूत फाउन्डरी आदि लकड़ी की किसी वस्तु का मुंशी की निस्पद तुम जानते हो या कोई लिखत पढ़त तुम्हारे पास इस किस्म की मौजूद हो कि जिससे सपुर्द करना किसी वस्तु आदि या रुपया पैसे का मुंशी जी की निस्पद ठीक सबूत हो जावे। फौरन लिखकर हमारे और काशी वालों के पास भेज दो। और अब वहां का काम बसवव मास्टर शादीराम पं० ज्वालादत्त से उम्मीद है कि अच्छी तरह से होगा। और मुंशी जी की सारी कलई सब बातों की खुल जावेगी। देखो बड़े शोक की बात है कि तुमको वक्त के ऊपर बीमार हो जाना और तुम्हारा वहां से जल्दी चले जाना और मास्टर साहब ज्वाला दत्त का तुम्हारे सामने न पहुंचना। यह तमाम कारण वक्तावर सिंह के करने का छापेखाने में हुआ। वरना तुम्हारे हुए यानी तुम्हारे सामने ऐसा कभी न होता क्योंकि देखो मुंशी जी ने अक्लमन्दी से और चालाकी से आधी वस्तु छापेखाने की अपनी बना ली है। और रुपया का कुछ हिसाब नहीं देता और जो कोठी का हिसाब समझाने के लिए मास्टर व पंडित कहते हैं तो बिलकुल जाना कबूल नहीं करता और गाली गुफ्तार बकने लगता है। यह कुल कारण माल के हजम करने का है। मिति मार्ग शिर मिति 2 बृहस्तिवार 1937 को आगरे में पहुचेंगे। इसलिए तुमको उचित है कि सारी बातों का विचार लिखकर ठीक-ठीक हमको आगरा में खबर दो। और एक पत्र लिखकर सारी बातों का हाल जो तुम जानते हो और जहाँ तक हो सके जल्दी लिख भेजो। और तुम भी लिखो कि हमारे पास आना समझो और तुम्हारा शरीर भी दुरुस्त हो गया हो तो हमको लिखो। अगर तुम आओ तो हम दूसरा पण्डित न रखें। मफस्सिल लिखो। शीघ्र जवाब से इतला दो।

द० दयानन्द सरस्वती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञापन

17. सब सज्जनो को विदित हो कि अब 15 नवम्बर सन् 1880 से मुंशी बख्तावर सिंह को जो वैदिक मन्त्रालय के मैंनेजर थे। यहां के काम से अपने दोष के कारण अलग कर दिया है। उन्होंने सर्वथा अपने लाभ और वैदिक प्रेस के हानिकारक अनुचित काम जो उनके करने योग्य न थे किए। हम उन कामों को जान चुके हैं और कुछ दिनों व महीनों में सबको विदित हो जायेंगे। प्रिय पाठकजनो कुछ चिन्ता नहीं। अच्छे और बुरे कामों का फल कर्ता को ही होता है। अब कोई ग्राहक वेद भाष्य आदि पुस्तकों के लिए मुंशी बख्तावर सिंह के समीप पत्र का धन न भेजें और जो भेजेगा तो हम जिम्मेदार नहीं है। तारीख 16 नवम्बर सन् 1880 से वैदिक मंत्रालय के मैनेजर शादीराम जी हैं इनके नाम ही पत्र और इनके समीप ही धन (लाला शादीराम मैनेजर वैदिक मंत्रालय लक्ष्मीकुण्ड बनारस) इस पते से भेजा करें। यह सबके समीप है। उत्तर रसीद और पुस्तक उचित समय पर भेजा करेंगे। जिस ग्राहक के हिसाब में चार बरस के साड़े पच्चीस रुपये में से जितने-जितने बाकी दाम हों लाला शादीराम जी के पास उक्त पते से शीघ्र भेजे और जब से वैदिक मंत्रालय निहित हुआ उस समय से लेकर 15 नवम्बर सन् 1880 तक के हिसाब में है। मुंशी बख्तावर सिंह के पास दाम भेजा हो उनकी रसीद वेदभाष्य के टाइटल पेज पर न छपी हो। और ग्राहकों के पास मुंशी बख्तावर सिंह की हस्ताक्षरित व मनी-आर्डर की हो। तो उसकी सूचना वैदिक मंत्रालय के मैनेजर को कर दें। कि जिससे सबका हिसाब ठीक-ठीक विदित हो क्योंकि मु० बख्तावर ने हिसाब जैसा सफाई से चाहिए नहीं लिखा। इसके ग्राहकों की कुछ हानि नहीं किंतु छापेखाने के मालिक की हुई है। क्योंकि ग्राहक लोग तो छापेखाने के मालिक के विज्ञापन पर दाम भेजते हैं। मैनेजर के विश्वास पर नहीं। इसलिए ग्राहकों को रुपया भेजने में शंका देर और अविश्वास न करना चाहिए। जो आर्य दर्पण समाचार पत्र छपता है वह न स्वामी जी दयानन्द सरस्वती की ओर से और न किसी आर्य सभासद की ओर से है। किन्तु मुंशी बख्तावर की ओर से है।

[यह विज्ञापन ऋग्वेद भाष्य के 20-21 सम्मिलित अंक (मार्ग शीर्ष संख्या 1937) के अंक पर छपा है। अतः यह नवम्बर 15 के बाद लिखा गया होगा]

18. लाला कालीचरण रामचरण जी आनन्दित रहो।

और मैं देहरादून से यहां आया। चौबे तोताराम······

सं० 1937 मि० मा० व० 4 रविवार (दयानन्द सरस्वती)

19. सेठ कालीचरण रामचन्द्र जी आनन्दित रहो।

···जो सच पूछो तो यह वैदिक प्रेस इन्हीं योग्य पुरुषों के सहाय के वसीले से हुआ है जिनका विवेचन यह है आर्य समाज फरूखाबाद 1800/- रु० आर्य समाज मेरठ 428/- रु० आर्य समाज लाहौर 350/- रु० आर्य समाज देहरादून 25/- रु०······

दयानन्द सरस्वती

पृष्ठदाता
वीरेन्द्र वाच कं०, मीना बाजार, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रांश

20. यह पत्र 9 फरवरी सन् 1881 को लिखा गया।

मंत्री आर्य समाज गुजरांवाला।

पं० आत्माराम जी से एक पत्र उन सन्देह मात्र बातों का जिनको वह सत्यार्थ प्रकाश में जैनों के मतों के विरुद्ध ठहराते हैं उनके हस्ताक्षर से हमारे पास भिजवा दो कि हम विचारपूर्वक उनका उत्तर लिखकर अपने हस्ताक्षर करके उनके पास भेजेंगे।

(यह उस पत्र का सारांश है जो 19/20 अक्तूबर को महर्षि ने देहरादून से गुजरांवाला समाज को भेजा)

21. श्रीयुत कृपाराम स्वामी आनन्द रहो।

ता० एक फरवरी सन् 1879 का लिखा रजिस्टर पत्र पहुंचा देखकर आनन्दित होवे, समाचार जानकर प्रति उत्तर लिखता हूं। वहाँ रहने वालों से मेरा आशीर्वाद कहना। वहां आने में मुझको बहुत प्रसन्नता है। परन्तु मैं अनुमान करता हूं कि जो बन सकेगा सम्वत् 1936 बैशाख लगते ही आने का सम्भव है। यहां सहारनपुर से 6 फरवरी को रुड़की को जा के वहां 8 व 15 दिन रह के हरिद्वार में जा के कनखल और ज्वालापुर के बीच जाकर नहर के पुल पर बड़ी सड़क पर मूलामिस्त्री के बाग में डेड़ महीने ठहरने का विचार है। पीछे आप लोगों के यहां आने का विचार है तो जानिए कि आप लोगों से मैं नहीं मिलता चाहता। ऐसा सम्भव है। सम्वत् 1935 मिति माघ शुल्क 10 अदित्यवार।

दयानन्द सरस्वती

(यह पत्र 2-2-1879 को मेरठ से देहरादून के लिए भेजा गया)

22. पं० कृपाराम।

हम पर्वी से दूसरे दिन देहरादून को कूच करेंगे। (यह मूल पत्र अथवा उसका अभिप्राय है—इसका उल्लेख पं० लेखरामकृत जीवन चरित्र में है)

23. स्वामी कृपाराम जी आनन्दित रहो।

इस पत्र का उत्तर हम लिख चुके हैं। हम यहां 6-7 दिन रहेंगे। जो तुम शनिवार को आओगे तो मिल जायेंगे। और एक चिट्ठी बलदेव सिंह के विषय में हमने भेजी। तो तुम्हारे पास जो पहुंची होगी उसी में बाकी जब तुम यहां आकर मिलो तब सब निश्चय होगा और यह पहले लिख चके हैं कि मनुष्य की आत्मा कपटी। पहले कहते हैं कि हम ऐसा-ऐसा करेंगे। पीछे वक्त परे पर कुछ भी नहीं।

मिति भाद्र शुदी 4 मंगलवार स० 1937

दयानन्द सरस्वती

(यह पत्र 8 सितम्बर 1880 को मेरठ से लिखा गया। पहला और तीसरा दोनों पं० बुद्ध देव जी की बहन के पास हैं)

पृष्ठदाता
सुन्दर स्टेशनर्स, डिस्पेंन्सरीं रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता० ३१ मार्च १८८०

कृपाराम स्वामी: दि॰ आनन्दित रहो

पत्र तुम्हारा आया समाचार जाना आगरे भरतपुर आय और
वहां से आकर यहां जयपुर में ठहरे हैं। ईश्वर विषय में एक व्या
ख्यान भी यहां हुआ था और भी विषय पर होगा। कलकत्ते की स
भा आदि के साथ हम को लिखने पढ़ाने का अवकाश नहीं है
वेदभाष्य का काम बहुत है। तुम को अवकाश हो लिखो छपवाओ।
भ्रमोच्छेदन और रंगो करूरा। निघण्टु छप चुके हैं वेदभाष्य के अं
के साथ तुम्हारे पास भी पहुंचेंगे। भागलपुर। जवनपुर। कासी।
मिर्जापुर आदि में मुसलमानों का उपद्रव हमने सुन लिया।
मुंशी इन्द्रमणि का मुकद्दमा भी इलाहाबाद में है अभी कुछ
सिद्धान्त नहीं हुआ है। दांत की औषधी

माजूफल। मोरेठी। पपरिया कत्था। रूमी मस्तगी। नीलाथोथा।
ये पांच चीज बराबर अर्थात आध २ पाव से कम नहीं नीलाथोथा
को अग्नि पर फुला के थोड़ा सा जल कड़ाही में रख के बुझा ले और बु
झा के शीघ्र निकाल के पांचों चीजें अलग २ पीस ले उन पांचों
की बराबर आक के जड़ की छाल अर्थात पृथिवी में से खोद के
धो डाले जिससे मट्टी कंकर न रहे। छाल को छोटी २ काट के जिस ज
ल में नीला थोथा बुझाया है उसमें छः ही चीजें डाल के लोहे की क
डाही में लोहे की मुसली से कूटे। जब महीन होत ब निर्वात स्थान में जो
से जब तक अंजन के समान न होजाय पीसता जाय पीछे किसी शीशी
में भर रक्खे। दांतोन करके पीछे अंगुली से दांत और मसूढ़ों में ल
गावे। इससे दांत पुष्ट रहेंगे न हलेंगे न गिरेंगे न पीड़ा होगी।

सब से हमारा नमस्ते कह देना।

दयानन्द सरस्वती

सवाई जयपुर

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा ३१ मार्च १८८० को लिखा पत्र

(यह पत्र पं० कृपाराम मन्त्री आर्य समाज देहरादून को लिखा गया)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

24. कृपाराम जी, आनन्दित रहो।

पत्र तुम्हारा आया हाल विदित हुआ। मुंशी बख्तावर सिंह के हिसाब की जांच पड़ताल हो रही है। जालसाजी निकलती है। पश्चात जैसा-जैसा होगा लिखा जावेगा। अब तुम पुस्तकें निसन्देह मंगा लो। और पानी की तश्तरी वहीं रखी रहने दो। जब कभी हम आवेंगे देख लिया जाएगा। यहाँ व्याख्यामान होता है और हम सब प्रकार आनन्द में हैं। यहां सब सभासदों को नमस्ते।

आगरा। दिसम्बर 1880 ह० दयानन्द सरस्वती

(यह मूल कार्ड पं० कृपाराम जी के भाई के पोते पं० मिश्रानन्द जी फोटोग्राफर ओल्ड कैन्टोमेंन्ट रोड देहरादून के पास था)

25. ता० 31 मार्च 1880 (81)

कृपाराज जी आनन्दित रहो।

पत्र तुम्हारा आया समाचार जाना। आगरा से भरतपुर आये वहां से आकर यहां जयपुर में ठहरे। ईश्वर विषय में एक व्याख्यान भी यहां हुआ था। और भी शायद होगा। कलकत्ता की सभा आदि के साथ हमको लिखने छपवाने का अवकाश नहीं। वेद भाष्य का काम बहुत है। तुमको अवकाश हो लिखो छपवा दो। अनुभ्रमोच्दन और गोकरूणानिधि सब छप चुके हैं वेद भाष्य के अंक के साथ तुम्हारे पास ही पहुँचेंगे भागलपुर, जबलपुर, काशी, मिर्जापुर, आदि में मुसलमानों का उपद्रव हमने सुन लिया। मंशी इन्द्रमणी का मुकदमा भी इलाहाबाद में है। अभी कुछ सिघान्त नहीं हुआ। दांत की औषधि माजूफल-मुलैठी-पपरिया कत्था, रूमीमस्तगी, नीला थोथा, यह पांच चीजें बराबर अर्थात् आध-आध पाव से कम नहीं। नीला थोथा को अग्नि पर फुला के थोड़ा सा जल कड़ाई में रख के बुझा लें। और बुझा के शीघ्र निकाल के पांचों चीज अलग-अलग पीस लें। उन पांचों की बरावर आक के जड़ की छाल अर्थात् पृथ्वी में से खोद के धो डाले जिसे मिट्टी कंकर न रहे। छाल को छोटे- छोटे काट के जिस जल में नीला थोथा बुझाया है उसमें 6 चीजें डाल के लोहे की कढ़ाई में लोहे की मूसली से कूटे। जब महीन हो तो तब निर्वात स्थान में पीसे। जब तक अंजन के समान न हो जाए पीसता जाए। पीछे किसी शीशी में भर रखें। दातुन करके पीछे अंगुली से दांत और मसूड़ों में लगाएं। इससे दांत पुष्ट हो जायेंगे न हिलेंगे न गिरेंगे न पीड़ा होगी। सबसे हमारा नमस्ते कह देना।

दयानन्द सरस्वती

सवाई जयपुर

नोट :—इस पत्र में सन 1880 मूल से लिखा गया है। 1881 होना चाहिए। यह पत्र हाथी छाप के कागज पर सारा पत्र महर्षि के अपने हाथ का लिखा हुआ है और यह मूल पत्र एक भारतीय आर्य ठेकेदार ब्रह्मदेश में अपने साथ ले गया। वह ठेकेदार रोगी हुआ और चिकित्सा करने पहुंचे देहरादून वासी डा० केदारनाथ (ये डाक्टर उन दिनों सैनिक विभाग में थे) उन्होंने ठेकेदार की बैठक में टंगा यह पत्र देखा और पढ़ा तत्काल उनके मन में यह पत्र प्राप्त करने की इच्छा हुई। फीस के बदले में रोगी से अपने गुरु का यह पत्र ही मांगा लिया। रोगी डा० के आग्रह को टाल न सका और पत्र डा० केदारनाथ, भारत आने पर अपने साथ देहरादून ले आए। लगभग 12 वर्ष बाद मृत्यु से पूर्व ही यह धरोहर पं० अमरनाथ जी वैद्य को सौंप कर निश्चिन्त हो गए। इस इतिहास लेखन के समय तक यह पत्र पं० अमरनाथ जी वैद्य के सुपुत्र भाई देवेन्द्र नाथ प्रभाकर के पास था—जो इस समय मेरे पास है।

पृष्ठदाता

डाँ० राममूर्ति, 3, नेहरू रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

26. बाबू कृपाराम स्वामी आनन्दित रहो।

जो आपने ब्राह्मनी औषधि का पार्सल भेजा सो पहुंचा। अब जब तक हम न लिखे मत भेजियेगा। यहां सब प्रकार आनन्द है। तीन दिन के पश्चात वार्षिक उत्सव आर्य समाज का 7 वाँ होगा। दानापुर से तीन सभासद् यहां उत्सव पर आवेंगे और आर्य समाज का स्थान थोड़े ही दिनों में बन जायगा। सब सभासद् भी प्रसन्न हैं। वहां की जो लिखने के तुल्य बाते हों लिखते रहना। सब से हमारा आशीर्वाद कहना।

दयानन्द सरस्वती

मि. चै. व 13 शुद्र सं. 1938.

27. यह पत्र 17 मार्च 1882 को बम्बई से लिखा गया।

बा० कृपाराम जी आनन्दित रहो।

विदित हो कि पत्र तुम्हारा पहुंचा। समाचार ज्ञात हुआ और जो तुमने 50000/-पचास हजार की सही कराके मेरठ भेज दी, सो अच्छा किया और ब्राह्मी औषधी सेर भर का पार्सल करके—उदयपुर भेज दो। यहां उदयपुर का समाचार अतीव प्रशंसनीय है और सुन कर सबको आनन्द भी होगा। श्रीमान आर्य कुल दिवाकर, महाराणा जी बहुत योग्य है। उन्होंने हमारे उपदेशानुसार अपनी दिनचर्या, राजकार्य और धर्म कृत्य भी करना आरम्भ कर दिया है। प्रातः सांय काल सात बजे मेरे पास नित्य प्रति आया करते हैं। कभी-कभी रात्रि को मैं शम्भु विलास महिल में जाया कर्ता हूं। प्रातःकाल कुछ योग व राजनीति की शिक्षा होती है और सांय काल दर्शन शास्त्रों के उपयोगी विषय पढ़ते हैं। उनके साथ बहुत से भाई-बेटे तथा आमात्य वर्ग भी पड़ते हैं। और सब अच्छी बातें हैं। आगे जो-जो उत्तम बात होने वाली है, होंगी, तो सबको प्रसिद्ध कर दी जायेगी।

सं० 1939 मार्ग शीर्ष बदी 5 तारीख 29 नवम्बर (1882)

दयानन्द सरस्वती

(यह मूल पत्र पं० बुद्ध देव विद्यालंकार की बहिन यज्ञवती के पास सुरक्षित है।)

28. इस पत्र की सूचना पं० कृपाराम स्वामी को लिखे गए पत्र सं० 23 में है। यह पत्र बलदेव सिंह के नाम लिखा गया और पं० कृपाराम के लिफाफे में ही बन्द करके भेजा गया। पत्र का विवरण अज्ञात है।

29. बलदेव सिंह शर्मा के नाम का एक पत्र 26 सितम्बर सन 1874 का "पत्र व्यवहार" में मौजूद है। यह पत्र लिखा राजा जय कृष्ण दास जी के पुत्र श्री ज्वाला प्रसाद जी ने। और लिखा महर्षि की आज्ञा से। पत्र किस स्थान को लिखा गया यह ज्ञात नहीं है।

बलदेव सिंह शर्मा

आजकल दयानन्द स्वामी यहां पर ठहरे हैं। उनको तुम्हारी बड़ी जरूरत है और तुम्हारे बिना उनको बहुत क्लेश है। इसलिए स्वामी जी की आज्ञानुसार तथा राजा साब की सम्मति से तुम को लिखा जाता है कि तुम इस पत्र को देखते ही जल्द चले आओ। और कुछ विलम्ब मत करो। क्योंकि स्वामी जी दो चार दिन में दक्षिण में जायेंगे।

ता० 26 सितम्बर 1874 **ज्वाला प्रसाद (प्रयाग)**

असूज बदी। शनिवार सम्वत् 1931 वि०

पृष्ठदाता

पं० रामचन्द्र जीं, ओल्ड डालनवाला, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोट—यदि यह बलदेव सिंह वही है जिसका वर्णन कृपाराम के पत्र में है तो यह मानना पड़ेगा कि महर्षि दयानन्द का सम्बन्ध देहरादून में पं० कृपाराम जी द्वारा 1879 में नहीं बल्कि बलदेव सिंह द्वारा 1874 में ही जुड़ चुका था। लेकिन इसके कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं।

हम समझते हैं यह पत्र बलदेव सिंह शर्मा जी की ओर (संकेत नहीं करता) है क्योंकि इस पत्र में केवल बलदेव सिंह लिखा है। शर्मा नहीं लिखा (जब कि पत्र 656) बलदेव सिंह शर्मा को सम्बोधित किया गया है।

हमारा विचार है महर्षि दयानन्द ने नगर सेठ के जिस पुत्र को ईसाई होने से बचाया था—यह वह बलदेव सिंह है। देहरादून से इसकी संगति भी बैठती है। आगे चल कर यह युवक आर्य समाज का अच्छा कार्यकर्ता सिद्ध हुआ। इसी को बचाने के लिए महर्षि पहली बार देहरादून पधारे थे, बुलाया था पं० कृपाराम ने ही। सम्भव है महर्षि को उसका डाक का पता न मालूम हो और पत्र पं० कृपाराम की डाक में भेज दिया हो।

(यशपाल आर्य)

यह पत्र पं० कृपाराम जी मंत्री आर्य समाज देहरादून ने महर्षि दयानन्द सरस्वती को लिखा है। यह पत्र "उर्दू जीवन चरित्र" अध्याय 9 के पृष्ठ 242 से उतारा गया है :—

30. श्री 108 स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज।

राजस्थान जोधपुर।

प्रतिष्ठित आचार्य साष्टांग प्रणाम।

दीर्घ काल व्यतीत हुआ कि महाराज का कोई पालन पत्र प्राप्त नहीं हुआ। अतएव हृदय अतीव शोकातुर है। यदि महाराज के मंगल समाचार मुंशी समर्थदान और समाचारपत्रों द्वारा सदैव विदित होते रहे हैं तथापि आपके शुभ हस्ताक्षरयुक्त पत्र देखने की अभिलाषा नित्य प्रति बनी रहती है। आशा है प्रत्युत्तर प्रदान कर शीघ्र हम लोगों को भाग्यवान करेंगे।

उदयपुर और शाहपुरादि राजस्थानों को इस वर्ष पवित्र कर महाराज ने जो उपकार किया सो तो ऐसे आनन्द का विषय है जिसे प्रकट करना लेखनी की सामर्थ्य से बाहर है। द्वेषी और विरोधीजनों के मुख से महाराज को धन्यवाद देते ही सुना है। मुंशी समर्थदान जी को भेजा हुआ मुद्रित धन्यवाद पत्र श्री महाराणा जी की सेवा में यहां से भी भेजा गया था। जिसका उत्तर भी आर्य कुल दिवाकर ने अतीव अनुग्रह और हर्ष सहित प्रदान किया है। और जिसमें श्रीमान की पूर्ण हितैषिता और देशानुराग प्रकाशित है। हम लोगों के तुच्छ ज्ञान से कोई विधि, ऐसी दृष्टि नहीं पड़ती जिसके द्वारा महाराज के उपकार का धन्यवाद समर्पण कर सकें। उस जगदीश्वर को बारम्बार प्रार्थना है कि महाराज का शरीर चिरंजीव रक्खे।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
कृपाराम

श्री सेवक लाल कृष्णादास मंत्री आर्य समाज बम्बई का लिखा पत्र (12 अक्तूबर 1880 का) महर्षि को देहरादून में प्राप्त हुआ। वह पूरा पत्र उर्दू जीवन चरित्र अध्याय 9 पृष्ठ 214 पर छपा है।

पृष्ठदाता
राय बहादुर चौ० नारायण सिंह प्रताप सिंह, धर्मार्थ न्यास, करनाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

31.

बम्बई
आश्विन शुक्ला सोमवार सं० 1936
12 अक्तूबर 1980

प्रिय आप्त

नमस्ते।

आपका कृपा पत्र मेरठ से लिखा पहुंचा। पढ़ कर बड़ा आनन्द हुआ और कितने एक सभासदों को भी पढ़ाया। उनको भी बड़ा आनन्द हुआ और आपके वचनामृत सुनने की बड़ी अभिलाषा हुई। हम कई दिनों से आपके संसर्ग की इच्छा रखते हैं। परन्तु हमको मुंशी समर्थदान जी के द्वारा विदित हुआ कि स्वामी जी अभी बम्बई आने की नहीं चाहते जिससे हम लोगों ने निश्चय कि स्वामी जी वहां भी देश उन्नति के कार्य में विशेष प्रवृत्त हो रहे होंगे जिससे विशेष आग्रह करके बुलाने से और भी हानि होगी। जैसे अहमदाबाद से बुलाने से हुई। हमने कुछ दिन आपकी इच्छा की राह देख रहे थे। क्योंकि हमारी अभिलाषा तो अपने मुन्शी जी द्वारा पढ़ी होगी। अलकाट साहब को भी हमने कहा था।

जब तक आप मेरठ न पधारेंगे तब तक समाज विशेष उन्नति के प्राप्त नहीं हो सकता क्योंकि कार्य करने वाले बहुत कम हैं। अपना तन मन धन लगा कर करने वाले वाक्य विलास करने वाले बहुत है। परन्तु इससे देश उन्नति नहीं—मात्र पोपों के बहकाने से विरोध बढ़ता है। तो भी आनन्द की बात है कि आर्य सिद्धान्त से कोई छूटता नहीं—क्योंकि आपके अमूल्य व्याख्यान और पुस्तक सुन-पढ़ कर जो निश्चय हुआ है—पोपों की दया सामर्थ कि स्वार्थी उपदेश करने से भ्रष्ट कर सके—परन्तु टके की बात में हट जाते हैं—जिससे विशेष उत्साह की अपेक्षा है।

"आगे फिर दर्शन की अभिलाषा और कागजात हिसाब का जिक्र है" ओनेरेबल गोपाल रावहरि देशमुख पूने को पधारे जभी आपके दोनों पत्र ले गए हैं जिन्होंने राय बहादुर महादेव गोबिन्द रानाडे को भेजे होंगे। हमने आपको शीघ्र प्रत्युत्तर लिखने को भेजा है।

कार्यालय बांधने के लिए रुपया 1500/- के आसरे सभासदों ने पट्टी भरी है परन्तु अब तक लिए नहीं। राय बहादुर के पधारे पीछे व्यवस्था होगी और आज हमने 240/- फरूखाबाद को शीघ्र वेद भाष्य की सहायता में भेजे हैं। और वेद भाष्य के ग्राहकों से चन्दा वसूल करने को हम मेहनत करते हैं। रुपया एक सद मुन्शी बखतावर सिंह को भेज दिए और थोड़े दिनों में और भी भेजने को शक्तिमान हो सकूंगा। इसकी कुछ चिन्ता नहीं। सब समाजियों को बहुत बहुत नमस्ते पहुचें। कृपा कर के प्रत्युत्तर शीघ्र लिखना।

मैं आपका आज्ञा संगतसेवक
सेवक लाल कृष्ण दास—मंत्री आर्य समाज, बम्बई।

पृष्ठदाता
पं० हरिदास, खुरबुरा, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशिष्ट–3

जिला देहरादून की आर्य समाजों तथा संस्थाओं का वर्णन।
केवल डोईवाला का इतिहास मैंने स्वयं खोज कर लिखा है।
शेष सामग्री संस्थानों ने भेजी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री श्रद्धानन्द बाल वनिताश्रम

17-2-1924 को आर्य समाज देहरादून की अन्तरंग सभा ने आर्य अनाथालय की स्थापना का निर्णय लिया था।

आर्य समाज भवन में ही आश्रम आरंभ किया गया और वहीं बच्चे रहते रहे। श्री आर्य किशोर जी के प्रयत्न से ला० मुकन्द लाल रईस, देहरादून से चार बीघा डेढ़ बिस्वा भूमि आश्रम के निमित्त प्राप्त हो गई। 16 अक्तूबर 1929 को महात्मा गांधी ने आश्रम की आधारशिला रखी। नाम भी बदल दिया गया, पहले आर्य अनाथालय था अब "श्री श्रद्धानन्द अनाथ वनिताश्रम" कर दिया गया। स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान के प्रति देहरादून के नागरिकों की यह एक मूक श्रद्धांजलि थी।

इस भूमि की रजिस्ट्री 22 जनवरी 1930 को की गई। लाला मुकुन्द लाल जी ने केवल यह भूमि खण्ड ही दान नहीं दिया, अपितु आश्रम का दक्षिणी ब्लाक भी अपने खर्चे से बनवा दिया। इसके अतिरिक्त लाला कृष्ण लाल जी (शंकरलाल) 1125/-, श्री बांके लाल जी ने 1000/-, श्रीमती बरसो देवी पत्नी श्री राजाराम ने 1000/-, श्रीमती निहाल देवी पत्नी श्री मुंशी राम 500/-, श्रीमती कमला देवी पत्नी श्री शिवलाल 500/- रु०, श्रीमती शंकर देवी (रंगीलाल कृष्णचन्द) 500/-, मथुरादास शिवप्रसाद (दर्शनलाल चाय वाले) 700/-, लाला सन्तराम जी की बहन 125/- रु०, से दान में प्राप्त हो गया। श्री आर्य किशोर जी ने अपने सामने खड़े होकर भवन निर्माण करा दिया।

सन् 1931 में आश्रम का उद्घाटन श्री पुरुषत्तमदास जी टंडन के कर-कमलों द्वारा हुआ।

देहरादून नगर हिमालय की उपत्यका में स्थित है। पहाड़ से बहला फुसला कर भोली भाली युवतियों को व्यवसायी दलाल मैदानों में ले जाते रहे हैं। और उन्हें घृणित कार्यों में लगाते रहे हैं। आर्य समाज ने इसको अनुभव किया। और एक प्रकार से मुसीबत ज़दा बहनों के लिए एक आश्रम स्थल स्थापित कर दिया। अनाथ बच्चों की कौन कहे—मां बाप भी गरीबी के कारण से जहां बच्चे को पालने के लिए तैयार न हों, वहां इन अनाथों को कौन देखता। (1) दयानन्द की दया इन पर भी अमृत वर्षा बन कर बरसी और देहरादून के आर्यजनों ने इस आश्रम की नींव डालकर "सर्वे भवन्तु सुखिनः" के नाम को साकार रूप प्रदान कर दिया।

मैंने दूसरे अनाथालयों के बच्चों को बाजार में सैकड़ों बार भीख मांगते देखा है। परन्तु यह देहरादून का आश्रम विचित्र है। कभी कोई बालक या बालिका धन प्राप्ति के लिए या भीख मांगने के लिए नहीं जाता। ठीक भी है—जिनके पिता माता जीवित हैं उन बच्चों का पालन पोषण तो उन पर है और जब आर्यों ने उन्हें अपनी सन्तानवत् स्वीकार किया है तो फिर इनके भरण-पोषण के लिए आर्य समाज ही उत्तरदाता है। देहरादून नगर के लोग धन्यवाद और प्रशंसा के अधिकारी हैं, जब मैं यह कहता हूं कि इस समय आश्रम में 71 बालक-बालिकाओं का प्रचुर मात्रा में भोजन सामग्री, वस्त्र, दवा बिन कहीं मांगे नियमित रूप से प्राप्त हो जाता है। हिन्दू, सिक्ख, जैन सभी दिल खोल कर दान देते हैं—और इतना देते हैं कि गत वर्ष अनायास आश्रम चले जाने पर मैंने यह पट्ट लगा देखा था "कृपा कर मिठाइयां इस सप्ताह आश्रम में न भेजें। अधिक मिठाइयां खा-खाकर बच्चे बीमार हो गये हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री मुकन्द लाल जी रईस
श्री श्रद्धानन्द अनाथ वनिताश्रम के लिए भूमि देने वाले तथा
१ ब्लाक का निर्माण कराने वाले दानी

श्री श्रद्धानन्द बालवनिताश्रम देहरादून
Shri Shraddhananda Bal Vanita Ashram, Dehra Dun

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

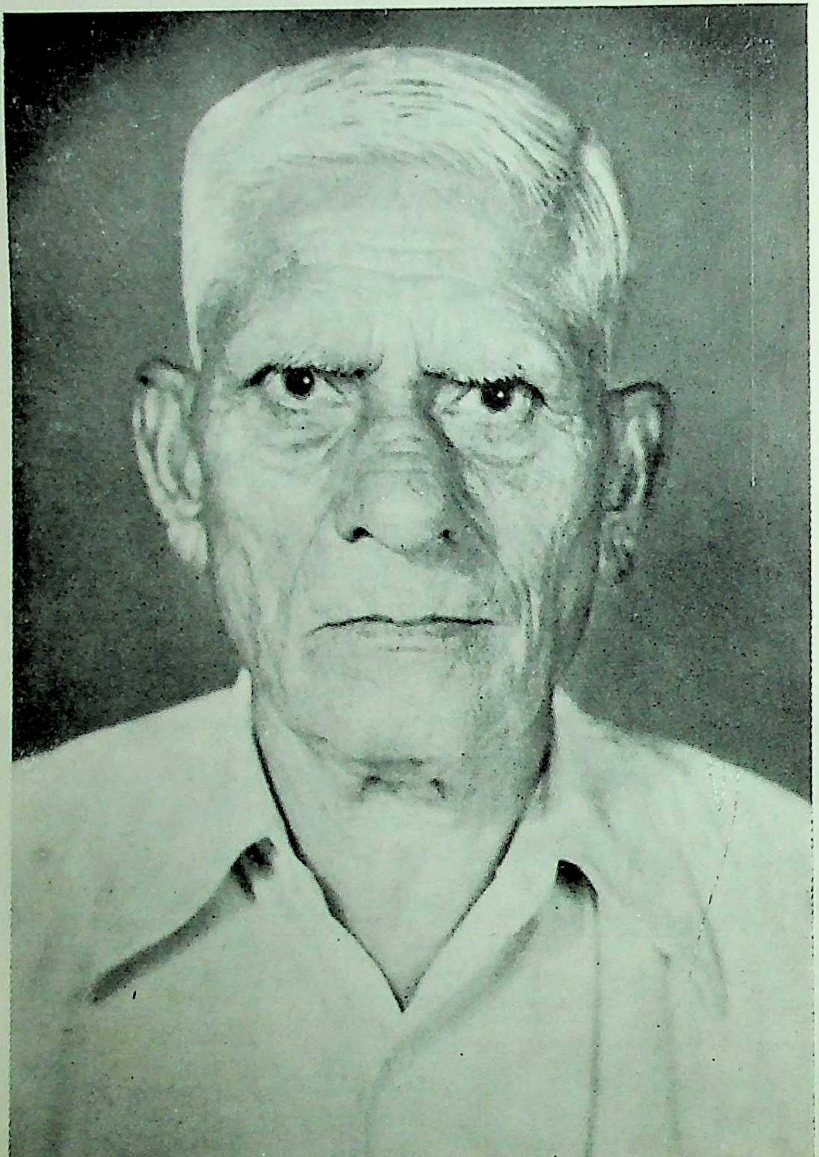

पं० हरिदत्त शर्मा
Pt. Haridutt Sharma

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रारम्भ में इस आश्रम को बैण्ड, खड्डी, सिलाई मशीन आदि उद्योगों की शिक्षा भी दी जाती थी। आज भी नगर का सबसे प्रसिद्ध बैण्ड "दर्शन बैण्ड" का स्वामी आश्रम का ही बालक है। भारत विभाजन से पूर्व तक आश्रम का ही बैण्ड देहरादून के बैण्ड की जरूरतों को पूरा करने का मुख्य साधन था। पीछे बैण्ड तोड़ दिया गया। खड्डी पर वर्षों कार्य चला। परन्तु उससे सीखने वाले अपना पेट पालने में भी परेशानी महसूस करने लगे। तब जुराब बुनने और सिलाई सिखाने और मोमबत्ती का कार्य शुरू किया गया। इस समय ये तीनों कार्य सुचारु रूप से चल रहे हैं।

बच्चों को प्रारम्भिक शिक्षा आश्रम में ही दी जाती है। उसके लिए दो अध्यापिकाएं नियुक्त हैं। छोटे बच्चों की देख-रेख वार्डन और बड़ी बालिकाएं मिल-जुल कर करती हैं। बड़ी कक्षा के बालक-बालिकाएं नगर के स्कूलों और कालेजों में पढ़ने जाते हैं। एक बच्चा गुरुकुल घरोंडा और दो बच्चे गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में पढ़ रहे हैं। दो बच्चे गलीचा बुनने की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। आर्य समाज देहरादून के प्रत्येक पिकनिक पर आश्रम वासी भी पूरा भाग लेते हैं।

नियमानुसार उत्तर प्रदेश सरकार से यह संस्था रजिस्टर्ड है और आश्रम का संचालन करने के सब विधि-विधान इस पर भी लागू होते हैं।

व्यवस्था इस प्रकार चलती है कि आर्य समाज देहरादून की अन्तरंग सभा प्रति वर्ष 7 सदस्य व प्रधान, (पदेन वहां का भी प्रधान है) को चुनकर भेजती है। यह सदस्य सभी नई कार्यकारणी के लिए दानदाता के प्रतिनिधि सहित मिलकर दो और लोगों को (वो आर्य समाज के ही सदस्य हों यह आवश्यक नहीं है) संयुक्त कर लेते हैं। नियमानुसार जिले के मुख्य अधिकारी भी शामिल किये जाते हैं। संस्था सोसाइटीज रजि० एक्ट 1860 के अन्तर्गत 29-1-1942 को रजिस्टर्ड हो चुकी है।

संस्था का हिसाब-किताब नियमित रूप से ओडिट कराया जाता है और प्रकाशित किया जाता है। संस्था का पृथक् रजिस्टर्ड विधान है। लगभग 75000 रु० वार्षिक का खर्चा है।

इस समय आश्रम की अपनी सम्पत्ति का मूल्य 8-10 लाख रुपये से कम न होगा। नगर के सभी सम्भ्रान्त व्यक्ति आश्रम के विषय में अच्छी राय रखते हैं। बड़ी हो जाने पर लड़कियों के विवाह—आश्रम, बालिकाओं की इच्छा के अनुसार तय करता है। और उन लड़कियों को हजारों रुपयों के तोहफे साथ देकर विदा करता है। देहरादून की क्लबें ऐसे विवाहों के अवसर पर बारात का तो सारा खर्चा वहन करती हैं साथ ही नई गृहस्थी बसाने के लिए इन बेटियों को सभी आवश्यक सामान भेंट स्वरूप प्रदान करती हैं। लड़कियां विवाहोपरान्त भी इस आश्रम में ऐसी आती हैं जैसे बेटी विवाह के बाद अपने मायके आती है। अच्छे-अच्छे जमींदारों या इन्जीनियरों व व्यापारियों से लड़कियां ब्याही गयी हैं।

आश्रम में एक नि:शुल्क औषधालय खोलने के लिए श्री हुकम चन्द गुप्ता (कार्मशियल मोटर्स देहरादून) ने अपने स्व० भ्राता सेठ देवीचन्द जी की पुण्य स्मृति में 50,000/- रु० का सात्विक दान इस कार्य हेतु दिया। भवन बन गया। भवन के किराये की आय से आश्रम का धर्मार्थ औषधालय चलाने का आयोजन किया जायेगा। इस औषधालय का उद्घाटन इसी शताब्दी समारोह के अवसर पर हो रहा है। आश्रम के बालक बड़े हो जाने पर आश्रम से बाहर चले जाते हैं और निजी जीवन में उन्हीं व्यवसायों को अपनाते हैं जो उन्होंने आश्रम में सीखे हैं जिनको अपने परिवार में कोई आश्रयदाता मिल जाता है वे उसके अनुसार जीवन यात्रा आरम्भ कर देते हैं। अब तक सैकड़ों आश्रम वासी अपने अपने व्यवसायों में लग चुके हैं। सैकड़ों लड़कियां अपने परिवारों मे सुखी जीवन व्यतीत कर रही हैं।

पृष्ठदाता

श्रीमती सुशीला शर्मा, अग्रवाल धर्मशाला, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितनी ही भगायी गयी लड़कियां उनके घरों में वापिस पहुँचाई गयी हैं। आश्रम के कितने ही बच्चे गोद दिए गए हैं। केवल हिन्दू ही नहीं, मुसलमान और ईसाई बच्चों की भी आश्रम पूरी रक्षा करता है। देहरादून के न्यायालय अक्सर मुसलमान महिलाओं को आश्रम में निःसंकोच भेज देते हैं।

आश्रम के अपने पृथक् सदस्य भी हैं जो आर्थिक सहायता मासिक रूप से करते हैं। किराये की आमदनी भी आश्रम को अच्छी-खासी है। सरकारी अनुदान भी यथासमय मिलते रहते हैं।

इस समय बाबू लछमीचन्द भूतपूर्व मैनेजर पंजाब नेशनल बैंक आश्रम के अधिष्ठाता हैं। उनकी देख-रेख में यह आश्रम पादप नित्य फूल-फल रहा है। इसका प्रमाण यही है कि "श्री श्रद्धानन्द अनाथ वनिताश्रम" से बदल कर इसका नाम अब "श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम" कर दिया गया है। यानी अब यह अनाथ नहीं है। देहरादून के नागरिकों ने इसे अपनी सन्तान स्वीकार कर लिया है।

आश्रमवासिनी लड़कियों के विवाह पर निम्न स्थानीय संस्थान दिल खोल कर सहयोग प्रदान करते हैं :—

लायन्स क्लब, देहरादून

लायन्स क्लब, शिवालिक, देहरादून।

लायन्स क्लब, दून वेली, देहरादून।

रोटरी क्लब, देहरादून।

लेडीज क्लब, देहरादून।

देहरादून के समस्त नागरिक भी यथासमय मुक्त हस्त से धन प्रदान करते रहते हैं। परिणामस्वरूप इस समय तक 25 विशाल कमरे बन चुके हैं।

पृष्ठदाता

श्रीमती कृष्ण माटा, कनाट प्लेस, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रामप्यारी आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कालेज

खुड़बुड़ा मौहल्ला

देहारादून का विवरण

इतिहास :—

आर्य समाज के सिद्धान्तों तथा आदर्श से प्रेरित स्वर्गीय बाबू आनन्दी प्रसाद जी अस्थाना ने स्वर्गीया पत्नी श्रीमती रामप्यारी जी की स्मृति में 30 जनवरी 1944 को श्री रामप्यारी आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना प्रारम्भिक पाठशाला के रूप में की।

पाठशाला का प्रबन्ध :—

पाठशाला के प्रबन्ध के लिए दान-पत्र में 11 सदस्यों की एक समिति का उल्लेख किया जिसका अध्यक्ष पदेन आर्य समाज देहरादून का प्रधान होगा तथा प्रबन्ध समिति में आर्य समाज देहरादून की अन्तरंग सभा द्वारा चुने पांच सदस्य होंगे। दान-पत्र की रजिस्ट्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश लखनऊ के नाम 16-8-44 को कर दी। प्रबन्ध समिति के शेष पांच सदस्यों का भी उल्लेख दान-पत्र में है।

पाठशाला की प्रगति :—

प्रारम्भिक पाठशाला के रूप में जिसकी स्थापना की गई थी, कुछ वर्षों बाद जूनियर स्कूल बना। कालान्तर में हाई स्कूल बना और अब 15 वर्षों से इण्टरमीडिएट कालेज के रूप में प्रगति कर रहा है।

कालेज का हाई स्कूल तथा इण्टर का परीक्षा परिणाम लगभग 90 प्रतिशत रहा है। विद्यालय में साहित्यिक वर्ग के सभी विषयों की शिक्षा दी जाती है। विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त 23 अध्यापिकायें हैं। स्कूल में छात्रा संख्या 630 है।

धार्मिक शिक्षा :—

निर्धारित शिक्षा क्रम के अतिरिक्त स्कूल में प्रति सप्ताह संध्या हवन एवं प्रवचन होते हैं। छात्रायें आर्य समाज द्वारा चलायी जा रही धार्मिक परीक्षा में भी सम्मिलित होती हैं और पारितोषिक पाती हैं। वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भी भाग लेती हैं। खेल कूद के लिए छोटा सा मैदान भी है।

प्रशासन योजना :—

पाठशाला की प्रशासन योजना विभाग द्वारा स्वीकृत है। प्रबन्ध समिति का चुनाव प्रति तीसरे वर्ष होता है।

सम्पत्ति का मूल्यांकन :—

पाठशाला की अचल सम्पत्ति जिसमें 25 कमरे हैं, का मूल्यांकन पांच लाख के लगभग है। इसके अतिरिक्त शहर से 16 मील दूर सुलाकुई ग्राम में 50 बीघा जमीन भी है जिसका मूल्य 48000/- हजार रुपये है। भूमि में फलोद्यान लगाया जा रहा है।

पदाधिकारी :—

स्कूल की प्रिन्सिपल श्रीमती रूप नेगी एम०ए० बी० एड० हैं। प्रबन्धक श्री लक्ष्मणदेव तथा सहायक प्रबन्धक एवं कोषाध्यक्ष श्री महेन्द्र कुमार नागलिया हैं। पाठशाला आर्य समाज देहरादून की छत्र छाया में दिन-प्रतिदिन प्रगति पर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

1. कन्या गुरुकुल की स्थापना

आर्य प्रतिनिधि-सभा पंजाब एक रजिस्टर्ड संस्था है। इसकी रजिस्ट्री "गवर्नमेण्ट ऑफ इण्डिया" के ऐक्ट 21 1860 ई० के अनुसार सन् 1884 में हुई थी। 26 नवम्बर, 1898 को आर्य-प्रतिनिधि सभा ने गुरुकुल खोलने का निश्चय किया, और उसकी निम्नलिखित परिभाषा की :—

"गुरुकुल उस वैदिक शिक्षणालय का नाम है जिसमें वे बालक एवं बालिकाएँ जिनका यथोचित वेदारम्भ संस्कार हो चुका है, शिक्षा और विद्या प्राप्त करें।

आर्य-प्रतिनिधि सभा के प्रस्ताव में गुरुकुल की परिभाषा करते हुए बालक तथा बालिकाएँ दोनों का उल्लेख था। सभा में बालकों के लिए गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार) को स्थापित किया और उन्हीं नियमों के अनुसार बालिकाओं की शिक्षा के लिये 23 कार्तिक 1980 वि० तदनुसार 8 नवम्बर, 1923 ई० को···दीपमालिका के दिन (दिल्ली में) कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून की स्थापना हुई थी। सुप्रसिद्ध आर्य समाजी विद्वान नेता स्वर्गीय आचार्य (रामदेव जी) जिनका गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है, इस संस्था के आदी संस्थापक थे। प्रथम प्रधानाचार्या कु० विद्यावती जी सेठ थीं। कन्या गुरुकुल 3 साल के लगभग दिल्ली में रहकर 1-5-1927 को देहरादून आ गया और तब से यहीं पुष्पित-पल्लवित हो रहा है।

वैदिक संस्कृति के आदर्शों के अनुरूप प्रत्येक वर्ग के छात्र व छात्राओं को जाति-वंश, सम्प्रदाय और धर्म के भेदभाव के बिना दीक्षित और शिक्षित करना— गुरुकुलीय आश्रम व्यवस्था और ब्रह्मचर्य पद्धति को पुनः जीवित करके आर्य समाज के मन्तव्य के अनुसार वेद-वेदान्त संस्कृत भाषा तथा साहित्य के अतिरिक्त आधुनिक विभिन्न विषयों तथा ज्ञान-विज्ञान और भाषाओं की शिक्षा देना व देश तथा मानव जाति की सेवा के लिए विद्यार्थियों को अच्छा नागरिक बनाना। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए ही कन्या गुरुकुल की स्थापना की गयी थी।

विकास

ईश्वर का धन्यवाद है कि कन्या गुरुकुल जो अपने शैशव काल में प्रथम चार श्रेणियों से किराये की कोठियों में आरम्भ हुआ था। वह इसके कार्यकर्ताओं के परिश्रम एवं लगन के फलस्वरूप विगत 50 वर्षों से भारत का एक प्रसिद्ध राष्ट्रीय महाविद्यालय बन चुका है। और उसका अपना स्वकीय स्थान भी हो चुका है जो कि समस्त भूमि तथा भवनों के मूल्य को लगा कर 70 लाख रुपये के लगभग है। इस कुल में वैदिक और···अर्वाचीन-साहित्य के साहित्य के साथ-साथ गृह विज्ञान, इंगलिश, शिल्प कला, संगीत-इतिहास-भूगोल, गणित-अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, ड्राइंग, गृह-चिकित्सा तथा विज्ञान आदि अर्वाचीन विषयों की शिक्षा राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम द्वारा दी जाती है। गुरुकुल में उच्च मानसिक उन्नति के साथ-साथ ब्रह्मचर्य के नियमों का पूर्ण रूप में पालन करते हुए व्यायाम आदि शारीरिक उन्नति के लिए—भी विशेष रूप से उद्योग किया जाता है।

कन्या गुरुकुल को वर्तमान उन्नत अवस्था तक लाने में यहाँ की सर्वप्रथम आचार्या कु० विद्यावती जी सेठ का योगदान गुरुकुल के इतिहास में सदैव स्वर्णाक्षरों में रहेगा। आपने अपना सम्पूर्ण यौवन उसके निर्माण में लगा दिया। उनके हाथ का लगाया हुआ यह पौधा आज विशाल वृक्ष बन गया है। यह उनकी तपस्या तथा कठोर कर्मठता का ज्वलन्त प्रतीक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल को महाविद्यालय का रूप देने का सर्वाधिक श्रेय स्व० आचार्य श्री रामदेव जी के अथक-परिश्रम एवं प्रयत्नों को है। महाविद्यालय (के प्रारम्भ करने पर शिक्षाओं के अभाव में यह स्वयं महाविद्यालय की कन्याओं को) में मनोविज्ञान, इतिहास सामान्य ज्ञान, तथा आर्य सिद्धान्त आदि विषय पढ़ाये जाते थे। कन्याओं के ज्ञान वर्धन की ओर उनकी बहुत लगन थी।

सन् 1945 से 1951 तक श्री पं० सोमदत्त जी विद्यालंकार ने सहायक मुख्य अधिष्ठाता के पद से, श्रीमती चन्द्रावती जी लखनपाल ने आचार्या के पद से, श्री पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तलंकार में व्यवस्थापक के पद से इस संस्था के विकास में प्रशंसनीय योगदान दिया है। 1951 से 1957 तक स्व० श्री पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा वैद्य अमृतधारा ने······ मुख्य अधिष्ठाता के रूप में गुरुकुल की अवैतनिक सेवा की है। यह सदा स्मरणीय रहेगी। सन् 1957 से 31 मई 1963 तक श्री पं० स्व० यशपाल जी सिद्धान्तालंकार मुख्य अधिष्ठाता रहे। सन् 1953 से श्रीमती दमयन्ती देवी जी कपूर, आचार्य के पद पर कार्य कर रही है।

गुरुकुल की उपाधियों को भारत सरकार तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा प्राप्त मान्यता

गुरुकुल कांगड़ी को यूनिवर्सिटी मान्ट्स कमीशन के ऐक्ट 3 के अधीन विश्वविद्यालय के समान मान्यता, भारत सरकार द्वारा प्राप्त हो गयी है। कन्या गुरुकुल देहरादून, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का एक अंगभूत महाविद्यालय·········है।

यहाँ की विद्याधिकारी उपाधि परीक्षा सरकार की मैट्रिक कक्षा के बराबर है। इस परीक्षा में उत्तीर्ण छात्र को उत्तर प्रदेश में इण्टर श्रेणी में प्रवेश मिल सकता है तथा पंजाब यूनिवर्सिटी की शास्त्री परीक्षा सीधे दे सकने का अधिकार प्राप्त है। महाविद्यालय विभाग की विद्यालंकार या वेदालंकार की डिग्री प्राप्त करने वाली छात्रा को देहली, आगरा, बनारस, राजस्थान, बिहार, भागलपुर तथा उस्मानिया विश्वविद्यालयों ने बी० ए० के समकक्ष (बराबर) माना हुआ है और केन्द्रीय तथा उत्तर प्रदेश की सरकार ने भी बी० ए० के बराबर उसे मान लिया है। अलंकार उपाधि प्राप्त छात्राएँ···इन विश्वविद्यालयों की एम० ए० की परीक्षा में बैठ सकती हैं तथा सरकारी सेवा में भी ली जा सकती है।

इस समय कन्या गुरुकुल में 23 शिक्षिकाएं हैं। यहाँ पर कन्याओं का छात्रावास में रहना अनिवार्य है। छात्रा संख्या लगभग 250 है।

गुरुकुल 80 बीघा भूमि में फैला हुआ है। छात्रावास और विद्यालय में 60 बैड कमरे बने हैं।

पुस्तकालय में दस हजार पुस्तकें हैं। साईंस एवं गृह विज्ञान की प्रयोगशालाएँ हैं। अनुमानित व्यय 6-7 लाख रुपया वार्षिक का है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब इस संस्था का संचालन करती है।

श्री दमयन्ती देवी जी 1953 से लगातार आचार्य पद को सुशोभित कर रही हैं।

पृष्ठदाता

श्रीमती, अविनाश वती, सुभाष मार्ग, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डी० ए० वी० इण्टर मीडिएट कालेज, प्रेमनगर, देहरादून

1. संस्था की स्थापना तिथि या स्थापना वर्ष क्या है—	जुलाई 1952 ई०
2. छात्र संख्या क्या है—	1302
3. अध्यापक संख्या क्या है—	35
4. क्या-क्या विषय पढ़ाए जा रहे हैं—	हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, संस्कृत, कला, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र, भूगोल, इतिहास, विज्ञान, जीव-विज्ञान, संगीत, गृह विज्ञान।
5. कितना स्थान है, बीघा या एकड़—	10.5 एकड़
6. कितने कमरे हैं—	48
7. पुस्तकालय में कितनी पुस्तकें हैं—	10700 पुस्तकें
8. संस्था का वर्ष भर का कुल अनुमानित व्यय कितना है—	रु० 4,96,715·00
9. किस-किस विषय की प्रयोगशालाएँ हैं—	भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, गृह विज्ञान।
10. अन्य कोई उल्लेखनीय बात हो, वह भी लिखने का कष्ट करें—	वेद मंत्र प्रतियोगिता 5।। 2।। धार्मिक परीक्षा में भाग लेते हैं। प्रायः सभी कार्यक्रम यज्ञ से आरम्भ होते हैं।
11. इण्टर कक्षाओं में जो विषय पढ़ाए जाते हैं—	हिन्दी, अंग्रेजी, गृह विज्ञान, संस्कृत, कला, अर्थ-शास्त्र, नागरिक शास्त्र, इतिहास, भाषा विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान।
12. जूनियर हाई स्कूल कक्षाओं में जो विषय पढ़ाए जाते हैं—	हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, गणित, गृह विज्ञान, संगीत, कला, साहित्य विषय, सामान्य विषय, नैतिक शिक्षा, स्काउट, एवं गाइड्स, पी० टी०, कृषि।

पृष्ठदाता

श्रीमती यशोदा देवी, सुभाष मार्ग, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज, डोईवाला

महाशय ईश्वर चन्द्र जी 1911 में डोईवाला आए थे। बीस दिन बाद ही मालगाड़ी और सवारी गाड़ी की टक्कर हो गयी। सैंकड़ों आदमी जख्मी हुए, कई मारे गये। महाशय ईश्वरचन्द्र जी ने इस अवसर पर इन पीड़ितों की सहायता की। इस सेवा ने लोगों को अपनी ओर आकृष्ट किया। नये मित्र बने—सेवा का उत्साह जमा और महाशय जी की ही दुकान पर चौथे दिन से आर्य समाज का सत्संग होने लगा। विधिवत् आर्य समाज की स्थापना 13 अप्रैल, 1913 को हुई। 20-6-1913 को देहरादून समाज के प्रधान बाबू ज्योति स्वरूप ने जमीन दान में देने की घोषणा की। इस स्थापना और भूमि दिलाने में बाबू ज्योतिस्वरूप जी की ग्राण्ट के पीछे श्री बाबूराम जी, श्री चेतराम जी, श्री ईश्वर चन्द्र जी का ही प्रयत्न था। स्थापना के दिन श्री निरंजन नाथ जी मंत्री आर्य समाज देहरादून, प्रिंसिपल लछमन प्रसाद जी—क्षेमा नन्द जी, भक्तराज, बलदेव सिंह जी देहरादून से गए थे।

प्रथम प्रधान महाशय किशनसिंह जी रहीस रानीपोखरी मंत्री श्री ईश्वर प्रसाद जी तोमर, श्री मेई लाल (स्टेशन मास्टर) कोषाध्यक्ष चुने गए।

भवन निर्माण हेतु हुई विशाल सभा में 375/- रुपया इस निमित्त 20-6-1913 को एकत्र हुआ था।

25 जुलाई, सन 1913 को पहला संस्कार हुआ। श्री मेईलाल जी के सुपुत्र का यज्ञोपवीत। हजारों आदमी भोगपुर तक से इसे देखने के लिए आए—देहरादून से श्री महन्त लक्ष्मणदास जी, सेठ लक्ष्मीचन्द रहीस, भक्तराज बलदेव सिंह, पं० क्षेमानन्द जी, श्री निरंजन नाथ जी और एक मान्य सज्जन पधारे थे। बाबू मेईलाल का हुक्का पानी बिरादरी ने बन्द कर दिया और बाबू जी ने उसी दिन से हुक्का पीना बन्द कर दिया।

हरिजनोद्धार में सबसे पहले भोगपुर के कोली और लुहार आदि में प्रचार आरम्भ किया गया। जमींदारों ने उन गरीबों का भयंकर बाईकाट किया—सौदा सामान तक उनके हाथ बेचना बन्द कर दिया। पर आग को कौन लकड़ी के पात्र में बन्द करके रख सका है, 1914 की वसन्त पंचमी पर 150 भाई शुद्ध किए गए और विशाल समारोह किया गया। श्री केशवराम जी स्वामी शुद्धि के कामों में दिल जान से सहयोग करते रहे।

1916 में जमनपुर ग्राम में हरिजनों को कुओं पर न चढ़ने देने से भयंकर झगड़ा हो गया। केस हाई कोर्ट तक गया। देहरादून के वकीलों ने नाम मात्र फीस लेकर केस लड़ा और अपराधी को दण्ड मिला।

भयंकर इन्फ्लूएंजा फैल गया—इतना भयंकर कि कभी-कभी तो एक-एक चिता पर 4-4, 5-5 शव रखकर जलाने पड़ते थे। न जाने कितने लोगों का कफन और सामग्री आर्य समाज के अधिकारियों ने दिया। परदेसी भी बहुत मरे उनके शव दाह संस्कार तो केवल आर्य समाज के खर्चे से ही हुए।

1929 में किसी ने रात के समय समाज मन्दिर को आग लगा दी। काफी हानि हुई—परन्तु आर्यों ने अपने परिश्रम से उसी वर्ष में फिर सब दोबारा बना डाला।

पृष्ठदाता

श्री ओम प्रकाश नांगिया, भगवान दास क्वाटर्स, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1926 में बकरा ईद के अवसर पर ईश्वर चन्द्र जी व ज्वाला प्रसाद जी को गिरफ्तार कर लिया गया। शान्ति और रक्षा का बहाना बना इन पर केस चलाया गया पर कोई गवाह नहीं मिला।

गरज ये कि कोई न कोई मुसीबत सर पर रहती थी। नित्य हमले होते थे। कत्ल की धमकियां दी जाती थीं। परन्तु कौन परवाह करता था। महाराज टिहरी के विवाह पर उन्हें अभिनन्दपत्र लिखा गया। सत्यार्थ प्रकाश और संस्कार विधि भेंट की गई। लगभग 300/- का निर्माण कार्य महाराज ने मंदिर में करवा दिया।

समाज की भूमि पर नाजायज कब्जा करने के कारण और हानि पहुँचाने के कारण अन्तरंग सभा ने महाशय ज्वाला प्रसाद तथा एक ओर सज्जन को सभासद से पृथक् कर दिया।

1. साप्ताहिक सत्संग नियमित लगते हैं। 15 के करीब उपस्थिति रहती है।
2. शुद्धियाँ बड़ी तादाद में हुई हैं और होती हैं।
3. पक्का भवन बना हुआ है दो बीघा भूमि साथ है। दुकानें किराये पर हैं। स्थायी आमदनी भी है।
4. लगभग 30 संस्कार वर्ष में होते हैं।
5. इस समय भवन की सम्पत्ति का मूल्य 15,000/- रु० से क्या कम होगा।
6. आर्य समाज प्रत्येक सार्वजनिक सर्वहितकारी कार्य में अग्रणी रहता है। यही कारण है कि आस-पास के ग्रामों में हमारा प्रभाव है।
7. कुल सदस्य संख्या 30 है।
8. वार्षिकोत्सव होते हैं। 60वां उत्सव हो चुका है।
9. प्रान्तीय सभा से सम्बन्धित है। 15-2-55 को हैदराबाद सत्याग्रह में श्री पृथ्वीराज जी सुपुत्र श्री ज्ञानचन्द जी गए थे। जालम सिंह, भगवान सिंह, कन्हैया आदि 15 लोग और गये।

हिन्दी सत्याग्रह में श्री सुरेन्द्रकुमार सुपुत्र स्वर्गीय श्यामलाल गए थे। इस सत्याग्रह में भी स्वर्गीय मोहनलाल जी एवं श्री इन्द्रदमन जी ने खूब डटकर कार्य किया था। हालाँकि कुछ कम समझ के केशधारियों ने तनावपूर्ण वातावरण बनाने का प्रयत्न किया परन्तु सब बाधाओं के होते हुए भी आन्दोलन निरन्तर गतिशील और शान्तिपूर्ण बना रहा। इससे आर्य समाज का गौरव बढ़ा।

लावारिस मुर्दों का दाह कर्म संस्कार आर्य समाज की ओर से किया जाता है। एक शिशु संस्थान आर्य कन्या जूनियर हाई स्कूल संचालन होता है।

1970 तक भी श्री इन्द्र दमन ज़ी ने आर्य समाज की बड़ी सेवा की है। आर्य समाज देहरादून की ओर से हमारी समाज के कार्यकर्त्ता वैद्य कृष्णदत्त जी आर्य समाज की सेवा करने के लिए सम्मानित किए जा चुके हैं। (वे 93 वर्ष के हैं) इस समय श्री सी० एल० शाह प्रधान हैं। श्री भगतसिंह मंत्री, श्री वेदप्रकाश कोषाध्यक्ष हैं।

पृष्ठदाता

श्रीमती डा० ब्रम्हवती नांरग, 13, कचहरी रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज, धर्मपुर

यों तो 1936 में धर्मपुर में आर्यसमाज की स्थापना हो गई थी परन्तु वह ठीक चल नहीं पायी। हालाँकि मा० रामस्वरूप सरीखा तपस्वी कार्यकर्त्ता वहाँ रहता था। परन्तु रोज-रोज की जेल यात्रा ने इस कार्य को पूर्ण विकसित न होने दिया। श्री ठाकुर सिंह जी नेगी के रेलवे से रिटायर्ड होकर धर्मपुर में आ बसने पर एक बार फिर जोश आया और 2 जनवरी 1977 को समाज की स्थापना हो गई। संस्था में श्री ठाकुर सिंह नेगी श्री ओमप्रकाश गुप्त, श्री रमेशचन्द्र शर्मा, श्री लछमनदास शर्मा, श्री परशुराम, श्री दलीप सिंह, श्री देवदत्त बाली, श्री ज्ञानचन्द सैनी का योगदान हमेशा याद रहेगा। प्रथम प्रधान बने श्री लछमण दयाल शर्मा और मंत्री बने ठाकुर सिंह नेगी। समाज के पास न अपना भवन है न भूमि, इस पर भी समाज अपने साप्ताहिक सत्संग बड़े उत्साह से नियमित रूप से करती है। सदस्यों के घरों पर बारी-बारी से सत्संग होता है। उपस्थिति 20 हो जाती है। कुल सदस्य संख्या 80 हो गई है। 24 सभासद हैं कर्मठ कार्यकर्त्ता। सदस्य एक दूसरे के दुख-सुखों में साथ देते हैं। दहेज उन्मूलन, मद्यनिषेध कुरीतियों का नाश आदि आन्दोलन चलाए जाते रहे हैं। प्रभावशाली वार्षिकोत्सव हो चुके हैं। तीन वेद प्रचार सप्ताह हो चुके हैं। हैदराबाद सत्याग्रह में जेल यात्रा करने वाले श्री चन्द्रसिंह नेगी व श्री श्याम सिंह रावत समाज के सदस्य हैं।

श्री ठाकुरसिंह नेगी 70 को पार कर रहे हैं। लगन में कोई अन्तर नहीं है। पाठशाला से ही समाज की ओर झुकाव रहा। बड़गाँव जिला गोंडा में अपने पुरुषार्थ से आर्यसमाज की स्थापना रेलवे कालोनी में की। एक जत्था मनकापुर से हैदराबाद सत्याग्रह के लिए भिजवाया। मुसलिम परिवारों की शुद्धियां कीं—गोण्डा गिरजाघर के पादरी का श्री शान्ति प्रकाश जी से शास्त्रार्थ करवाया और फिर इन पादरी महोदय को हिन्दू धर्म में दीक्षित किया।

शताब्दी समारोह के अवसर पर सारे धर्मपुर और आसपास घर-घर में नित्य प्रति किसी न किसी घर पर सत्संग चलाया जा रहा है। 41 सत्संग अब तक हो चुके हैं।

उत्साह खूब है—युवक खूब हैं। साधन कम हैं। थोड़ा ध्यान दिया जाय तो बड़ा सुन्दर कार्यक्षेत्र तैयार हो सकता है।

पृष्ठदाता

श्रीमती राज सरबंदा, लक्ष्मण चौक, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज : वैदिक आश्रम, ऋषिकेश

श्री स्वामी सदानन्द जी ने 1934 में इसकी स्थापना की। प्रथम प्रधान मंत्री कौन बने, रिकार्ड उपलब्ध नहीं है। परन्तु 1948 में स्वामी देवानन्द जी की अध्यक्षता में यह आश्रम उन्नति पथ पर अग्रसर हो चला। यह वैदिक आश्रम ही आज का आर्यसमाज है। 1932 में भूखण्ड प्राप्त किया गया था और 1934 में आश्रम का निर्माण कार्य आरम्भ हुआ था। इस आश्रम के लिए भरत मन्दिर के महन्त जी ने भूमि दान में दी। इस समय इस सम्पत्ति का मूल्य लगभग चार लाख रुपये होगा। समाज का अपना पुस्तकालय है। साप्ताहिक अधिवेशन नियमित रूप से होते हैं। उपस्थिति औसतन 25 रहती है।

सदस्य संख्या 35 है और कर्मठ सदस्य 10 हैं। समाज में बाहर से आकर ठहरने वाले यात्रियों के निवास की उचित व्यवस्था है। दहेज और मद्य के विरोध में यदा कदा प्रचार कार्य चलता रहता है। स्वामी देवानन्द जी ने नमस्ते की व्याख्या में एक लघु पुस्तिका लिखी भी थी और प्रकाशित भी की थी। उन्होंने एक-दो छोटे ट्रेक्ट और भी लिखे थे। इस समाज की सम्पत्ति की सीधी रजिस्ट्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के नाम हुई है। अब तक समाज के दस वार्षिक उत्सव हो चुके हैं। दो परिवारों की शुद्धि भी की गई है। स्वामी देवानन्द जी स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता रहे हैं। हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी सत्याग्रह, गोरक्षा आन्दोलन में सक्रिय सहयोग समाज ने दिया है। सत्याग्रही भेजे हैं। सोसायटी से 800 वर्ग गज भूमि ले ली गयी है जो कि रेलवे स्टेशन के पास है। इस भूमि पर एक आर्य कन्या पाठशाला एवं पुस्तकालय खोलने का विचार है।

इस समय प्रधान हैं श्री रामलाल जोंट—मंत्री श्री यज्ञदत्त जी शर्मा हैं, और कोषाध्यक्ष हैं श्री राजेन्द्र कुमार त्यागी—पुस्तकालय सम्भाल रहे हैं श्री रामदयाल जी।

पौराणिक गढ़ में बैठकर आर्यसमाज का कार्य करने वालों को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है उन्हें यह अपने बुद्धिकौशल और व्यवहार से अनुकूल बनाते जाते हैं।

पृष्ठदाता
श्री वेद प्रकाश गुप्ता, खुरबुरा, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज, डाकपत्थर

1970 की शिवरात्रि को आर्य समाज की स्थापना हुई। श्री काली राम जी अवर अभियन्ता, श्री नरेन्द्रसिंह जी वर्मा, श्री चौधरी कल्याण सिंह जी, हरफूल सिंह जी, श्री कर्ण सिंह मुख्य लिपिक, श्री कर्ण सिंह जी अवर अभियन्ता, श्री वेदप्रकाश जी, श्री ओमप्रकाश सारस्वत, श्री शिवदत्त जी, श्री हरप्रसाद जी अधि० अभियन्ता, श्री जीवनदास गुप्त, श्री भोलानाथ जी, श्री बृजेन्द्र सिंह सोलंकी, श्री कृष्णकुमार बिश्नोई एवं श्री रणवीर सिंह, आरम्भिक सदस्य एवं कार्यकर्त्ता थे।

प्रथम प्रधान बने श्री कर्णसिंह जी, मंत्री श्री नरेन्द्रसिंह वर्मा, कोषाध्यक्ष श्री रणवीर सिंह जी, 1970 में समाज ने एक भूखण्ड प्राप्त कर लिया। 1976 में यज्ञशाला एवं दुकानें बननी शुरू हुई। इस समय तक 5 दुकानें बन चुकी हैं। यज्ञशाला पूर्ण हो चुकी है। अतिथिशाला निर्माणाधीन है। दो बीघा भूमि में स्थित यह आर्य समाज भवन जिले की सबसे अधिक सुहावनी दृश्यावली के दर्शन कराता है। रात्रि के समय यहाँ का प्राकृतिक और मानव निर्मित सौन्दर्य मानव का मन मोह लेता है। इन दस वर्षों में लगभग 1,85,000/- की यह सम्पत्ति खड़ी हो गई है। अपना पुस्तकालय है। साप्ताहिक सत्संग नियमित रूप से होते हैं। दैनिक यज्ञ दोनों समय प्रातःकाल सायंकाल होता है। कुल सदस्यों की संख्या 26 है। पारिवारिक यज्ञों के द्वारा संगठन की कड़ियां एक दूसरे से मजबूती से जुड़ी रहती हैं। एक दूसरे के दुख व सुख में शामिल होते हैं। तीन ईसाई परिवारों के 15 सदस्यों को शुद्ध किया है। मद्य निषेध का कार्यक्रम चलाया जा रहा है।

1977 में प्रान्तीय सभा से सम्बन्ध हो गई। अब तक इस समाज के दो वार्षिक उत्सव हो चुके हैं। पुराने संस्थापक सदस्यों में यहाँ श्री नरेन्द्र सिंह जी वर्मा हैं शेष का स्थानान्तरण हो चुका है। श्री पं० तोताराम जी पुरोहित का कार्य निष्ठापूर्वक कर रहे हैं। स्वतंत्रता आन्दोलन में पं० जी ने ढाई वर्ष कारावास भुगता था। हैदराबाद सत्याग्रह में भी जेल यात्रा की थी। लगभग 83 वर्ष की आयु में भी लगातार समाज सेवा में लगे हैं।

यहाँ ईसाई प्रचारकों का गढ़ है। ईसाईयों के अस्पताल व अनाथालय निकट हैं। इस क्षेत्र में और सहयोग और उत्साह और मेहनत की आवश्यकता है। कार्यकर्त्ताओं में जीवन है पर पूरे साधक नहीं हैं।

पृष्ठदाता

श्रीमती सुशीला डोभाल, प्रिंसिपल एम० के० पी०, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यसमाज, चौहड़पुर (विकास नगर)

जिला देहरादून में नगर तो है देहरादून, और मण्डी के नाम पर केवल एक मण्डी है वह है विकास नगर। अन्न, चावल हिमाचल की समस्त पहाड़ी पैदावार यहाँ आती है। निकट ही यमुना बहती है। टोंस नदी भी थोड़ी दूर पर है। हिमालय की जड़ में स्थित यह छोटी सी नगरी है।

आर्य समाज की पहली पीढ़ी जोश-खरोश से काम में लगी थी। घर-घर दयानन्द की गूंज सुनाई पड़ रही थी। फिर चौहड़पुर ही अलग कैसे रहता। श्रावण विक्रमी 1950 को आर्य समाज की विधिवत् स्थापना हो गयी। दानियों की इस देश में न पहले कमी थी और न अब है। भीमावाला निवासी चौधरी गंजू नम्बरदार ने मन्दिर के लिए भूमि दान दे दी। आर्य समाज के प्रथम प्रधान बने पं० मुकन्दलाल जी (इन्ही पं० मुकन्द लाल जी के पुत्र थे गुरुकुल कांगड़ी के यशस्वी स्नातक पं० देवदत्त जी और इन्हीं स्वर्गीय देवदत्त जी के पुत्र हैं श्री ब्रह्मदत्त जी जो इस समय उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री है) और मंत्री बने श्री बाबूराम जी।

ये सज्जन दिन रात आर्य समाज के कार्य में लगे रहे। स्वयं प्रचारक भी थे, अधिकारी भी थे—अपने-अपने पुरुषार्थ से आर्य समाज का विशाल भवन भी बना कर खड़ा कर दिया। मन्दिर के निर्माण में पं० सेवकराम राजाराम फर्म के मालिक श्री सेवकरामजी तथा ला० आशाराम जी ने अत्यन्त सहयोग दिया। इन्हीं पं० सेवक राम जी के नाम से देहरादून डी० ए० वी० कालेज के पीछे सेवक आश्रम रोड है। पं० सेवकराम जी का सहयोग और प्रयत्न ही डी० ए० वी० में सेवक आश्रम के निर्माण का कारण बना।

लाला आशाराम जी ने ला० कन्हैया लाल जी की प्रेरणा से 20 हजार रुपया अपनी पवित्र कमाई से निकाल कर आशाराम वैदिक पाठशाला की स्थापना की। वही पाठशाला जिसका "आशाराम वैदिक प्रचारिणी सभा के नाम से पंजीकरण हुआ था। आज इन्टर कालेज बन गया है। प्रारम्भिक कक्षाएं पुराने स्थान पर ही रहेंगी और नए भवन में बड़ी कक्षाएं चली जायेंगी। इस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में पहली पीढ़ी का स्थायी योगदान कभी भुलाया न जा सकेगा। इन्हीं पं० आशाराम जी ने पीछे अपनी एक लाख से ऊपर की सम्पत्ति इसी कार्य के लिए दान कर दी। 1938 में श्री आनन्द कुमार जी मुकुन्द लाल जी, श्री कन्हैया लाल, श्री राजाराम, श्री छज्जुसिंह, श्री फूल चन्द धीमान तथा ला० हरिद्वारी लाल के सक्रिय सहयोग से 150 हरिजनों को सनातन धर्म मन्दिर में प्रवेश कराया गया। मन्दिरों के हरिजनों के लिए बन्द द्वार दयानन्द के इन सिपाहियों ने खोल दिए और दयानन्द के विचारों की विजय पताका फहरा दी।

पृष्ठदाता

डा० सोमनाथ ढ़ींगरा, 15–ए, न्यू रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल विवाहों को रोकने के लिए इस समाज ने बड़ी मेहनत की। 1955 में ईसाई पादरी ने श्री ठा० अमरसिंह जी का शास्त्रार्थ करवाया और सारे इलाके में आर्य समाज की धाक बिठा दी। और लगे हाथों 7-8 ईसाई कन्याओं की शुद्धि भी कर डाली।

श्री रघुनाथ दास जी की पुत्री के विवाह पर वर पक्ष छः वेश्याएं साथ ले आया। देहरादून से पं० अमरनाथ वैद्य शास्त्री विचारानन्द तथा ला० कन्हैया लाल के नेतृत्व में सफल आन्दोलन किया गया और वेश्याओं को सनातन धर्म मन्दिर में प्रवेश नहीं करने दिया गया।

प्रत्येक आन्दोलन में दिल खोलकर दान देने की इस समाज की पुरानी परम्परा है।

टिमली गांव में भीषण आग लग जाने पर आर्य समाज को सूचना मिलने के एक घण्टे के अन्दर पांच हजार रुपये की सहायता भेजी गई। मनों रोटियां बनवा कर भेजी गयीं।

आस-पास के इलाके में ईसाईयों का अत्यन्त प्रभाव है। उनके बड़े-बड़े अस्पताल और संस्थान है। आर्य समाज के कारण उनकी गति अवरुद्ध हो गई है। यदि कोई पूरा समय दे सके तो यह सम्पन्न समाज सारे जिले की नक्शा बदल सकती है।

पुरानी पीढ़ी के आशीर्वाद नई पीढ़ी को प्राप्त हैं—भविष्य में बड़ी उन्नति की आशा है। लगभग 5 लाख रुपये की सम्पत्ति है, दुकानों से किराए की स्थायी आय है और भाई सत्यपाल (जन्म से मुसलमान था) जैसा दीवाना जो दिन भर मजूरी करता है—भगवे कपड़े पहनता है—आर्य समाज की सेवा में लगा रहता है। अपनी मेहनत की पवित्र कमाई का बड़ा भाग समाज पर ही खर्च करता है। इस समाज में वैठा है।

पृष्ठदाता

इन्टरनेशनल बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, 1, राजपुर रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यसमाज, प्रेम नगर

पाकिस्तान बनने के साथ ही लाखों पंजाबवासियों को अपने पैतृक निवास छोड़ कर, बरबस-भारत में आना पड़ा। जिसके जहाँ सींग समाए वहाँ सर छिपाने की तलाश करने लगा। देहरादून में भी बहुत बड़ी संख्या में भारतीय संस्कृति के ये दीवाने आ बसे। यदि ये विधर्मी होना स्वीकार करते तो न इन्हें अपनी पैतृक सम्पत्ति से हाथ धोना पड़ता न पुरखाओं का देश छोड़ कर, दर-दर धक्के खाने पड़ते। परन्तु धर्म और संस्कृति के इन परवानों ने अपना सब कुछ स्वाहा कर दिया। श्री पं० अमरनाथ वैद्य, श्री पं० चन्द्रमणी विद्यालंकार, स्व० बाबू राम, श्री लक्ष्मण प्रसाद गोरी, श्री बालक राम, श्री सोमदेव, श्री संतराम आहूजा, श्री पं० शिवराम, श्री इन्द्रसेन के सतत प्रयत्न और प्रयास से 1947 में अपना घर बसाने से पहले ही इन जोशीले लोगों ने आर्य समाज की स्थापना कर ली।

पहले प्रधान बने श्री सोमदेव और मन्त्री श्री लक्ष्मणदास गोरी। कार्य चलने लगा। 22-12-60 को पुनर्वास विभाग से भवन किश्तों में खरीदा गया। एक भूमि खंड भवन के साथ संलग्न था, जो सरकार से मोल ले लिया गया। आर्य समाज के पास अपना पुस्तकालय है। साप्ताहिक सत्संगों में साधारणतया 15 उपस्थिति रहती है। सदस्य संख्या 20 है। अब तक कितनी ही शुद्धियां हो चुकी हैं। सदस्य एक-दूसरे के सुख-दुख में शामिल होते हैं। मद्य निषेध के सम्बन्ध में कितनी ही सभाएँ की जा चुकी हैं। वार्षिकोत्सव होते हैं। 6-1-1961 को प्रान्तीय सभा से सम्बद्ध हो गई। जितने भी आर्य समाज के आन्दोलन 1947 के पश्चात् चले हैं उन सबमें उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। यदि कोई वानप्रस्थी इस समाज में आसन जमाकर बैठता, तो यह सैनिक क्षेत्र और गोरखों से घिरा क्षेत्र बहुत लाभ उठा सकता था। इस समय स्थायी सम्पत्ति का मूल्य लगभग 50,000/- होगा। इस समय इस समाज के मन्त्री हैं श्री कबूल चन्द शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री रघुनन्दन लाल, पुस्तकाध्यक्ष श्री अविनाश चन्द्र और लेखानिरीक्षक श्री अमरचन्द्र गुप्ता—इनकी देख-रेख में यह समाज प्रगति पथ अग्रसर है।

पृष्ठदाता

श्रीमती सावित्री देवी शर्मा, नैशविला रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज, प्रेमनगर, देहरादून
Arya Samaj, Premnagar, Debra Dun

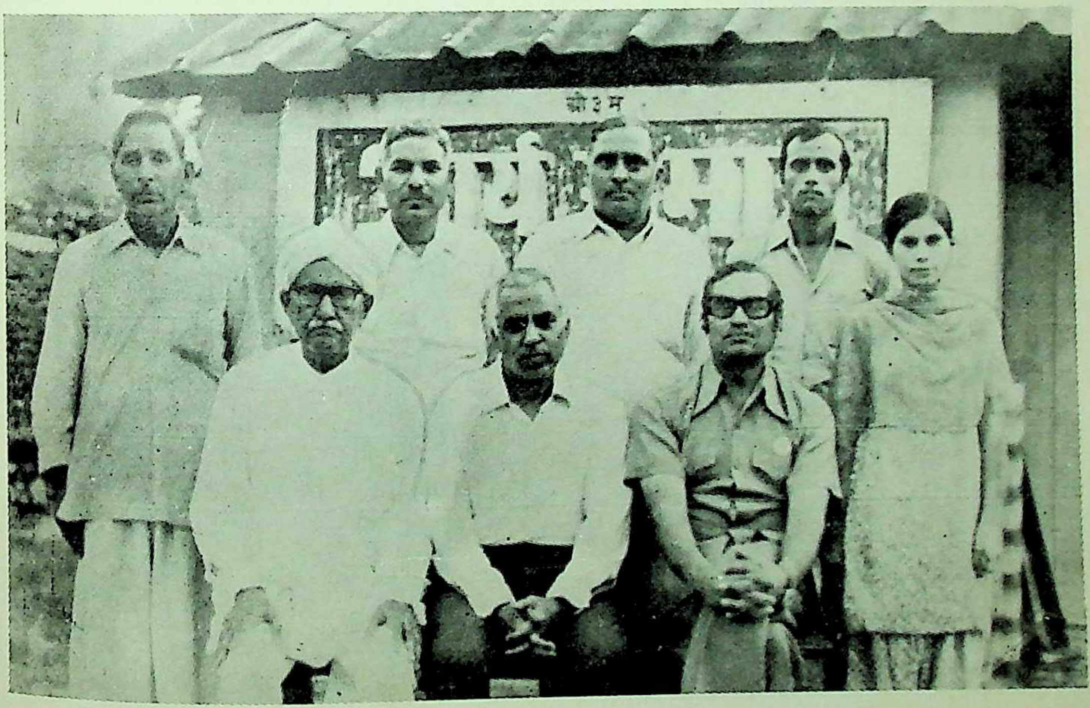

आर्य समाज प्रेमनगर के पदाधिकारी एवं अतरंग सदस्य
खड़े हुए बाएं से दाएं—सर्वश्री तिलक राम, कबूल चन्द शर्मा (मंत्री), रघुनन्दन लाल (कोषा०)
शशिकान्त अग्रवाल । कुमारी कमला देवी
बठे बाएं से दाएं-सर्वश्री बालक राम जी (उप-प्रधान) राममित्र बेरी (प्रधान) डॉ. आदर्श बंसल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज, डाकपत्थर

वेद प्रकाश गुप्त भूतपूर्व प्रधान आर्य समाज डाकपत्थर के पूज्य पिता स्वर्गीय श्री जीवन दास गुप्त संस्थापक आर्य समाज डाकपत्थर

स्वर्गीया श्रीमती चमेली देवी जिनकी स्मृति में डाकपत्थर की यज्ञशाला बनाई गई ।

आर्य समाज, प्रेमनगर

स्व० पं० शिवराम शर्मा

श्री सोमदेव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज शमशेर गढ़

श्री पदम सिंह, श्री दया राम, श्री जगत सिंह, श्री दलीपसिंह, श्री चेतराम, श्री चितामणी, श्री बृजलाल, श्री डबलसिंह, श्री मनोहर लाल, श्री हरदयाल सिंह, एवं श्री बालक राम प्रज्ञाचक्षु के प्रयत्न से 31-1-54 को समाज की विधिवत स्थापना हुई। इससे पूर्व भी आर्य समाज का कार्य चलता रहा है। 1954 में अधिकारी चुने गए—श्रीदयाराम प्रधान, श्री चिन्तामणी मन्त्री, एवं श्री जगत सिंह जी कोषाध्यक्ष।

मन्दिर के निर्माण हेतु भूमिदान दी श्री पदम सिंह जी, शमशेर गढ़ ने 25-5-61 को और धीरे-धीरे भवन निर्माण का कार्य आरम्भ कर दिया गया।

इस समय समाज का अपना भवन है। जिसका अनुमानित मूल्य 30,000/- होगा। पुस्तकालय है। वाचनालय है। नियमित साप्ताहिक अधिवेशन होते हैं। कुल सदस्य संख्या 40 है। साप्ताहिक सत्संग में उपस्थिति 20-22 रहती है। नरसरी पाठशाला चलती है। बाहर से आने वालों को ठहरने के लिए स्थान दिया जाता है। हमने ग्राम की सड़कों का सुधार किया है और खेती का उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रयत्न किया है। मद्यनिषेध और दहेज के विरोध में प्रयत्नशील हैं। प्रान्तीय सभा से 15 वर्ष पूर्व सम्बन्धित हो चुकी है। 17 वार्षिकोत्सव हो चुके हैं। इस समय श्री जगत सिंह प्रधान, श्री गिरधारी लाल मन्त्री, एवं श्री किरण शंकर कोषाध्यक्ष हैं।

पृष्ठदाता

डा० हरिचन्द कुमार, 1–ए, उग्रसेन रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज डोभरी

सेवा में,

श्रीमान मंत्री जी, आर्य समाज,

देहरादून।

मान्यवर, नमस्ते।

शताब्दी समारोह हेतु आपके द्वारा भेजी गयी प्रश्नावली के उत्तर सेवा में प्रेषित हैं :—

1. आर्य समाज डोभरी की स्थापना तिथि 7 अप्रैल 1954 ई० है।

2. स्थापना में, स्व० श्री अमीचन्द जी, श्री मोहर सिंह जी, श्री गोपाल सिंह जी, श्री तोफा सिंह जी, श्री जीवन सिंह जी, श्री दर्शनलाल जी, श्री मदन सिंह जी, श्री गिरधारीलाल जी तथा श्री आनन्द कुमार जी विकास नगर वालों का मुख्य सहयोग रहा।

3. प्रथम प्रधान श्री मोहर सिंह जी तथा मन्त्री श्री गोपाल सिंह जी थे।

4. स्थापना के समय कोई चल या अचल सम्पत्ति नहीं थी।

5. सन 1957 में स्व० श्री लाला रतन चन्द जी द्वारा भूमि व भवन आर्य समाज को दान स्वरूप दिया गया।

6. आर्य समाज मन्दिर तथा समाज की भूमि का कुल मूल्य लगभग 10,000/- (दस हजार) रुपये है।

7. आर्य समाज द्वारा 5 वर्ष से पूर्व पुस्तकें क्रय की गयीं जो निःशुल्क पढ़ने के लिए दी जाती हैं।

8. प्रति वर्ष दो या तीन दिन का वार्षिक उत्सव होता है जिसमें आर्य जगत के विद्वान् व भजनोपदेशक आमंत्रित होते हैं।

9. महान पुरुषों के जन्मदिन, मुख्य त्योहार तथा प्रति माह पूर्णिमा के अवसर पर पारिवारिक यज्ञ का आयोजन आर्य समाज की ओर से किया जाता है। उपस्थिति औसत लगभग 15।

10. कुल सदस्य पूर्ण शुल्क वाले 25 तथा सहायक सदस्य 30 हैं।

पृष्ठदाता

श्रीं एन० आर० गेरा, वीरेन्द्र एण्ड कम्पनी, राजपुर रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

11. कुल सामाजिक सेवा के क्षेत्र में आर्य समाज डोभरी द्वारा दहेज विरोधी अभियान चलाया गया था। अपृश्यता निवारण के लिए भी वातावरण निर्मित किया जा रहा है। गत दो वर्ष पूर्व दक्षिण में अति भयानक बाढ़ के समय पीड़ितों के लिए आर्य समाज डोभरी के कार्यकर्ताओं व सदस्यों द्वारा क्षेत्र के गाँवों से दान माँग कर भेजा गया था। सदस्य एक-दूसरे के सुख-दुख में सम्मिलित होते हैं। मद्य निषेध सम्मेलन किये जाते हैं।

12. शताब्दी समारोह पर लगभग 20 साथी आने वाले हैं।

13. आर्य समाज डोभरी के आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से सम्बद्ध कराने के लिए आवश्यक कार्यवाही की जा चुकी है।

14. आर्य समाज डोभरी का प्रति वर्ष नियमित वार्षिक उत्सव होता है। अब तक 27 वार्षिक उत्सव हो चुके हैं।

15. समाज के पदाधिकारी इस प्रकार हैं :—

प्रधान—श्री दयानन्द, मंत्री—श्री श्याम सिंह, कोषाध्यक्ष—श्री मोहन सिंह।

16. आर्य समाज डोभरी की स्थापना स्वतन्त्रता प्राप्ति के पीछे हुई स्वतंत्रता संघर्ष में कई साथी जेल गए थे। बाद में उनका सहयोग आर्य समाज डोभरी की स्थापना में मिला।

17. गो रक्षा सत्याग्रह में आर्य समाज डोभरी के 10 सदस्य जेल गये।

18. 25-30 वर्ष से आर्य समाज में कार्य करने वाले यहाँ लगभग 10 सज्जन हैं। परन्तु उनकी अवस्था 70 वर्ष से कम है।

19. नवयुवकों को आर्य समाज में लाने तथा सहयोग हेतु एक आर्य युवक संगठन की स्थापना की गयी है जिसमें लगभग 20 युवक हैं।

भवदीय
दयानन्द (प्रधान)
आर्य समाज डोभरी
देहरादून।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज, जोली ग्रान्ट

आर्य समाज एक जनवरी 1941 को श्री जालम सिंह जी, श्री भगवान सिंह, श्री गुलाबसिंह, श्री मूलचन्द, श्री ज्ञान चन्द, श्री कृष्णदत्त जी वैद्य की प्रेरणा और उत्साह से स्थापित हुई थी। प्रथम प्रधान श्री जालम सिंह, मंत्री श्री भगवान सिंह बने। भवन के लिए भूखण्ड 1976 में श्री मास्टर सोहनलाल जी तेलपुर वासी के दान से प्राप्त हुआ और भवन 1980 में श्री गुलाबसिह मल्हार द्वारा बनाया गया।

भूमि व भवन का अनुमानित मूल्य 50,000/- रु० है। कुल सदस्य 30 हैं। सभासद 19 हैं। उपस्थिति 15 से 20 तक साप्ताहिक सत्संग में रहती है।

शुद्धि संस्कार होते हैं। सदस्य एक-दूसरे के दुःख-सुख में शामिल होते हैं। 25 दिसम्बर 1952 से हम प्रान्तीय सभा के घटक हैं। प्रतिनिधि प्रमाण-पत्र 33 (10-3-53) है।

20 वार्षिक उत्सव हो चुके हैं।

इस समय के प्रधान श्री आदित्य सिंह हैं—मंत्री श्री मंगतराम और कोषाध्यक्ष श्री जय प्रकाश सिंह।

आर्य समाज की सभी गतिविधियां हमारे यहां भी चली हैं। श्री कृष्णदत्त वैद्य के पुरुषार्थ से इस समय समाज फिर कार्यशील हुआ है।

श्री गुलाब सिंह मालदार को आर्य समाज की सेवा के लिए आर्य समाज देहरादून ने सम्मानित किया है। उनकी आयु इस समय 95 वर्ष है। ये बचपन से आर्य समाज के लिए कष्ट झेलते रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज, लक्ष्मण चौक, देहरादून का इतिहास

प्रश्न 1. आर्य समाज का पूरा पता ?

उत्तर—आर्य समाज, लक्ष्मण चौक, 37 केशव रोड, देहरादून।

प्रश्न 2. समाज के पदाधिकारी तथा उनके पते ?

उत्तर—प्रधान—श्री जगदीश राय, 119 पार्क रोड, लक्ष्मण चौक देहरादून।

उपप्रधान—श्रीमती भगवती देवी, 9 मालवीय रोड, लक्ष्मण चौक, देहरादून। श्री सत्य पाल जी टंडन मार्ग लक्ष्मण चौक, देहरादून।

मंत्री—श्री श्याम सुन्दर बगाई 110 पार्क रोड, देहरादून।

कोषाध्यक्ष—श्रीमती श्यामादेवी, 20 मालवीय रोड, देहरादून।

पुस्तकाध्यक्ष—वीरेन्द्र कुमार त्यागी, राक्वेल स्कूल, नेशनल रोड, देहरादून।

समाज के सभा सदस्यों की कुल संख्या 84 है।

प्रतिष्ठित सदस्य—श्री चिरंजीलाल 7, गुरु रोड लक्ष्मण चौक, देहरादून। श्री कुन्दन लाल भाटिया, 115 पटेल नगर, देहरदून।

समाज की अनुमानित सम्पत्ति का मूल्य 1,21,878/- रु० है।

समाज की वार्षिक आमदनी लगभग 8000/- रु० है।

दैनिक व साप्ताहिक सत्संग होता है, समय-समय पर कथा करायी जाती है।

प्रश्न :—आपके क्षेत्र में आर्य समाज का कितना प्रभाव है ? इस प्रभाव का क्या रूप है ?

उत्तर :—क्षेत्र में प्रभाव ठीक ही है। सत्संग में 60-70 तक की संख्या हो जाती है।

प्रश्न :—आपके क्षेत्र में निवास करने वाले आर्य विद्वानों, संन्यासियों, महात्माओं, प्रचारकों तथा सम्पन्न व दानी आर्य नर-नारियों के नाम व पते—

उत्तर :—1. क्षेत्र में निवास करने वाले विद्वान श्री विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड, भूतपूर्व आचार्य गुरुकुल कांगड़ी व उपकुलपति।

2. श्री रुद्र दत्त शास्त्री।

3. श्री पं० देशबन्धु विद्यालंकार आर्य समाज में ही रहते हैं।

4. दानी सज्जनों के नाम—[redacted] श्री अशोक कुमार दुण्ड, श्री राय साहिब सुगनचन्द, स्व० जयसिंह ओबराय, श्रीमती लक्ष्मी देवी बहल, श्री प्रभु दयाल, श्री रामचन्द्र रस्तोगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न :—आर्य समाज की स्थापना कब हुई।

उत्तर :—आर्य समाज की स्थापना 20-10-1961 को हुई।

प्रश्न :—आर्य समाज के लिये प्रेरणा प्रदान करने वाले और उसकी स्थापना में सक्रिय रूप से भाग लेने वाले महानुभावों एवं दानियों के नाम व पते—

उत्तर :— 1. स्व० श्री प्रभु दयाल, 12 गुरु रोड, देहरादून।

2. श्री ज्ञानेन्द देव मालवीय रोड, देहरादून।

3. श्री रामचन्द्र रस्तोगी, 18 अण्डन मार्ग, देहरादून।

4. श्री ऋषि राम जी पार्क रोड, देहरादून।

5. श्री डाक्टर सरना जी।

6. रायसाहब सुगन चन्द पार्क रोड, देहरादून।

7. श्रीमती लक्ष्मी देवी बहल, 5 केशव रोड, देहरादून।

8. श्री निरंजन दास सहगल

9. श्री ठाकुर दास इंजीनियर

10. श्री जयराम सिंह ओबराय, 10 म्युनिस्पल रोड, देहरादून।

प्रश्न :—आपके क्षेत्र में आर्य समाज का प्रचार किन महानुभावों के पुरुषार्थ से हुआ?

उत्तर :—श्रीमती मालती देवी, श्रीमती वीरावाली, और अन्य सदस्यों द्वारा।

प्रश्न :—स्थानीय आर्य समाज किस प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा या केन्द्रीय सभा से सम्बन्धित है?

उत्तर :—आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

प्रश्न :—क्या आपके क्षेत्र में निवास करने वाले हरिजनों व पिछड़ी हुई जातियों के लोगों में भी आर्य समाज का प्रचार या प्रभाव है।

उत्तर :—हरिजन व पिछड़ी जाति में भी प्रचार है इनके मुहल्ले में भी किया जाता है। हमारी समाज में विधवा व अन्तर्जातीय विवाह किए जाते हैं।

प्रश्न :—स्त्री शिक्षा के लिए आपके क्षेत्र में क्या कार्य किया?

उत्तर :—स्त्री शिक्षा के लिए अखिल भारतीय महिला आश्रम को सहयोग दिया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न :—क्या आप किन्हीं ऐसे महानुभावों का पता लिख सकते हो जिनके पास आर्य समाज के साथ सम्बन्ध रखने वाली पुरानी पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाएं विद्यमान हैं ?

उत्तर :—श्री विश्वनाथ जी, श्री अरविन्द कुमार सरना ।

प्रश्न :—क्या आपके क्षेत्र में कोई ऐसा नर-नारी है जो बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में आर्य समाज के प्रचार कार्य के सम्बन्ध में जानकारी दे सकते हैं। उनके नाम व पते लिखने की कृपा करें ।

उत्तर :—श्री विश्वनाथ जी, श्री रुद्रदत्त शास्त्री ।

प्रश्न :—आपके क्षेत्र में जिन आर्य नर-नारियों ने भारत के स्वाधीनता संग्राम, में हिन्दी सत्याग्रह, हैदराबाद सत्याग्रह, गोरक्षा आन्दोलन, आदि संघर्षों में सक्रिय रूप से भाग लिया है उनके नाम व पते भेजने की कृपा करें ।

उत्तर :—श्री रुद्रदत्त शास्त्री, श्री सत्यपाल जी ।

प्रश्न :—आपके क्षेत्र में आर्य समाज का प्रचार कब आरम्भ हुआ, किस प्रकार निरन्तर वृद्धि हुई ? किन संन्यासियों व प्रचारकों ने आपके क्षेत्र में विशेष रूप से प्रचार कार्य किया, कौन से विशिष्ट व्यक्ति व परिवार आपके क्षेत्र में ऐसे आये हुए है एवं अब हैं जिनके प्रयत्न से व दान पुण्य से आर्य समाज के कार्य में उन्नति हुई। इन सब पर विपद रूप से जानकारी देने की कृपा करें ।

उत्तर :—सन 1958 में समाज का प्रचार शुरू हुआ बड़े विद्वानों द्वारा उन्नति हुई जिनके नाम—श्री विश्वनाथ जी, श्री रुद्रदत्त शास्त्री, श्री देवदत्त जी, श्रीमती विद्यावती, ब्रह्मवती नारंग, श्रीमती यशोदादेवी, श्रीमती वीरावाली। श्री ज्ञानेन्द्र देव व श्री रामचन्द्र हैं।

जगदीश राय
प्रधान

श्यामा देवी
कोषाध्यक्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री आर्य समाज, देहरादून

हमारे आलेखागार में इस बात का वर्णन मौजूद है कि स्त्री आर्य समाज की स्थापना जनवरी 1913 में हो गयी थी और उसके विधिवत् साप्ताहिक सत्संग शनिवार को लगने लगे थे।

परन्तु इस समाज में जीवन आया तब जब बहिन अक्षय कुमारी जी 1932 में देहरदून में आ बसीं। अब तक शनिवार को सत्संग वाली प्रणाली बन्द हो चुकी थी। और उसके स्थान पर पूर्णमासी और अमावस्या को यज्ञ होते थे। घर-घर जाकर प्रचार करती थी। धन संग्रह होता और गरीबों व असहायों की सहायता में व्यय कर दिया जाता।

1934 के एक प्रस्ताव द्वारा साप्ताहिक सत्संग का फैसला किया गया। और वह फिर प्रति शनिवार लगने लगा जो कि आज तक अबाध गति से चला आ रहा है।

वास्तविकता यह है कि कोई समाज संस्था अपने कर्मठ कार्यकलापों के दम पर फलती-फूलती बढ़ती और उन्नति करती है। और उन कार्यकर्त्ताओं में स्त्रियां नहीं हों तो वह संगठन एक बगैर आधारशीला के भवन के समान है। केवल दिखावा है। आर्य समाज ने अपने जीवन काल से स्त्री जाति के लिए जो कार्य किया है वह भारतीय राष्ट्र के उत्थान के इतिहास में नींव का पत्थर है। "ढोल गंवार" से उठा कर ऋषिराज ने इन्हें "मातृशक्ति" के प्रतिष्ठित उच्च आसन पर ला बिठाया।

देहरादून आर्य समाज की उन्नति का कारण यही है कि इस समाज की जड़ें माताओं, बहनों, बेटियों के हृदय के गहरी बैठ गयी हैं। आरम्भ काल में श्रीमती अक्षय कुमारी जी बहन शारदा देवी जी, श्रीमती सत्यवती सेठ जी, श्रीमती कमलावती जी, श्री तुलसा देवी जी, श्रीमती सरस्वती सोनी जी व श्रीमती सुखद देवी जी, श्री सत्यवती प्रभाकर, सरीखी लग्नशील महिलाएँ इस क्षेत्र में आ गयीं।

गांधी का चरखा भी चलता था—स्वदेशी का तार भी खिंचता था और दयानन्द का सपना भी साकार होता जाता था और उधर पुरुष युद्ध में जूझ रहे थे। इधर देवियाँ स्वतन्त्रता संग्राम का दूसरा मोर्चा जमाए बैठी थीं। घर-घर से अन्न संग्रह करती—स्वतन्त्रता संग्राम के जेल यात्रियों के घरों के लिए अन्नपूर्णा बनकर विचरती। जब पुरुष जेल गए तो माताओं ने पुष्प मालाएं गले में डाल कर उसी शान से उन्हें विदा किया जैसे क्षत्रणियाँ अपने जीवन धनों को युद्ध के लिए भेजती हैं। जब आवश्यकता हुई वहाँ देवियों ने जेल के सींखचों को भी आबाद कर दिया। सरस्वती सोनी, शर्मदा त्यागी इस क्षेत्र में अग्रणी थी। शर्मदा त्यागी, श्रीमती महावीर त्यागी से भी पूर्व हमारे नगर से एम० एल० सी० चुनी जा चुकी थीं।

स्वतन्त्रता के पश्चात् कार्य क्षेत्र बदल गया। हजारों पाकिस्तान से आने वाले उजड़े भाई देहरादून आए। हमारी बहनों ने उनके लिए स्नेह का सागर उडेल दिया। दिन रात सेवा की—सहयोग दिया।

असहाय महिलाओं—विधवाओं के लिए महिला आश्रम की स्थापना पूर्व ही हो चुकी थी। कन्या गुरुकुल देहरादून की आचार्या श्री आचार्य विद्यावती सेठ के प्रयत्न, इच्छा और उत्साह से अब महिला आश्रम के पास लगभग 10

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीघा भूमि है। आश्रम है जहां असहाय स्त्रियां आश्रय पाती हैं। 1955 में महिलाओं के लिए दस्तकारी व उद्योग केन्द्र खोला गया। बहन विद्यावती प्रभाकर व सुशील वाडेकर उत्साह से लगी रहीं।

1965 में श्रीमती सत्यवती चतुर्थ प्रधान बनीं, बहन सूरज मित्तल मंत्राणी और कोषाध्यक्ष बनी सुशीला वाडेला।

भारत पर चीनी आक्रमण के समय एक हजार रुपये की चीनी आटा आदि के अतिरिक्त 1500/- राष्ट्र रक्षा कोष में भी दिए गए।

श्री सत्यवती के साथ ही अब वीरबाला का सहयोग भी मिलने लग गया था। 1970 में बहन राज खरबन्दा, श्रीमती सावित्री कपूर ने उत्साह से कार्य सम्भाला। पाकिस्तानी आक्रमण के समय 2062/- राष्ट्र रक्षा कोष में नकद व 418/- रु० के चेक तथा कपड़े तौलिये व थैलियां—घायल जवानों के लिए हस्पताल में भेजी गयीं। बहन लाली देवी जी, श्रीमती यशोदा जी अब आगे आ गयीं। देहरादून आर्य समाज का भवन बन रहा था, 6000/- का कमरा बनाने के लिए शांति देवी जी ने स्त्री आर्य समाज की प्रेरणा से प्रदान किए। इस समय कमरे स्त्री आर्य समाज ही प्रयोग कर रही है। 1976 में बहन रमा देवी अरोड़ा के रूप में नई कोषाध्यक्ष हमें प्राप्त हुईं।

महिला आश्रम अब आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की एक घटक बन गयी है। हमारी महिलाएं ही इसका संचालन करती हैं। महिलाएँ जिस दैवी गुणों से पूरित होती हैं—वे ही सारे गुण इस समाज में भी आ गए हैं। दीन-दुखियों की सहायता—विधवाओं का पोषण—वृद्धाओं का रक्षण, निर्धन बेटियों के विवाह के लिए मुक्तहस्ता—रोगियों के लिए खुला दिल और अपना-सा प्यार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज कालसी

चुहड़पुर और चकरोता के बीच में पहाड़ की उपत्यका में स्थित छोटी-सी नगरी कालसी का एक प्राचीन ऐतिहासिक स्थल है। एक ओर महाराज अशोक का शिलालेख खड़ा है और दूसरी ओर जमुना की उत्ताल तरंगें पूरे वैभव में यहां देखी जा सकती हैं।

1916 में कुमार सुधार सभा की स्थापना हुई और सुधार का कार्य चलने लगा। 1916 में कुमार सुधार सभा, आर्य कुमार सुधार सभा बन गई। शकट तीव्र गति से दौड़ने लगा और अन्ततः आर्य समाज की स्थापना हो गयी। प्रारम्भिक अधिवेशन धर्मशाला में होते थे। या आर्यजनों के घरों पर पारिवारिक सत्संगों के रूप में। पीछे आर्यों ने अपने उत्साह से जब भवन बनाने की सोची तो गारा मिट्टी तक अपने आप ढोया और भवन खड़ा कर लिया।

आरम्भ में कार्यकर्ता थे बक्शी गोमती प्रसाद, बा० चेतराम, बाबू मथुरादास, सरकारी कर्मचारी जो पोस्ट आफिस या वन विभाग में आते थे उन्हीं में कोई न कोई आर्य निकल आता और समाज को एक नया सहयोगी मिल जाता।

समाज की बुराइयाँ दूर करने के लिए प्रचार शुरू हुआ। जहाँ लोग उत्साह से भाग लेने लगे वहाँ कार्यकर्ताओं के सामने कठिनाइयाँ भी बुरी तरह बढ़ने लगीं। बड़े-बूढ़े विरोध करते थे और नवयुवक अपनी धुन में मस्त इन सबसे लापरवाह हो कुरीतियों पर लगातार कुठाराघात किए जा रहे थे। विवाहों पर वेश्याओं का नाच इस आन्दोलन के फलस्वरूप लगभग बन्द हो गया। विधवा विवाह शुरू हो गए। शराब वाले बोतलें अपने हाथ से फोड़ने लगे। हुक्के की चिलमें अमलावा नदी की भेंट कर दी गयीं। श्री बाबूराम —श्री बाबू बलवन्त सिंह जी (जिनकी धर्म पत्नी कमला देवी जी ने पीछे आर्य समाज देहरादून के हक में एक इच्छा पत्र लिखा) पोस्ट आफिस से तथा रामशरण जी वन विभाग से सहयोग पाकर आर्य समाज का पौधा लहराने लगा। श्री पं० तुलाराम जी के हैड मास्टर मिडिल स्कूल पं० भामाराम जी, पदमी वाला, लाला सीताराम के सहयोग से कार्य नित्य बढ़ता गया। आर्य समाज की स्थापना के साथ ही प्रभुलाल जी, श्री दर्शन लाल जी, श्री रामलाल जी स्वर्णकार, श्री लक्ष्मण सिंह पटवारी पीछे कानूनगो (श्री चूहेड़ सिंह, पटवारी) पीछे दुकान कर ली; आर्य समाज की नींव में पत्थर बनकर खप गए। कभी कोई दुस्साहस न करे—अनुचित दबाव नहीं डाले इसका उत्तरदायित्व एक प्रकार से श्री प्रभुदयाल जी के कन्धों पर था। कोई मोर्चा जमाना हो, श्री प्रभुलाल जी अगली पंक्ति में मिलेंगे। चाहे कलम हाथ में रहती थी पर कोई न जानता था कि कब डण्डा हाथ में आ जाएगा। आपके दोनों पुत्र श्री हरीशचन्द्र जी एवं विद्यासागर जी वकील अब चकरोता में वकालत करते हैं।

चौ० रामजीदास स्वयं तो आर्य समाज के समाज के काम में पीछे रहे परन्तु उनके पुत्र लाला किशोरी लाल, लाला रघूमल एवं लाला रामचन्द्र आर्य समाज के क्षेत्र में ऐसे दीवाने होकर आये कि अपनी सुध-बुध ही भुला दी। लाला किशोरी लाल जी ने अपनी पैतृक सम्पत्ति भी लेने से इन्कार कर दिया क्योंकि पिता चाहते थे आर्य समाजी न बने और अपना हिस्सा संभाल लें (पीछे लाला किशोरी लाल जी व लाला रामचन्द्र जी देहरादून आ गए। यहीं बस गए। लाला रामचन्द्र जी स्वर्गस्थ हो चुके हैं। उनके दामाद ओरियण्ट सिनेमा के मालिक थे और लाला किशोरी लाल जी अब वानप्रस्थी होकर अब कृष्ण मुनि जी के नाम से आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में वास कर रहे हैं।)

अब कालसी का सब व्यापार खतम हो गया है। पुरानी वस्ती है जरूर पर कोई उत्साही कार्यकर्ता नहीं है। भवन पर किराएदार का कब्जा है। न कोई देखने वाला है और न कोई पूछने वाला। कभी-कभी चुहड़पुर समाज किसी को भेजकर किराया-वगैराह उगाह लेती है। इसके अतिरिक्त अब वहां समाज की हलचल नजर नहीं आती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज चकराता

देहरादून जिले का अति रमणीय स्थल चकराता—सेना की छावनी है। बाहर के आदमी यहाँ आकर बसे, सरकार सदा से इसे हतोत्साह करती रही है। 700 फुट की ऊँचाई पर स्थित यह छोटा-सा पर्वतीय नगर अपने प्राकृतिक सौन्दर्य और जलवायु के कारण विख्यात है।

इस समय समाज का कोई कार्यकर्ता न होने के कारण विशाल भवन नगर के मध्य स्थित होने पर भी अनाथ के समान खड़ा है।

जब तक श्री राधाकृष्णजी रहे (फर्म मोहन लाल नत्थूमल) या श्री प्रभुलाल जी रहे तब तक कुछ न कुछ गति थी, अब प्रायः निर्जिव सी है।

इस समाज की उन्नति में बक्शी गोमती प्रसाद (कारिन्दे फर्म लेखराज केवलराम कालसी वाले) बा० गंगा प्रसाद जनरल मर्चेंट जो अक्सर प्रधान भी रहे, का सहयोग सदा मिलता रहा।

अंग्रेज के जमाने में यहां आर्य समाज मन्दिर पर सरकार ने गोली चलायी थी जिसमें एक बलिदान इस समाज को देना पड़ा था। आर्य समाज की राष्ट्रभक्ति व देश प्रेम के लिए यही इनाम अंग्रेज दे भी सकता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज मंसूरी

पर्वतों की रानी—जहाँ अंग्रेज के शासन में विलासिता का सागर ठाठे मारता था—आज स्वतन्त्र हो जाने पर भी उसी दुनिया में खोयी हुई है।

समाज का अपना भवन है और वह भी एक नहीं दो हैं। आर्य समाज की आय का मुख्य स्रोत भी यही है। वर्ष भर सैलानी बाहर से आते रहते हैं और कमरे किराए पर चढ़ते रहते हैं। गरमी में इतनी भीड़ हो जाती है कि सबको स्थान भी नहीं मिलता।

डा० रामचन्द्र एस० डी० ओ० जब तक मंसूरी रहे। मंसूरी का काम खूब बढ़ता रहा और जब ये चकराता गये तब वहाँ की समाज का कार्य खूब बढ़ता रहा। (समाज के संस्थापकों में बा० ज्योतिस्वरूप मुख्य थे)

कभी मजबूत आर्य वीर दल था अब केवल आर्य समाज है। वार्षिक उत्सव होता है—साप्ताहिक सत्संग होते हैं और आर्य समाज की गाड़ी सरकती रहती है। कार्यकर्ता गिने-चुने हैं—श्री परमात्मा शरण जी व नवयुवक फोटोग्राफर वे विचारे कहाँ तक करें।

समाज की अर्थिक स्थिति जितनी बढ़िया है उसी के अनुरूप यदि कार्य भी यहाँ होने लगे तो उत्तराखंड के समस्त ईसाई प्रचार को रोकने के लिए एक शक्तिशाली केन्द्र के रूप में उभर सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिले की अन्य समाजें

आर्य समाज सहसपुर-जस्सोवाला (डाकघर हरबर्टपुर) बैरागीवाला, एन्टीबायटिक्स कालोनी, वीरभद्र, सुभाष नगर, आर्य समाज रायपुर, (आयुध निर्माण संस्थान) गढ़ी, डाकरा, फुलसनी। सहसपुर, जस्सोवाला, बैरागीवाला समाजों के अपने भवन नहीं है। सहसपुर में कार्यकर्ता हैं डा० किशन लाल जी। वे ही सभी गतिविधियों के केन्द्र है। पल्ले से खर्च करते हैं और प्रचार कराते रहते हैं। जस्सोवाला और बैरागीवाला में मा० दलीपसिंह व डाक्टर वीरसिंह हरबर्टपुर के सहयोग से कार्य में गति आई है। वहाँ सभाएं होने लगी हैं।

वीरभद्र ऐण्टीवायटिक्स का अपना भवन है। 1975 में समाज के उत्सव पर देहरादून 2-3 बसें भर कर हम उसमें सम्मिलित हुए थे। उत्साही लोग हैं। अपने पैरों पर खड़े हो गए हैं।

आयुद्ध निर्माण शाला रायपुर का अपना भवन है। कार्यकर्ताओं के अभाव में कार्य शिथिल हो गया है। जब कोई उत्साही आ जाता है—कार्य चलने लगता है इस समय श्री सच्चर साहब कार्य चला रहे हैं।

गढ़ी डाकरा आर्य समाज का अपना भवन है—काफी विश्राम के पश्चात् अब कुछ गति दीखने लगी है। मास्टर दलीप सिंह लगे हैं कि किसी प्रकार जीवित हो जाए। एक दो उत्साही कार्यकर्ता भी सामने आने लगे हैं।

सुभाष नगर में अभी दो वर्ष हुए समाज बना है। उत्साही लोग हैं ला० पन्नालाल जी रईस ने भवन हेतु भूमिदान में दी है। एक कमरा बन चुका है। यज्ञशाला के स्तम्भ खड़े हैं। लोग उत्साह से कार्य में लगे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज डाकरा बाजार

स्व० श्री लाला गंगाधर जी व ला० धानूराम जी के पुरुषार्थ और प्रयत्न के फलस्वरूप 1 दिसम्बर, 1964 को डाकरा बाजार में आर्य समाज की स्थापना हो गयी। प्रथम प्रधान बनने का श्रेय मिला लाला गंगाधर जी को, प्रथम मन्त्री बने लाल चन्द्र जी। कार्य होने लगा। ठाकुर कुन्दन सिंह ने भूमिदान में दी और 1964 में ही भवन निर्माण आरम्भ होगा। इस समय भवन का मूल्य अनुमानतः 40 हजार रुपये हो गया। साप्ताहिक अधिवेशन पहले नियमित होते थे। अब यदा कदा होते हैं। सत्संग में उपस्थिति 4-5 आदमी की है। कुल सदस्य 10 हैं। सदस्य एक-दूसरे के दुःख-सुख में शामिल होते हैं। मद्य निषेध के लिए, दहेज के विरोध के लिए सभाओं के आयोजन किये जाने लगे हैं।

इस समय श्री चमन लाल जी प्रधान हैं और श्री कैलाश चन्द्र जी मन्त्री हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज, कर्णपुर का संक्षिप्त इतिहास

श्री लछमन प्रसाद जी प्रिंसिपल डी० ए० वी० कालेज देहरादून, आर्य समाज के प्रधान थे। उन्होंने कर्णपुर की जनता के अनुरोध पर आषाढ़ शुक्ला 2, सम्वत 2003, 11 मार्च 1934 को डी० ए० वी० कालेज में आर्य समाज कर्णपुर की स्थापना की।

कर्णपुर आर्य समाज के सर्वप्रथम निर्वाचन में श्री विशम्वर दास जी रिटायर्ड इंजीनियर प्रधान तथा गया प्रसाद जी शुक्ल मंत्री पद पर सर्व सम्मति से निर्वाचित हुए।

आर्य समाज की स्थापना होते ही बड़े उत्साह से धन संग्रह का कार्य आरम्भ हुआ। मानसिहंवाला में सवा दो बीघा जमीन आर्य समाज मन्दिर के निर्माण हेतु खरीदी गयी। 1935 ई० में आर्य समाज कर्णपुर को आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश में सम्वद्ध करा दिया गया। 1936 ई० में एक आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना की गयी। जून 1936 में प्रिंसिपल श्री लछमन प्रसाद जी का स्वर्गवास हो गया। उनके पश्चात् स्व० मास्टर शालिगराम जी मन्त्री इस कार्य को आगे बढ़ाते रहे। प्राय: डी० ए० वी० कालेज के सेवक ही मासिक चन्दा इकट्ठा किया करते थे। श्री बद्रीनाथ जी छिब्बर की कृपा से डी० ए० वी० कालेज के सेवक यज्ञ सामग्री की व्यवस्था तथा चन्दा इकट्ठा करना, स्कूल की सूचना देना इत्यादि का कार्य करते थे।

सन् 1936 में श्री विशम्वर सहाय जी समाज के सदस्य बने और उन्होंने मास्टर शालिगराम जी का समाज के कार्य में हाथ बंटाना शुरू किया।

आर्य समाज के प्रधान विशम्वर दास जी सेबक आश्रम रोड स्थित उनके क्वार्टर्स में एक क्वार्टर आर्य कन्या पाठशाला के लिए ले रखा था। अतः आर्य समाज कर्णपुर के साप्ताहिक सत्संग प्रति रविवार को उसमें होने लगे। 1943 में आर्य समाज मानसिंह वाला की भूमि बेच कर पौने दो बीघा भूमि सीमेन्ट रोड पर जहाँ वर्तमान आर्य समाज मन्दिर है क्रय कर ली गयी। स्व० बाबू आनन्दस्वरूप जी गर्ग की सहायता से सिटी बोर्ड देहरादून से आर्य कन्या पाठशाला भवन के लिए 2000/- रु० का दान 1948 में प्राप्त हुआ। इस धन से वर्तमान भवन के तीन कमरों एवं बरामदे की नींव भर दी गयी। आषाढ़ शुक्ला द्वितीय सम्वत 2003 विक्रमी को मास्टर गौरी शंकर जी ने अपनी योग्य पुत्री लीलावती की स्मृति में एक यज्ञशाला का निर्माण कराया। इसके उपरान्त मास्टर रूलियाराम जी गुप्त के प्रेरणा से रायसाहब गोपीचन्द सेठ ब्रह्मावाले ने अपनी स्वर्गीय धर्मपत्नी श्रीमती बीरावाली की स्मृति में 1955 में एक कमरे का निर्माण कराया। इसके बाद स्व० रायसाहब गोपीचन्द सेठ की स्मृति में उनके पुत्रों द्वारा 1957 में एक कमरे का निर्माण कराया गया। इसके बाद 1960 में रायसाहब गोपीचन्द (पिता) और (माता) बीरावाली की स्मृति में उनकी पुत्री श्रीमती कलावती ने एक कमरे का निर्माण कराया। इसके बाद रूलियाराम जी गुप्त के बहनोई लाला देशराज जी अग्रवाल जगराओ वाले हाल कटनी निवासी ने अपनी स्व० धर्मपत्नी श्रीमती सावित्री देवी बहन लाला रलियाराम गुप्त की स्मृति में 3-7-61 को एक कमरा तथा एक बरामदे का निर्माण कराया। इसके उपरान्त 6 फरवरी, 1977 को श्री शिवनाथ जी आहूजा ने एक कमरा और एक बरामदा आर्य समाज धमार्थ औषधालय के लिए बनवाया जिसमें धमार्थ होमियोपैथिक औषधालय चल रहा है। सन् 1980 में बरामदे के दो कमरे बनाये गये। जिसके लिए 1000/- रु० श्री सुन्दरदास जी दीवान, 1000/- रु० श्रीमती विद्यावती मदान धर्मपत्नी श्री चन्द्रभान जी मदान, 800/- रु० श्री सुभाष गुप्ता ने अपने पिता स्व० श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता की स्मृति में दान दिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य कन्या पाठशाला में धर्म शिक्षा दी जाती है। बच्चों के लिए एक स्लाइड लगा हुआ है। छात्राओं के पूर्ण विकास का ध्यान रखा जाता है। आजकल एक पुस्तकालय भी चल रहा है। घर-घर में यज्ञ कराने का भी प्रबन्ध है तथा वेद प्रचार सप्ताह तथा ऋषिबोध दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इस अवसर पर प्रभात फेरी भी निकाली जाती है। इस कार्यक्रम में विशेषकर छात्रों तथा छात्राओं में वेद प्रचार आदि कार्य होता है।

प्रधान पद पर (1) श्री बिशम्बरदास जी रिटायर्ड इंजीनियर, (2) श्री अनन्त दास जी बनर्जी, (3) श्री आनन्द स्वरूप जी सिन्हा, (4) डा० रामनारायण सक्सेना, (5) श्री मुकटविहारी रायजादा, (6) धर्म पाल सूद (7) श्री चन्द्रभान मदान, सुशोभित होते रहे।

मंत्री पद पर श्री गया प्रसाद शुक्ल, (2) श्री शालिगराम जी (3) श्री आनन्द स्वरूप जी सिन्हा, (4) श्री कृष्णदेव जी शर्मा, (5) श्री बिशम्बर सहाय जी, (6) कैलाश स्वरूप जी सिन्हा, (7) श्री माताबक्श जी रायजादा, (8) राजनाथ सरल, (9) प्रभाशंकर रावत, (10) जनार्दन स्वरूप सुशोभित होते रहे। सन् 1939 में हैदराबाद सत्याग्रह के अन्तर्गत आर्य समाज कर्णपुर के जत्थों का स्वागत किया तथा थैलियाँ भेंट कीं। प्रत्येक राष्ट्रीय आंदोलन में खूब भाग लिया है। इस समय सम्पत्ति का अनुमानित मूल्य एक लाख रुपया होगा। कुल सदस्य संख्या 22 है। साप्ताहिक सत्संग की उपस्थिति औसतन 15 है। प्रधान श्री चन्द्रभान मदान हैं।

मंत्री

(जनार्दन स्वरूप)

आर्य समाज, कर्णपुर, देहरादून

मुद्रक—चौहान कम्पोजिंग एजेंसी मोजपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

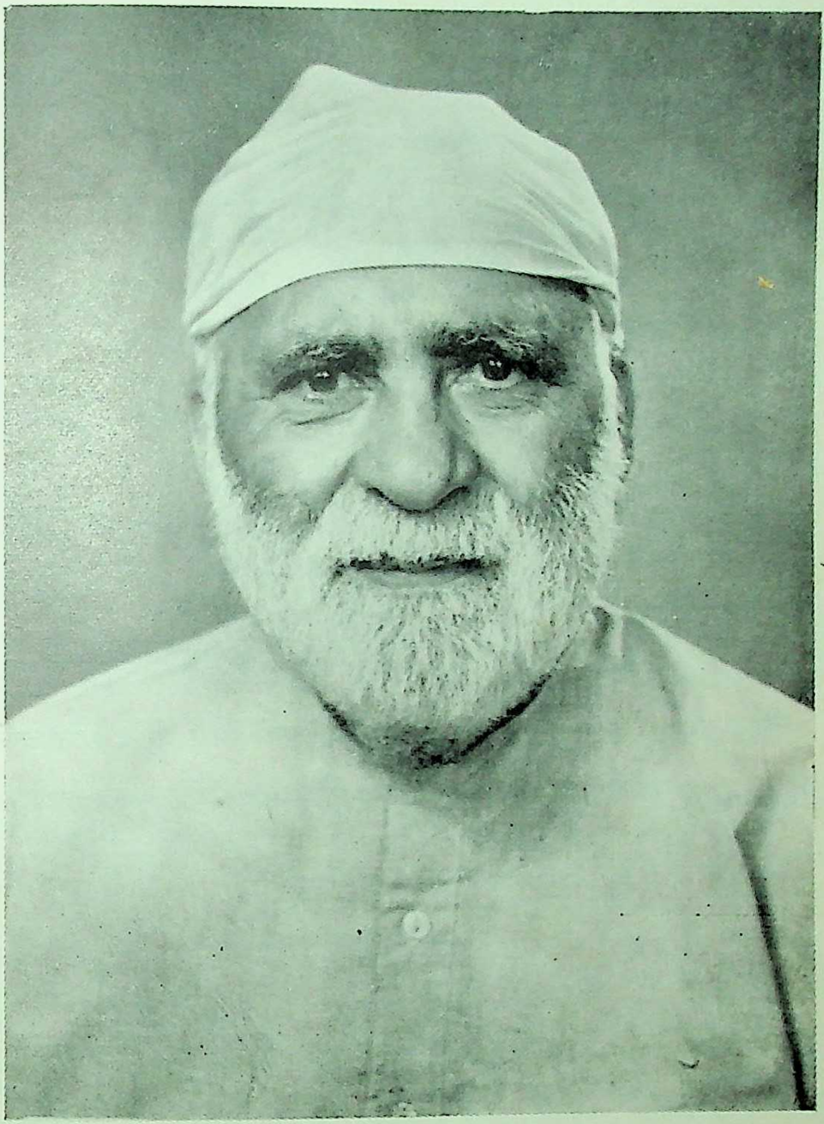

महात्मा बलदेव जी वानप्रस्थी
प्रधान वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून

Mahatma Baldevji Vanprasthi
President, Vedic Sadhan Ashram, Tapovan, Dehra Dun

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन
VEDIC SADHAN ASHRAM, TAPOVAN

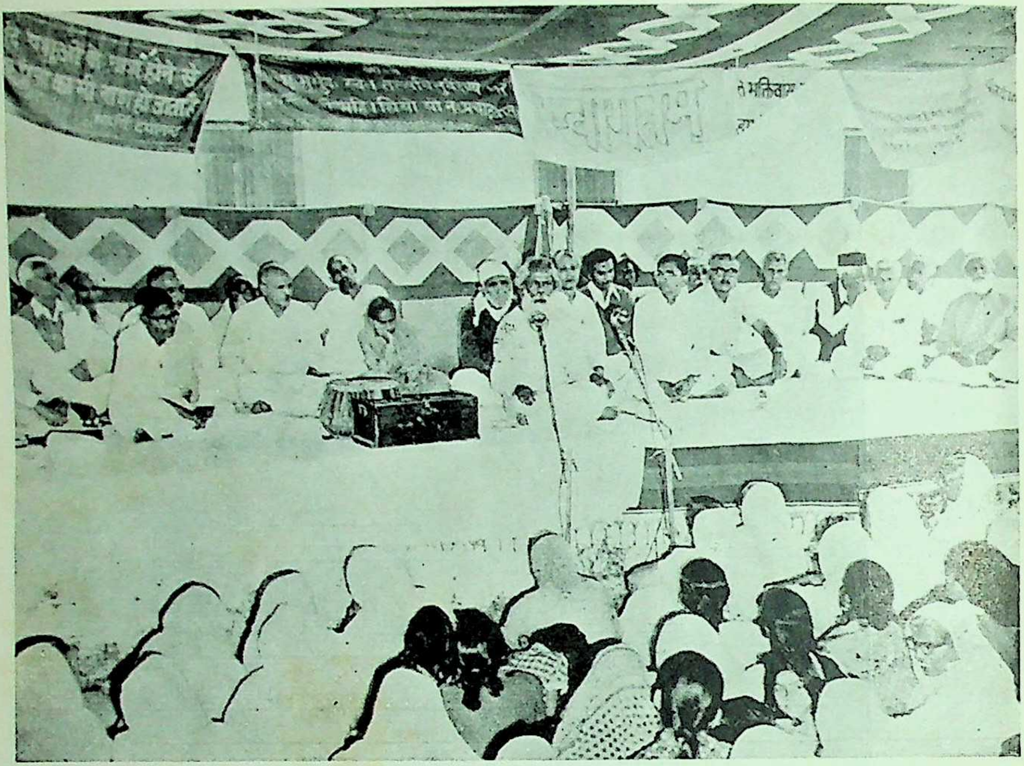

बृहद् यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् महात्मा आर्य भिक्षु जी प्रवचन करते हुए

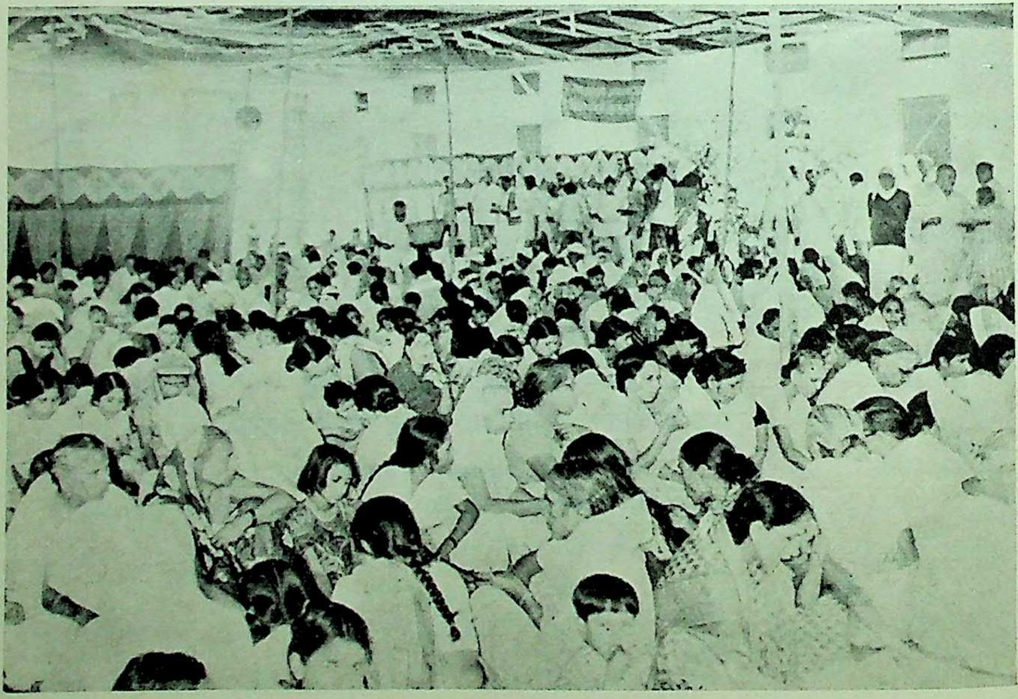

यज्ञ के पश्चात् प्रीतिभोज का एक सामूहिक दृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन (देहरादून)

यह वनस्थली श्री प्रद्युम्न सिंह धर्मार्थ ट्रस्ट, अमृतसर के अध्यक्ष स्वर्गीय बाबा गुरमुखसिंह जी ने खरीदी थी। महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती ने 1944-45 तथा 1946-47 में यहाँ अज्ञातवास एवं तप किए थे और इस स्थान को प्रभुभक्ति तथा योग-साधना, ध्यान एवं समाधि के लिए अद्भुत पाया था। महात्मा आनन्द स्वामी जी की प्रेरणा से यहाँ पर वैदिक साधन आश्रम का निर्माण श्री बाबा गुरमुखसिंह जी ने लाखों रुपये लगाकर कराया जिसका आरम्भ 15 दिसम्बर 1949 को किया गया था।

आश्रम का प्राकृतिक पर्यावरण—पर्वतीय दृश्य, बरसाती नदी का तट, चश्मों का जल, वन-विहगों का कलरव और सुगन्धित जड़ी-बूटियों से छनकर आने वाली प्राणप्रद वायु साधकों के लिए सदा आकर्षण बना है। वनस्पति-बाहुल्य के बावजूद यहाँ पर मच्छर नहीं है। स्वास्थ्य के लिए उत्तम स्थान है।

आश्रम में सपत्नीक रहने के कमरे और रसोई-घर भी हैं। विरक्तों के लिए अलग कमरों की व्यवस्था है। नीचे तथा पहाड़ों पर कुटियाएँ बनी हैं जिनमें बिजली, पानी तथा फ्लश का प्रबन्ध है। जालीदार दरवाजे तथा खिड़कियाँ हैं। आश्रम में सहभोज की व्यवस्था है। निजी भोजन बनाने वालों को नगर से राशन भी मंगवा दिया जाता है। पुस्तकालय और निःशुल्क चिकित्सालय भी है। डाकघर आश्रम में ही है और सार्वजनिक टेलीफोन भी है।

आश्रम देहरादून नगर के घण्टाघर से लगभग तीन मील की दूरी पर स्थित है। आश्रम तक पक्की सड़क है। प्रातः 8-30 बजे तथा 5-30 बजे रोडवेज नगर-सेवा की बस आश्रम तक जाती है और लौटती है।

आश्रम की यज्ञशाला में नियमित रूप से दोनों समय यज्ञ होता है और वेद-प्रवचन होता है। आर्य संन्यासी तथा विद्वान् समय-समय पर पधारते रहते हैं। बृहद यज्ञ आश्रम में वर्ष में दो बार, अप्रैल तथा अक्तूबर में, होता है जिसमें दूरस्थ स्थानों से सैकड़ों धर्म-प्रेमी आते हैं।

इस क्षेत्र के पुराने लोगों का कथन है कि यह स्थान महाभारत-काल में गुरु द्रोण का आश्रम था और इसे देहराद्रोण कहते थे जो बिगड़कर देहरादून हो गया है। महात्मा आनन्द स्वामी जी, स्वामी आत्मानन्द जी, महात्मा प्रभु आश्रित जी, श्री वेदप्रकाश जी वेदान्ती, स्वामी ओमानन्द जी तीर्थ, पं० दौलतराम जी शास्त्री और ब्रह्मचारी भारद्वाज जी ने यहां योगाभ्यास तथा साधनाएं कीं और अद्भुत लाभ उठाए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रम की व्यवस्था एक रजिस्टर्ड ट्रस्ट के अधीन है जिसका सदस्य आर्य समाज का सदस्य ही बन सकता है। वानप्रस्थियों तथा संन्यासियों के लिए यह नियम बाधक नहीं है। आश्रम में प्रवेश पाने वाले के लिए आवश्यक है कि वे आर्य संस्कृति का किसी प्रकार उल्लंघन न करते हों, सत्संग में समय पर सम्मिलित हों, यम-नियमों का पालन करें, मदिरा, मांस, अण्डा, तम्बाकू आदि का सेवन न करते हो। कुटियाओं का कोई किराया नहीं लिया जाता, पानी का व्यय लिया जाता है। भोजन का व्यय जो भी हो, खाने वालों को बाँट कर देना होता है।

पदाधिकारी :—

प्रधान—महात्मा बलदेव जी वानप्रस्थी

उपप्रधान—महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थी

मंत्री—श्री देवदत्त बाली

सहायक सैकेट्री—श्री सोहनलाल अरोड़ा

कोषाध्यक्ष—श्री विश्म्बरनाथ मलिक।

पृष्ठदाता

फ्रंटियर स्टोर्स, चकरोता रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज, सुभाषनगर, देहरादून

स्वर्गीय श्री सेठ पन्नालाल मित्तल ने सुभाषनगर की स्थापना 1947 में अपने मित्र श्री डॉ० रामनाथ सूद तथा श्री दाताराम कपूर के सहयोग से शहर से 8 कि० मीटर दूर सहारनपुर-देहली रोड पर की। श्री सेठ जी ने आर्य समाज के सिद्धांतों का प्रचार करने के लिए सुभाषनगर में आर्य इन्टर कालेज तथा दयानन्द कन्या हा० से० स्कूल की स्थापना 1949 तथा 1972 में की। यह दोनों संस्थाएं ज्ञान का प्रकाश करने के साथ-साथ महर्षि दयानन्द का संदेश इस क्षेत्र के कोने-कोने में पहुंचा रही हैं।

1963 में श्री रामशरणदास जोशी तथा श्री हंसराज सोनी ने पारिवारिक सत्संग प्रारम्भ किये। बारी-बारी से प्रत्येक परिवार में यज्ञ, भजन, उपदेश के माध्यम से महर्षि दयानन्द का संदेश पहुंचने लगा। 23-7-1979 को श्रीमती सावित्री देवी कंसल के मकान पर श्री सोहन सिंह भाटिया जी की अध्यक्षता में एक बैठक हुई जिसमें आर्य समाज का भवन निर्माण करने का निश्चय किया गया। श्री नरेन्द्र मित्तल के संरक्षण में 11 सदस्यों की एक समिति बनाई गई जिसके अध्यक्ष श्री एम०आर० ढांडा, मंत्री श्री सरदारीलाल मोंगा तथा कोषाध्यक्ष श्री श्रीराम कंसल बनाये गए।

इस समिति ने श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री, पूज्या आनन्दा माता तथा श्री वासुदेव चैतन्य की देख-रेख में दान एकत्रित करना प्रारम्भ किया। सर्वप्रथम श्रीमती सत्यावती धर्मपत्नी स्वर्गीय सेठ पन्ना लाल मित्तल ने एक बीघा भूमि दान में दी जिसका मूल्य 15000 रुपये है। इसके अतिरिक्त लगभग 14000 रुपए दानी महानुभावों के सहयोग से एकत्रित करके 4 मार्च 1980 को आर्य समाज भवन की आधारशिला पूज्य श्री आर्य भिक्षु प्रधान आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर के कर कमलों द्वारा रखी गई। उसी स्थान पर आजकल साप्ताहिक सत्संग, पुस्तकालय तथा वाचनालय चल रहा है और भवन का निर्माण भी तेजी से चलाया जा रहा है। आशा है यह समाज देश में फैले अज्ञान तथा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

पृष्ठदाता

प्रकाश साइकल मार्ट, तिलक मार्ग, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज, रायपुर, देहरादून

सन् 1949 में समाज स्थापित हुआ।

सर्वश्री वी० पी० कौड़ा, सेठ बिहारी लाल और के० एम० शर्मा संस्थापकों में थे।

प्रथम प्रधान—श्री बी० पी० कौड़ा।

मंत्री—श्री डी० आर० कलोटा।

कोषाध्यक्ष—श्री के० एम० शर्मा।

भूखण्ड था।

भवन खण्ड सन् 1951 में निर्मित किया गया।

भूमि, सुन्दरवाला ग्राम पंचायत द्वारा दान स्वरूप प्राप्त हुई। दान में भूमि प्राप्त होने की तिथि सन् 1950 है। मूल्य लगभग तीस हजार।

पुस्तकालय है। वाचनालय नहीं है।

औसत उपस्थिति लगभग 15 व्यक्ति।

सदस्य संख्या लगभग 40 है। आर्य सभासद की संख्या 11 है।

सामाजिक सेवा के रूप में प्रौढ़ शिक्षा का आयोजन था। औषधालय भी कुछ समय तक चला। परन्तु अब दोनों ही बन्द हैं।

लगभग 15 सदस्य दुख-सुख में सहयोग प्रदान करते हैं। मद्य निषेध और दहेज विरोध में यथा सम्भव प्रचार किया जाता था।

प्रान्त से सम्बन्धित है जिसकी तिथि सन् 1955 है।

लगभग 20 वार्षिकोत्सव हो चुके हैं।

पदाधिकारी :—

प्रधान—श्री ओ० पी० जिज्ञासु।

मंत्री—श्री शाम लाल सच्चर।

कोषाध्यक्ष—श्री रंजीत राय कपूर।

गत 30/35 वर्षों से सर्वश्री शाम लाल सच्चर, श्री राम पाण्डे, और रणजीत प्रसाद उपरेती समाज सेवा करते आ रहे हैं।

समाज का प्रचार विशेष रूप से संस्थान के. कर्मचारियों के घरों में साप्ताहिक सतसंग व अन्य संस्कारों के रूप में किया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र-
चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्र-
विणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यं दत्त्वा
व्रजत ब्रह्मलोकम्॥

अथर्व० १९-७१-१

स्तुति करते हम वेद ज्ञान की,
जो माता है प्रेरक~पालक,
पावन करती मनुज मात्र को।
आयु, बल, सन्तति, पशु कीर्ति,
धन, मेधा, विद्या का दान।
सब कुछ देकर हमें दिया है,
मोक्ष मार्ग का पावन ज्ञान।

शुक्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

*God grant me
the serenity to
accept the things I cannot
change: courage to change
those things I can and
wisdom to know
the difference*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर की फूट — जगत की लूट

अच्छी बातें

मर्द की सुन्दरता उसकी विनम्रता है
अतिथि सत्कार से यश प्राप्त होता है
दान से धन में कमी नहीं आती
सबसे अच्छा नशा जनता की सेवा है
दान विपत्तियों को खा जाता है
क्रोध बुद्धि को खा जाता है
इन्साफ़ ज़ुल्म को खा जाता है
घमण्ड ज्ञान को खा जाता है
झूठ रिज़्क़ को खा जाता है

चिंता आयु को खा जाती है
सबसे अच्छा दान, क्षमा कर देना है
सबसे बड़ा बहादुर बदला न लेने वाला है
तदबीर जैसी कोई बुद्धिमानी नहीं
रिश्वत इन्साफ़ को खा जाती है
प्रायश्चित पाप को धो देता है
निंदक के शुभ कर्म नष्ट हो जाते हैं
नेकी बदी को खा जाती है
विद्या से बढ़ कर कोई दौलत नहीं

तीन चीज़ें इन्सान को जीवन में एक बार मिलती हैं, मां बाप, हुस्न, जवानी

तीन चीज़ें कभी छोटी न समझें, शत्रु, कर्ज़ा, बीमारी

तीन चीज़ें सदा हृदय में रखें, दया, क्षमा, विनय

तीन चीज़ें किसी की प्रतीक्षा नहीं करतीं, समय, मृत्यु, ग्राहक

तीन चीज़ें हर एक की अलग अलग होती हैं, रूप, स्वभाव, भाग्य

तीन चीज़ें भाई को भाई का दुश्मन बना देती हैं, ज़न, ज़र, ज़मीन

तीन चीज़ें परदा चाहती हैं, खाना, दौलत, औरत

तीन चीज़ें याद रखना ज़रूरी हैं सच्चाई, कर्त्तव्य, मौत

तीन चीज़ें इन्सान को ज़लील करती हैं, चोरी, चुग़ली, झूठ

तीन चीज़ें असल उद्देश्य से रोकती हैं बदचलनी, गुस्सा, लालच

तीन चीज़ें हर एक को प्यारी होती हैं, औरत, दौलत, औलाद

तीन चीज़ें कोई दूसरा नहीं चुरा सकता, अक़्ल, इलम, हुनर

तीन व्यक्ति ग़म में घिरे रहते हैं, ईर्ष्यालु, काहिल, वहमी

तीन चीज़ें निकल कर वापस नहीं आतीं, तीर कमान से, बात ज़बान से, आत्मा शरीर से

तीन व्यक्ति अपनी आदत पर मजबूर हैं सच्चा सच्चाई पर, दानी दान पर, ज़ालिम ज़ुल्म पर

तीन व्यक्ति वक़्त पर पहचाने जाते हैं, धैर्यवान कठिनाई पर, सच्चा सच्चाई पर, भाई ज़रूरत पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

بہترین نصیحتیں

قابو پاکر معاف کر دینا بہترین نیکی اور شرافت ہے
مظلوم کی حمایت کرنا بہترین نیکی اور شرافت ہے
اہل و عیال والے مفلس کی خفیہ مدد کرنا بہترین نیکی اور شرافت ہے
جہاں کوئی نہ کہہ سکے حق بات کہہ دینا بہترین نیکی اور شرافت ہے
بُرائی پانیکے باوجود رشتہ داروں کیساتھ احسان کرنا بہترین نیکی اور شرافت ہے

جیسی صحبت میں بیٹھے ویسا نہ بنے ممکن نہیں
دنیا سے دل لگائے اور پشیمان نہ ہو ممکن نہیں
عورتوں کی صحبت میں بیٹھے اور رسوا نہ ہو ممکن نہیں
ہر کام میں جلدی کرے اور نقصان نہ اٹھائے ممکن نہیں
دوسروں کے جھگڑوں میں پڑے اور مصیبت میں نہ پھنسے ممکن نہیں

ماں باپ کا نافرمان اپنی اولاد کی نافرمانی کا منتظر رہے
پڑوسی کو تکلیف پہنچانیوالا جلدی خدا کے قہر و عذاب کا منتظر رہے
چغل خوری کرنے والا ذلت و خواری کا منتظر رہے
ظلم کرنے والا اپنی ہلاکت کا منتظر رہے
اوباش یاروں والا اپنی بربادی کا منتظر رہے

کبھی بھول کر اپنے ماں باپ اور استاد کی شکایت مت کر
بیوی کے سامنے اس کے میکے والوں کی شکایت مت کر
رخصت کرنے کے بعد اپنے مہمان کی شکایت مت کر
غیر کے سامنے اپنے دوست کی شکایت مت کر
اولاد کیسامنے اپنے بڑوں کی شکایت مت کر

امانت ظاہر مت کر
زیادہ ضرورت ظاہر مت کر
پیٹ کی طاقت ظاہر مت کر
اپنی تجارت کا فائدہ اور حال ظاہر مت کر
دل کا بھید ظاہر مت کر
کسی کا عیب ظاہر مت کر

بحث کرنے میں جاہل سے شکست کھالے
زبان چلانے میں عورت سے شکست کھالے
لڑائی لڑنے میں بیوی سے شکست کھالے
مال خرچ کرنے میں شیخی خور سے شکست کھالے
علم و ہنر کے اظہار میں استاد سے شکست کھالے

بہادر مقابلہ کے وقت آزمایا جاتا ہے
امانتدار مفلسی کے وقت آزمایا جاتا ہے
بُردبار کو غصہ آنیکے وقت آزمایا جاتا ہے
دوست مصیبت کے وقت آزمایا جاتا ہے
عورت کی محبت کو فاقہ کے وقت آزمایا جاتا ہے

ماں باپ کا حکم چاہے ناگوار ہو قبول کرلے
اپنی غلطی چاہے ذلت ہو قبول کرلے
نصیحت کی بات چاہے کڑوی ہو قبول کرلے
بھائی کا عذر چاہے دل و دماغ نہ مانے قبول کرلے
غریب کی دعوت چاہے تکلیف دہ ہو قبول کرلے

نہ کہے اور کر دے یہ جواں مردی اور اولوالعزمی ہے
تھوڑا کرے اور بہت احسان جتائے یہ خصلت کمینوں کی ہے
بہت کر کے بھول جائے یہ خصلت عالی مرتبہ والوں کی ہے
نہ کہے اور نہ کرے یہ پست ہمتی اور بزدلی ہے
نہ کرے اور نہ کرنے دے یہ رزالت ہے

کھانے پینے کے یاروں کا بھروسہ نہیں
غیر عورت کی محبت کا بھروسہ نہیں
ابر کے سایے کا بھروسہ نہیں
تندرستی اور زندگی کا بھروسہ نہیں
غرض مند کی دوستی کا بھروسہ نہیں

جان کر کھوٹا [illegible] مت چلا
کسی کو غلط راستے [illegible] مت چلا
دوسروں کے درمیان بات مت [illegible]
محلہ اور بازار میں تیر سواری مت چلا
بات کرتے وقت آنکھیں اور ہاتھ مت چلا
اپنی جانب سے کوئی رسم مت چلا
بڑوں کیسامنے زبان مت چلا

جھگڑے اور مقدمہ بازی سے دور بھاگ
فحش ناولوں اور رسالوں سے دور بھاگ
تہمت کی جگہ سے دور بھاگ
بُری صحبت سے دور بھاگ
پیٹھ پیچھے برائی کرنے اور شر سے دور بھاگ

بے ادبی کرنے سے بدنصیبی آتی ہے
فضول خرچی کرنے سے مفلسی آتی ہے
یتیم بیوہ کا مال کھانے سے پریشانی آتی ہے
مصیبت اور تکلیف میں صبر کرنے سے راحت آتی ہے
بڑوں کی صحبت میں بیٹھنے سے آداب و عقل آتی ہے

بے موقع بولنے سے چپ رہنا بہتر ہے
بے عزتی کی زندگی سے موت بہتر ہے
جھگڑا مول لینے سے غم کھا لینا بہتر ہے
چھچھورے آدمی کی مدد سے فاقہ کشی بہتر ہے
خوف و ذلت کے حلوے سے خشک روٹی بہتر ہے

جو بے غرض محض اللہ کیلئے دوستی رکھتا ہو دوستی کے قابل ہے
جو عقل و حکمت کی باتیں بتائے دوستی کے قابل ہے
دوسروں کے عیب چھپانے والا دوستی کے قابل ہے
احسان کر کے بھول جانے والا دوستی کے قابل ہے
جو کبھی جھوٹ نہ بولتا ہو دوستی کے قابل ہے

[illegible] کو تکلیف نہ دے
کسی کو غلط مشورہ نہ دے
عورت کو زیادہ آزادی نہ دے

دوست کے دشمن اور دشمن کے دوست سے دوستی کبھی مت کر
جس شخص سے ماں باپ منع کریں دوستی کبھی مت کر
چھچھورے اور شیخی خورے سے دوستی کبھی مت کر
غرض مند اور لالچی سے دوستی کبھی مت کر
بے کار اور مکار سے دوستی کبھی مت کر

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

اچھی باتیں

قوت فکر و عمل پہلے فنا ہوتی ہے
تب کسی قوم کی شوکت پہ زوال آتا ہے

ہندی پنجابی

جوانی میں عبادت ضرور کر	[illegible] نہیں چلتی	بدمزاج محبت سے دور رہے گا	ماں باپ کا دل کبھی مت مار
ماں باپ کی خدمت ضرور کر	مالداروں کے سامنے غریب کی نہیں چلتی	بدعاملہ عزت سے دور رہے گا	کسی کا مال کبھی مت مار
دسترخوان کو وسیع ضرور کر	[illegible] کسی کی حکومت نہیں چلتی	بے ادب خوش نصیبی سے دور رہے گا	اپنی بیوی کو کبھی مت مار
صدقہ اور خیرات ضرور کر	ظالم کے سامنے کوئی حجت نہیں چلتی	لالچی اطمینان سے دور رہے گا	کسی کمزور کو کبھی مت مار
سچے دوست کی تلاش ضرور کر	موت کے سامنے کوئی حکمت نہیں چلتی	آرام طلب ترقی سے دور رہے گا	دوسرے کے بچہ کو کبھی مت مار
ہر بڑے کا ادب ضرور کر	بد دیانت کی دکان نہیں چلتی	حریص دل کے چین سے دور رہے گا	کسی کے حق کو کبھی مت مار

بہترین نصیحتیں ... [illegible] زرین

تین چیزیں	انسان کو زندگی میں ایک بار ملتی ہیں	والدین ۔ حسن ۔ جوانی
تین چیزیں	کبھی چھوٹی نہ سمجھیں	قرض ۔ مرض ۔ فرض
تین چیزیں	خلوص دل سے کرنی چاہیئے	رحم ۔ کرم ۔ دعا
تین چیزیں	کسی کا انتظار نہیں کرتیں	وقت ۔ موت ۔ گاہک
تین چیزیں	ہر ایک کی جدا جدا ہوتی ہیں	صورت ۔ سیرت ۔ قسمت
تین چیزیں	بھائی کو بھائی کا دشمن بنا دیتی ہیں	زن ۔ زر ۔ زمین
تین چیزیں	پردہ چاہتی ہیں	کھانا ۔ دولت ۔ عورت
تین چیزیں	یاد رکھنا ضروری ہیں	سچائی ۔ فرائض ۔ موت
تین چیزیں	انسان کو ذلیل کرتی ہیں	چوری ۔ چغلی ۔ جھوٹ
تین چیزیں	اصل مقصد سے روکتی ہیں	بدچلنی ۔ غصہ ۔ طمع
تین چیزیں	ہر ایک کو پیاری ہوتی ہیں	عورت ۔ دولت ۔ اولاد
تین چیزیں	کوئی دوسرا نہیں چرا سکتا	عقل ۔ علم ۔ ہنر
تین اشخاص	غم میں مبتلا رہتے ہیں	حاسد ۔ کاہل ۔ وہمی
تین چیزیں	نکل کر واپس نہیں آتیں	تیر کمان سے ۔ بات زبان سے ۔ جان جسم سے
تین اشخاص	اپنی عادت پر مجبور ہیں	سچائی پسند سچائی پر ۔ سخی سخاوت پر ۔ ظالم ظلم پر
تین اشخاص	وقت پر پہچانے جاتے ہیں	صابر مصیبت پر ۔ بہادر مقابلہ پر ۔ بھائی ضرورت پر

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

اقوالِ زرّیں

رشوت انصاف کو کھا جاتی ہے
توبہ گناہ کو کھا جاتی ہے
غیبت عمل کو کھا جاتی ہے
نیکی بدی کو کھا جاتی ہے
فکر عمر کو کھا جاتی ہے
صدقہ بلا کو کھا جاتا ہے
غصہ عقل کو کھا جاتا ہے
عدل ظلم کو کھا جاتا ہے
تکبّر علم کو کھا جاتا ہے
جھوٹ رزق کو کھا جاتا ہے
سب سے بڑا بہادر بدلہ نہ لینے والا ہے
سب سے اچھی خیرات معاف کر دینا ہے
سب سے اچھا نشہ خدمتِ خلق ہے
مرد کی خوبصورتی اس کی فصاحت ہے
تواضع سے درجہ بلند ہوتا ہے
خیرات سے مال میں کمی نہیں آتی
تدبیر جیسی کوئی دانائی نہیں
علم سے بڑھ کر کوئی دولت نہیں

مبارک ہیں وہ لوگ جو اپنی نیک تدبیر اس وقت بھی جاری رکھتے ہیں جب زمانہ اُن کا مذاق اُڑا رہا ہوتا ہے

تعلیم کے ساتھ عمل اور دولت کے ساتھ شرافت نہ ہو تو دونوں بیکار ہیں

دولت سے زیورات خریدے جا سکتے ہیں، حسن نہیں

دولت سے خوشامد خریدی جا سکتی ہے، محبت نہیں

دولت سے گدگدے بستر خرید سکتے ہیں، نیند نہیں

دولت سے لڑکا خریدا جا سکتا ہے، بیٹا نہیں

دولت سے کتابیں خرید سکتے ہیں، علم نہیں

دولت عزت کے، شوکت حکمت کے، سلطنت عبادت کے، صورت سیرت کے اور شجاعت سخاوت کے مقابلے میں ہیچ ہے

مستقل مزاجی کانٹوں کو پھولوں میں تبدیل کر دیتی ہے

پیسہ جسمانی راحت خرید سکتا ہے، روحانی مسرت نہیں

پیسہ زندگی لے سکتا ہے، دے نہیں سکتا

پیسہ ناری خرید سکتا ہے، استری نہیں

پیسہ عینک خرید سکتا ہے، آنکھوں کی روشنی نہیں

پیسے سے دوا خرید سکتے ہیں، صحت نہیں

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

I do my thing
and you do your thing
I am not in this world to
live up to your expectations.
And you are not in this
world to live up to mine.
You are you and I am I
And if by chance
we find each other,
it's beautiful.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Start Something!

Throughout history
most great
civilizations that
have declined
were victims of
stagnation rather than
conquest.
Apathy,
indifference,
detachment
led to decay.
In our own country today
we find more people who
prefer the role of
spectator rather
than participant.
Whenever a problem arises,
the spectator asks,
"Why don't *they* do something?"
They can't help the police
to maintain law and order.
You can!
They are not responsible
for the conditions of your schools.
You are!
They can't give your community
good government.
You can!
Every civic group,
every business,
every sports club,
every good tradition,
every worthwhile institution
began with a need,
a vision
turned into reality by someone
alive, responsible
and innovative.
To the people who sit back and
ask,
"Why don't *they* do something?"
we ask,
"Why don't *you*?"

This message is from... Newsweek

COPYRIGHT© 1964 BY NEWSWEEK, INC.

GALLERII - SECUNDERABAD - INDIA NO P105

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह जादूगर

देवदत्त बाली

"...... काशी की दूसरी स्मरणीय घटना एक नास्तिक जादूगर से मेरी रक्षा थी। काशी में प्रसिद्ध हुआ कि एक वेद शास्त्र का ज्ञाता बड़ा नास्तिक आया है जिसके दोनों ओर दिन में मशालें जलती हैं। जो भी पण्डित उससे शास्त्रार्थ करने जाता है, उसके तेज से दब जाता है। मुझे भली प्रकार याद है कि माताजी उन दिनों हमें बाहर नहीं जाने देती थीं—इस भय से कि कहीं हम दोनों भाई जादूगर के फन्दे में न फंस जाएं। पिता जी ने पीछे बताया था कि वह प्रसिद्धि अवधूत दयानन्द की थी। माता जी को क्या मालूम था कि उनके देहान्त के पीछे उनका प्यारा बच्चा उसी जादूगर के उपदेश से प्रभावित होकर उसका अनुयायी बन जाएगा।" ये शब्द अमर हुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपनी आत्मकथा 'कल्याणमार्ग का पथिक' में लिखे हैं।

और युवक मुंशीराम (पीछे स्वामी श्रद्धानन्द) इस जादूगर के फन्दे में कैसे फंसा और उस जादूगर का जादू क्या था, यह भी उन्हीं के शब्दों में सुनिये—

'स्वामी महाराज के बाँस बरेली पहुंचते ही कोतवाल साहब (मेरे पिताजी) को हुक्म मिला कि पण्डित दयानन्द सरस्वती के व्याख्यानों के अन्दर फ़िसाद को रोकने का बन्दोबस्त कर दें। पिताजी स्वयं सभा में गए और स्वामी जी महाराज के व्याख्यानों से ऐसे प्रभावित हुए कि उनके सत्संग से मुझ नास्तिक की संशय-निवृत्ति का उन्हें विश्वास हो गया। रात को घर आते ही मुझे कहा—'बेटा मुंशीराम! एक दण्डी सन्यासी आए हैं, वड़े विद्वान् और योगीराज हैं। उनकी वक्तृता सुनकर तुम्हारे संशय दूर हो जाएंगे। कल मेरे साथ चलना।' उत्तर में कह तो दिया कि चलूंगा परन्तु मन में वही भाव रहा कि केवल संस्कृत जानने वाला साधु बुद्धि की बात क्या करेगा। दूसरे दिन बेगम बाग़ की कोठी में पिताजी के साथ पहुंचा जहां व्याख्यान हो रहा था। उस दिव्य आदित्य मूर्ति को देख कुछ श्रद्धा पैदा हुई, परन्तु जब पादरी टी० जे० स्काट और दो-तीन अन्य यूरोपियनों को उत्सुकता से बैठे देखा तो श्रद्धा और भी बढ़ी। अभी दस मिनट वक्तृता नहीं सुनी थी कि मन में विचार किया—"यह विचित्र व्यक्ति है कि केवल संस्कृतज्ञ होते हुए ऐसी युक्तियुक्त बातें करता है कि विद्वान् दंग हो जाएं।' व्याख्यान परमात्मा के निज नाम ओ३म् पर था। वह पहले दिन का आत्मिक आह्लाद कभी भूल नहीं सकता। नास्तिक रहते हुए भी आत्मिक आह्लाद में निमग्न कर देना ऋषि-आत्मा का ही काम था।

उसी दिन दण्डी स्वामी से निवेदन किया गया कि टाउनहाल मिल गया है इसलिए कल से व्याख्यान वहां शुरू होंगे। स्वामी जी ने उच्च स्वर में कह दिया कि सवारी समय पर पहुंच जाया करेगी तो वे तैयार मिलेंगे।

टाउनहाल में जबतक "नमस्ते", "पोप", "पुराणी", 'जैनी' "किरानी", "कुरानी" इत्यादिक परिभाषाओं का अर्थ बताते रहे तब तक तो पिता जी श्रद्धा से सुनते रहे, परन्तु जब मूर्ति-पूजा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वरावतार का खण्डन होने लगा तो जहां एक ओर मेरी श्रद्धा बढ़ने लगी वहाँ पिताजो ने आना बन्द कर दिया और अपने एक मातहत थानेदार की ड्यूटी लगा दी। २४ अगस्त की शाम तक मेरा समय-विभाग यह रहा कि दिन का भोजन करके दोपहर को ही बेगम बाग़ की कोठी पहुंच ड्योढ़ी पर बैठ जाता। २॥ और ४ बजे के बीच में जब ऋषि का दरबार लगता तो आज्ञा होते ही जो पहला मनुष्य आचार्य ऋषि को प्रणाम करता वह मैं था। प्रश्नोत्तर होते रहते और मैं उनका आनन्द लेता रहता। व्याख्यान से २० मिनट पहले सब दर्बारी विदा हो जाते और आचार्य चलने की तैयारी कर लेते। मैं अपनी वैगनट पर सीधा टाउनहाल पहुचता। व्याख्यान का आनन्द उठाकर उस समय तक घर न लौटता जब तक कि आचार्य दयानन्द की वग्घी उनके डेरे की ओर न चल देती। २५, २६, २७ अगस्त को ऋषि दयानन्द के पादरी स्काट के साथ तीन शास्त्रार्थ हुए। विषय प्रथम दिन ईश्वरावतार; द्वितीय दिवस पुनर्जन्म, और तीसरे दिन यह था कि मनुष्य के पाप विना फल भुगते क्षमा किए जाते हैं या नहीं। पहले दो दिन लेखकों में मैं भी था।

मुझे आचार्य दयानन्द के सेवकों से मालूम हुआ कि वे नित्य प्रात: शौच से निवृत्त होकर केवल कोपीन पहिने लट्ठ हाथ में लिए, ३॥ बजे बाहर निकल जाते हैं और ६ बजे लौटकर आते हैं। मैंने निश्चय किया कि उनका पीछा करके देखना चाहिए कि बाहर जाकर वे क्या करते हैं। दबदब-ए-केसंरी अखबार के एडिटर भी मेरे साथ हो लिए। ठीक ३॥ बजे बाहर निकल कर आचार्य चल दिए। हम पीछे हो लिए। पाव मील धीरे २ चलकर वे इस तेजी से चले कि मुझ सा शीघ्रगामी जवान भी उन्हें निगाह में न रख सका। आगे तीन मार्ग फटते थे। हमें कुछ पता न लगा कि किधर गये। दूसरे प्रात:काल हम २॥ वजे से ही घात में उस जगह छिपकर जा बैठे जहां से तीन मार्ग फटते थे। उस विशाल रुद्र मूर्ति को आते देखकर हम भागने को तैयार हो गये। वे तेज चलते थे और मैं पीछे भाग रहा था। बीच में एक आध मील की दौड़ भी रुद्र स्वामी ने लगाई। परन्तु वहां मैदान था। मैंने भी उनको आंख से ओझल

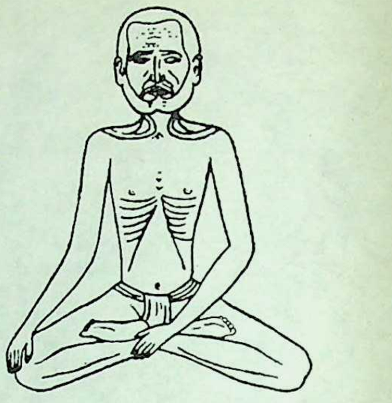

Swami Virjananda Saraswati

न होने दिया। अन्त को पाव मील धीरे २ चलकर एक पीपल के वृक्ष तले बैठ गये। घड़ी से मिलाया तो पूरे डेढ़ घण्टे आसन जमाये समाधि में स्थित रहे। प्राणायाम करते नहीं प्रतीत हुए। आसन जमाते ही समाधि लग गई। उठकर दो अंगड़ाइयां लीं और टहलते हुए अपने तत्कालीन आश्रम की ओर चल दिये।

एक व्याख्यान में वे पौराणिक तथा आचार-भ्रष्ट कहानियों का खण्डन कर रहे थे। उस समय पादरी स्काट, मिस्टर एडवर्ड्स कमिश्नर, मिस्टर रीड कलेक्टर, १५ वा २० अंग्रेज़ों सहित उपस्थित थे। आचार्य ने अन्य कहानियों में पंचकुंवारियों की कल्पना पर कटाक्ष किया और एक से अधिक पति रखने वाली द्रौपदी, तारा, मन्दोदरी आदि के किस्से सुनाकर श्रोतागण के धार्मिक भावों को अपील की। स्वामी जी के कथन में हास्य-रस अधिक होता था, इसलिए श्रोतागण थकते न थे। साहब लोग हंसते और आनन्द लूटते रहे। फिर आचार्य बोले—"पुराणियों की तो यह लीला है, अब किरानियों की लीला सुनो। ये ऐसे भ्रष्ट हैं कि कुमारी के पुत्र होना बतलाते, फिर दोष सर्वज्ञ शुद्धस्वरूप परमात्मा पर लगाते और ऐसा घोर पाप करते हुए तनिक भी लज्जित नहीं होते।" इतना सुनते ही कमिश्नर और कलेक्टर के मुंह क्रोध के मारे लाल हो गये परन्तु आचार्य का भाषण उसी बल से चलता रहा और अन्त तक ईसाई मत का ही खण्डन होता रहा।

बाबू लक्ष्मीनारायण पांच सरकारी खज़ानों के ख़ज़ांची थे जिनके अतिथि होकर स्वामी दयानन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी बेगम बाग़ वाली कोठी में रहते थे। दूसरे दिन प्रात:काल ख़ज़ांची लक्ष्मीनारायण को कमिश्नर साहब के यहां से बुलावा आया। साहब ने कहा अपने पण्डित स्वामी को समझा दो कि सख़्ती से काम न लिया करें। हम ईसाई तो सभ्य हैं, वाद-विवाद की सख़्ती से नहीं घबराते परन्तु यदि जाहिल हिन्दू मुसलमान भड़क उठे तो तुम्हारे पण्डित स्वामी के व्याख्यान बन्द हो जाएंगे।" ख़ज़ांचा जी यह सन्देश आचार्य तक पहुंचाने की प्रतिज्ञा कर लौटे। ख़ज़ांची जी चाहते थे कि बात छेड़ने वाला कोई अन्य मिल जाए जिससे वह आचार्य की झाड़ से कुछ बच जाएं। जब कोई खड़ा न हुआ तो मुझ नास्तिक को खड़ा किया गया परन्तु मैंने यह कहकर अपना पीछा छुड़ाया कि ख़ज़ांची साहब कुछ कहना चाहते हैं क्योंकि कमिश्नर साहब ने उनको बुलाया था। अब सारी मुसीबत ख़ज़ांची जी पर टूट पड़ी। ख़ज़ांची साहब कहीं सिर खुजलाते हैं, कहीं गला साफ़ करते हैं। पांच मिनट तक आश्चर्यित रहकर आचार्य बोले—"भाई! तुम्हारा तो कोई काम करने का समय ही नियत नहीं, तुम समय के मूल्य को नहीं समझते। मेरे लिए समय अमूल्य है। जो कुछ कहना हो कह दो।" इस पर ख़ज़ांची बोले—'महाराज! अगर सख़्ती न की जाए तो क्या हर्ज है? असर भी अच्छा पड़ता है। अंग्रेज़ों को नाराज़ करना भी अच्छा नहीं।' बड़ी कठिनाई से अटक अटक कर ये वचन ग़रीब के मुख से निकले। महाराज हँसे और कहा—"अरे! बात क्या थी जिसके लिए गिड़गिड़ाता है। मेरा इतना समय भी नष्ट किया। साहब ने कहा होगा तुम्हारा पण्डित कड़ा बोलता है, व्याख्यान बन्द हो जाएंगे, यह होगा, वह होगा। अरे भाई! मैं हौवा तो नहीं कि तुझे खालूंगा। उसने तुझसे कहा, तू सीधा मुझ से कह देता। व्यर्थ समय क्यों गंवाया?" एक विश्वासी पौराणिक हिन्दू बैठा था, बोला—"देखो! यह तो कोई अवतार हैं, मन की बात जान लेते हैं।"

उस शाम के व्याख्यान को कौन सुनने वाला भूल सकता है? मैंने बड़े बड़े वाग्विशारदों के व्याख्यान सुने हैं परन्तु जो तेज आचार्य के उस दिन के सीधे सादे शब्दों से निकल कर सारी सभा को उत्तेजित कर गया उसके साथ किसकी उपमा दूं। उस दिन आत्मा के स्वरूप पर व्याख्यान था। पूर्व दिन के सब अंग्रेज़ पादरी स्काट के अतिरिक्त उपस्थित थे। व्याख्यानों में सत्य के बल का विषय

आया। सत्य की व्याख्या करते हुए आचार्य ने कहा—'लोग कहते हैं कि सत्य को प्रकट न करो, कलेक्टर क्रोधित होगा, कमिश्नर अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा। अरे! चक्रवर्ती राजा भी क्यों न अप्रसन्न हो, हम तो सत्य ही कहेंगे"। इसके पीछे एक श्लोक पढ़कर आत्मा की स्तुति की—न शस्त्र उसे काट सके, न आग उसे जला सके, न पानी उसे गला सके और न हवा उसे सुखा सके। वह नित्य अमर है। फिर गरजते हुए शब्दों में बोले—"यह शरीर तो अनित्य है, इसकी रक्षा में प्रवृत्त होकर अधर्म करना व्यर्थ है। इसे जिस मनुष्य का जो चाहे नाश कर दे"। फिर चारों ओर तीक्ष्ण दृष्टि डालकर सिंहनाद करते हुए कहा—"किन्तु वह शूरवीर पुरुष मुझे दिखाओ जो मेरी आत्मा का नाश करने का दावा करे। जब तक ऐसा वीर इस संसार में दिखायी नहीं देता तब तक मैं यह सोचने के लिए भी तैयार नहीं कि मैं सत्य को दबाऊंगा वा नहीं"। सारे हाल में सन्नाटा छा गया। रूमाल का गिरना भी सुनाई देता था।

उठते ही ऋषि दयानन्द ने पूछा "भक्त स्काट आज दिखाई नहीं दिये।" पादरी साहब किसी व्याख्यान में भी अनुपस्थित नहीं होते थे और अलग भी प्रेम से वार्तालाप किया करते थे, इसलिए ऋषि को उनसे बड़ा प्रेम हो गया था। किसी ने कहा—पास के गिरजे में आज उनका व्याख्यान था। सीढ़ियों के नीचे उतरते ही ऋषि ने कहा—"चलो भक्त स्काट का गिरजा देख आवें।' अभी तीन चार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौ आदमी खड़े थे। वह सारी भीड़ लेकर गिरजा पहुंचे। वहां व्याख्यान समाप्त हो चुका था। श्रोता सौ के लगभग थे। पादरी साहब नीचे उतर आए, स्वामी जी को वेदी (पुलपिट) पर ले गये और कहा कि कुछ उपदेश दीजिए। आचार्य ने खड़े खड़े ही बीस मिनट तक मनुष्यपूजा का खण्डन किया।

एक दिन आचार्य को पता लगा कि खज़ांची जी का सम्बन्ध किसी वेश्या से है। उनके आने पर पूछा—"तुम्हारा वर्ण क्या है?" उन्होंने कहा—क्या कहूं? आप तो गुण कर्मानुसार व्यवस्था मानते हैं।" आचार्य बोले—"यों तो सब वर्णसंकर है परन्तु तुम जन्म के क्या हो?" उत्तर मिला कि खत्री। महाराज बोले—"यदि खत्री के वीर्य से वेश्या में पुत्र उत्पन्न हो तो उसे क्या कहोगे?" खज़ांची ने सिर नीचा कर लिया। इस पर महाराज ने कहा—"सुनो भाई! हम किसी का मुलाहज़ा नहीं करते। हम तो सत्य ही कहेंगे।" खज़ांची जी ने उस वेश्या को कहीं अन्यत्र भिजवा दिया।

यद्यपि आचार्य दयानन्द के उपदेशों ने मुझे मोहित कर लिया था तथापि मैं मन से सोचा करता था कि यदि ईश्वर और वेद के ढकोसले को पण्डित दयानन्द स्वामी तिलांजलि दे दें तो फिर कोई भी विद्वान उनकी अपूर्व युक्ति और तर्कना-शक्ति का सामना करने वाला न रहे। मुझे अपने नास्तिकपन का उन दिनों अभिमान था। एक दिन ईश्वर के अस्तित्व पर आक्षेप कर डालें। पांच मिनट के प्रश्नोत्तर में ऐसा घिर गया कि जिह्वा पर मुहर लग गई। मैंने कहा—"महाराज! आपकी तर्कना बड़ी तीक्ष्ण है। आपने मुझे चुप तो करा दिया परन्तु यह विश्वास नहीं दिलाया कि परमेश्वर की कोई हस्ती (अस्तित्व) है"। दूसरी बार फिर तैयारी करके गया परन्तु परिणाम पूर्ववत् ही निकला। तीसरी बार फिर पूरी तैयारी करके गया परन्तु मेरे तर्क को फिर पछाड़ मिली। मैंने फिर अन्तिम उत्तर वही दिया—"महाराज! आपकी तर्कनाशक्ति बड़ी प्रबल है, आपने मुझे चुप तो करा दिया, परन्तु यह विश्वास नहीं दिलाया कि परमेश्वर की कोई हस्ती है।" महाराज पहले हँसे, फिर गम्भीर स्वर से कहा, "देखो तुमने प्रश्न किए, मैंने उत्तर दिए। यही युक्ति की बात थी। मैंने कब प्रतिज्ञा की थी कि मैं तुम्हारा विश्वास परमेश्वर पर करादूंगा। तुम्हारा परमेश्वर पर विश्वास उस समय होगा जब वह प्रभु स्वयं तुम्हें विश्वासी बना देंगे"। अब स्मरण आता है कि नीचे लिखा उपनिषद्वाक्य उन्होंने पढ़ा था—

'आचार्या द्धयैव विद्या साधिष्ठं प्रापत्'

"It is only knowledge learnt from a preceptor that is fruitful."

—*UPANISHAD*

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न,
मेधया न बहुना श्रुतेन।
यमेवैष व्रणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा
विवृणुते तनु स्वाम्। कठ० १।२।२२

उस जादूगर का प्रभाव कैसा रहा। इसे श्रद्धानन्द जी ने उस जादूगर (महर्षि दयानन्द सरस्वती) के प्रति अपनी आत्मकथा को समर्पित करते हुए उसके दिवंगत होने के ४१ वर्ष बाद यों लिखा :—

"ऋषिवर! तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे ४१ वर्ष हो चुके, परन्तु तुम्हारी दिव्य मूर्ति मेरे हृदयपट पर अब तक ज्यों की त्यों अंकित है। मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरण-धर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते गिरते तुम्हारे स्मरणमात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है। तुमने कितनी गिरी हुई आत्माओं की काया पलट दी, इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है। परमात्मा के बिना, जिसकी पवित्र गोद में तुम इस समय विचर रहे हो, कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशों से निकली हुई अग्नि ने ससार में प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया है? परन्तु अपने विषय में कह सकता हूं कि तुम्हारे सहवास ने मुझे कैसी गिरी हुई अवस्था से उठाकर सच्चा जीवन लाभ करने के योग्य बनाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं क्या था इसे इस कहानी में मैंने छिपाया नहीं, मैं क्या बन गया और अब क्या हूं, वह सब तुम्हारी कृपा का ही परिणाम है। इसलिए इससे बढ़कर मेरे पास तुम्हारी जन्मशताब्दि पर और कोई भेंट नहीं हो सकती कि तुम्हारा दिया आत्मिक जीवन तुम्हें ही अर्पण करूं। तुम वाणी द्वारा प्रचार करने वाले केवल तत्ववेत्ता ही न थे परन्तु जिन सच्चाइयों का तुम संसार में प्रचार करना चाहते थे उनको क्रिया में लाकर सिद्ध कर देना भी तुम्हारा ही काम था। भगवान् कृष्ण की तरह तुम्हारे लिए भी तीनों लोकों में कोई कर्तव्य शेष नहीं रह गया था, परन्तु तुमने भी मानव-संसार को सीधा मार्ग दिखलाने के लिए कर्म की उपेक्षा नहीं की।"

भगवन्! मैं तुम्हारा ऋणी हूं। उस ऋण से मुक्त होना चाहता हूं। इसलिए जिस परम पिता की गोद में तुम परमानन्द का अनुभव कर रहे हो, उसी से प्रार्थना करता हूं कि मुझे तुम्हारा सच्चा शिष्य बनने की शक्ति प्रदान करें।

और यह बात नहीं कि उस जादूगर के जादू ने दुर्व्यसनों से लिप्त युवक मुन्शीराम को ही श्रद्धानन्द सा तपस्वी बना दिया हो। तहसीलदार अमींचन्द की कथा भी वैसी ही है जिसने ऋषि के जादू-भरे वचनों ("अमींचन्द, हो तो हीरे, पर कीचड़ में पड़े हो") से प्रभावित हो अपने पाप-पंक मय जीवन से उबरकर भक्त-कवि का पद पाया और फिर इन शब्दों में उस जादूगर के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन किया :—

"तुम्हारी कृपा से जो आनन्द पाया, वाणी से जाए वह क्योंकर बताया।"

और

"तुम्हारी कृपा से अजी मेरे भगवन्! मेरी ज़िन्दगी ने अजब पलटा खाया।"

यह जादूगर जिसे काशी वालों ने 'नास्तिक' की प्रसिद्धी दी थी, कितना बड़ा आस्तिक था इसका पता पं० गुरुदत्त विद्यार्थी की कथा से लगता है। गुरुदत्त जैसा कट्टर नास्तिक इस जादूगर से एक ही बार भेंट करके ऐसा आस्तिक बना कि अपना जीवन-प्रसून धर्म-प्रचार में ही न्यौछावर कर दिया।

वह जादूगर कैसा आस्तिक था, इसका परिचय उसी भक्त दयानन्द की प्रार्थनाओं में पाइए :

"आपका तो स्वभाव ही है कि अंगीकृत को कभी नहीं छोड़ते। सो आप सदैव हमको सुख देंगे। यह हम लोगों को दृढ़ निश्चय है।"

"हम सब लोग आपकी प्राप्ति की अत्यन्त इच्छा करते हैं। सो आप अब शीघ्र हमको प्राप्त होओ जो प्राप्त होने में आप थोड़ा भी विलम्ब करेंगे तो हमारा कुछ भी ठिकाना न लगेगा।"

"किंच हम लोग तो आपके प्रसन्न करने में कुछ भी समर्थ नहीं है, सर्वथा आपके अनुकूल वर्तमान नहीं कर सकते, परन्तु आप तो अधमोद्धारक हैं, इससे हमको स्वकृपाकटाक्ष से सुखी करें।"

"जैसे पुत्र लोग अपने पिता के घर में आनन्दपूर्वक निवास करते हैं वैसे ही जो परमात्मा के भक्त हैं वे सदा सुखी ही रहते हैं।"

ऋषि दयानन्द के उपकार

१. एक ईश्वरोपासना; एक सन्ध्या
२. वेदों का प्रचार तथा ऊंचा स्थान
३. स्त्री-जाति का सुधार
४. विधवाओं का पुनरुद्धार
५. शुद्धि का द्वार खोल देना
६. अछूतों का उद्धार
७. संस्कृत विद्या का प्रचार
८. वैदिक संस्कारों की एकता
९. जातीय प्रेम तथा सहानुभूति
१०. स्वदेश-प्रेम और भक्ति
११. देश की स्वतन्त्रता की सदिच्छा
१२. बाल-विवाह को रोकना
१३. उत्साह, उद्योग और आशा का भाव
१४. प्राचीन आर्य-ग्रंथों से प्रेम
१५. आर्यजाति के संगठन का विचार सबको देना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपावली

ले उमंग सब घूम रहे हैं,
आई आज दिवाली ।
जगमग-जगमग चमक रही है,
देखो रजनी काली ॥
दीपों की पांते हैं सजतीं,
मन में खुशियां भरतीं ।
सूनेपन को दूर हटा कर,
सभी उदासी हरतीं ॥
उधर दुकानें सजी सजीली,
अपनी शान दिखातीं ।
इधर नारियां घर-घर मिलकर,
गातीं और बजातीं ॥
बच्चे आतिशबाजी लेकर,
कितने खेल रचाते ।
कहीं पटाखे ठाह-ठां उड़ते,
मन में मोद बढ़ाते ॥
भला न सुख हो क्योंकर इसदिन,
राम-राज्य की बेला ।
लगा अयोध्या में था इस दिन,
राज तिलक का मेला ॥
मान पिताजी की आज्ञा वनमें,
चौदह वर्ष बिताये ।
भला खुशी अब किसे न होगी,
राम लौट घर आये ॥

(सरल भाषा नामक पुस्तक से)

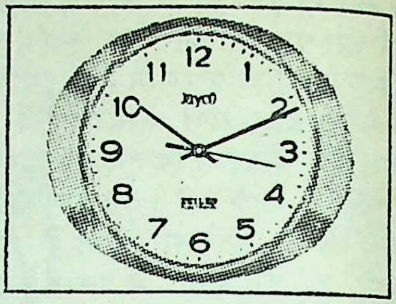

समय सूचक यंत्र

समय सूचक यंत्र,
शिक्षा दायक मंत्र ।
छोटी बड़ी सुईयां हमको—
नियमों पर चलना सिखाती हैं ।
अनुशासन में रहना सिखाती हैं ।।
समय सूचक यंत्र,
शिक्षा दायक मंत्र ।
छोटी बड़ी सूईयां मिल कर—
केन्द्र पर चलना सिखाती हैं ॥
भेद भाव मिटाना सिखाती हैं ॥
समय सूचक यंत्र,
शिक्षा दायक मंत्र ।
सुईयां मिलती और बिछुड़ती—
पर हिम्मत नहीं हारती हैं ।
छुटे साथी को फिर से पाती है ॥
शिक्षा ग्रहण करो,
जीवन महान करो ।
नियमों पर चलना सीखो ।
बिछुड़ों को मिलाना सीखो ।
भेद-भाव मिटाना सीखो ॥

—भगवान दास मेहता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

आर्य समाज के नियम

स्वामी दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्यसमाज के स्वीकृत दस नियम निम्नलिखित हैं। समाज के नियमों को इसी आधार पर वर्तमान रुप दिया गया है :—

(१) ईश्वर एक और अमूर्त्त है। वह सब विद्याओं का और उनसे जो पदार्थ जाने जाते हैं, उनका आदिकारण है।

(२) वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वे सत्य ज्ञान के आदि-स्रोत हैं।

(३) सत्य को ग्रहण करने एवं असत्य को त्यागने के लिए तैयार रहना चाहिए।

(४) समाज का संगठन गुण-कर्मानुसार वर्णव्यवस्था के आधार पर होना चाहिए।

(५) व्यक्ति के जीवन की सफलता आश्रम-व्यवस्था के अंगीकार करने से ही हो सकती है।

(६) परमात्मा की दृष्टि में मनुष्यमात्र समान हैं। गुणों और कर्मों से उनमें भिन्नता आती है। वेदपर्यन्त विद्या प्राप्त करने, परमात्मा की प्रार्थना-उपासना करने, तथा अन्य मानवीय अधिकारों के उपभोग का मनुष्य मात्र को सम अधिकार है। इस कारण स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखना या किन्हीं जातियों को नीच, पतित या अछूत बता कर उनके मनुष्यता के अधिकार को छीनना अधर्म है।

(७) बहुविवाह वैदिक सिद्धान्त के विरुद्ध है। बाल-विधवाओं का पुनर्विवाह हो जाना चाहिए। स्त्रियों को यज्ञादि शुभ कार्यों में पुरुष का समान हिस्सेदार मानना चाहिए। सती-दाह की प्रथा अवैदिक है।

(८) रुढ़िवाद और 'बाबा-वाक्यं प्रमाणं' सर्वथा अनार्य सिद्धान्त हैं। धर्म के चार लक्षण हैं—श्रुति, स्मृत्ति, सदाचार और आत्मनः प्रिय। अन्तिम निर्णय करने के लिए बुद्धि और तर्क का सहारा लेना ज़रूरी है।

(९) मूर्ति-पूजा के रूप में ईश्वर-पूजन के स्थान पर निराकार ईश्वर की उपासना करो, मृतकों के श्राद्ध के स्थान पर जीवित माता-पिता और गुरुजनों की सेवा और कर्म-विहीन संन्यास के स्थान पर संसार का उपकार करने वाला संन्यास ग्रहण करो।

(१०) बालकों एवं बालिकाओं के शिक्षा के सम्बन्ध में—

(क) शिक्षणालयों में प्राचीन गुरुकुलशिक्षा-प्रणाली के अनुसार व्यवस्था हो।

(ख) बालकों तथा बालिकाओं की शिक्षा पृथक-पृथक हो।

(ग) धर्म तथा संस्कृति की शिक्षा देने के लिये आर्य ग्रंथों का आश्रय लें।

(घ) प्राचीन वाङ्मय के साथ-साथ अर्वाचीन भाषाओं तथा विद्याओं की शिक्षा भी आवश्यक होनी चाहिए।

स्वामी जी ने अपने प्रवचनों में मानव को कतिपय अमृतमयी उपदेश दिये हैं, जिनके सार-अंश निम्नलिखित हैं।

(१) मानव असत्य का खंडन करके सत्य को धारण करें एवं अविद्या का त्याग करके विद्या को ग्रहण करें।

"वेद का पढ़ना-पढ़ाना सब आर्यों का परम धर्म है।"
—ऋषि दयानन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) मानव को विद्या, शूरवीरता, बल और बुद्धि की वृद्धि के लिए यत्न करना चाहिए।

(३) मानव को हर कर्म अच्छी तरह से विचार कर एवं सच्चे लगन से करना चाहिये।

(४) मानव हर ऋतुओं में समय के अनुसार आहार-विहार से युक्त होके विद्या, योगाभ्यास और सत्संगों का भलीभाँति सेवन करके ही सुख भोग सकते हैं।

(५) मानव को सभी कामना पूरी करने वाले परमेश्वर की आज्ञा-पालन करके और अच्छी प्रकार पुरुषार्थ से विद्या का अध्ययन, शरीर का बल, मन की शुद्धि, कल्याण की सिद्धि और उत्तम से उत्तम लक्ष्मी की प्राप्ति सदैव करनी चाहिए।

(६) मानव जब तक जीवित रहे, तब तक कर्म करता हुआ ही जीने की इच्छा करे, आलसी न बने।

(७) मानव को चाहिए कि जैसे अपने लिए सुख चाहे, वैसे ही औरों के लिए भी चाहे। कोई भी जिस प्रकार अपने लिए दुःख नहीं चाहता है, वैसे ही औरों के लिए भी न चाहे।

(८) स्त्री-पुरुष सदा रात्रि के १० बजे शयन और रात्रि के पिछले पहर वा ४ बजे उठ के प्रथम हृदय में परमेश्वर का चिन्तन करके धर्म-अर्थ का विचार किया करें। धर्म अर्थ के अनुष्ठान वा उद्योग में यदि कभी पीड़ा भी हो, तो धर्मयुक्त पुरुषार्थ न त्यागे।

(९) जिस घर वा कुल में स्त्रीलोग शोकातुर होकर दुःख पाती हैं, वह कुल शीघ्र नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है और जिस घर वा कुल में स्त्रीलोग आनन्द से, उत्साह और प्रसन्नता से भरी हुई रहती हैं, वह कुल सदा बढ़ता रहता है।

(१०) मानव ! इस जगत् में तुम विद्या, उत्तम शिक्षा, अच्छा स्वभाव, धर्म, योगाभ्यास और विज्ञान को सम्यक् ग्रहण करके मुक्तिसुख के लिए प्रयत्न करो। मानव-जीवन की सफलता इसी में निहित है।

आर्यसमाज के उपनियम

१—इसका नाम 'आर्यसमाज' है।

२—इस समाज के उद्देश्य वही हैं, जो इसके नियमों में वर्णन किए गए हैं।

३—जो लोग आर्यसमाज में नाम लिखाना चाहें और समाज के उद्देश्य के अनुकूल आचरण स्वीकार करें वे आर्यसमाज में प्रविष्ट हो सकते हैं। परन्तु उनकी आयु अठारह वर्ष से न्यून न हो।

४—जो लोग आर्यसमाज में प्रविष्ट होंगे, वे आर्य कहलावेंगे।

५—जो आर्यसमाज के उद्देश्य के विरुद्ध काम करेगा, वह न तो आर्य और न आर्य-सभासद् गिना जावेगा।

६—यह सभा प्रत्येक सप्ताह में न्यून से न्यून एक बार हुआ करेगी।

७—समाज के सब कार्यों के प्रबन्ध के लिए एक अन्तरंग सभा नियुक्त की जावेगी और इसमें तीन प्रकार के सभासद् होंगे। अर्थात्—

(क) प्रतिनिधि, (ख) प्रतिष्ठित और (ग) अधिकारी।

८—अधिकारी छः प्रकार के होंगे—

(क) प्रधान, (ख) उपप्रधान, (ग) मंत्री, (घ) उपमंत्री, (ङ) कोषाध्यक्ष और (च) पुस्तकाध्यक्ष।

९—सब आर्य और सभासदों को संस्कृत व आर्यभाषा (हिन्दी) अवश्य जाननी चाहिए।

१०—सब आर्य और आर्य-सभासदों को उचित है कि उत्सवों पर समाज को दान दिया करें।

११—सब आर्य और आर्य-सभासदों को उचित है कि सुख और दुःख दोनों में परस्पर सहायता किया करें।

१२—चुनाव वर्ष पीछे हुआ करेगा। पुराना अधिकारी फिर नियत हो सकेगा। स्थान रिक्त होने पर अन्तरंग सभा स्वयं चुन सकती है।

१३—विशेष कार्य के लिए उपसभाएं बनाई जा सकती हैं।

१४—अन्तरंग सभा मास में दो बार हो।

१५—एक तिहाई सभासद् सभा कर लेवें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"For you it is a rose
For me it is my heart".

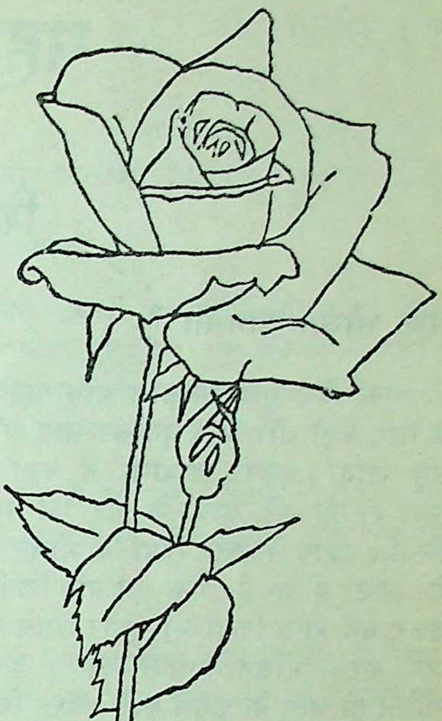

कामना

काश मैं गुलाब होता।
इस दुखमय संसार की।
काँटों भरी राहों की।
सब पीड़ा पी लेता।

गुलाब सदा खिलता है।
काँटों के मध्य में भी।
चुभते कष्टों को पीता है।
जग को मुस्कान देते हुए भी।

इस दुखमय जग में।
यही सबसे ठीक है।
गुलाब बनते रहो।
पीड़ा सहते रहो।

क्षणिक मानव जीवन है।
अल्प यह बन्धन है।
जीवन को जीते हुए।
विषमताओं को पीते चलो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि दयानन्द

शिक्षाप्रद घटनाएं

भ्रष्ट भोजन कौन-सा ?

एक दिन सुखवासीलाल साधु महर्षि दयानन्द के लिए कढ़ी और भात बनाकर लाए और उन्होंने उसे खाया। इसपर ब्राह्मणों ने कहा कि आप भ्रष्ट हो गए जो साधु के घर का भोजन खा लिया। महर्षि ने उत्तर दिया कि भोजन दो प्रकार से भ्रष्ट होता है, एक तो यदि किसी को दुःख देकर धन प्राप्त किया जाए और उससे अन्न आदि क्रय करके भोजन बनाया जाए। दूसरे भोजन मलिन हो जाए या उसमें कोई वस्तु गिर जाए। साधु लोगों का परिश्रम का पैसा है। उनसे प्राप्त किया हुआ भोजन उत्तम है।

मनुष्य का कर्तव्य

लाला जगन्नाथ ने फर्रुखाबाद में महर्षि दयानन्द से पूछा, "कृपा करके बतलाइए कि मनुष्य का क्या कर्तव्य है ?"

महर्षि ने कहा, "मनुष्य का कर्तव्य ईश्वर-प्राप्ति है जो ईश्वरीय आज्ञाओं के पालन, अर्थात् वेदानुकूल आचरण, धर्म के दस लक्षणों पर चलने और अधर्म-त्याग से हो सकती है।"

मस्तक-शृंगार या आत्म-शृंगार ?

प्रयाग में महर्षि के पास नाना प्रकार के तिलकधारी लोग बैठे थे और महर्षि उन्हें कह रहे थे, "मस्तक का शृंगार करने की अपेक्षा ईश्वरोपासना द्वारा आत्म-शृंगार किया करो। ऐसा तिलक लगाने से तुम्हारा क्या प्रयोजन है ? आडम्बर रचना महात्माओं का काम नहीं है। शोक, महाशोक ! तिलक आदि चिह्न बनाने में लोगों की रुचि है, योगाभ्यास में नहीं। मूर्खो, जितने समय में तुम यह तिलक लगाते रहे इतने समय में गायत्री क्यों न जप लो।"

स्वदेशी वस्तु अपनाने से ही शोभा है

एक दिन का वर्णन है कि छानल-निवासी ठाकुर ऊधोसिंह अपने पिता और ठाकुर भोपालसिंहजी के साथ महर्षि के दर्शन करने के लिए अलीगढ़ में आए। उस दिन ऊधोसिंहजी के वस्त्र नये ढंग के थे और सबके सब विलायती कपड़े के बने थे। महर्षि ने अति प्यार से कहा, "ऊधव, देखो तुम्हारे पिता कैसे मोटे, सादे और अपने देश के कपड़े से बने वस्त्र पहनते हैं ! उनका जाति-बिरादरी में कितना अधिक सम्मान है। क्या तुम इस विदेशी कपड़ों से बने नये वेश से विभूषित होकर अपने पिता से अधिक अच्छे हो गए हो ? ऊधव ! अपने ही देश के वस्तुवेश को अपनाने में शोभा है।"

महर्षि का यह उपदेश ऊधोसिंह के हृदय में घर कर गया और घर पहुंचते ही उन्होंने विदेशी वस्त्रों को उतार फेंका।

लो० बालगंगाधर तिलक

'स्वामी दयानन्द विचित्र प्रतिभाशाली पुरुष थे। हिन्दू-समाज में, विशेषकर उत्तरी भारत में, समस्त जागृति का श्रेय उनको है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर सय्यद अहमद और हवन

अलीगढ़ में एक दिन सर सय्यद महर्षि दयानन्द से मिलने गए और कहने लगे, "महाराज, आपकी अन्य बातें तो युक्तिसंगत हैं, परन्तु यह बात समझ में नहीं आती कि थोड़े-से हवन से वायु का सुधार कैसे होता है ?"

महर्षि ने कहा, "जैसे थोड़े-से बघार से सारी दाल सुगंधित हो जाती है और दूर तक उसकी सुगंध जाती है, ऐसे ही हवन में डाली हुई सामग्री छिन्न-भिन्न हो वायु में फैलकर उसका सुधार कर देती है।"

इससे उनका संशय दूर हो गया।

सेवा का भाव

भड़ौच में महर्षि दयानन्द के साथ पण्डित कृष्णाराम भी रहते थे। एक दिन पण्डित को ज्वर हो आया। महर्षि स्वयं उनका सिर दबाने लगे। पण्डितजी ने कहा, "महाराज, आप क्या करते हैं ? मैं आपसे कैसे सेवा करा सकता हूं ?

महर्षि बोले, "इसमें कोई हानि नहीं। दूसरों की सेवा करना मनुष्य का धर्म है। यदि बड़े छोटों की सेवा न करें तो छोटों में सेवा का भाव कैसे होगा ?"

मिताहार और मितव्यय

बम्बई में महर्षि दयानन्द जिस स्थान पर ठहरे हुए थे, वहां उनके लिए और उनके कर्मचारियों के लिए भोजन बनता था। महर्षि इस बात का बहुत ध्यान रखते थे कि रसोई में जो पदार्थ बनावे सब कर्मचारियों को मिल जाएं। इसलिए स्वयं भोजन के समय रसोई में चले जाते थे। रसोई में सब वस्तुएं तोलकर दी जाती थीं ताकि आवश्यकता से अधिक भोजन न बने। एक दिन एक कर्मचारी ने महाराज से कहा, "सब आपको कृपण समझेंगे।"

उन्होंने कहा, "मुझे इसकी चिन्ता नहीं। मिताहार और मितव्यय दुर्गुण नहीं, सद्गुण हैं।"

रीछ बड़ा त्यागी है

एक दिन बम्बई में महर्षि दयानन्द क्षौर (हजामत) करा रहे थे। एक सज्जन ने आकर कहा, "संन्यासियों का धर्म तो त्याग है, आप देहविभूषा में क्यों लगे हैं ?"

महर्षि ने हंसते हुए उत्तर दिया, "यदि बाल बढ़ाने में ही त्याग है तो रीछ सबसे बड़ा त्यागी है।"

यह कहकर उसे उपदेश दिया कि देह की रक्षा के लिए उसे संवारना पाप नहीं है। जो पुरुष परोपकारी हैं, उन्हें अपनी देह की रक्षा करना और भी आवश्यक है ताकि वह उपकार-कार्य अच्छी प्रकार कर सके।

कुएं की मिट्टी कुएं में

बम्बई में एक पण्डित ने महर्षि दयानन्द से कहा, "सुना है, आप धन लेते हैं। और शास्त्र में लिखा है कि यतियों को सुवर्ण न देवें।"

महर्षि ने कहा, "सुवर्ण नहीं तो क्या आपकी सम्मति में रत्न आदि लेने चाहिएं ?" उसे समझाया, "यतियों के लिए धनसंग्रह करने का निषेध है। परोपकार में व्यय करने के लिए धन लेना पाप नहीं। हम भी जब एक कोपीन लगाकर गंगा-घाट पर घूमते थे तो किसी से कुछ न लेते थे, किन्तु जब से हमने परोपकार के कार्यों में भाग आरम्भ किया है, हमें उन कार्यों के लिए धन लेना

जस्टिस महादेव गोविन्द रानाडे

'स्वामी दयानन्द पूर्वजन्म के संस्कारी आत्मा थे। आर्यधर्म के तत्त्व को यथार्थ रूप में संसार के सम्मुख रखने में स्वामीजी ने कुशाग्रबुद्धि का परिचय दिया है। हिन्दू-समाज इस विषय में सदैव उनका कृतज्ञ रहेगा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ता है। जैसे कुएं की मिट्टी कुएं में ही लग जाती है ऐसे ही हम भी जो धन जिनसे लेते हैं, वह उन्हीं के हितकर कार्यों में लगा देते हैं।"

तोप के मुंह पर

फर्रुखाबाद में एक दिन परमात्मा की उपासना का प्रचार कर रहे थे। एक पादरी लूकस ने महर्षि दयानन्द से कहा, "क्यों बाबा, आपको तोप के मुंह पर रखकर आपसे कहा जाए कि यदि तुम मूर्ति को मस्तक नहीं नवाओगे तो तुम्हें तोप से उड़ा दिया जाएगा, तब आप क्या कहेंगे ?"

महर्षि ने कहा, "मैं यह कहूंगा कि मुझे उड़ा दो, परन्तु दयानन्द का मस्तक केवल एक परमात्मा के ही सामने झुक सकता है, और किसी के सामने नहीं।"

कुकर्मी का भोजन नहीं खाना

एक दिन साहू श्यामसुन्दर ने, जो मुरादाबाद के रईस थे, परन्तु वेश्यागमन आदि दुर्व्यसनों में ग्रस्त थे, स्वामी दयानन्द से प्रार्थना की, "महाराज, आप मेरे घर पर चलकर भोजन कीजिए।" महर्षि ने इस प्रार्थना को अस्वीकार किया। परन्तु उसी समय जब एक दूसरे सज्जन ने यही प्रार्थना की तो उसे स्वीकार कर लिया। साहू श्यामसुन्दर ने महर्षि को उपालम्भ दिया तो उस समय तो महाराज चुप रहे, किन्तु व्याख्यान में इस घटना का ज़िक्र करके और साहू साहब को सम्बोधन करके कहा कि जब तक तू कुकर्म न छोड़ेगा, हम तेरे घर पर जाकर भोजन न करेंगे।

किसको प्रसन्न करूं

महर्षि दयानन्द दिल्ली में थे तो पंजाब के ब्रह्मसमाजियों तथा अन्य लोगों ने उन्हें लाहौर पधारने की प्रार्थना की। महर्षि लाहौर पहुंचे। व्याख्यान आरम्भ हुए। ब्रह्मसमाज ही में 'वेद ईश्वरकृत हैं और पुनर्जन्म होता है' विषय पर व्याख्यान हुआ। ब्रह्म भाई घबरा गए और स्वामीजी से रुष्ट हो गए। जब मूर्तिपूजा का खण्डन हुआ तो दूसरे लोग भी नाराज़ हो गए।

एक दिन पण्डित बनफूल ने उनसे कहा, "आप मूर्तिपूजा का खण्डन न करें तो हिन्दू आपसे अप्रसन्न न हों और महाराज जम्मू-कश्मीर आपसे बहुत प्रसन्न होंगे।"

"महाराज जम्मू-कश्मीर को प्रसन्न करूं अथवा ईश्वर की आज्ञा का पालन करूं जो वेदों में अंकित है ?" महर्षि ने कहा।

ईंट मारने वालों को लड्डू

अमृतसर में एक बाल पाठशाला के अध्यापक ने एक दिन छात्रों से कहा, "आज महर्षि दयानन्द की कथा में चलेंगे। तुम अपनी झोलियों में ईंट, रोड़े और कंकर भरकर मेरे साथ चलना और जब मैं संकेत करूं तो तुम कथा कहने वाले पर ईंट, रोड़े और कंकर फेंक देना। मैं तुम्हें लड्डू दूंगा।"

अबोध बालकों ने अपनी झोलियां भर लीं और अध्यापक के साथ चल पड़े। व्याख्यान रात्रि के ८ बजे समाप्त हुआ करता था। जब कुछ-कुछ अंधेरा हो गया तो अध्यापक का संकेत पाकर बालक महर्षि पर ईंटें, रोड़े फेंकने लगे। सभा में हलचल मच गई, किन्तु महर्षि ने सबको शान्त कर दिया।

पुलिस कुछ बालकों को पकड़कर उनके सामने लाई तो बालक फूट-फूटकर रोने लगे। महर्षि ने उन्हें ढाढ़स बंधाकर उनसे ऐसा कार्य करने का कारण पूछा तो उन्होंने सारा वृत्तान्त सच-सच कह दिया।

महामना गोपाल कृष्ण गोखले

'वेदों के विषय में स्वामीजी का मत कितना ग्राह्य है, मैं कह नहीं सकता। किन्तु मैं उनको (Greatest Social Reformer) सबसे महान् समाज-सुधारक मानता हूं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब महर्षि ने बाज़ार से लड्डू मंगवाकर बालकों को दिए और कहा कि तुम्हारा अध्यापक शायद तुम्हें लड्डू न दे इसलिए मैं ही दे देता हूं।

मनुष्य की मनुष्यता

एक दिन दो उच्च राज्यकर्मचारी महर्षि दयादन्द से मिले और कहने लगे कि खण्डन में क्या धरा है, इससे लोग उत्तेजित होते हैं। हम तो उसी कर्म को अच्छा समझते है कि जिसमें अपना भला हो। परहित-चिन्तन और परोपकार तो ढकोसला है।

महर्षि ने उत्तर दिया, "अपनी भलाई का काम तो गधे और अन्य पशु-पक्षी भी करते है, मनुष्य की मनुष्यता तो इसमें है कि दूसरों का उपकार करे।"

अखण्ड ब्रह्मचर्य

गुजरांवाला में एक दिन महर्षि दयानन्द ने अपने व्याख्यान में कहा, "सरदार हरिसिंह नलवा बड़ा शूरवीर था। कारण सम्भवत: यही था कि वह २५-२६ वर्ष तक ब्रह्मचारी रहा था। उन्होंने यह भी कहा था, "मेरी आयु इस समय ५१ वर्ष की है, मेरा ब्रह्मचर्य अखण्डित है। मैं दृढ़तापूर्वक कहता हूं कि किसीको अपने बल का घमण्ड हो तो मैं उसका हाथ पकड़ लेता हूं। वह छुड़ा लेवे। अथवा मैं हाथ खड़ा करता हूं, उसे झुका देवे।"

उस समय लगभग ५०० की उपस्थिति होगी जिसमें कई पहलवान भी थे। परन्तु किसी को महर्षि के आह्वान को स्वीकार करने का साहस न हुआ।

नींद क्यों आती है

एक दिन किसी ने महर्षि दयानन्द से शंका की, "इसका क्या कारण है कि लोग नाच-रंग को सारी रात जागकर देखते रहते है, परन्तु धर्मोपदेश में सो जाते हैं।"

महर्षि ने कहा, "उनमें उत्तेजना होती है, किन्तु इसमें शान्ति मिलती है, फिर वे सोएं न तो क्या करें?"

संसार को जीत लेते

पण्डित पोहलोराम महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त थे। एक दिन अमृतसर में उन्होंने नैराश्य-भाव में महर्षि से कहा, "आर्यसमाजियों की संख्या बहुत थोड़ी है। इतने थोड़े से मनुष्यों से क्या बनेगा?"

महर्षि ने उन्हें ढाढ़स बंधाते हुए कहा, "आप तो बहुत हैं, सहस्रों को अपना साथी बना सकते हैं। मैंने जब कार्य प्रारम्भ किया था तो मैं अकेला ही था। आज परमेश्वर की कृपा से मेरे सहस्रों साथी हैं। यदि बालशास्त्री और विशुद्धानन्द मेरा साथ देते तो हम तीनों संसार को जीत लेते, परन्तु शोक है कि वे मेरे भावों को जाने बिना ही मुझसे विरोध करने लगे।"

अन्तरंग सभा

रुड़की में एक दिन महर्षि दयानन्द ने आर्य-समाज के सभासदों को यह उपदेश दिया—"अन्तरंग सभा में बैठकर हठ और दुराग्रह नहीं करना चाहिए। बहुमतानुसार जो निश्चय हो उसके अनुसार चलना चाहिए और सभा की बातों को गुप्त रखना चाहिए।"

योगी अरविन्द घोष

'वेदों के भाष्य के विषय में हमें विश्वास है कि अन्तिम सर्वांग-सम्पूर्ण भाष्य चाहे जो हो परन्तु भाष्य की सच्ची चाबी के आविष्कर्ताओं में श्री स्वामी दयानन्दजी को सबसे प्रथम मान दिया जाएगा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आओ ! वृक्ष लगायें

श्री राम भरोसे गुप्त 'राकेश'

वृक्षों के नीचे ऋषियों का वेद मंत्र है गूंजा ।
वृक्षों को श्रद्धा से हमने युग-युग से है पूजा ।।
वृक्षों से ही तो होता है वसुधा का श्रृंगार ।
वृक्षों से ही आ जाती जीवन में नई बहार ।।
वृक्षों के कुंजों में खेला शकुन्तला का प्यार ।
वृक्षों का है रहा सदा से यह कृतज्ञ संसार ।।

वृक्षों के नीचे स्वदेश का सारा वैभव बिखरा ।
वृक्षों से धरती माता का रूप अनोखा निखरा ।।
परमेश्वर ने दी हमको वृक्षों की अनुपम थाती ।
वृक्ष बने जीवन दीपक की सतत् प्रज्वलित बाती ।।
वृक्षों के नीचे ही हमने महकाल को जीता ।
बट-अशोक के नीचे निर्भय थी सावित्री-सीता ।।

हल होती वृक्षों से निज जीवन की कठिन समस्या ।
वृक्ष लगाना, रक्षा करना है यह पुण्य तपस्या ।।
वृक्ष हमारे जीवन साथी, वृक्ष हमारे प्राण ।
विविध व्याधियों से करते हैं वृक्ष हमारा त्राण ।।
वृक्ष काटने वाले मानव कहलाते हैं पापी ।
इन वृक्षों से हमने अपनी सुख समृद्धि है नापी ।।
आदिकाल में जब नर फिरता था भूला भरमाया ।
तब वृक्षों ने ही दी उसको निज अंचल की छाया ।।

यदि ले लें हम शपथ कभी भी नहीं वृक्ष को काटें ।
घोर अभावों की खाई को धीरे-धीरे पाटें ।।
वृक्ष लगाने का पैदा हो यदि जन-जन में चाव ।
तो निश्चय ही भर जावेंगे धरती माँ के घाव ।।
ढालों, खेतों की मेढ़ों, परती पर वृक्ष लगाएं ।
जन-जन मिलकर नए सृजन का उत्सव रोज मनाएं ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

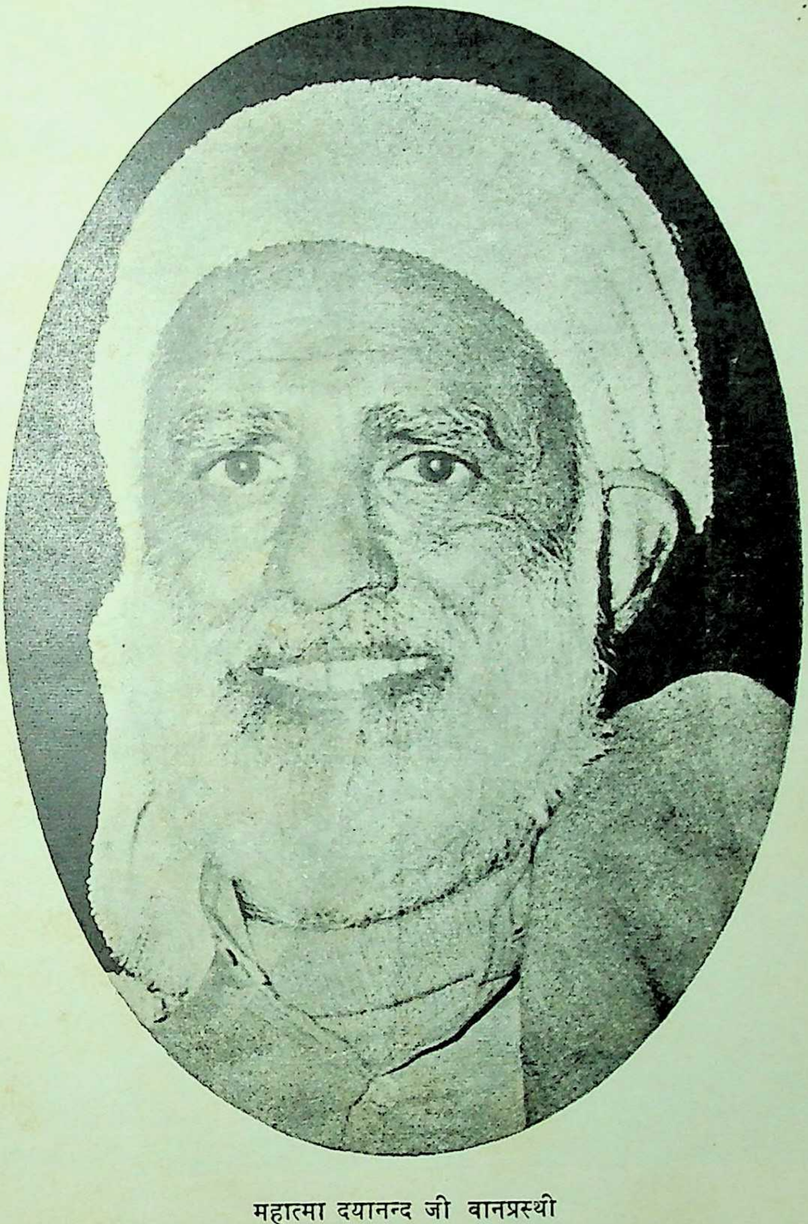

महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थी
Mahatma Dayanand Ji Vanprasthi

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

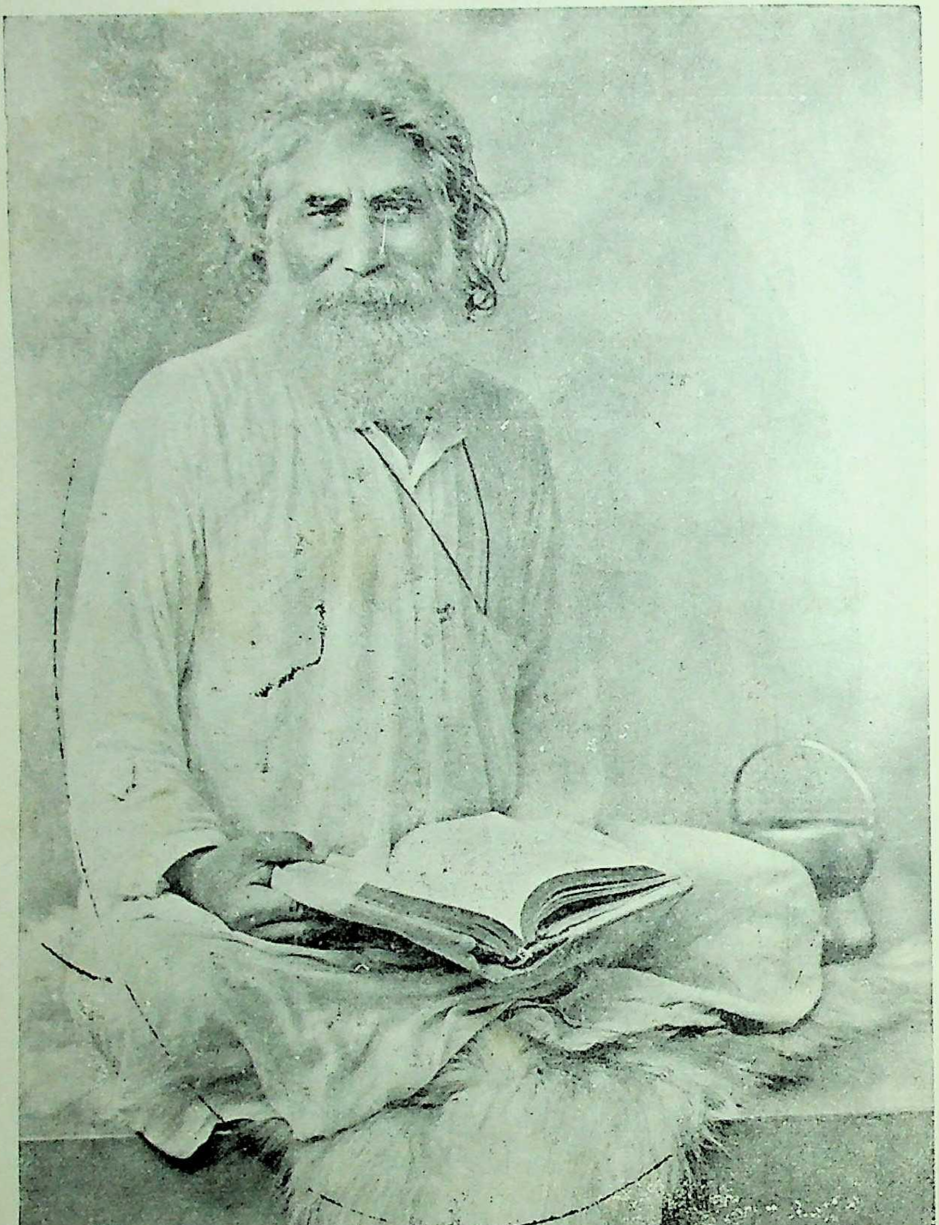

स्वर्गीय महात्मा प्रभु आश्रित जी
Late Mahatma Prabhu Ashrit Ji

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यज्ञ के रूप तथा फल

स्वर्गीय महात्मा
प्रभु आश्रित जी महाराज

यज्ञ के छः रूप हैं:—
(१) यज्ञ भूमि, (२) पात्र, (३) स्थान, (४) यज्ञ द्रव्य, (५) ऋत्विज,(६) विधि।

१ यज्ञ भूमि—कुण्ड पवित्र स्थान पर बनाया जाए, प्रतिदिन पोता जाए ।

२ पात्र—निश्चित हों, अनुकूल बने हों शुद्ध और पवित्र होने चाहिएं प्रतिदिन माजे जाए ।

३ स्थान—यज्ञ पात्र अपने-अपने स्थान पर रखे जाएं, घृत पात्र तथा स्रुवा यजमान के आगे, सामग्री तथा आचमन पात्र—यज्ञ कर्ताओं के आगे, अंजली तथा लोटा—कुण्ड के दक्षिण पूर्व कोने पर, घड़ा तथा दीपक—ईशान कोण पुरोहित के आगे ।

४ यज्ञ द्रव्य तीन हैं—

घृत—शुद्ध पवित्र तपा हुआ हो ।
सामग्री—ऋतु अनुकूल प्रमाण से बनी हुई, घृतमिश्रित, शुष्क न हो। एक किलो सामग्री में ६० ग्राम घी, ६० ग्राम दूध मिलाया जाए ।

समिधा—साफ, सुथरी, सूखी, कुण्ड के परमाण की, बड़, पीपल, आम, ढाक, गूलर, जंड की हों ।

५ ऋत्विज— योग्य यज्ञकर्ता शुद्ध भावना वाला हो। वरण किया जाए ।

६ आरंभ—पहले स्वस्तिवाचन प्रार्थना फिर विधान अनुसार हो ।

यजमान की पवित्रता के चिन्ह:—

यजमान की वाणी आंख, प्राण, मन पवित्र होने चाहिएं अतः जब
यजमान की दी हुई आहुति तुरन्त प्रकाशित होकर अग्नि की ज्वाला को ऊपर उठाती है तो यजमान को (स्वः) द्यौ लोक तक ले जायेगी और मुक्त हो जायेगा।

यदि मध्य में आहुति पड़ कर नाद करती है तो (भुवः) अन्तरिक्ष में ले जायेगी। अन्तरिक्ष से मुराद है पितर बनेगा, उसकी आवाज सुनी मानी जाएगी ।

यदि भूमि पर (भूः) पड़ती है तो मनुष्य बनेगा। सम्पन्न तो होगा पर आवश्यक नहीं मान्यता भी हो ।

यज्ञ का फल:—द्रव्य, विधि तथा यजमान की भावना पर निर्भर है। यज्ञ आरम्भ हुआ भुर्भुवः स्वः से अर्थात् जलाते समय यजमान और ऋत्विज का उद्देश्य (स्वः) द्यौलोक में पहुँचना था-उसके लिए यज्ञ कर्त्ता की वाणी, चक्षु प्राण और मन पवित्र होने चाहिएं क्योंकि उपनिषत्कारों ने कहा कि वाणी, चक्षु, प्राण और मन होता, अध्वर्यु, उद्गाता, ब्रह्मा है ।

यदि वाणी निर्दोष, निर्मल, निश्छल है, चक्षु हिंसा रहित है, मित्र की दृष्टि रखती है, प्राण निर्व्यसनी है, मन चंद्र समान शीतल और नम्र है और सब का निरीक्षक है तो यज्ञ का फल मुक्ति है, वरना नहीं ।

कारण—घृत--चूँकि मथ कर निकाला जाता है सत् है, सत् लोक में ले जाने वाला होगा। जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यजमान का हृदय भी आर्द्र होगा ।

समिधा काष्ठ-वृक्ष ऊंचाई के निशान वाला है, बड़ाई, ऊंचाई चाहता है, इसलिए मध्य में पड़ी आहुति नाद करती है । यदि नाद में कान लगा कर सुना जाए तो यजमान को अपनी भावनाओं का ज्ञान हो जावेगा । साधारण जनता तो केवल ध्वनि ही सुनेगी परन्तु एकाग्र वृत्ति से भावना के शब्द सुनाई देते हैं ।

सामग्री—यदि उस में अन्न बहुत है, भारी होने से नीचे पड़ेगी, भूमि पर पड़ने से मनुष्य का जन्म तो मिलेगा, सम्पत्ति भी होगी परन्तु मान्यता क मिलना आवश्यक नहीं ।

मध्य में पड़ी आहुति नाद करने वाली से (भुवः) अन्तरिक्ष लोक की प्राप्ति होती है अर्थात् पितर बनेगा जिस की आवाज (बात) सुनी मानी जाएगी

घृत की आहुति पड़ने से प्रचण्ड हुई अग्नि (स्वः) स्वर्ग लोक तक ले जाती है जहाँ सब प्रकार का सुख ही सुख है । मन में कोई भावना न रखने वाला सामग्री की तरह भूमि पर मनुष्य होगा ।

अतः ! याजको ! सावधान !

यज्ञ का श्रेष्ठतम फल चाहते हो तो पवित्र भावना के साथ सावधान होकर यज्ञ करो

वस्त्र पीत हों । अधोवस्त्र (नीचे का वस्त्र) धोती हो । निर्व्यसनी होकर यज्ञ करो तो प्रभुदेव अवश्य कृपा करेंगे ।

ॐ ॐ

हवन यज्ञ महिमा

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से,
जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान यज्ञ से,

ऋषियों ने ऊंचा माना है स्थान यज्ञ का,
भगवान का यह यज्ञ है भगवान यज्ञ का,
जाता है देव लोक में इन्सान यज्ञ से–होता है...

जो कुछ भी डालो यज्ञ में खाते हैं अग्नि देव,
एक एक के बदले सौ सौ दिलाते हैं अग्नि देव,
बादल बन कर पानी भी बरसाते है अग्निदेव,
पैदा अनाज करते हैं भगवान यज्ञ से–होता है...

होता है कन्या दान भी यज्ञ ही के सामने,
शक्ति व तेज है भरा इस शुद्ध नाम में,
पूजा है इसको कृष्ण ने भगवान राम ने:
मिलती है यश कीर्ति सन्तान यज्ञ से–होता है...

यज्ञ का पुजारी कोई भी पराजित नहीं होता,
इसके पुजारो को कभी भय नहीं होता,
होती हैं सारी मुश्किलें आसान यज्ञ से–होता है...

चाहे अमीर है कोई चाहे गरीब है,
जो नित्य यज्ञ करता है वह खुश नसीब है,
उपकारी मनुष्य बनता है महान यज्ञ से ।
होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी श्रद्धानन्द

द्वारा उपदेश

वीर बन्धु, दिल्ली

★ आओ सुख की अभिलाषा करने वालो ! परमात्मा की आज्ञा मानते हुए शुभ कर्म में प्रवृत्त हो ओ। सदा भले पुरुषों की संगत करते हुए ईश्वरीय प्रेरणा से प्रवृत्त होकर अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करो ताकि परमानन्द की प्राप्ति हो। —धर्मोपदेश

★ शरीर को स्नान से शुद्ध करने के बाद सत्य से मन को शुद्ध करो, विद्या और तप से आत्मा को शुद्ध करके ज्ञान द्वारा बुद्धि को दिन-रात मांजते रहो। —नित्य कर्म

★ किये कर्म का फल भोगना ही पड़ेगा। कटौती का कोई काम नहीं। बुरे का बुरा और अच्छे का अच्छा फल भोगना ही पड़ेगा। —मुक्ति सोपान

★ मनुष्य को कभी निराश नहीं होना चाहिये परमात्मा पर दृढ़ विश्वास रखना चाहिये। —कल्याण मार्ग०

★ सत्संग की महिमा कौन वर्णन कर सकता है। इसके बिना ब्रह्म प्राप्ति का कोई साधन नहीं। संसार रूपी भवसागर से पार उतरने के लिए सत्संग नौका के समान है। —मुक्ति सोपान

★ माता विदुषी हो तो पहला उत्तम सत्संग होता है जो बहुत से गुणों का बीज बालक के हृदय में बो देती है। फिर सदाचारी पिता का सत्संग बालक के अन्दर शुभ आचार का पौदा उगाता है, जिसकी श्रेष्ठ आचार्य मिलने पर पूर्ण रक्षा होती है। —मुक्ति सोपान

★ अनुभवी पुरुषों ने परीक्षा करके देखा है कि जहाँ अपने आपको रोगी मानने वाला भला-चंगा मनुष्य रोग में ग्रस्त हो जाता है वहाँ मानसिक बल को उपयोग में लाकर अभ्यासी पुरुष साधारण जुकाम ज्वरादि तो क्या बड़े विकट रोगों को भी दूर भगा देता है। —मुक्ति सोपान

★ संसार में अन्धे से ज्यादा दुःखों का कारण झूठी आशा है। टूटी खटिया पर लेटे अफीमची की तरह कितने ही युवक हवाई किले खड़े करते और उन्हें टूटा हुआ देखते हैं। —मुक्ति सोपान

★ चाहे कितनी बार स्नान करना पड़े, स्नान ठण्डे पानी से ही करना चाहिये शरीर को दृढ़ एवं शक्तिशाली बनाने का इससे बढ़कर अन्य कोई उपाय नहीं। जो लोग बच्चों को गरम पानी से स्नान कराते हैं वे उन बच्चों के लिए सहस्रों रोगों के बीज बोते हैं। ठण्डे पानी से नहलाने पर बच्चों को सिर पीड़ा, जुकाम और खांसी आदि रोग कुछ नहीं होते। —नित्य कर्म

★ इस अभागे देश के अतिरिक्त सभ्य संसार में और कोई देश भी है जहाँ शिक्षा का माध्यम मातृ भाषा के अतिरिक्त कोई विदेशी भाषा हो ? जब हमारे बालक पढ़ते अंग्रेजी में, सोचते अंग्रेजी में, गणित, पदार्थ विद्या सीखते विदेशी भाषा में तो उनमें मौलिक विचार की शक्ति कैसे जीवित रह सकती है ? —हिन्दी सा० स० के अध्यक्षीय भाषण से

★ जहाँ खाने की सब वस्तुएँ सात्विक होनी चाहिएँ वहां पीने के लिये तामस वस्तुओं का प्रयोग कभी न करना चाहिए। सबसे उत्तम अमृत पान स्वच्छ जल है। —नित्य कर्म

★ इस जन्म भूमि के लिये कष्ट सहन करना, इसी की सेवा में सारा पुरुषार्थ लगाना और इसी पर सर्वस्व न्यौछावर करना यदि एक एक भारतवासी अपना धर्म समझ ले तो परमात्मा की भी उन पर कृपा हो जाये। —सद्धर्म प्रचारक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

वेद पढ़ने के सरल नियम

स्वर्गीय भक्त खेम चन्द जी
वेद मन्दिर, चान्दपुर ।

१. ह्रस्व स्वर :- अ इ उ ऋ लृ ह्रस्व स्वर हैं—यह कहीं स्वरूप में, कहीं मात्रा के रूप में आते हैं दोनों स्थितियों में नाड़ी की एक गति तक में बोलना चाहिए ।

२. दीर्घ स्वर :- आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ औ यह दीर्घ स्वर हैं इन्हें नाड़ी की २ गति में बोलें ; मात्रा चाहे ह्रस्व स्वर की हो या दीर्घ स्वर की, सर्वदा पूरे वर्ण के साथ बोली जावेगी ।

३. जिस वर्ण के बाद ३ का अंक आये वह चाहे ह्रस्व हो या दीर्घ उसे नाड़ी की ३ गति तक में बोलें ।

४. वर्ण के पीछे लगाई दो बिन्दुओं को विसर्ग कहते हैं । विसर्ग हमेशा पूर्ण वर्ण के बाद आता है । विसर्ग बोलते समय आधे 'ह' की ध्वनि निकले ।

५. हल् अक्षर को अर्थात् आधे वर्ण को पूर्ण वाले स्वर के साथ मिलाना चाहिए और जिस स्थान से उसका उच्चारण हो उस स्थान को दबा देना चाहिए ।

६. दो मिले हुए वर्णों को संस्कृत में सयुक्त अक्षर कहते हैं । संयुक्त अक्षरों में जिस का उच्चारण पहले हो वह आधा, जिसका बाद में हो वह पूरा वर्ण होता है । संयुक्त अक्षर को मिला कर बोलना चाहिए अर्थात् एक साथ दोनों का उच्चारण हो ।

७. यदि वकार से पूर्व आधा वर्ण हो, तो पहले होठों को गोल कर लें फिर वर्ण का उच्चारण करें, जैसे त्वा, स्वः ।

८. यकार से पूर्व यदि आधा वर्ण हो तो उस वर्ण की 'वय' के समान ध्वनि निकालनी चाहिए। 'यविष्ठ्य' इस उदाहरण में यकार जो य रूप में छपा है वह यकार पूर्ण वर्ण है और उससे पूर्व वाला ठकार हल् है ।

९. यदि किसी वर्ण से पूर्व आधा सकार आवे तो आधे सकार का सीटी की ध्वनि सी निकाल कर बाद वाले अक्षर के साथ मिला देना चाहिए जैसे स्कूल, स्य ।

१०. वर्णों के ऊपर लिखा आधा रेप अर्थात् हल् 'र' है जैसे 'मूर्ध्नो या तार्क्ष्यो' ऐसी स्थिति में र् को 'मू तथा ता' के उपरान्त उच्चारण करना चाहिए ।

११. जहां दो आधे अक्षर इकट्ठे हों पहले को पूर्व वाले के साथ, दूसरे को परे वाले पूरे अक्षर से मिला कर बोलना चाहिए जैसे 'मूर्ध्नो' ।

वेद

वेद चार हैं । ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ।

मोक्ष की प्राप्ति के लिए जिन चार साधनों की आवश्यकता है, वे इन चार वेदों में बतलाए हैं, अर्थात् ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान। चारों वेदों में लगभग बीस सहस्र चार सौ मंत्र और लगभग सात लाख अड़सठ सहस्र शब्द हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हवन

हवन-विषयक महर्षि-उपदेश

हवन के नाम तथा व्याख्या

हवन के नाम 'होम', 'अग्निहोत्र' अथवा 'देवयज्ञ' भी हैं। हवन का अर्थ 'दान' है। जिस कर्म से अग्नि (ज्ञानस्वरूप परमेश्वर) की आज्ञा पालन करने के लिए भौतिक अग्नि में सुगन्ध आदि पदार्थों का दान किया जाता है, वह कर्म 'हवन' कहलाता है। जिन मन्त्रों से हवन किया जाता है, वे 'हवन-मन्त्र' कहलाते हैं।

प्रातः और सायंकाल तथा आनन्दोत्सवों पर हवन करना सब मनुष्यों का कर्त्तव्य है। हवन करने से संसार में बुद्धि, वृद्धि, शूरता, धीरता तथा उत्तम स्वच्छता फैलती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) हवन के लाभ—

(प्रश्न) होम से क्या उपकार होता है ? (उत्तर) सब लोग जानते हैं कि दुर्गन्ध युक्त वायु और जल से रोग, रोग से प्राणियों को दुःख और सुगन्धित वायु तथा जल से आरोग्य और रोग के नष्ट होने से सुख प्राप्त होता है।

(प्रश्न) चन्दनादि घिस के किसी को लगावे वा घृतादि खाने को देवे तो बड़ा उपकार हो। अग्नि में डाल के व्यर्थ नष्ट करना बुद्धिमानों का काम नहीं।

(उत्तर) जो तुम पदार्थविद्या जानते तो कभी ऐसी बात न कहते। क्योंकि किसी द्रव्य का अभाव नहीं होता। देखो ! जहां होम होता है, वहाँ से दूर देश में स्थित पुरुष के नासिका से सुगन्ध का ग्रहण होता है, वैसे दुर्गन्ध का भी। इतने ही से समझ लो कि अग्नि में डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म होके, फैल के वायु के साथ दूर देश में जाकर दुर्गन्ध की निवृत्ति करता है।

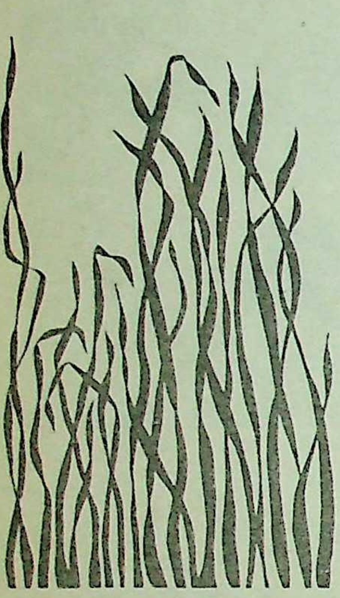

(प्रश्न) जब ऐसा ही है, तो केशर, कस्तूरी, सुगन्धित पुष्प और इतर आदि के घर में रखने से सुगन्धित वायु होकर सुखकारक होगा ?

(उत्तर) इस सुगन्ध का वह सामर्थ्य नहीं है कि गृहस्थ वायु को बाहर निकाल कर शुद्ध वायु को प्रवेश करा सके। क्योंकि उसमें भेदक शक्ति नहीं है और अग्नि ही का सामर्थ्य है कि उस वायु और दुर्गन्धयुक्त पदार्थों को छिन्न-भिन्न और हल्का करके बाहर निकालकर पवित्र वायु को प्रवेश करा देता है। (सत्यार्थ० तृ० स०)

(ख) 'जो सुगन्धादि युक्त द्रव्य अग्नि में डाला जाता है, उसके अणु अलग-अलग होके आकाश में रहते ही हैं। क्योंकि किसी द्रव्य का वस्तुता से अभाव नहीं होता। इससे वह द्रव्य दुर्गन्धादि दोषों का निवारण करने वाला अवश्य होता है। फिर उससे वायु और वृष्टिजल की शुद्धि के होने से जगत् का बड़ा उपकार और सुख अवश्य होता है। इस कारण से यज्ञ को करना ही चाहिए। (ऋ० भा० वेदविषय०)

(ग) और जब अग्नि उस वायु को वहाँ से हल्का करके निकाल देता है, तब वहां शुद्ध वायु भी प्रवेश कर सकता है। इसी कारण यह फल यज्ञ से ही हो सकता है, अन्य प्रकार से नहीं। (ऋ० भू० वेदविषय०)

(घ) जो वायु सुगन्धादि द्रव्य के परमाणुओं से युक्त होम द्वारा आकाश में चढ़ के वृष्टिजल को शुद्ध कर देता है और उससे वृष्टि भी अधिक होती है। क्योंकि होम करके नीचे गर्मी अधिक होने से जल भी ऊपर अधिक चढ़ता है। शुद्ध जल और वायु के द्वारा अन्नादि ओषधि भी अत्यन्त शुद्ध होती हैं। ऐसे प्रतिदिन सुगन्ध के अधिक होने से जगत् में नित्यप्रति अधिक सुख बढ़ता है। यह फल अग्नि में होम करने के बिना दूसरे प्रकार से होना असम्भव है। इस से होम का करना अवश्य है। (ऋ० भा० वेदविषय०)

(च) जैसे दाल और शाक आदि में सुगन्धद्रव्य और घी इन दोनों को चमचे में अग्नि पर तपा के उनमें छोंक देने से सुगन्धित हो जाते हैं। क्योंकि उस सुगन्ध द्रव्य और घी के अणु उनको सुगन्धित करके दाल आदि पदार्थों को पुष्टि और रुचि बढ़ाने वाले कर देते हैं, वैसे ही यज्ञ से जो भाफ उठता है, वह भी वायु और वृष्टि के जल को निर्दोष और सुगन्धित करके सब जगत् को सुख करता है, इससे यह यज्ञ परोपकार के लिए होता है। इसमें ऐतरेय ब्राह्मण का प्रमाण है कि (यज्ञोऽपि त०) अर्थात् जनता नाम मनुष्यों का समूह है, उसी के सुख के लिए यज्ञ होता। और संस्कार किए द्रव्यों का होम करने वाला जो विद्वान् मनुष्य है, वह भी आनन्द को प्राप्त करता है। (ऋ० भू० वेदविषय०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) हवन न करने से पाप होता है—

(क) (प्रश्न) क्या इस होम करने के विना पाप होता है ?

(उत्तर) हां ! क्योंकि जिस मनुष्य के शरीर से जितना दुर्गन्ध उत्पन्न होके वायु और जल को बिगाड़ कर रोगोत्पत्ति का निमित्त होने से प्राणियों को दुःख प्राप्त करता है, उतना ही पाप उस मनुष्य को होता है। इसलिए उस पाप के निवारणार्थ उतना सुगन्ध वा उससे अधिक वायु और जल में फैलाना चाहिए। और खिलाने पिलाने से उसी एक व्यक्ति को सुख विशेष होता है। जितना घृत और सुगन्धादि पदार्थ एक मनुष्य खाता है, उतने द्रव्य के होम से लाखों मनुष्यों का उपकार होता है। (सत्यार्थ० तृ० समु०)

(ख) जैसे ईश्वर ने सत्यभाषणादि धर्म व्यवहार करने की आज्ञा दी है, मिथ्याभाषणादि की नहीं। जो इस आज्ञा से उलटा काम करता है, वह अत्यन्त पापी होता है और ईश्वर की न्यायव्यवस्था से उसको क्लेश भी होता है, वैसे ही ईश्वर ने मनुष्यों को यज्ञ करने की आज्ञा दी है, इसको जो नहीं करता, वह भी पापी होके दुःख का भागी होता है। (ऋ० भा० वेदविषय०)

(ग) सब के उपकार करने वाले यज्ञ को नहीं करने से मनुष्यों को दोष लगता है। जहां जितने मनुष्यादि के समुदाय अधिक होते हैं, वहां उतना ही दुर्गन्ध भी अधिक होता है। वह ईश्वर की सृष्टि से नहीं, किन्तु मनुष्यादि प्राणियों के निमित्त से ही उत्पन्न होता है। क्योंकि हस्ती आदि के समुदायों को मनुष्य अपने ही सुख के लिए इकट्ठा करते हैं। इससे उन पशुओं से भी जो अधिक दुर्गन्ध उत्पन्न होता है, सो मनुष्यों के ही सुख की इच्छा से होता है। इससे क्या आया कि जब वायु और वृष्टिजल को बिगाड़ने वाला सब दुर्गन्ध मनुष्यों के ही निमित्त से उत्पन्न होता है, तो उसका निवारण करना भी उनको ही योग्य है। (ऋ० भा० वेदविषय०)

प्रार्थना-भजन

यज्ञरूप प्रभो हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल कपट को, मानसिक बल दीजिए॥ १॥
वेद की बोलें ऋचाएं, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे, शोक-सागर से तरें॥ २॥
अश्वमेधादिक रचायें, यज्ञ पर-उपकार को।
धर्म-मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को॥ ३॥
नित्य श्रद्धा-भक्ति से, यज्ञादि सब करते रहें।
रोग-पीड़ित विश्व के, सन्ताप सब हरते रहें॥ ४॥
भावना मिट जाये मन से, पाप-अत्याचार की।
कामनाएँ पूर्ण होवें, यज्ञ से नर-नारि की॥ ५॥
लाभकारी हो हवन, हर जीवधारी के लिये।
वायु जल सर्वत्र हों, शुभ गन्ध को धारण किये॥ ६॥
स्वार्थ-भाव मिटे हमारा, प्रेम-पथ विस्तार हो।
'इदं न मम' का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हो॥ ७॥
प्रेमरस में मग्न होकर, वन्दना हम कर रहे।
'नाथ' करुणारूप ! करुणा, आपकी सब पर रहे॥ ८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्माओं के उपदेश :

महर्षि दयानन्द जी द्वारा

—श्री हरिदेव आर्य, एम०ए० विद्यावाचस्पति

माता-पिता को :

- बालकों को माता उत्तम शिक्षा करे जिससे सन्तान सभ्य हो और किसी अङ्ग से कुचेष्टा न करने पावें।
- जब वह कुछ-कुछ बोलने और समझने लगे तब सुन्दर वाणी और बड़े छोटे, मान्य पिता, माता, राजा, विद्वान् आदि से भाषण, उनसे वर्तमान और उनसे पास बैठने आदि की भी शिक्षा करें जिससे कहीं उनका अयोग्य व्यवहार न हो के सर्वत्र प्रतिष्ठा हुआ करे।
- "•••जो तुम लोग सुशिक्षा और विद्या के ग्रहण वीर्य की रक्षा करने में इस समय चूकोगे तो पुनः इस जन्म में तो तुमको यह अमूल्य समय प्राप्त नहीं हो सकेगा।" इसी प्रकार की अन्य-अन्य शिक्षा भी माता-पिता करें।
- जैसे सन्तान जितेन्द्रिय, विद्याप्रिय और सत्संग में रुचि करे वैसा प्रयत्न करते रहें। व्यर्थ क्रीड़ा, रोदन, हास्य, लड़ाई, शोक किसी पदार्थ में लोलुपता, ईर्ष्या द्वेषादि न करे।
- उन्हीं की सन्तान विद्वान् सभ्य और सुशिक्षित होते हैं जो पढ़ाने में सन्तानों का लाड़न कभी नहीं करते किन्तु ताड़ना ही करते रहते हैं।
- सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभाव रूप आभूषणों का धारण माता-पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है। सोने चाँदी मणिक मोती मूंगा आदि रत्नों से युक्त आभूषण के धारण करने से मनुष्य का आत्मा सुभूषित कभी नहीं हो सकता।
- अनेक प्रकार के मद्य-मांस, गांजा भाँग, अफीम आदि को जो बुद्धि का नाश करनेवाले पदार्थ हैं उनका सेवन न करें।
- यही माता-पिता का कर्त्तव्य कर्म, परम धर्म और कीर्ति का काम है जो अपने सन्तानों को तन, मन, धन से विद्या धर्म सभ्यता और उत्तम शिक्षा युक्त करना।

बच्चों को :

—बालक क्रोधादि दोष और कटुवचन को छोड़ शान्त और मधुर वचन ही बोले और बहुत बकवाद न करे।

—बड़ों को मान्य दे, उनके सामने उठकर जाके उच्चासन पर बैठावे प्रथम 'नमस्ते' करे। उनके सामने उत्तमासन पर न बैठे। सभा में वैसे स्थान में बैठे जैसी अपनी योग्यता हो और दूसरा कोई न उठावे।

—विरोध किसी से न करे। सम्पन्न होकर गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग रखे। सज्जनों का संग और दुष्टों का त्याग, माता-पिता और आचार्य की तन, मन, धनादि उत्तम पदार्थों से प्रीति पूर्वक सेवा करे।

—जिस प्रकार आरोग्य विद्या और बल प्राप्त हो उसी प्रकार भोजन, छादन और व्यवहार करें, करावें अर्थात् जितनी क्षुधा (भूख) हो उससे कुछ न्यून भोजन करे। मद्य मांसादि के सेवन से अलग रहें।

—माता-पिता, आचार्य और अतिथि की सेवा करना देव पूजा कहाती है और जिस-जिस कर्म से जगत् का उपकार हो वह-वह कर्म करना और हानिकारक छोड़ देना ही मनुष्य का मुख्य कर्त्तव्य कर्म है।

—कामी, नास्तिक, लम्पट, विश्वासघाती, चोर, मिथ्यावादी, स्वार्थी, कपटी, छली, आदि दुष्ट मनुष्यों का सङ्ग न करे। आप्त जो सत्यवादी, धर्मात्मा परोपकारी प्रिय जन हैं. उनका सङ्ग करने का ही नाम श्रेष्ठाचार है।

—इतना अवश्य चाहिए कि मद्य मांस का ग्रहण कदापि भूलकर भी न करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यज्ञमय जीवन का महत्त्व

महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थी

ओं अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वत: परिभूरसि।
स इद् देवेषु गच्छति।

शब्दार्थ—हे परम् अग्रणि, मार्ग प्रदर्शक विघ्न-विनाशक प्रभो!

आप जिस पाप-रहित यज्ञ को व्याप लेते हो वही यज्ञ देवों को पहुँचता है। दिव्यता के प्रसाद प्रदान करता है।

मंत्र की भाषा बहुत सरल है, निर्भ्रान्ति रूप से यज्ञ के महत्त्व को प्रभु देव अपनी कल्याणी वाणी द्वारा स्पष्ट कर रहे हैं कि जो यज्ञ अध्वर होता है उसे परमेश्वर स्वयं व्यापते हैं तथा वह आहुतियां देवों को पहुंचती हैं।

(I) प्रश्न उपजता है कि अध्वर यज्ञ के क्या चिह्न होते हैं?

आचार्य उत्तर देते हैं कि यज्ञ वह अध्वर माना जाएगा जिस में निम्न गुण हों:—

१. (क) हवि शुद्ध हो—घटिया, सड़ा हुआ, दुर्गंधित, या कीड़ों से खाया द्रव्य नहीं दिया जा रहा।

(ख) फिर आहुति बड़े सम्मान युक्त ढंग से दी जा रही है। फ़र्ज समझ कर दी जा रही है; किसी के दबाव अथवा दिखावे की भावना से ढोंग रूप से नहीं दी जा रही।

(ग) द्रव्य सत्कमाई से प्राप्त किया गया है।

नोट:—भाव यह है कि अग्नि स्वीकार तो सब कुछ कर लेगी परन्तु जहाँ यज्ञ द्वारा भोग व भाग्य बढ़ेगा वहां यदि हवि अस्वच्छ असत्य की है तो वे पाप के संस्कार भी पक्के होंगे, दुःख देंगे।

२. यज्ञ किसी निजी स्वार्थ से जिस के द्वारा किसी अन्य प्राणी का अकल्याण होना हो नहीं किया जा रहा। बल्कि ऐसे यज्ञ तो विश्व कल्याण हेतु किए जाते हैं।

३. यज्ञ समय ऋत्विज-यजमान अथवा व्रतियों द्वारा किसी प्रकार का द्वेष व दुश्चिन्तन न होवे।

४. ईर्ष्या दम्भ न हो।

५. अग्नि धुआँ व चिंगारियाँ न छोड़े। किसी को कष्ट न हो रहा हो और किसी के कपड़े न जलें।

६. यजमान की दृष्टि चंचल न बनी रहे। यजमान व यजमान-पत्नी विशेषतया अग्नि में ही दृष्टि जमाए रहें, अग्नि के अन्दर उन्हें दिव्य दर्शन हों।

७. यज्ञ में भाग लेने वाले यम नियमों के व्रतों का सहर्ष पालन कर रहे हों।

८. ऋषियों की बतलाई विधि का पालन हो तथा समय की पाबन्दी व पूर्ण अनुशासन हो।

(II) यज्ञ की हवि देवों को पहुंची तथा स्वीकृत हुई, क्या प्रमाण है? जहाँ देव पूजा हो रही हो वहाँ शान्ति का साम्राज्य होता है प्रमाण निम्न हैं।

महात्मा एण्ड्रयूज

'स्वामी दयानन्द मृत्युपर्यन्त निर्भय रहे और मृत्यु आई तो उन्होंने मुस्कराते हुए उसका स्वागत किया। वे प्रसन्नता पूर्वक चोटों को सहते, पर किसी दूसरे को चोट पहुंचाने में घृणा करते थे।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. यज्ञ में कोई विघ्न न पड़े बल्कि विघ्न की सम्भावना हो तो वह भी टल जाए।

२. सब ओर से अनुकूलता तथा सहयोग मिले। कोई झगड़ा विरोध न उपजे। विचारों के जो भी मतभेद हों वह बड़ी शान्ति व मधुरता से निपट जाएं, मैत्रीकरण, संगतिकरण बढे।

३. यज्ञ में किसी भी चीज की कमी न पड़े। यजमान के अन्दर किसी वस्तु के अभाव के प्रति चिन्ता न हो, बरकत बनी रहे।

४. यज्ञ का देवता इन्द्र है उसकी आशीर्वाद वर्षा द्वारा प्राप्त हो परन्तु यह वर्षा भी यज्ञ में विघ्न न बने।

५. यज्ञ की पवमान वायु के फैलाव के फलस्वरूप स्थानीय फसलें बहुतात से हों, खूब पकें तथा स्वास्थ्य-वर्धक हों।

६. (क) यज्ञ क्रियाओं द्वारा आत्मोन्नति की प्रेरणाएं मिलें।

नोट :—जैसे महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज की डायरियों से प्रमाणित होता है। ऐसे दूसरे यज्ञ-प्रेमियों को भी संकेत मिलते रहते हैं जो कि पुस्तकीय ज्ञान नहीं।

(ख) मंत्रों के मार्मिक रहस्य खुलें। सहस्रों बार यह मंत्र पढे, सुने परन्तु कुछ विशेष ज्ञान तथा आकर्षण न प्राप्त हुआ परन्तु अकस्मात् यज्ञ-समय ऐसी प्रेरणा मिली।

७. पाप की वासनाएँ जिनकी समझ ही न आती थी जिन्हें दुरित ही न मानते थे परन्तु वह गुप्त रूप में आत्मोन्नति के मार्ग में भयंकर बाधा बनी हुई थीं उनकी प्रतीति का होना—पश्चात्ताप होना इत्यादि।

केवल दोष-दर्शन तक ही नहीं, जहाँ सच्चा प्रायश्चित व्याकुलता से कातर प्रार्थना की तो दोष-निवृत्ति के उपाय दृश्य-रूप में, स्वप्न में, ध्यान में प्रेरणा के रूप में स्पष्ट खुल जाते हैं। एक महान् उपकार होता है?

(पढ़ो-स्वप्न गुरु देवों का शाप)

८. हर दृष्टि से परम इष्ट प्रभु देव की पूजा हो रही है। हर प्राणी में वह प्रीतम निवास कर रहा है तो सब का यथा योग्य सम्मान होता है। हृदय से तुच्छ जीव के प्रति प्यार, दुखी से सहानुभूति और गुणवान की प्रशंसा होवे। घृणा, ईर्ष्या की निवृत्ति हो रही हों।

९. (क) हर कार्य में, हर व्यक्ति के साथ, अपने साथ भी न्याय का बर्ताव होता है। परमेश्वर न्याय स्वरूप की पूजा क्रियात्मिक जीवन से हो रही हो, व्यवहार में न्याय समाया हुआ हो।

(ख) उदार प्रभु की पूजा में याज्ञिक उदारता से यज्ञ कर रहे हों जितनी सामर्थ्य दी प्रभु देव ने उस में संकीर्णता न रहे केवल आहुति ही नहीं, दान, दक्षिणा, गरीबों के लंगर बड़ी विनम्रता और उदारता से बांटे जा रहे हों।

(ग) यज्ञ प्रभु का कर्म है। प्रायः जब हम अपनी शक्ति के बलबूते पर करते हैं तो इस से अहंकार आसक्ति उपजती है और यह जब परमेश्वर के आश्रय से करते हैं तो चिन्ता नहीं होती, न ही यश की चाह उपजती है।

१०. मंत्रों को सस्वर और मधुरता से पाठ किया जा रहा होता है। चाहे भाषा की समझ न भी आए। परन्पु वह पाठ रोचक लगता है, आकर्षक होता है।

११. यजमान व्रती तथा ऋत्विजों में अहंकार, निराशा नितान्त नहीं दीखती अपितु वे विनम्र,

---

प्रोफेसर मोक्षमूलर

'स्वामी दयानन्द एक विद्वान् थे जो अनेक देशों के धार्मिक साहित्य से पूर्ण अभिज्ञ थे। उनके धर्म-नियमों की नींव ईश्वरकृत वेदों पर थी। उनको वेद कंठाग्र थे, उनके मन-मस्तिष्क में वेदों ने घर किया हुआ था।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वासी और आशावादी बने रहते हैं आस्तिकता भरपूर रहती है। कारण याज्ञिक समझते हैं कि यज्ञ तो प्रभु का कार्य है। वह स्वयं शक्ति, सम्पत्ति तथा अपनी दयालुता से प्रेरणा दे कर हम से यज्ञ करवा कर हमारे सौभाग्य को बढ़ा रहे हैं—वहां अभिमान की बजाए कृतज्ञता, विनम्रता बनी रहती है।

अब दो जिज्ञासाएँ और उठती हैं (क) क्या यह अध्वर यज्ञ केवल उस समय तक सीमित रहेगा जब तक हम यज्ञशाला में आहुति दे रहे होते हैं या निरन्तर चलता रहेगा? निरन्तरता का रूप क्या होगा? (ख) जो यह जीवन यज्ञ न चले तो घाटा क्या होता है?

१. (क) जो यज्ञशाला में सात्त्विकता रहे और यम नियम का पालन भी रहे। फिर बाहर व्यवहार में आकर मनमानी, असत्य, छल कपट करें तो फिर गज-स्नान का रूप बनेगा। थोड़ा समय नहा लिया और अधिक समय सिर पर मिट्टी डालते रहे। नहाना कम, मलिन होना अधिक—यज्ञ केवल एक घन्टा, अयज्ञ 23 घन्टे तो परिणाम होगा, जीवन यज्ञमय मिलेगा परन्तु चारों तरफ से समस्याओं और कष्टों ने घेर रखा होगा।

(ख) निरन्तर यज्ञ का रूप यह होगा कि यज्ञ-शाला में तो द्रव्य की आहुति दे और फिर व्यवहार में स्वार्थ की आहुति दे। जिनसे हमारा सम्पर्क धन्धा है पहले दूसरे का भला फिर अपना भला। हो सकता है कि इस तरह के व्यापार में हम लाखों न कमा सकें, कोठियां व कारें न खरीद सकें परन्तु रोटी तो अवश्य मिलेगी। साथ-साथ शान्ति निश्चिन्तता भी हमारे भाग्य में बनी रहेगी। हम सुख की नींद सो सकेंगे। (इतिहास में मिसाल तुला-धार की बडी रोचक है।)

२. जो जीवन-यज्ञ निरन्तर न चला तो घाटा प्रत्यक्ष है कि मंज़िल से दूर रहेंगे। शाश्वत सुख शान्ति की उपलब्धि कदापि न होगी। आवागमन का चक्कर चलता ही रहेगा। शोक, मोह, भय, चिन्ता मानसिक दाह, व्याकुलता बनी ही रहेगी। दिव्यता का प्रसाद जो प्रस्तुत मंत्र में मिलने का आश्वासन वेद माता देती है उसे न पा सकेंगे। फिर परमेश्वर भी हमारे यज्ञ/जीवन-यज्ञ को व्यापेंगे नहीं, इस के योग क्षेम की ज़िम्मेवारी स्वीकारेंगे नहीं। बिना सहारे यह अल्पज्ञ जीवात्मा कैसे अपने जीवन को अध्वर पवित्र बना पावेगा? प्राकृतिक विषयों के आकर्षण का मुकाबला कैसे कर पावेगा?

इन कठिनाइयों से बचने के लिए जीवन यज्ञमय बनाने के सिवाय कोई रास्ता ही नहीं है।

> जब मैं यहां से प्रस्थान करने लगूं, तो मेरे अन्तिम शब्द ये हों कि जो कुछ मैं देख चुका हू, वह अविद्वितीय है। मैंने आलोक-सागर में विकसित सहस्रार कमल के अदृश्य मधु का रसास्वाद किया है। और इसलिए मैं धन्य हूँ। ये मेरे अन्तिम शब्द हों। ·· ····· अनन्त आकारों के इस क्रीड़ा-सवन मे जी-भर खेल चुका हूँ और इसमें मैंने निराकार की झांकी देखीं हैं। मेरा समस्त शरीर, मेरा अग-अग उस स्पर्शातीत के स्पर्श से पुलकित है। सो यदि मेरा अन्त आता है, तो आने दो, ये मेरे अन्तिम शब्द हों।
>
> —रवीन्द्रनाथ ठाकुर

मैडम ब्लवट्स्की

'यह सत्य है कि स्वामी शंकराचार्य के अनन्तर भारत में स्वामी दयानन्द से अधिक संस्कृत का विद्वान्, उनसे बढ़कर प्रत्येक बुराई को उखाड़ने वाला, उनसे अधिक कथनशक्ति वाला दार्शनिक उत्पन्न नहीं हुआ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

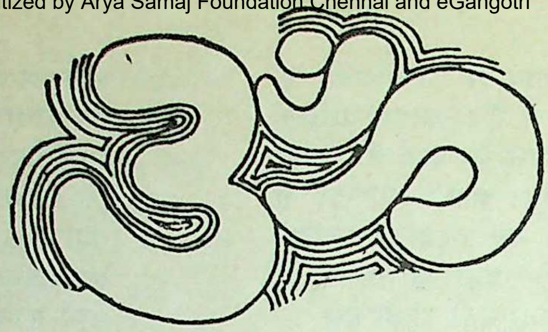

गायत्री का महत्व

महात्मा प्रभु आश्रित जी

ओ३म् 'अव्' धातु से बना है जिसके अर्थ रक्षा के हैं। अव् के अर्थ नीचे के भी हैं। भक्त को नीचे गिरने से 'ओ३म्' रक्षा करेगा। भक्त चाहता है कि मेरी रक्षा पाप से हो। ओ३म् में 'अ' है, 'अ' गुप्त रूप से सब अक्षरों में विद्यमान है। बच्चा नौ मास गर्भ में रहा, बोला ही नहीं परन्तु गर्भ से निकलते ही जब ऊँ आ-ऊँ आ न बोले तो सब को भय लग जावे। तो ऊँ आ क्या हुआ—ज़िन्दगी और जीवन हुआ। ऊँ का न होना मृत्यु। वेद कहता है :—

य: आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्यु कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ यजु० २५।१३॥

अर्थात् 'ओ३म्' ही आत्मिक, शारीरिक और मानसिक बल का दाता है। 'ओ३म्' की ही सब विद्वान् लोग उपासना करते हैं और उनके न्याय, नियम और शासन को मानते हैं। 'ओ३म्' का आश्रय लेना अर्थात् उसकी छत्रछाया में आना अमृत सुख को लेना है। अक्षय, अविनाशी सुख अर्थात् मोक्ष को प्राप्त होना है। उससे विपरीत अथवा विमुख होना मृत्यु आदि महान् दुःखों का कारण है। ओ३म् को जो लोग नहीं मानते उनकी मृत्यु ही है। 'ओ३म्' को उलटा दो तो मुआ (मृत)बन जायेगा। …अ अक्षर बेलाग है। क् में मिलकर क बनकर उसका काम तो कर देता है पर अपने को प्रकट नहीं करता। क् में मान अथवा प्राण डाल देता है तो 'अ' भूः है।

गायत्री के २४ अक्षरों में से प्रत्येक में एक-एक देवता, एक-एक ऋषि और एक-एक महाशक्ति का समावेश है। इस प्रकार उसे २४ देवताओं, २४ ऋषियों और २४ महाशक्तियों की चमकत्कारी क्षमताओं से सुसम्पन्न कहा जा सकता है। श्रद्धा युक्त अन्तःकरण से—पवित्रात्मा साधक यदि विधिवत् उसकी उपासना करे तो उसे वह सब कुछ उपलब्ध हो सकता है जिसकी जीवन को सफल बनाने के लिए आवश्यकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'भूः' का अर्थ है प्राण, प्राण के बल के बिना न जड़ चल सके और न चेतन। न साईकल चले न मोटर। मनुष्य का डाला हुआ प्राण अकड़ा देता है जैसे मोटर का पहिया, फुटबाल आदि परन्तु परमेश्वर का डाला हुआ नम्र बना देता है। मनुष्य का डाला प्राण निकल जावे तो वस्तु ढीली हो जावे और परमेश्वर का डाला हुआ निकल जावे तो वस्तु अकड़ जावे। फुटबाल अथवा मोटर साईकल के पहिए में छिद्र हो जावे तो प्राण निकल जावे परन्तु परमेश्वर का डाला हुआ प्राण शरीर के नौ छद्रों के खुले रहने पर भी बाहर नहीं निकलता। जो संसार के निर् प्राण हैं वे उस प्राणदाता के आधार से निकल गये हैं, वे अकड़ गये हैं। कपड़े को माया लगा दो तो अकड़ जावेगा। तो संसार में अकड़ा देने वाली और भगवान से नास्तिक बनाने वाली चीज़ माया है। इसलिए जीवनाधार को कभी न भूलो, नहीं तो शव के समान अकड़ जाओगे और शमशान की अग्नि के भेंट किये जाओगे।

'भू' का अर्थ हुआ प्राणाधार परन्तु प्राणाधार और भी हैं। प्राण की रक्षा के लिए हमें अन्न चाहिए। अन्न पृथिवी से पैदा होगा अतः 'भू' का अर्थ पृथिवी भी है। पर पृथिवी का दिया हुआ अन्न, फल किसका आधार बनेगा, जिसके कर्म होंगे। तो 'भूः' का अर्थ है 'कर्म'

इस 'भूः' के कितने अर्थ हैं और इस 'भूः' में 'सवितः' देव समाकर काम क्या करता है। जिस प्रकार शरीर में व्यापक आत्मा की इतनी शक्ति है कि कान में सुनने का, आंख में देखने का काम करती है। इसी प्रकार गायत्री के सात शब्दों 'भूः, भुवः, स्वः, सवितः, वरुण, भर्गः और देव' में सवितः देव प्राण, दान, दुःख हरण, सुख, दान, गुप्त प्रेरणा, न्यायधीश, पथ प्रदर्शन और दाता का काम करता है।

ओ३म्

गायत्री मन्त्र

ओ३म् भूर्भुव स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥१८॥

यजुर्वेदः ३६।३ विश्वामित्रः ऋषिः। सविता देवता। दैवी बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः।

[ऋग्० ३।६२।१०। विश्वामित्रः ऋषिः। सविता देवता। निचृद् गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥ यजु० ३।३५। विश्वामित्रः ऋषिः। सविता देवता। निचृद् गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥ यजु० २२।९। विश्वामित्रः ऋषिः। सविता देवता। निचृद् गायत्री छन्दः। षड्जा स्वरः॥ यजु० ३०।२। नारायणः ऋषिः। सविता देवता। गायत्री छन्दः षड्जः स्वरः॥ साम० उ० अर्ध ३। दशति १०। मन्त्र १॥ नारायणोपनिषद् मन्त्र ३५। सूर्योपनिषद्यपि॥]

भावार्थ

हे दयालु परमात्मन्! आप अपनी असीम कृपा से हमारी सदा रक्षा करते हैं। आप ही हमारे जीवनाधार हैं। अपने सेवकों के दुःखों को दूर करके उनको सुख देने वाले हैं। आप सर्वत्र सुप्रतिष्ठित और सुप्रसिद्ध हैं। आप सर्वोत्तम, शुद्ध, पवित्र और ज्ञानस्वरूप हैं। आपसे ही यह सारा जगत् उत्पन्न हुआ है। आप ही सकल शुभ गुणों की खान हैं। आपका हम प्रतिदिन ध्यान करें और आप हमें विवेकशीलता, धारणावती मेधा और सद्बुद्धि प्रदान करें॥१८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृत्यु पर विजय

महात्मा दयानन्द
वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी, देहरा दून २४८ ००८

मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत, द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ।
आप्यायमानाः प्रजया धनेन, शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः !

ऋ १०.१८.२; अ १२.२.३०

(यज्ञियासः) याजको ! (मृत्यो: पदम्) मौत के पैर को (योपयन्तः) रोकते हुए, (यत् ऐत) जिससे गए थे [उसे छोड़कर] (द्राघीयः आयुः) दीर्घतर जीवन को (प्र-तरम्) प्रकृष्ट-तर [बनाते हुए] (दधानाः) धारते हुए [और] (प्र-जया, धनेन) उत्कृष्ट संतान [और] धन से (आ-प्यायमानाः) भर-पूर होते हुए (शुद्धाः, पूताः) शुद्ध [और] पूत (भवत) बनो ।

प्रस्तुत मंत्र में मृत्यु के पैर को धकेलने का परामर्श वेदमाता अपने अनुयायिओं को दे रही है जब कि विश्व के अन्दर एक भी उदाहरण नहीं मिलता कि जीवात्मा ने शरीर धारण किया हो और वह शरीर मौत के पंजे से बच पाया हो ।

मौत कई प्रकार की होती है । एक तो, शरीर और जीवात्मा के वियोग का नाम मौत है । दूसरे, चरित्र-हीनता द्वारा अपयश, जीवनलक्ष्य से दूर चला जाना भी मृत्यु से कम नहीं । लाखों, हज़ारों वर्ष बीते, महाराज श्री रामचन्द्र जी का तथा श्री कृष्णचन्द्र जी का भौतिक शरीर तो नहीं रहा पर यशोरूप शरीर तो अब भी क़ायम है और सम्भवतः कल्प के अंत तक रहेगा ।

मृत्यु का पैर जल्दी दबाता है असंयमी, व्यसनी, आरामतलब और चिन्तातुर व्यक्तियों को । ये सबके सब पाप की दल-दल में धंसे होते हैं और अपयश/मृत्यु को प्राप्त करते हैं । इनके मुक़ाबले में, संयमी, व्यसनरहित, पुरुषार्थी, प्रभु आश्रित, सदैव योगाभ्यास करते हुए, प्रभुभक्ति में लीन होकर चिन्तामुक्त और अलमस्त जीवन बिताते हैं । मृत्यु से निर्भय होने के कारण वे मृत्यु के पैर को धकेलते हैं । ऐसे संयमी सज्जनों की आयु भी दीर्घ होती है । श्रमयुक्त जीवन प्रायः नीरोग होते हैं । आत्मदर्शी और प्रभुभरोसे कर्मरत रहते हुए वे चिन्ता-मुक्त और अदीन बने रहते हैं ।

उपर्युक्त स्थिति को प्राप्त करने के लिए, मन के अंदर तीन साधन बताए गए हैं ।

i. **शुद्धाः**, अर्थात्, अर्थशुद्धि+आहारशुद्धि । हो सकता है कि इनका बैंक बैलेंस बहुत बड़ा न हो, जनता में प्रभाव भी बहुत बड़ा न हो पर इनके अंदर चिंताएं नहीं होतीं, किसी की हिंसा नहीं होती ।

ii **पूताः** से भाव पवित्र विचारों का है । अंदर से जब विचार पवित्र होते हैं तो जीवन में दम्भ और दिखावा नहीं होता । सदैव दूसरों के प्रति शिव संकल्प की भावनाएं करने से जहां अन्तःकरण पवित्र होता है वहां मन में अपूर्व शांति भी बनी रहती है । यही 'मन-मन्दिर में झाड़ू' लगाना है और यही अपने प्रीतम, परमात्मा का आह्वान, स्वागत की सच्ची तयारी है ।

iii. **यज्ञियासः** : जब अर्थ, आहार और विचारों की शुद्धि हुई तो उदारता स्वतः ही उपजती है । तब यह भाग्यशाली जीवात्मा पूज्यों का आतिथ्यकर्ता, समान-क्षातिवालों का संगठनकर्ता और पिछड़े वर्ग पर करुणा निधान बनता है । उसका अणु अणु निःस्वार्थ, निश्छल भावनाओं से ओत-प्रोत होकर प्राणिमात्र के लिए बलि-दान होने को उत्सुक बना रहता है । ऐसों का ही जीवन सही रूप में यज्ञिय होता है । यज्ञपति भगवान् के सच्चे उपासक, यही लोग आशीर्वाद के पात्र बनते हैं ।

निष्कर्ष : 'शुद्ध : पूताः यज्ञियासः' की साधना में सफल होने के पश्चात् जीवन में मृत्यु और अपयश के भय से मुक्त होकर, उपासक इन मृत्युओं के पैरों को धकेल सकते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृत्यु के पूर्व – अन्तिम शब्द

AT THE HOUR OF DEATH

हे राम ।	—	महात्मा गांधी
मैंने अपनी फाइलें निबटा ली हैं ।	—	जवाहर लाल नेहरु
आगे बढ़ो ।	—	विक्रम साराभाई
ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण करे ।	—	स्वामी दयानन्द
मुझे यह संसार छोड़ने में कोई दुख नहीं	—	हेनरी शीरी
नाटक समाप्त हुआ, अब पर्दा गिरता है ।	—	रवेलम
अब नींद आ रही है, मुझे सो जाने दो ।	—	लार्ड बायरन
उफ, अभी घर कितनी दूर है ।	—	नस बरोज
ईसाई किस तरह मरता है, देखो ।	—	एडीसन
मौत, तुम आ गई । चलो अच्छा हुआ ।	—	जार्ज वाशिंगटन
बत्तियां जला लो, मैं अंधेरे में नहीं जाऊंगा ।	—	हेनरी
हे ईश्वर ! तेरी इच्छा पूरी हो ।	—	स्वामी विवेकानन्द

...महापुरुषों के ये अन्तिम वाक्य ...वल अन्तिम नहीं थे । इनमें ...न का रहस्य, जीवन के लिए ...णा और ज्योति समाहित है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी विवेकानन्द जी

द्वारा उपदेश

—त्याग ही धर्म का सार है। धर्म का थोड़ा सा अनुष्ठान करने से ही महाभय से रक्षा तथा भगवान् की प्राप्ति होती है।

—इस संसार में सदैव निर्भयतापूर्वक आगे बढ़ते रहो। अपने आदर्श विचारों पर डटे रहो। कभी न कभी निःसन्देह सफलता प्राप्त करोगे।

—जिस व्यक्ति ने अपनी समस्त इच्छाओं का त्याग कर दिया है, वही सुखी है।

—कभी भी क्रोध न करो। ईर्ष्या को मन के बीच आश्रय न दो और चुपके-चुपके किसी की चुगली न करो। अपने दोषों को दूर करने की जगह दूसरों के दोष देखना, यह निर्दयता और कठोर पराकाष्ठा है।

—दूसरों की भलाई और सेवा करना ही एक महान् धर्म है। प्रेम और दया से सारा संसार खरीदा जा साकता है।

—वेदों का कथन है कि मानव की आत्मा अमर है। शरीर अवश्य वृद्धि और क्षय के नियमों से बद्ध है। जिसकी वृद्धि होती है उसका अवश्यमेव क्षय होगा। परन्तु शरीर में स्थित आत्मा तो अनन्त एवं सनातन है।

—आलसी जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा मरना श्रेयस्कर है। युद्ध में पीठ दिखाकर जीने से मरना कहीं अधिक अच्छा है।

—संसार एक व्यायामशाला के समान है जहां हम अपने को बलवान बनाने आते हैं।

—दूसरों के चरित्र में बुराई न देखो क्योंकि बुराई अज्ञानता की पहली पहेली है।

—उत्साह को हृदय में भर लो और सब जगह फैल जाओ। काम करो काम करो—भारत का भविष्य तुम पर निर्भर है। काम करते जाओ।

—सिंह के समान शक्ति प्राप्त करके संसार के अच्छे कार्यों को करने के लिए त्यार रहो।

—धर्म ही भारत का मुख्य आधार है जिस प्रकार अन्य देशों का आधार है राजनीति अथवा समाज नीति।

—कठिनाइयां मनुष्य को शक्तिशाली बनाती हैं। कठिनाई से लगातार अभ्यास द्वारा छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है, इसलिये हमें कठिनाइयों का सामनां प्रसन्नतापूर्वक करना चाहिए। कठिनाइयों से कभी घबराना नहीं चाहिए।

—जिस व्यक्ति में आत्म विश्वास नहीं है वह व्यक्ति नास्तिक होता है। ग्रंथों ने कहा है जो व्यक्ति ईश्वर में विश्वास नहीं करता वह भी नास्तिक होता है। परन्तु जो मनुष्य अपने आप पर विश्वास नहीं करता वह महा नास्तिक व्यक्ति होता है।

—आज धर्म संसार में केवल एक निर्जीव उपहास प्रहसन मात्र रह गया है। आज विश्व को महान् चरित्र के लोगों की आवश्यकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज क्या चाहता है ?

आर्य समाज यही चाहता है कि

* मानव-मात्र एक परमात्मा का उपासक हो।

* सभी मनुष्य उसे अपना एक मात्र पिता तथा अपने आपको उस परम पिता के पुत्र-पुत्री समझें।

* सब में भाई-बहनों का सा प्रेम हो।

* विचारों की एकता के लिए वेद का ही अनुगमन करें।

* सामाजिक एकता के लिए सब ऋषियों और मुनियों के बताये मार्ग पर चलें।

* राष्ट्रीय एकता के लिए महापुरुषों के पद चिह्नों पर चलें।

* अज्ञान से ऊपर उठें, युग के बढ़ते हुए तेज कदमों के साथ कदम मिलाकर चलें। कोई व्यक्ति, समाज या देश धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक अथवा किसी भी रूप में पीछे न रहे।

* सारे विश्व का धर्म एक हो। नाना मत-मतांतरों और सम्प्रदायों के जालों से मनुष्य मुक्त हो।

* नास्तिकता से मनुष्य की रक्षा की जाए। धर्म की किसी भी देश में उपेक्षा न हो।

* उन्नति और वृद्धि का सबको समान अवसर प्राप्त हो, ऊँच-नीच या छुआछूत का भेद समाप्त हो।

* सम्प्रदाय को धर्म का नाम देकर, अर्थ और काम (Sex) का प्रलोभन देकर जबर्दस्ती दूसरों को अपने सम्प्रदायों में दीक्षित करने का काम तुरन्त बन्द हो।

* भौतिकवाद का स्थान अध्यात्मवाद ले तथा प्राणि-मात्र पर दया का भाव रखा जाए।

धर्म क्या है ?

* जिससे ऐहिक उन्नति तथा जन्म-मरण से छुटकारा प्राप्त हो, वह धर्म है।

* वेदों, स्मृतिशास्त्रों तथा उपनिषदादि में जो कुछ प्रतिपादित है वह धर्म है।

* महान् पुरुषों, ऋषि-मुनियों एवं सन्त महान् आत्माओं ने, चाहे वे विश्व के किसी भी प्रदेश के क्यों न हों, अपने सद्आचरणों में जो कुछ व्यवहार विश्व के सम्मुख रखा है वह धर्म है।

* धर्म की सबसे बड़ी कसौटी यह है कि जो बात तुम्हारे अपने मन को अच्छी नहीं लगती वह दूसरे के लिए न करो।

* तुम्हें कोई गाली दे तो बुरा लगेगा—तुम भी दूसरों को गाली न दो।

* तुम्हारे बच्चों को कोई मारे तो तुम्हें दुख होगा—तुम दूसरों के बच्चों को—चाहे वे पशु या पक्षी ही क्यों न हों (क्योंकि वे भी ईश्वर की संतान हैं) मत मारो।

* तुम्हारा मांस कोई खाने आये या तुम्हारी हत्या करने कोई आए तो तुम्हें क्या अच्छा लगेगा ? तुम भी ऐसा व्यवहार दूसरों के साथ न करो।

* तुम्हारा कोई अहित करे, तुम्हें नुकसान पहुँचाए, चोरी करे, तुम्हारी चीज पर जबर्दस्ती अपना अधिकार जमा ले, तुम्हें लूटे, तुम्हें हानि पहुँचाकर खुद अपना काम सिद्ध करना चाहे तो कितना बुरा लगेगा तुम्हें ? फिर तुम क्यों दूसरों के लिये ऐसा करते हो।

* तुम्हारी माँ, बेटी, बहन, बहू, भाई या घर के किसी भी संबंधी पर कोई बुरी नजर डाले तो तुम्हें कितना गुस्सा आता है—जी में आता है कि उसकी आँखें निकाल लें—जरा सोचो, कभी तुम भी किसी की माँ, बहन आदि पर बुरी नजर तो नहीं डालते।

आर्यसमाज का विस्तार और काम

१. भारत और उसके बाहर ४००० से अधिक आर्यसमाज हैं।

२. प्रान्तीय और जिला उपसभाओं की संख्या इस समय लगभग २०० है।

३. सब मिलाकर लगभग ५०० आर्यकुमार और आर्ययुवक सभाएं हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* यदि तुम्हारे घर में—पति-पत्नी के बीच, पिता-पुत्र के बीच, सास-बहू के बीच, ननद-भाभी के बीच, भाई-भाई के बीच, भाई-बहन के बीच कोई भेदभाव पैदा करे या अन्य किसी प्रकार से तुम्हारे घर की शान्ति और सुख को बिगाड़े तो तुम क्या उसे घर में घुसने दोगे—नहीं न? ...फिर...फिर तुम भी दूसरों के लिये ऐसा न करो।

* यदि कोई तुम्हारे मार्ग पर कांटे बोए तो तुम्हें उस पर कितना क्रोध आएगा? तुम भी दूसरों के लिये कांटे न बोओ।

* तुम जिसका उपकार करते हो यदि वह तुम्हारा ही अहित करने लगे, तुम्हारे प्रति कृतघ्न हो तो तुम्हें उस व्यक्ति से घृणा हो जाएगी—तुम भी कृतघ्न न बनो। महाराजा राम की तरह दूसरों के थोड़े भी उपकार को मत भूलो और दूसरों के बहुत बड़े अपकार को भी भूल जाओ।

* धर्म से किसी का अहित नहीं होता।

* धर्म व्यक्ति, समाज, देश और विश्व में शान्ति लाता है।

* जिससे झगड़ा फैलता हो, जिससे मनुष्य मनुष्य से द्वेष करता हो, जिससे मनुष्य के मन में ईर्ष्या पैदा होती हो, जिससे मनुष्य धन और विषय-वासना के जाल में फंसता हो, जिससे समाज या देश में अशान्ति फैलती हो, जिससे विश्व युद्ध की लपटों में झुलसने लगे, जिससे मनुष्य मनुष्य न रहकर हिंसक, क्रूर, असत्यशील, धोखेबाज और पशु से भी नीच हो जाए वह 'धर्म' नहीं है।

* सत्य धर्म के मानने वाले कभी आपस में नहीं झगड़ते—सम्प्रदायी लड़ा करते हैं।

* अध्यात्मवाद शान्ति लाता है, भौतिकवाद दुःखों और झगड़ों की जड़ है; इसलिए जहां भी झगडे और अशान्ति है वहां भौतिकवाद का ही शासन मानना चाहिए। लड़ने वाले यदि अपने आपको धार्मिक कहते हैं तो उनसे अधिक धोखेबाज, झूठा और अज्ञानी और कोई नहीं है। ऐसे व्यक्ति धर्म की खाल ओढ़े होते हैं अन्दर भौतिकवाद का राक्षस पल रहा है। ऐसे आडम्बरियों से दूर रहना चाहिए और समाज में ऐसे स्वार्थलोलुप आडम्बरी व्यक्तियों को घुसने नहीं देना चाहिए।

"धर्मः स न यत्र न सत्यमस्ति,
सत्य न तद्यच्छलमभ्युपैति"

* समाज और राष्ट्र को जीवित रखने के लिये उसे सम्प्रदाय-निरपेक्ष बनाना होगा—धर्म-निरपेक्ष नहीं। धर्म-निरपेक्ष समाज में नास्तिकता, भ्रष्टाचार, व्यभिचार, असभ्यता, अत्याचार और अनाचार फैल जाते हैं। धर्म और सत्य समाज की रीढ़ है।

सत्य क्या है?

* जो जैसा है, उसे वैसा ही जानना और मानना सत्य है।

* सत्य सदैव कल्याणकारी होता है।

* सत्य छल और कपट से शून्य होता है।

* सत्य एक है। जो भारत के लिये सत्य है वही अन्य देशों के लिए भी है। धर्म और सत्य दोनों साथ-साथ चलते हैं। सत्य शाश्वत है। वह तीनों कालों में एक-सा होता है।

* जो पदार्थ सत्य है उसके गुण, कर्म और स्वभाव भी सत्य होते हैं।

साम्प्रदायिकता

* धर्म और सम्प्रदाय के भेद को ठीक-ठीक समझ लेना चाहिए। धर्म एक है—सम्प्रदाय अनेक। अनेक धर्मों की बात कहना अज्ञान का सूचक है। धर्म का मूल वेद है—सम्प्रदायों का मूल है मनुष्यों की स्वार्थलोलुप्ता। धर्म एकता शान्ति और प्रेम का प्रसार करता है—सम्प्रदाय भेदभाव, अशान्ति, घृणा, ईर्ष्या और द्वेष का।

* सम्प्रदायों का जन्म कैसे हुआ? जब अपने पराए भाव का उदय हुआ और मनुष्य ने अपनों की अनुचित बात का भी पोषण आरम्भ किया तब अपनी कही बात

---

४. भारत, नेपाल, पूर्व अफ्रीका, दक्षिण अफ्रीका, फिजी, ट्रिनीडाड मारिशस, गायना, डच गायना, थाइलैंड, मलयेशिया (सिंगापुर) इंगलेंड, अमेरिका आदि में आर्यवीरदल की लगभग ५४० शाखाएं हैं।

५. आर्यसमाजों की ओर से ३००० के लगभग लड़के और लड़कियों की शिक्षा-संस्थाएं चलाई जा रही हैं, जिनमें ३०० से अधिक डिग्री कालेज और हाई स्कूल हैं, शेष विद्यालय और पाठशालाएं हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पोषण के लिए तर्क-युक्ति का सहारा भी खोजा जाने लगा ज्ञान का, सत्य का, एकता का, अभाव होता गया। द्वेष भाव बल पाता गया, जिसके परिणाम स्वरूप अज्ञान बल द्वारा अनुचित के पोषण और आत्म संतोष के लिए प्रत्येक क्षेत्र के कुछ बुद्धिमान व्यक्तियों ने विभिन्न समयों में, विभिन्न स्थानों पर बैठकर, विभिन्न स्वार्थों को ध्यान में रख मद-वादों की सृष्टि की। धीरे-धीरे अज्ञान की छाया इतनी गहरी होती गई कि ज्ञान लुप्त सा हो गया। सारी मानव जाति मतवादों की, मनुष्य-कृत मार्गों की पथिक बन गई। इस प्रकार द्वेष के द्वारा धरती से धर्म का संकोच और अधर्म से, अज्ञान से प्रेरणा प्राप्त मत-वादों का प्रसार हुआ। जिसके फलस्वरूप अविद्या अंधकार से आत्मा की सुख-शांति और आनन्द का लोप हो गया।

मंगलाचरण

* जो न्याय पक्षपात-रहित सत्य वेदोक्त ईश्वर की आज्ञा है, उसी का यथावत् सर्वत्र और सदा आचरण करना मंगलाचरण कहलाता है।

वेद-ईश्वर की आज्ञा

* सृष्टि के आदि में मानव-मात्र के हित को ध्यान में रखते हुए अपनी प्रजाओं को परमपिता परमात्मा के द्वारा दी गई आज्ञा वेद है।

* वेद-ज्ञान शाश्वत है, सत्य है, अमर है।

* इनमें प्रतिपादित सब सिद्धांत सार्वभौम, सार्वजनिक और सार्वकालिक हैं।

* वेद मनुष्य के सर्वतोमुखी विकास के साधनों के द्योतक हैं।

* इनमें वर्णित कोई भी सिद्धान्त बुद्धि, विज्ञान व अनुभव के विरुद्ध नहीं। ये पक्षपात-शून्य भ्रांतिरहित ज्ञान का प्रतिपादन करते हैं।

* इनमें सृष्टिक्रम, प्रत्यक्षादि प्रमाण, आप्त और पवित्रात्मा के व्यवहार से विरुद्ध कोई कथन नहीं।

* वेद सबके लिए है। जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्रादि के पढ़ाने, सुनाने का न होता तो इनके शरीर में वाक् और श्रोत्र इन्द्रिय क्यों रचता ? जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्नादि पदार्थ सबके लिए बनाए हैं वैसे ही वेद भी सबके लिए प्रकाशित किए हैं।

ईश्वर

* सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

* ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्व शक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

जीवात्मा

* जीवात्मा अनादि, अनन्त है। अणु रूप है। सभी चेतन प्राणियों तथा वृक्षादि में यह विद्यमान हैं।

* यह कर्मों के अनुसार नाना शरीर धारण करता है। शरीर बदलते रहते हैं, पर यह नाना जन्मों में एक ही बना रहता है।

* अल्पज्ञ है, परन्तु स्वभावतः यह पवित्र है।

* परमात्मा और जीवात्मा में सबसे मुख्य भेद यह है कि जीवात्मा शरीर धारण करता है, जन्म मरण के बन्धन में आता है पर परमात्मा नहीं आता। जीवात्मा-परिच्छिन्न चेतन है। परमात्मा सर्वव्यापक और इसीलिये सर्वज्ञ और सर्व शक्तिमान है।

* जहां कहीं इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और ज्ञान उपलब्ध होते हैं उसमें जीवात्मा का अस्तित्व ही कारण है।

प्रकृति और सृष्टि

* प्रकृति उपादान कारण है। सब संसार के बनाने की मूल-सामग्री है जड़ है। यह अपने आप सृष्टि रूप में

---

६. बालकों और बालिकाओं के ६० गुरुकुल अथवा संस्कृत पाठशालाएं हैं।

७. अछूतों की ४०० से अधिक पाठशालाएं हैं।

८. टैक्निकल इंस्टीट्यूट १२ से अधिक हैं।

९. ५०० के लगभग अतिथि-भवन हैं और व्यायामशालाएं हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं आ सकती न ही अपने-आप बिगड़ सकती है । इसका बनना और बिगड़ना दोनों ही नियम पूर्वक हैं । इसका नियामक अद्वितीय चेतन शक्ति परमात्मा है जो कण-कण में व्याप्त है ।

* चन्द्रमा पर उतरने के अमरीकी वैज्ञानिकों के प्रयत्नों ने सृष्टि की नियमित गति तथा स्थिति को पूर्णतः प्रमाणित कर दिया है । यह बात कि वैज्ञानिकों का काल-दिशा-गति आदि का मापन त्रुटिपूर्ण नहीं है जहाँ उनके वैज्ञानिक उच्चकोटि के ज्ञान का प्रमाण है वहां इस बात का भी प्रमाण है कि इस जड़ सृष्टि में नियमित गति और स्थिति है ।

सृष्टि रचना का उद्देश्य

* जीवात्मा की शक्तियों के पूर्ण विकास अर्थात् किए हुए कर्मों के फल भोग, जन्म-मरण के बन्धन से मुक्ति तवा परमानन्द की प्राप्ति के लिए जगत का निर्माण हुआ ।

मनुष्य की व्यक्तिगत उन्नति

* केवल आर्थिक, शारीरिक तथा ऐहिक उन्नति ही मनुष्य का लक्ष्य नहीं होना चाहिए । अभ्युदय के साथ निःश्रेयस् की भी, इह के साथ पर की भी, 'वर्धते' के साथ 'एधते' की भी सिद्धि करनी चाहिए ।

* मनुष्य की व्यक्तिगत उन्नति के चार सोपान हैं—चार आश्रम ।

* ब्रह्मचर्याश्रम—सांसारिक चिन्ता आदि से दूर रह कर शांत और विषय-वासनाओं से शून्य स्वच्छ वातावरण में गुरु के चरणों में अपने आपको पूर्णतः समर्पित करके तपोमय जीवन बनाकर अपने ज्ञान की वृद्धि में लग जाए ।

* गृहस्थाश्रम—सांसारिक, दैहिक, भौतिक, आध्यात्मिक सभी ज्ञानों को प्राप्त करके उन्हें कर्म में परिणत करने के लिए गृहस्थाश्रम में प्रवेश करे । इस आश्रम में अपने पितृ ऋण से मुक्त होने का प्रयत्न करे । वेदानुकूल धर्म का पालन करते हुए, अर्थ और काम को साथ में लेते हुए मोक्ष रूप लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने के लिये धैर्य और तपस्या के साथ आगे बढ़ता जाए ।

* वानप्रस्थाश्रम—गृहस्थाश्रम में कर्म की अग्नि में तपाये हुए ज्ञान को अनुभव का रूप दे तथा अपने ब्रह्मचर्याश्रम में प्राप्त परन्तु विस्तृत ज्ञान को फिर से परिष्कृत कर ले ।

* संन्यासाश्रम—सांसारिक संघर्षों, भयों, कष्टों तथा द्वन्द्वों की परवाह न करते हुए अर्थ और काम दोनों का पूर्ण परित्याग कर केवल धर्म को साथ में ले और ध्यान, धारणा समाधि आदि के द्वारा अपनी आत्मा की उन्नति करते हुए...'वर्धते' के क्षेत्र से निकलकर शुद्ध 'एधते' के क्षेत्र में रहकर मोक्ष सिद्धि के प्रति बढ़ता चला जाए ।

* संसार से अज्ञान और अविद्या को दूर करने तथा आर्यत्व, शान्ति और सद्भावना लाने के लिये सतत प्रयत्न करे ।

समाज

* समाज की उन्नति के लिए व्यक्ति की उन्नति आवश्यक है ।

* समाज का चरित्र उसके सदस्यों के चरित्र पर आधारित है ।

* पहले शारीरिक उन्नति और फिर आत्मिक उन्नति के बाद सामाजिक उन्नति की बारी आती है । बिना शारिरिक या आत्मिक उन्नति किए सामाजिक उन्नति का प्रयत्न करना मूर्खता है । ऐसे अनार्यों से समाज के पतन का ज्यादा खतरा हुआ करता है । अनार्यों को समाज का नेता कभी नहीं बनाना चाहिए ।

* ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चारों वर्ण समाज रूप विराट् पुरुष के अंग हैं । गुण कर्म स्वभाव के आधार पर समाज के अनुशासन के लिये किया गया यह विभाजन समाज की उन्नति का साधन है, उसमें बाधक नही है ।

* यह वर्ण व्यवस्था बाधक तभी बनती है जब व्यक्ति में ऊंच-नीच का भेदभाव, स्वार्थ, अहकार, द्वेष, ईर्ष्या, घृणा और हिंसा की भावना आ जाती है ।

---

१०. अनाथालय २०० से ऊपर हैं, जिनमें दो बहुत बड़े हैं । एक आर्य अनाथालय, पटौदी हाउस, दरियागंज, दिल्ली । दूसरा आर्य अनाथालय, फिरोजपुर छावनी, पंजाब, में है । बरेली, बनारस में भी बड़े अनाथालय हैं ।

११. प्रेस, पत्र-पत्रिकाएं, पुस्तकालय और वाचनालय ३०० के लगभग हैं ।

१२. आर्यसमाज के २००० से अधिक उपदेशक, व्याख्याता और प्रचारक हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र

"हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना अब भी पालन होता है, आगे को होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिल कर प्रीति से करें।"

* "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"। देशवासी अपनी जन्मभूमि को मां और अपने आपको उसके पुत्र पुत्री समझें।

* मातृ ऋण उतारने का अभिप्राय अपनी जननी के ही ऋण उतारने से नहीं है अपनी जन्मभूमि के ऋणों से भी मुक्त होना है।

"जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है।"

* "अर्चन्ननु स्वराज्यम्"—स्वराज्य की अर्चना करो उसकी प्रतिष्ठा करो, उसके महत्त्व को समझो। बुरे से बुरा स्वदेशी राज्य अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से कहीं अच्छा है।

* सत्य, ऋत, तपस्या, दीक्षा, वेद ज्ञान और यज्ञ से जन्मभूमि की रक्षा होती है।

* राष्ट्र की रक्षा के लिए 'ब्रह्म' और 'क्षत्र' दोनों शक्तियां आवश्यक हैं। दोनों में से किसी भी शक्ति के कम रह जाने पर देश की उन्नति या प्रगति असंभव है।

* राज्य-व्यवस्था का मूल है इन्द्रियों को जीतना। अजितेन्द्रिय शासकों या नेताओं के हाथों में देश को सौंपना महान् मूर्खता है। इससे देश का अधःपतन ही होता है, उत्थान नहीं।

यज्ञ

* यज्ञ त्याग का प्रतीक है। यज्ञ 'स्वाहा' अथवा समर्पण के भाव को स्थापित करता है।

* व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति तथा रक्षा के लिए यज्ञ एवं यज्ञिय भावनाओं की रक्षा आवश्यक है।

* सृष्टि में निरन्तर यज्ञ चल रहा है। संसार के सभी जड़ पदार्थ निःस्वार्थ होकर नियमित रूप में कार्य कर रहे है। इनके यज्ञ का ब्रह्मा या पुरोहित स्वयं परमात्मा है। इसीलिए इनके यज्ञ में कभी कोई त्रुटि नहीं होती। परमात्मा को अपना ब्रह्मा बनाकर जो भी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र अपने यज्ञ करते हैं उन्हें शाश्वत शान्ति और सुख की प्राप्ति होती है। नास्तिक, भौतिकवादी राष्ट्र ज्यादा दिन नहीं चल पाता।

* यज्ञों में हिंसा सर्वथा वेद-विरुद्ध है।

* यज्ञ का अर्थ केवल अग्नि में घी, अन्नादि स्वाहा करना नहीं है। यज्ञ का अर्थ बड़ा विशाल है।

* खेती करना यज्ञ है। 'अन्नं बहु कुर्वीत' अधिक से अधिक अन्न उपजाने का प्रयत्न करना यज्ञ है। गरीबों की सहायता करना यज्ञ है। पतितों को उठाना यज्ञ है। बड़े-बड़े औद्योगिक केन्द्र खोलकर देश की औद्योगिक उन्नति करना यज्ञ है। शिल्प कला की उन्नति यज्ञ है। शिक्षा केन्द्र खोलना यज्ञ है। पवित्र भावना और त्याग के साथ गृहस्थाश्रम का पालन यज्ञ है। समाज में भाषा, भाव और संस्कृति की दृष्टि से प्रेम और एकता बनाए रखने के लिए प्रयत्न करना यज्ञ है। समाज, राष्ट्र और विश्व की सभी प्रकार की उन्नति एवं प्रगति तथा मानव-धर्म की स्थापना और विश्व प्रेम के प्रसार के लिए अपने आपको समिधा बनाकर होम देना—अपनी आहुति दे देना—ही वास्तविक यज्ञ है।

देव-असुर

यज्ञ करने वाला, अग्निमय, परमात्मा में एक मात्र भरोसा रखकर कर्म करते रहने वाला, अप्रमादी आर्य देवता है।

* स्वार्थी, दंभी, कपटी, दूसरों का अहित करने वाला फूट पैदा करने वाला युद्ध की आग में निरीह माताओं, बच्चों व पुरुषों को जलाने वाला, विश्व में अशांति पैदा करने वाला, अयज्ञिय, अनार्य असुर कहलाता है।

---

१३. आर्यों की संख्या अब एक करोड़ के लगभग हो गई है।

१४. आर्यसमाज की संस्थाओं में कई लाख बालक-बालिकाएं शिक्षा पाती हैं और उन संस्थाओं पर वर्ष में एक करोड़ से अधिक रुपया व्यय होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि के अमर वाक्य

* 'अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की, चाहे वे महा अनाथ निर्बल और गुण रहित क्यों न हो, उनको रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ, महाबलवान् और गुणवान् भी क्यों न हों तथापि उनका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे।'

* 'जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मतमतांतर का विरुद्ध वाद न छूटेगा तब तक अन्योन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विशेषकर विद्वज्जन ईर्ष्या द्वेष छोड़ सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना कराना चाहें तो यह हमारे लिए असाध्य नहीं है।'

* 'पशु बलवान् होकर निर्बलों को दुःख देते और मार भी डालते हैं। जब मनुष्य शरीर पाके वैसा ही कर्म करते हैं तो वे मनुष्य स्वभाव युक्त नहीं, किन्तु पशुवत हैं और जो बलवान् होकर निर्बलों की रक्षा करता है वही मनुष्य कहाता है। और जो स्वार्थवश होकर पर हानि मात्र करता रहता है वह जानो पशुओं का भी बड़ा भाई है।'

* 'यद्यपि मैं आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूँ, तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर याथातथ्य प्रकाशित करता हूँ, वैसे ही दूसरे देशस्थ व मतोन्नति वालों के साथ भी वर्तता हूँ। जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में वर्तता हूँ वैसा विदेशियों के साथ भी—तथा सब सज्जनों को भी वर्तना योग्य है।'

* 'सज्जन लोगों को राग, द्वेष, अन्याय, मिथ्या भाषणादि दोषों को छोड़ निर्वैर, प्रीति, परोपकार, सज्जनतादि धारण करना उत्तम आधार है। और यह भी समझ लें कि धर्म हमारे आत्मा और कर्तव्य के साथ है।'

* मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य निर्णय कराने के लिये है, न कि वाद विवाद विरोध कराने के लिये। इसी मत मतान्तर के विवाद से जगत में जो अनिष्ट फल हुए, होते है और होंगे; उनको पक्षपात रहित विद्वज्जन जान सकते हैं।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्॥

महाभारत का भयंकर युद्ध हुआ, कौरव-पांडव लड़े, आखिर कोई नहीं बचा। यादव भी आपस में कट मरे।

इन सबसे निराश होकर श्रीकृष्ण एक दिन पीपल के एक पेड़ के नीचे पैर-पर-पैर चढ़ा कर लेट गये। एक व्याध ने उन्हें हिरन मानकर उन पर तीर छोड़ दिया और उनके प्राण निकलने की तैयारी करने लगे। उस समय उनके पास उनका सारथी खड़ा था भगवान का अंतिम समय समीप देखकर उसने पूछा—"प्रभो, कोई सन्देश कहना हो, तो कहते जाइये।"

भगवान ने कहा—"अब मैं बहुत थक चुका हूँ। आगे मैं अवतार नहीं लूँगा। संदेश तो मैंने गीता में दे ही दिया है—उद्धरेदात्मनात्मानम। मनुष्य को अपना उद्धार खुद ही कर लेना चाहिए। दूसरा कोई किसी का उद्धार नहीं कर सकता।"

—रविशंकर महाराज

ऋषि दयानन्द के उपकार को मत भूलो !
उनके अनुयायी बन जाओ !!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Drinking Wine IS Ruinous

मदः प्रमादः कलहश्च निद्रा। बुद्धिक्षयो धर्म विपर्ययश्च ।
सुखस्य हन्ता नरकस्य पन्था । अष्टावनर्था करके वसन्ति ॥

—Mitakshara-CCLIII Section 6

There are eight evils in this jar; "inebriety, madness, strife, stupefaction, deterioration of intelligence, perversion of righteousness, ruin of happiness and path of hell."

सुरा पीत्वा द्विजो मोहादग्निवर्णां-सुरां पिबेत् ।
तथा स काये निर्दग्धे मुच्यते किल्विषात्ततः ॥

—Manusmriti-XI-90

A twice born man who has (intentionally) drunk, through delusion of mind (the spirituous liquor called Sura) drink that liquor boiling hot. When his body has been completely scalded by that, he is freed from his guilt.

कणान्वा भक्षयेदब्द पिण्याक वा सकृन्निशि ।
सुरापानापनुत्यर्थं बालवासा जटी ध्वजी ॥

—Manusmriti-XI-92

"Or, in order to remove (the guilt of) drinking Sura, he may eat during a year once (a day) at night grains (of rice) or oilcake, wearing clothes made of cowhair and his own hair, in braids and carrying (a wine cup as) a flag."

815

हृत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम्
ऊधर्न नग्ना जरन्ते । ऋग्वेद ८-२-१२

People after drinking the liquor fight. Their health is deteriorated and they become old and infirm at young age. Liquor drinking should, therefore, be prohibited.

"A sensual and intemperate youth hands over a worn out body of old age."

"So boundless the cost which we lavish upon a liquid which drives him to frenzy and to the commission of a thousand crimes, so exquisite is the cunning of mankind in gratifying their vicious appetites that they have thus invented a method to make water itself produce intoxication."

—Seneca-83 Epistle

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"श्रीकृष्ण उवाच"

—हरिदेव आर्य
(एम० ए०, विद्यावाचस्पति)

[गीतामृत]

★ यह आत्मा अमर है। न यह कभी जन्मता और न मरता ही है। यह अजन्मा, नित्य, सनातन तत्व है। शरीर के नाश होने से भी इसका नाश नहीं होता। २।२०

★ जिस प्रकार मनुष्य फटे पुराने वस्त्र उतारकर नये वस्त्रों को ग्रहण कर लेता है, इसी प्रकार जीवात्मा जीर्ण शरीर छोड़कर नये शरीरों को प्राप्त करता है। २।२२

★ इस जीवात्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, इसको आग जला नहीं सकती, पानी इसको गीला नहीं कर सकता, वायु इसको सुखा नहीं सकती। २।२३

★ जो पैदा हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है, जो मर गया है उसका जन्म अवश्य होगा। इसलिए जो टाली नहीं जा सकती उस पर शोक करना ठीक नहीं। २।२७

★ कर्म करने में ही तुम्हारा अधिकार है उसके फलों में कभी नहीं। तुम कर्मफल के हेतु मत बनो इस प्रकार तुम्हारी अकर्मों में प्रीति नहीं होनी चाहिए। २।४७

★ 'ओ३म्' यह एक अक्षर ब्रह्म है अर्थात् ब्रह्म का बोधक है। इस 'ओ३म्' का स्मरण करता हुआ जो मनुष्य देह त्यागता है वह परम गति को प्राप्त होता है। ८।१३

★ जो सर्वत्र एकरस रूप से विद्यमान ईश्वर को देख रहा है वह फिर कोई ऐसा काम नहीं करता जो आत्मा को हनन करने वाला हो। इस यथार्थ ज्ञान के अनन्तर वह मुक्ति को प्राप्त होता है। १३।२८

★ मनुष्य अपने भाग्य का विधाता है—जैसा कर्म करता है वैसा ही फल पाता है। पुण्य कर्म का निर्मल सात्त्विक फल होता है, रजोगुणी कर्म का फल दुःख होता है तथा तमोगुणी का फल अज्ञान होता है। १४।१६

★ मैं 'ईश्वर' तथा उसके 'वेद ज्ञान' की प्रतिष्ठा हूँ—यह ज्ञान मोक्ष को दिलाने वाला अमृत है—कभी भी नष्ट न होने वाला है। ईश्वरीय ज्ञान के अनुसार चलने वाले जीव को जो सुख-आनन्द प्राप्त होता है, उसकी भी मैं प्रतिष्ठा हूँ। १४।२७

★ ब्रह्म परमात्मा के नाम का जाप 'ओ३म्-तत्-सत्' इन तीन शब्दों से किया जाता है। जिस ब्रह्म के ये तीन प्रकार के नाम हैं उसने पूर्वकाल में वेद ज्ञान दिया—वेदवेत्ता ज्ञानी तथा यज्ञ जीवों के कल्याण के लिये दिये। १७।२३

★ ब्रह्म के प्रति कृतज्ञता प्रकाशनार्थ ब्रह्मवादियों द्वारा सदा यज्ञ, दान, तप की सब सद् क्रियायें 'ओ३म्' का उच्चारण करके आरम्भ की जाती हैं। १७।२४

★ प्राणी-मात्र को अपनी रचना शक्ति द्वारा यन्त्रारूढ़ करके घुमाता हुआ ईश्वर सब प्राणियों के हृदय में स्थिर है। १८।६१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज के १०० वर्ष

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य हमारा नाम है,
सत्य हमारा कर्म।
ओ३म् हमारा देव है,
वेद हमारा धर्म॥

"प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।"

—महर्षि दयानन्द

१--आर्यसमाज ने १८५७ के पश्चात् सर्वप्रथम सर्वत्र जागरण का शंखनाद किया।

२--ईश्वर से मिलने का सच्चा मार्ग बताकर अज्ञान दूर किया।

३--पाखण्डों पर प्रबल प्रहार कर धर्म के सच्चे स्वरूप का प्रचार किया।

४--यवन-ईसाईयों के षड्यंत्रों से आर्य हिन्दू जाति की रक्षा की।

५--परमपिता परमात्मा की अमृत वाणी वेद ज्ञान का उद्धार कर उसका प्रचार किया।

६--आत्महीनता की भावना से छुटकारा दिला आर्य (हिन्दू) जाति को संगठित किया।

७--पराधीनता के पाश तोड़ने के लिए निरन्तर प्रेरणा कर स्वतन्त्रता संग्राम का नेतृत्व किया।

८--मनुष्य और मनुष्य के मध्य खड़ी भेदभाव की दीवार गिरा कर मानव की एकता, समानता का मार्गदर्शन किया।

९--नारी जाति का उत्थान कर उसे समाज में सम्मानपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित कराया।

१०--सत्य धर्म और मानवता का प्रसारक आर्यसमाज मानव जाति की आशाओं का उज्ज्वल केन्द्रबिन्दु है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि निर्वाण दिवास (दीवाली) के लिये विशेष :—

ऋषि दयानन्द के जीवन का आखरी नजारा

—श्री अवरज लाल बजाज, मोदी नगर

बजे जिस वक्त साढ़े पांच और मनहूस शाम आई, चला कुछ जोर हिकमत का न कुछ तदवीर काम आई।
तबीबों पर कज़ा हंसती हुई वे रोक थाम आई, मुकरर उसका आना -था तो आई ला क्लाम आई।
अजल ने दस्त बस्ता अर्ज़ की इरशाद है भगवान, बहुत कुछ अन्य लोकों में तुम्हारी याद है भगवान।
ऋषि ने एक पण्डित वर से पूछा अब समय क्या है, दिया उत्तर अदब से उसने होने आई सन्ध्या है।
महीना क्या है ? कार्तिक पक्ष काला तिथि अमावस्या, बड़ी प्रसन्नता से आपने सुन कर यह फरमाया।
पवन इस वक्त पावनी है सुमन आशा के खिलते हैं, जुदाई का गिला किसका कि दोनों वक्त मिलते हैं।
लगे फिर प्रार्थना करने कि हे जगदीश, हे भगवान, दयामय सर्व जग्दाधार व्यापक सर्व शक्तिमान।
हुआ था मुद्दतों से लोप जैसा धर्म का शासन, तुम्हारी प्रेरणा से. हो गया उसका पुनर्जीवन।
यह वैदिक धर्म भारतवर्ष का दुनिया में जारी हो, यही इच्छा है मेरी, पूर्ण बस इच्छा तुम्हारी हो।
कदम था वक्त का जिस दम सफेदी और स्याही में, हुए मसरूफ खामोशो से वो यादे इलाही में।
परम ज्योती का जलवा था-यती की खुश निगाही में, मगर दुर्भाग्य था भारतवर्ष का बेड़ा तबाही में।
ऋषि ने खींच कर प्राणों को प्राणायाम के द्वारा, दिखाया हाय हमको इक हैरतनाक नज़ारा।
कलम के हौसले अब इससे आगे पस्त होते हैं, कि कुदरत के यहां कुछ और बन्दोबस्त होते हैं।
गमो रंजो आलम बढ़ते हैं और हम दस्त होते हैं, यह वो सन्ध्या है दो दो सूर्य जिसमें अस्त होते हैं।
प्रकाशक हैं ये दोनों देव नामी भी गरामी भी, तिमिर नाशक है स्वामी भी, तिमिर नाशक है सूरज भी।
हजार अफसोस यूं तकदीर भारत वर्ष की फूटी, शबे तारीक में मशाल हमारे हाथ से छूटी।
न नुस्खे बेअसर थे न हिकमत ही रही झूठी, दवाओं की खता क्या है कि टूटी कि नहीं बूटी।
अभी कुछ दूर थी मंज़िल कि हमसे रहनुमा बिछड़ा, सफर आसान था जिस के दम कदम से रहनुमा बिछड़ा।

प्रेषक : श्री आशानन्द वर्मा

महर्षि दयानन्द की सिंह गर्जना........

हम तो सत्य ही कहेंगे

'लोग कहते हैं सत्य को प्रकट न करो। कलैक्टर क्रोधित होगा, कमिश्नर अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा। अरे ! चक्रवती राजा क्यों न अप्रसन्न हो, हम तो सत्य ही कहेंगे।'.........

"न आत्मा को अस्त्र छेदन कर सकता है और न इसे आग जला सकती है, यह शरीर तो अनित्य है। इसकी रक्षा में प्रवृत्त होकर अधर्म करना व्यर्थ है। इसे जिस मनुष्य का जी चाहे नष्ट कर दे।" फिर चारों ओर अपनी तीक्ष्ण ज्योति डाल कर सिंहनाद करते हुए कहा, "लेकिन वह वीर पुरुष मुझे दिखाओ जो यह दावा करता है कि वह मेरे आत्मा का नाश कर सकता है। जब तक ऐसा वीर इस संसार में दिखाई नहीं देता, मैं यह सोचने के लिये भी तैयार नहीं हूं कि मैं सत्य को दबाऊं। हम तो सत्य ही कहेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

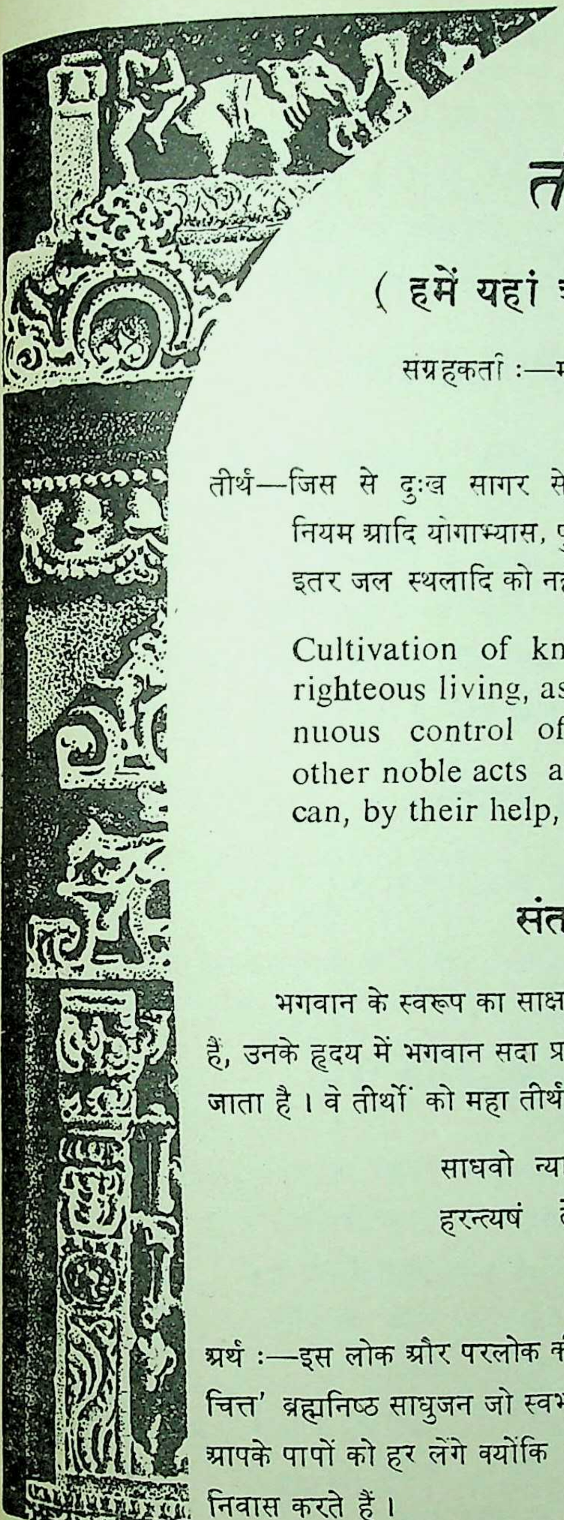

ॐ

तीर्थ स्थान

(हमें यहां आ कर क्या सीखना है ?)

संग्रहकर्ता :—मथुरादास १३३/५ नवाँकोट, अमृतसर

तीर्थ—जिस से दुःख सागर से पार उतरे, कि जो सत्य भाषण, विद्या, सत्संग, यम नियम आदि योगाभ्यास, पुरुषार्थ, विद्यादानादि शुभ कर्म हैं, उन्हीं को तीर्थ समझता हूँ, इतर जल स्थलादि को नहीं। (ऋषि दयानन्द)

Cultivation of knowledge, self-reflection, divine adoration, righteous living, association with truth (Satya Ka Sang), continuous control of senses (Brahmcharya) these and similar other noble acts are called Tiraths, in as much as, the soul can, by their help, steer safely across the ocean of misery.

संत महात्मा तीर्थ रूप हैं

भगवान के स्वरूप का साक्षात्कार किये हुए भगवत प्रेमी महात्मा स्वयं 'तीर्थ रूप' होते हैं, उनके हृदय में भगवान सदा प्रकट रहते हैं, इसलिए जिस स्थान में जाते हैं, वही तीर्थ बन जाता है। वे तीर्थों को महा तीर्थ बना देते हैं।

साधवो न्यासिनः शान्ता ब्रह्मनिष्ठा लोकपावनाः ।
हरन्त्यघं तेऽङ्गसङ्गात् तष्वास्ते ह्यघभिद्धरिः ॥
(श्री मद्भागवत ६।६।६)

अर्थ :—इस लोक और परलोक की समस्त भोग वासनाओं का सर्वथा परित्याग किये हुए शांत चित्त' ब्रह्मनिष्ठ साधुजन जो स्वभाव से ही लोगों को पवित्र करते हैं, अपने अंग-संग से आपके पापों को हर लेंगे क्योंकि उनके हृदय में समस्त पापों को समूल हरने वाले प्रभु नित्य निवास करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीर्थ यात्रा किस लिये ?

मौज आराम के लिए नहीं। महान तपस्या के लिए है।
सैर सपाटे के लिए नहीं। परमार्थ साधन के लिए है।
मनोरञ्जन के लिए नहीं। मन की शुद्धि के लिए है।
खान-पान शयन, के लिए नहीं। संयम नियम के लिए है।

तीर्थ यात्रा में पाप तथा पुण्य

किसी की सुख सुविधा छीनना पाप है। सबको सुख सुविधा दे कर पुण्य लूटो।
मिथ्या भाषण करना पाप है। सत्य भाषण करके पुण्य लूटो।
निन्दा चुगली करना पाप है। भगवान का नाम-गुण गाकर पुण्य लूटो।
राजस तामस भोजन करना पाप है। सात्विक स्वल्प आहार करके पुण्य लूटो।
पर स्त्री, पर पुरुष पर कुदृष्टि करना पाप है। अष्ट मैथुन का त्याग करके पुण्य लूटो।
पर धन पर मन चलाना पाप है। धन वैभव में वैराग्य करके पुण्य लूटो।

तीर्थ यात्रा में कर्त्तव्य

तीर्थ यात्रा में—आसक्ति का त्याग कर्त्तव्य है।
,, ,, —कामनाओं का ,, ,, ,,।
,, ,, —ममता का ,, ,, ,,।
,, ,, —अहंकार का ,, ,, ,,।
,, ,, —नाम जप करना कर्त्तव्य है।
,, ,, —मौन रहना ,, ,,।
,, ,, —व्रत उपवास करना ,, ,,।
,, ,, —दोष त्याग करना ,, ,,।
,, ,, —शील सदाचार का पालन करना कर्त्तव्य है।
,, ,, —तप स्वाध्याय करना ,, ,,।
,, ,, —सन्तोष धारण करना ,, ,,।
,, ,, —निष्काम दान करना ,, ,,।
,, ,, —निस्वार्थ सेवा करना ,, ,,।
,, ,, —अहिंसा सत्य का पालन करना ,, ,,।
,, ,, —श्रद्धा पूर्वक दर्शन करना ,, ,,

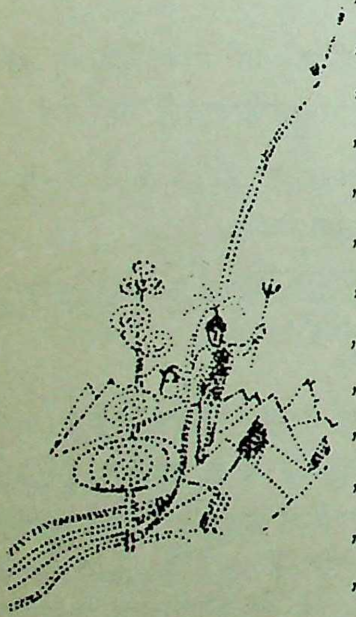

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीर्थ यात्रा में—सब के गुण देखना कर्त्तव्य है।
,, ,, —भगवद गुण सुनना गाना, ,, ,, ।
,, ,, —भगवान को निरन्तर स्मरण करना ,, ,, ।
,, ,, —सब से विनम्र व्यवहार करना ,, ,, ।
,, ,, —सब का आदर-सम्मान करना ,, ,, ।
,, ,, —सब से प्रेम करना ,, ,, ।

तीर्थ यात्रा में—रेल के डिब्बे में, धर्मशाला में, रास्ते में न थूकना, फलों के छिलके न डालना, पानी न उडेलना, बीड़ी सिगरेट (कहीं) न पीना कर्त्तव्य है।

तीर्थों में जाकर

तीर्थ में जाकर—दूसरों को आराम दो, स्वयं आराम मत चाहो।
तीर्थ में जाकर—दूसरों को सुविधा दो, स्वयं सुविधा मत चाहो।
तीर्थ में जाकर—दूसरों को सम्मान दो, स्वयं सम्मान मत चाहो।
तीर्थ में जाकर—दूसरों को सेवा दो, स्वयं सेवा मत चाहो।

इस से—अपने आप सब को आराम मिलेगा।
अपने आप सब को सुविधा मिलेगी।
अपने आप सब को सम्मान मिलेगा।
अपने आप सब को सेवा मिलेगी।

तीर्थ में जाकर—दूसरों की आशा भरसक पूरी करो, दूसरों से आशा मत करो।
तीर्थ में जाकर—दूसरों के अधिकार की रक्षा करो, अपना अधिकार त्याग दो।
तीर्थ में जाकर—दूसरों के साथ उदारता बरतो, अपने साथ न्याय बरतो।
तीर्थ में जाकर—दूसरों के छोटे दुःख को बड़ा समझो, अपने दुःख की परवाह मत करो।

आसक्ति करो

तीर्थ में जाकर—केवल भगवान में आसक्ति करो।
तीर्थ में जाकर—केवल भगवत् प्रेम की कामना करो।
तीर्थ में जाकर—केवल भगवान में ही ममता करो।
तीर्थ में जाकर—भगवान के दासत्व का अहंकार करो।

छोड़ो

तीर्थ में जाकर—दम्भ छोड़ो, दर्प छोड़ो, मान छोड़ो, शान छोड़ो।
तीर्थ में जाकर—गर्व छोड़ो, क्रोध छोड़ो, काम छोड़ो, नाम छोड़ो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीर्थ यात्रा में—लोभ छोड़ो, मोह छोड़ो, द्रोह छोड़ो, क्रोध छोड़ो।
तीर्थ यात्रा में—वैर छोड़ो, कुसंग छोड़ो, ढंग छोड़ो, रंग छोड़ो।
तीर्थ यात्रा में—क्रोध करो अपने दोष दुर्गुणों पर।
तीर्थ यात्रा में—लोभ करो भगवान के भजन का।
तीर्थ यात्रा में—मोह करो भगवान की महिमा का।
तीर्थ यात्रा में—संग करो भगवद्भक्तों का, संतों का।
तीर्थ में जाकर—बुरी आदत छोड़ो।
तीर्थ में जाकर—झूठा मान छोड़ो।
तीर्थ में जाकर—कटु वचन छोड़ो।

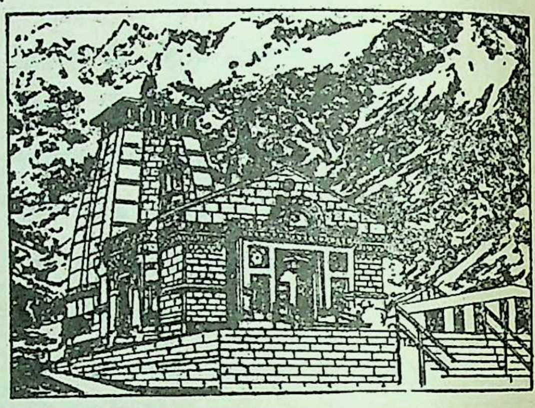

तीर्थ में जाकर—अकर्मण्यता छोड़ो।
तीर्थ में जाकर—झूठ बोलना छोड़ो।
तीर्थ में जाकर—रिश्वत खोरी छोड़ो।
तीर्थ में जाकर—बेईमानी चोरी छोड़ो।
तीर्थ में जाकर—स्वार्थ-परता छोड़ो।
तीर्थ में जाकर—ईर्ष्या-डाह छोड़ो।
तीर्थ में जाकर—शराब कबाब छोड़ो।
तीर्थ में जाकर—बीड़ी तम्बाकू छोड़ो।
तीर्थ में जाकर—भाँग गांजा छोड़ो।

दया करो, ममता नहीं। सेवा करो अहसान नहीं।
प्रेम करो, चाह नहीं। भक्ति करो, भोग नहीं।

तीर्थ यात्रा में—सादा भोजन करो, तो जीभ मन वश में होंगे।
तीर्थ यात्रा में—सब की सेवा करो, तो तीर्थ का फल मिलेगा।
तीर्थ यात्रा में—सादे कपड़े पहनो तो सीधापन प्राप्त होगा।
तीर्थ यात्रा में—भगवान का नाम लो तो जीवन सफल होगा

व्रत

तीर्थ में जाकर—जीवन में कभी अभक्ष्य-भक्षण न करोगे, यह व्रत लो।
तीर्थ में जाकर—जीवन में कभी झूठ नहीं बोलोगे यह व्रत लो।
तीर्थ में जाकर—जीवन में कभी क्रोध नहीं करोगे यह व्रत लो।
तीर्थ में जाकर—पर-स्त्री को बुरी दृष्टि से नहीं देखोगे यह व्रत लो।
तीर्थ में जाकर—दूसरों का बुरा न करोगे, यह व्रत लो।
तीर्थ मे जाकर—सदा भगवान को याद रखने की चेष्टा करोगे यह व्रत लो।
तीर्थ यात्रा में—कभी कुसंग न करोगे, यह व्रत लो।
तीर्थ यात्रा में—प्रतिदिन २१६०० ओ३म् नाम का जाप करोगे, यह व्रत लो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुभूतियाँ

ज्ञानेन्द्र कुमार

एक

इच्छा :
संतुष्टि से दूर
अपने को गैर
बना देती है।

किन्तु निष्काम कर्म
साथ लिये इच्छा।

हे अनन्त!
हे असीम!

तुझ तक पहुंचू
इसकी एक राह
दिखा देती है।

दो

कहां नहीं भटका ?
कहां नहीं गया ?
क्या चाहता है तू
कुछ समझ नहीं आता।

एक ही लगन फिर
खींचती है मुझे
तू
यहीं कहीं छिपा होगा।

मैं जानता हूं जब तक
सब प्रयत्न कर
थक नहीं जाऊंगा
तब तक
तू, किसी को मिला होगा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसे इन्सान कहते हैं ?

किसी के काम जो आये उसे इन्सान कहते हैं – उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये उसे इन्सान कहते हैं – उसे इन्सान कहते हैं॥
कभी इन्सान है निर्धन कभी धनवान है इतना।
कभी सुख है कभी दुःख है इसी का नाम जीवन हैं॥
जो दुःख से भी न घबराये उसे इन्सान कहते हैं – उसे इन्सान कहते हैं।
यह जीवन एक उलझन है कहीं धोखा, कहीं ठोकर।
कोई हँस हँस के जीता है कोई जीता है रो रो कर॥
जो गिर कर भी सँभल जाए उसे इन्सान कहते हैं – उसे इन्सान कहते हैं।
अगर गलती सताती है तो रस्ता भी दिखाती हैं॥
बशर गलती का पुतला है – यह अक्सर हो ही जाती है।
जो गलती को न दोहराय उसे इन्सान कहते हैं – उसे इन्सान कहते हैं॥
अकेले ही जो खा खा कर सदा गुज़रान करते हैं।
यूँ ही तो पेट भरने को पशु भी पेट भरते हैं॥
जो तन-मन-धन लुटा डाले उसे इन्सान कहते हैं।
उसे इन्सान कहते हैं॥

PRAYER FOR WORLD PEACE

विश्व शान्ति के लिये प्रार्थना

"सर्वे भवन्तु सुखिनाः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत"

'सब का भला करो भगवान
सब पर दया करो भगवान
सब पर कृपा करो भगवान
सब का सब विधि हो कल्याण

भाने तेरे से प्रभु, भला भद्र हो जाये।
जग में सब नर नारि का, कष्ट न कोई पाये॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सात अनमोल बोल

१—गृहस्थ को पाँच अशुभ प्रवृत्तियों से बचना चाहिए--

(१) हिंसा (२) चोरी (३) व्यभिचार (४) असत्य और (५) व्यसन।

२—चार चीजें पहले दुर्बल दीखती हैं, परन्तु परवाह न करने से बहुत बढ़कर दुःख के गड्ढे में डाल देती हैं—अग्नि, रोग, ऋण और पाप।

३—चार गुण बहुत दुर्लभ हैं—धन में पवित्रता, दान में विनय, वीरता में दया और अधिकारों में निरभिमानता।

४—चार चीज़ों पर भरोसा रक्खो—भगवान्, सत्य, पुरुषार्थ और स्वार्थहीन मित्र।

५—चार के संग से बचने की चेष्टा रक्खो—नास्तिक, अन्याय का धन, पर स्त्री और दूसरे की बुराई।

६—तीन कार्य मुख्य हैं—पाप में अत्यन्त ग्लानि, धर्म के लिए कभी न बुझने वाली प्यास, और प्रणिमात्र के साथ हृदय की सहानुभूति।

७—जहाँ तक बन सके, बाहर के पापों से बिल्कुल बचकर भगवान् का भजन करो। जीवन बहुत थोड़ा है, विचारों में ही बिता देंगे, तो भजन से वंचित रह जाएंगे।

PRAYER TO THE LORD

स्वस्त्यस्तु विश्वस्य खलः प्रसीदताम्
ध्यायन्तु भूतानि शिवं मिथो धिया।
मनश्च भद्रं भजतादधोक्षजे
आवेश्यतां नो मतिरप्यहैतुकी ॥

May the world be peaceful. May the wicked become gentle. May all creatures think of mutal welfare. May their minds be occupied with what is auspicious. And may our hearts be immersed in selfless love for the Lord.

—*Bhagavata* V. 18-9.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो बातें

लिओ शिव नारायण बंसल

१. दो बातों से सदा बचते रहो।

(क) अपनी प्रशंसा से।

(ख) पराई निन्दा से॥

२. मानव जाति दो बातों से नष्ट हुई है।

(क) विलासिता से।

(ख) द्वेष से॥

३. महत्ता की दो सीढ़ियां हैं।

(क) कड़वी बात का मीठा उत्तर।

(ख) क्रोध के अवसर पर चुप्पी॥

४. बुद्धिमान बनने के दो उपाय हैं।

(क) थोड़ा पढ़ना अधिक सोचना।

(ख) थोड़ा बोलना अधिक सुनना॥

५. दो बड़े दोष हैं।

(क) धन के साथ घमण्ड।

(ख) सत्ता के साथ जुलम॥

६. दो बड़े हथियार हैं।

(क) ईमानदारी

(ख) सच्चाई॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ जीवनोपयोगी

जीवन ताश के खेल की तरह है। हमने खेल का आविष्कार नहीं किया है और न ताश के पत्तों के नमूने ही हमने बनाये हैं। हमने इस खेल के नियम भी खुद नहीं बनाये और न हम ताश के पत्तों के बंटवारे पर ही नियंत्रण रख सकते हैं। पत्ते हमें बांट दिये जाते हैं, चाहें वह अच्छे हो बुरे। इस सीमा तक निर्यातवाद का शासन है। परन्तु हम खेल को बढ़िया ढंग से या खराब ढंग से खेल सकते हैं। हो सकता है कि किसी कुशल खिलाड़ी के पास बहुत खराब पत्ते आये हों और फिर भी वह खेल में जीत जाये। यह भी सम्भव है कि किसी खराब खिलाड़ी के पास अच्छे पत्ते आये हों और फिर भी वह खेल का नाश करके रख दे। हमारा जीवन परवशता और स्वतन्त्रता, दैवयोग और चुनाव का मिश्रण है।

—डा० राधा कृष्णन

अगर दुनिया की तारीख पर नजर डालें, तो हम यह पाते हैं कि बड़े-बड़े संकट के दौर दुनिया के सामने आये हैं और हर जमाने में लोगों ने यही समझा है कि उनका जमाना संसार के इतिहास का सबसे खतरनाक जमाना है। फिर भी दुनिया कायम रही, न सिर्फ कायम रही, बल्कि कई दिशाओं में आगे भी बढ़ी है।

सो हम लोग भी, जो आज के जमाने में जीते हैं, हो सकता हैं, इसके बुरे और दर्दनाक पहलुओं को उचित से ज्यादा अहमियत दे रहे हों और इस बात को समझ ना पा रहे हों कि बुराई और दर्द की इस परत के नीचे शायद कुछ अच्छी चीजें भी कुलबुला रही हैं और मुमकिन है कि उनके अंकुर फूट निकलें और इन्सान को आगे बढ़ायें।

ऐसी आस्था रखना अच्छा है, और कोई लंगर हो, जो हमें बहुत ज्यादा बह जाने, भटक जाने से रोक सके, यह अच्छा है।

—जवाहरलाल नेहरू

मैं समझता हू—दिल और दिमाग को वन्द कर लेना अन्धेरा है, सर्वदा 'मैं—मेरा' के परकोटे में ही घिरे रहना अन्धेरा है, शुभ में अनास्था और अशुभ का आँकत अन्धेरा है, अस्थान में निहित श्रद्धा और सत्य-निरपेक्ष तर्क अन्धेरा है, अपने प्रति अतिमृदुता और दूसरों के प्रति अतिकठोरता अन्धेरा है, न हंसना और न मुस्कराना अन्धेरा है, सुन्दर-असुन्दर, सुरीला-बेसुरा में अन्तर न कर पाना अन्धेरा है, उद्यम-अभय मैत्री-आनन्द के चतुवर्ग से विमुख होना अन्धेरा है, जी लगाकर न जीना अन्धेरा है, मुरझा कर भरना अन्धेरा है। सोचता हू शायद अन्धेरे, की यह मोटी पहचान मुझे समय आने पर प्रकाश को चीन्हने की शक्ति दे।

—दत्तोपंत (नारायणदत्त)

अपनी अल्पता का दर्शन करना महान बनने का आरम्भ है,
अलग पड़ा हुआ समुद्र-बिन्दु अपने को समुद कहकर सूख जायेगा।
परन्तु अपनी बिन्दुला स्वीकार करे तो वह समुद्र की ओर
प्रस्थान करेगा और उसमें लीन होकर सनुद्र बन जायेगा।

—महात्मा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा रहेनुमा

प्यासा कोई मुसाफिर, भूले से दर पे आया
बरसा है बनके बादल, तेरी रहमतों का साया।
रहमो करम का कैसे, करूं शुक्रिया अदा मैं
दिल ने जहां पुकारा, वहीं दौड़के तू आया।
पीरों के पीर मुर्शिद, मुर्शिद कमाल मेरे
कैसे तुझे भुलाऊं, मुद्दत के बाद पाया।
तेरे सामने से उठ कर, मैं किस तरह से जाऊं
तुझ सा हसीन दिलबर, अब तक नज़र न आया।
वीराना हो या बस्ती, सहरा हो या चमन हो
हर गुल में तेरी खुशबू, तेरा है नूर छाया।
जब भी मेरा सफ़ीना, तूफ़ां से डगमगाया
तू ने दिया सहारा, आगे ही बढ़ के आया।
कमाल-मन्द हो तुम, रहबर हो रहनुमा हो
ठुकरा दिया जहां ने, तुमने गले लगाया।
फैलाने हाथ जाऊं, किस दर पे तू बता दे
इस दर से बढ़ के मुझको, दर दूसरा न भाया।
प्यासा कोई मुसाफिर, भूले से दर पे आया।

दो कणिकाएं

सुख बोला दुख से
'तेरा घर कहां ?' रोष में
बोला दुख—'मेरा घर
तेरे ही पड़ोस में'।

जीवन ने दी मृत्यु, मृत्यु ने
जीवन दान किया है
इसी मृत्यु ने हम सबका
जीना आसान किया है।

'लंगड़ी किरन' से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

heart attack

TEN COMMANDMENTS

FOR LIVING WITH YOUR HEART

1) Find a Doctor you respect, obey him.

2) Tell your Doctor the truth all the times.

3) Pity the fat man, statistician numbers his days. Keep your weight down.

4) If your brain earns your living be moderate as a week-end athlete, a labourer. Take regular exercise.

5) Let some younger folk do the hard work for you.

6) Avoid self dosing.

7) Fortunate is the man who has a mild heart attack, condition & learn to live with it.

8) Plan to time out daily for rest.

9) DON'T worry, avoid stress.

10) Be your age.

FOR HIGH BLOOD PRESSURE PATIENT

1) Learn to live at a lower tempo.

2) Learn to refuse extra commitments.

3) Avoid long working hours, heavy mental and physical stress and the general rush, hurry and struggle of modern living.

4) Avoid sudden effort in the cold or after a heavy meal.

5) Avoid straining at stool by regular bowl habits.

6) Insist on at least 9 hours rest in bed every night.

7) Keep Saturday and Sunday free for week-end relaxations.

8) Insist on proper holidays, atleast 6 weeks in each year.

9) Limit your smoking.

10) Keep your habit of alcohol, if at all, in moderation.

"ANYBODY CAN BE A HEART SPECIALIST. THE ONLY REQUIREMENT IS LOVING SOMEBODY"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

THE WORLD OF BOOKS

Such is the power of literature: it speaks of joy and makes one dance, it speaks of sorrow and makes one weep, it speaks of retirement and makes one detached, it speaks of love and makes one tender, it speaks of danger and makes one shiver, it speaks of pent-up anger and makes one cautious it speaks of indignation and makes one lay one's hand on the sword, it speaks of incitement to action and makes one throw down the pen, it speaks of the low and makes one roll down the rocks. It shakes our heart and dazzles our eyes.

× × ×

At a *DINNER* party in Paris where Benjamin Franklin was one of the distinguished guests, the Abbe Raynal asked, "What kind of man deserves the most pity ?" Franklin answered, "A lonesome man on a rainy day who does not know how to read."

× × ×

"Let me sell you my set of Encyclopedia Britannica." "Nothing doing! Don't want it, don't need it. I know more than all the guys that wrote it, put together."

"Fine ! Now, just think of the thrill you'd get going through it and picking out the mistakes they made."

× × ×

Mark Twain tells us of a neighbour of his, a connoisseur of books, who knew less about the art of being friendly than he did about first editions.

Once Mark Twain asked if he might borrow a book, and the connoisseur replied "You may consult it in my library, I cannot let you take it away."

There came a day when the book-lover asked if he mignt borrow Mark Twain's lawn mower, whereupon the humourist replied, "Certainly, but you must use it in my garden."

× × ×

The man at the door was irate. He was white with anger at being disturbed. "You book canvassers make me so angry with your confounded nerve and impudence that I cannot find words to express my indignation."

The canvasser, however, was not at loss for words. "Then, Sir," he replied, "I am a great help to you. I have here the very thing you need—a dictionary of the English language, containing all the words and slang phrases known, and only twenty rupees. Take it, and you will never be at a loss to express yourself again."

× × ×

Reading is to the mind, what exercise is to the body.

—Addison

× × ×

All that mankind has done, thought, gained or been it is lying as in magic preservation in the pages of Books.

—Carlyle

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A house without books is like a room without windows.

—H. Mann

× × ×

Books are the windows through which the soul looks out.

—Henry Ward Beecher

× × ×

The books that help you most are those that make you think the most.

—Theodore Parker

× × ×

Books are the treasured wealth of the world and the fit inheritance of generations and nations.

—Thoreau

× × ×

Affect not as some do that bookish ambition to be stored with books and have well furnished libraries, yet keep their heads empty of knowledge; to desire to have many books, and never use them, is like a child that will have a candle burning by him all the while he is sleeping.

– Henry Peacham
The Compleat Gentleman (1622)

× × ×

Nature and books belong to the eyes that see them.

—Ralph Waldo Emerson, *Experience*

× × ×

A good book is the precious life-blood of a master spirit, embalmed and treasured up on purpose to a life beyond life.

—John Milton, Poet, 1608-1674

VEDANTA AND MAUGHAM

W. Somerset Maugham

Larry Darrel, of Marvin, Illinois, the hero of *Razor's Edge*, is, in fact W. Somerset Maugham himself when asked about the goal of journey (wandering), gave a convincing reply. It was "liberation from the bondage of rebirth. According to the Vedantists the self, which they call the *atmana* and we call soul, is distinct from the body and its senses, distinct from the mind and its intelligence; it is not part of the Absolute, for the Absolute, being infinite, can have no parts, but the Absolute itself. It is uncreated; it has existed from eternity and when at last it has cast off the seven veils of ignorance it will return to the infinitude from which it came. It is like a drop of water that has arisen from the sea and in a shower has fallen into a puddle, then drift into a brook, finds its way into a stream, after that into a river, passing through mountain gorges and wide plains, winding this way and that, obstructed by rocks and fallen trees, till at last reaches the boundless sea from which it arose".

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Happy Birthday

The Art of Renewal

Wilfred A. Peterson

Your Birthday is the beginning of your own personal new year.

Your first birthday was a beginning, and each new birthday is a chance to begin again, to start over, to take a new grip on life...

It is a time to consider the wisdom of Socrates : "The unexamined life is not worth living". It is time to re-evaluate your past as a guide to your future.

It is time to remind you that "saints are sinners who keep on trying".

It is a time to toss old hatreds, resentments, grudges and fears into the westebasket of life:; a time to forgive and forget, a time to stretch your soul.

It is a time to list the things you have left undone and to do something about them: the visits you've failed to make, the words unspoken, the letters unwritten, the tasks unfinished.

It is a time to dust off your dreams and shine up your ideals.

It is a time to give thanks to God, and to man, for the riches that have been poured into your life, a time to appreciate anew the beauty and wonder of the world

It is a time to rededicate your life to those things which are enduring, recognising with William James that "the great use of life is to spend it on something that will outlast it."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

POETICAL EXPRESSIONS

POSITIVE THINKING

Let us forget your death and mine.
We have so much to remember :
A comfortable home
Your air-conditioned office
Our quarter-dozen children
Your bank balance
The Race Course nearby
Your Yoga exercises
My fortnightly manicure
And all those social engagements.
Who cares for primal disappointments ?

—Mamta Kalia

SELFISH ONE

Do not choose ME, O Lord,
to carry out thy purposes.
I'M quite worthy, of course,
but I have MY own purposes.
You have plenty of volunteers
to choose from, Lord.
Why pick on ME the selfish one ?
O well, if you insist,
I'LL do your will
Please try to make it coincide with MINE.

—Nissim Ezekiel

THE MERCIFUL SHOWERS

When the mother Earth
Repents her sins,
Committed in a few seasons,
The rain-god descends
On the Earth
To console her
And leave behind
A smiling, lush green face.

—K. V. Venkataramana

WHEN I DIE

When I die
Do not throw the meat and bones away
But pile them up
And
Let them tell
By their smell
What life was worth
On this earth
What love was worth
In the end.

—by Kamala Das

I HAVE HAD MY HOUR

Happy the man, and happy he alone,
He who can call today his own,
He who, secure within, can say,
"Tomorrow, do thy worst, for I have lived to day.
Be fair, or foul, or rain, or shine,
The joys I have possessed, inspite of fate are mine,
Not heaven itself upon the past has power
But what has been, has been, and
I have had my hour."

—John Dryden, after Horace.

ODE TO LIFE

Life ! when you are sad and gloomy.
I'll adorn you with 'CHEERFULNESS'.

Life ! in your moments of despair,
I'll bedeck you with 'HOPE'.

Life ! when you tremble with fear,
I'll decorate you with 'COURAGE'.

Life ! when you burn with hatred,
I'll beautify you with 'LOVE'.

Life ! when you toss about in pain,
I'll bejewel you with 'ENDURANCE'.

Life ! when you are the victim of death,
I'll crown you with 'IMMORTALITY'.

—Dolly Chakravorty

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

An Appeal

WHILE THEY SLEEP . . .

I need not shout my faith.
Thrice eloquent are quiet trees, and the green listening sod;
Hushed are the stars, whose power is never spent;
The hills are mute :
Yet how they speak of God :

The tranquillity on a sleeping child's face cleariy shows that today's troubles are forgotten and tomorrow's may never be. His world is secure.

It takes time to bring this feeling of security to a child who has seen his whole world crumble; it takes time, preseverance—and money.

Will you help by becoming a regular donor or, if you are already contributing, please consider increasing your monthly, annual (or accasional) donation to ensure that these needy children can look to the future with confidence.

SHRI SHARDHANAND BAL VANITA ASHRAM

6, TILAK ROAD, DEHRA DUN - 248001

Phone : 5101

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

MAX MUELLER'S LOVE FOR INDIA

THE GERMAN SAVANT WHO MADE SWAMI VIVEKANANDA EXCLAIM : "I WISH I HAD A HUNDRETH PART OF THAT LOVE FOR MY OWN MOTHERLAND."

WHAT INDIA MEANS TO ME

If I were to look over the whole world to find out the country most richly endowed with all the wealth, power, and beauty that nature can bestow—in some parts a very paradise on earth—I should point to India.

If I were asked under what sky the human mind has most fully developed some of its choicest gifts, has most deeply pondered on the greatest problems of life, and has found solutions of some of them which well deserve the attention even of those who have studied Plato and Kant, I should point to India.

And if I were to ask myself from what literature we, here in Europe, we, who have been nurtured almost exclusively on the thoughts of Greeks and Romans, and of one Semitic race, the Jewish, may draw that corrective which is most wanted in order to make our inner life more perfect, more comprehensive, more universal, in fact more truly human, a life, not for this life only, but a transfigured and eternal life—again I should point to India.

—MAX MUELLER

मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे ।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ।।

यजु ३६।१८

May all beings look on me with the eye of a friend ;
May I look on all beings with the eye of a friend ;
May we look on one another with the eye of a friend.

So chanted the great sages of the Vedic period. In answer as it were to this prayer, God has sent us friends always in the darkest hour of our need. They have been fascinated by the wisdom and the glory of India ; some of them were drawn to us by the suffering, the squalor of the people of India. Some of them came proud of heart hoping to make India a better land. Whatever their motives, they were moved by something divine, something noble and once they came to the shores of India, they gained a new identity with the India of their seeking.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Declaration of my faith

Mahatma Gandhi

My religion is Hinduism which, for me, is the Religion of Humanity and includes the best of all the religions known to me.

I am a staunch Hindu, but my Hinduism teaches me equal regard for all religions.

My Hinduism is not sectarian. It includes all that I know to be best in Islam, Christianity, Buddhism and Zoroastrianism. Truth is my religion and **Ahimsa** is the only way of its realization.

Broad Faith

In spite of my being a staunch Hindu, I find room in my faith for Christian and Islamic and Zoroastrian teaching, and, therefore, my Hinduism **seems** to some to be a conglomeration and some have even dubbed me an eclectic. Well, to call a man eclectic is to say that he has no faith, but mine is a broad faith which does not oppose Christians,—not even a Plymouth Brother—, not even the most fanatical Mussalman. It is a faith based on the broadest possible toleration. I refuse to abuse a man for his fanatical deeds, because I try to see them from his point of view. It is that broad faith that sustains me. It is a somewhat embarrassing position, I know,—but to others, not to me!

I should love all the men,—not only in India but in the world,—belonging to the different faiths, to become better people by contact with one another; and if that happens, the world will be a much better place to live in than it is today.

I plead for the broadest toleration, and I am working to that end.

I ask people to examine every religion

A PRAYER

Lord, make me an instrument of Thy peace,
Where there is hatred, let me sow love :
Where there is injury, pardon ;
Where there is doubt, faith ;
Where there is despair, hope ;
Where there is darkness, light ;
And where there is sadness, joy.
O divine Master, grant that I may not
So much seek to be consoled as to console,
To be understood as to understand.
To be loved, as to love.
For it is in giving that we receive,
It is in pardoning that we are pardoned,
And it is in dying
That we are born to eternal life.

—St. Francis of Assisi

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

from the point of the religionists themselves.

I do not expect the India of my dream to develop one religion, i.e. to be wholly Hindu, or wholly Christian, or wholly Mussalman, but I want it to be wholly tolerant, with its religions working side by side with one another.

Religion does not mean sectarianism.

It means a belief in ordered moral government of the universe. It is not less real because it is unseen.

This religion transcends Hinduism, Islam, Christianity, etc. It does not supersede them. It harmonizes them and gives them reality. □□□

He stopped at the thresholds of the huts of the thousands of dispossessed, dressed like one of their own. He spoke to them in their own language. Here was living truth at last, and not only quotations from books. For this reason the Mahatma, the name given to him by the people of India, is his real name. Who else has felt like him that all Indians are his own flesh and blood? When love came to the door of India, that door was opened wide. At Gandhi's call India blossomed forth to new greatness, just as once before, in earlier times, when Buddha proclaimed the truth of fellow-feeling and compassion among all living creatures.

—RABINDRANATH TAGORE

A SMILE IS THE SAME IN ANY LANGUAGE•

The Value of a Smile

It costs nothing, but creates much.

It enriches those who receive, without impoverishing those who give.

It happens in a flash and the memory of it sometimes lasts forever.

None are so rich they can get along without it, and none so poor but are richer for its benefit.

It creates happiness in the home, fosters goodwill in a business and is the countersign of friends.

It is rest to the weary, daylight to the discouraged, sunshine to the sad and Nature's best antidote for trouble.

Yet it cannot be bought, begged, borrowed, or stolen, for it is something that is no earthly good to anybody till it is given away.

Nobody needs a smile so much at those who have none left to give.

So, if you want people to like you, "SMILE"

—**Dale Carnegie**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

MIRA BAI

Mira Bai at a tender age 'married' Lord Krishna. This spiritual union saw her through all her trials and torments—a social marriage, widowhood, and a scheming Rana—to the land of Krishna—Brindavan and Dwarka. Here she preached her love for Krishna lyrically till her death. After her death, legends sprang up around her, and to separate folklore from fact became impossible. But then Mira Bai herself has become legendary.

She was fearless in her nature, simple in her habits, joyous in her disposition, amiable in her deportment, graceful in her behaviour and elegant in her demeanour, immersed herself in the love of *Giridhar Gopal*. The name of *Giridhar Gopal* was always on her lips. Even in her dreams, she lived and had her being in *Shri Krishna*.

In her divine intoxication she danced in pubiic places. Her exalted state could not be adequately described in words. She was sunk in the ocean of *Prem*. She had no consciousness of her body and surroundings. Who can gauge the depth of her devotion ? She taught the world the way to love God.

Her mystic songs exert a benign influence on the hearers. Here is one of her famous couplet :

अब तो मेरा गिरधर गोपाल, दूसरा न कोई
प्रेम आंसू डाल डाल, अमरबेल बोई
अब तो बात फैल गई, जाने सब कोई
दास मीरां लाल गिरधर, होनी सो होई।

To my Lord and master Krishna
Am I pledged for ever and aye
Giridhar Gopala my life's loyalty is thine for evermore
Watered by devotion's tears !
The four winds blow my secret afar
But what care I ?
I have chosen—henceforth, I walk my destined path

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A PSALM OF LIFE

WHAT THE HEART OF THE YOUNG MAN SAID TO THE PSALMIST

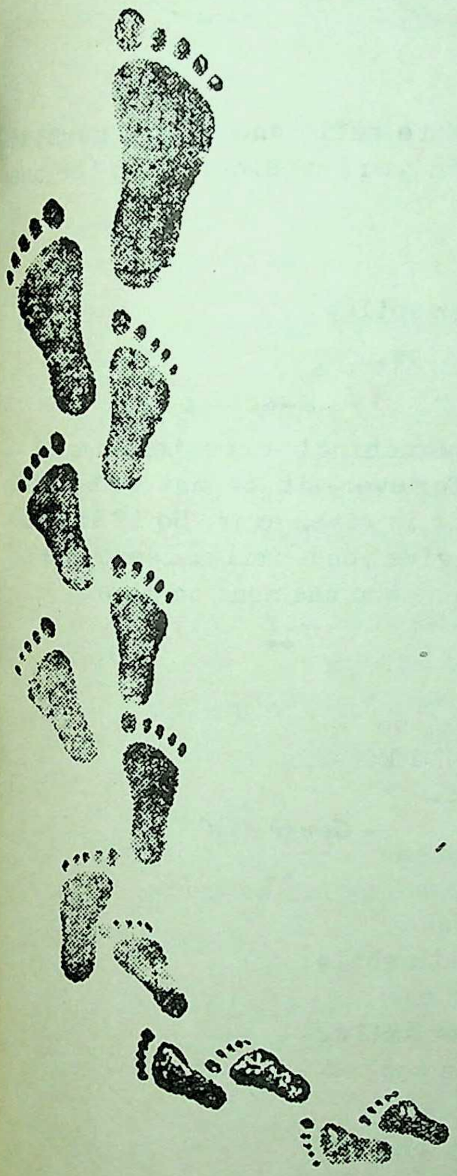

Tell me not, in mournful numbers,
Life is but an empty dream!—
For the soul is dead that slumbers,
And things are not what they seem.

Life is real ! Life is earnest !
And the grave is not its goal;
Dust thou art, to dust returnest,
Was not spoken of the soul.

Not enjoyment, and not sorrow,
Is our destined end or way;
But to act, that each tomorrow
Find us farther than today.

Art is long, and Time is fleeting,
And our hearts, though stout and brave,
Still like muffled drums, are beating
Funeral marches to the grave.

In the world's broad field of battle,
In the bivouac of Lite,
Be not like dumb, driven cattie!
Be a hero in the strife!

Trust no Future, howe'er pleasant!
Let the dead Past bury its dead!
Act,—act in the living Present!
Heart within, and God o'erhead!

Lives of great men all remind us
We can make our lives sublime,
And, departing, leave behind us
Footprints on the sands of time;

Footprints, that perhaps another,
Sailing o'er life's solemn main,
A forlorn and shipwrecked brother,
Seeing, shall take heart again.

Let us, then, be up and doing,
With a heart for any fate;
Still achieving, still pursuing,
Learn to labour and to wait.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SMILE AWHILE

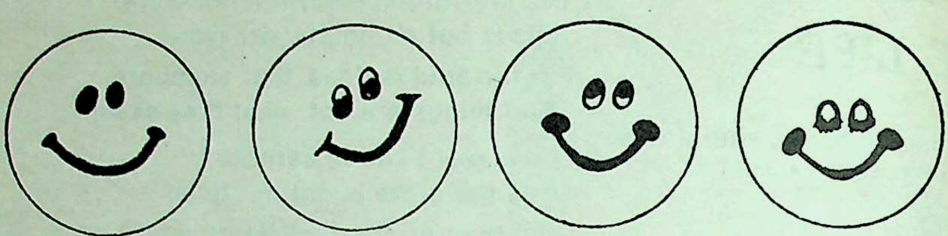

It takes 47 muscles to frown but only 15 to smile and if you persist in frowning you will have 32 more wrinkles when you get older than the one who smiles very often.

✦✦ ✦✦ ✦✦

Smile awhile, and while you smile another smiles.
And soon there are miles and miles of smiles.

✦✦ ✦✦ ✦✦

Isn't a smile a wonderful thing? It costs nothing but creates so much—it happens in a flash but the memory lives for ever—it cannot be bought, borrowed or stolen, but it is no use until it is given away. So if in your hurry you meet some one who is too weary to give you a smile, leave one of yours, for no one needs a smile as much as the one who has none to give.

✦✦ ✦✦ ✦✦

What's the use of worrying ?
It never was worth while, so
Pack up your troubles in your old kit-bag,
And smile, smile, smile.

—*George Asaf*

✦✦ ✦✦ ✦✦

The thing that goes the farthest
towards making life worth while,
That costs the least, and does the
most, is just a pleasant smile.
It's full of worth and goodness too,
with manly kindness blent,
It's worth a million dollars and it
does'nt cost a cent.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'Tis easy enough to be pleasant,
when life flows along like a song;
But the man worth while is the one
who will smile
When everything goes dead wrong.

—Ella Wheeler Wilcox

✦✦ ✦✦ ✦✦

Better by far you should forget and smile
Than that you should remember & be sad.

✦✦ ✦✦ ✦✦

As men's faces smile on those who smile,
so they respond to those who weep.

—Horace

✦✦ ✦✦ ✦✦

A smile is quite a funny thing
It wrinkles up your face
And when it's gone you never find
Its secret hiding place.
To see what smiles can do.
You smile at one, he smiles at you
So one smiles makes two
And since a smile can do a great good
By cheering hearts of care
Let's smile and smile and not forget
That smiles go everywhere.

✦✦ ✦✦ ✦✦

Laugh and the world laughs with you,
Weep and you weep alone.

✦✦ ✦✦ ✦✦

Man is the only creature endowed with
the power of laughter.

—Greville

✦✦ ✦✦ ✦✦

He laughs best who laughs last.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Forgotten himself

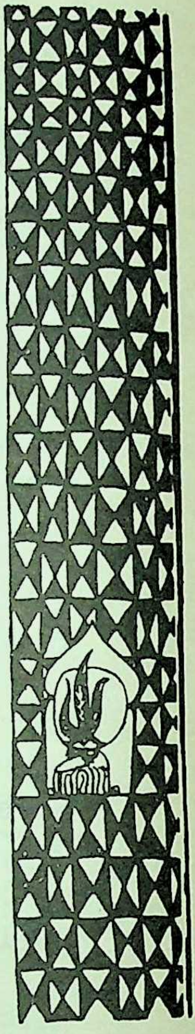

Nasrudin called at a castle to collect for charity.

'Tell your master', he said to the doorkeeper, 'that Mulla Nasrudin is here and asks for money'.

The man went into the building then came out again.

'I am afraid that my master is out', he said.

'Let me give you a message for him, then', said Nasrudin.

'Even though he has not contributed he can have this advice, free. Next time he goes out he should not leave his face at the window. Someone might steal it'.

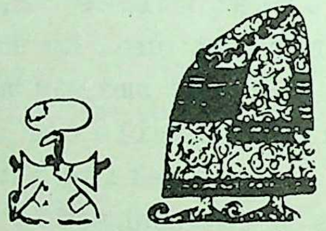

The Evening of their Years

LET us never fail our admiration to express—for those who serve the aged, who with great unselfishness—work where old folks come to spend the evening of their years. Thank God such people still exist! It moves the heart to tears—to see how many need such help, dependent at the last—helpless and alone upon a stranger's mercy cast, unwanted by their families for whom in earlier days—they struggled and they sacrificed in oh so many ways.

They forget there'll come a day when they too will be old—longing for a word of comfort and a hand to hold . . . Homeless, hopeless, ill perhaps, with life's last pains to bear—with no one of their own nearby and nobody to care.

PATIENCE STRONG

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

The meandering stream —
Lonely,
Lovely,
Sings its way
To meet the river.
One with it
It loses itself!

And the river —
Mighty,
Serene,
Swiftly but steadily
Hums its way
To join the sea.
One with it
It forgets itself!

The waves of the sea —
High,
Wistful,
Roar their way
To be one
With the shore.
When repelled
Break in a million
Fragments
And lose themselves
For ever, ever!

Isn't it then
Worthy,
Wholesome
If I smile my way
For Union with you.
For ever, MY LORD?

THE UNION

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Hints for Self Culture

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

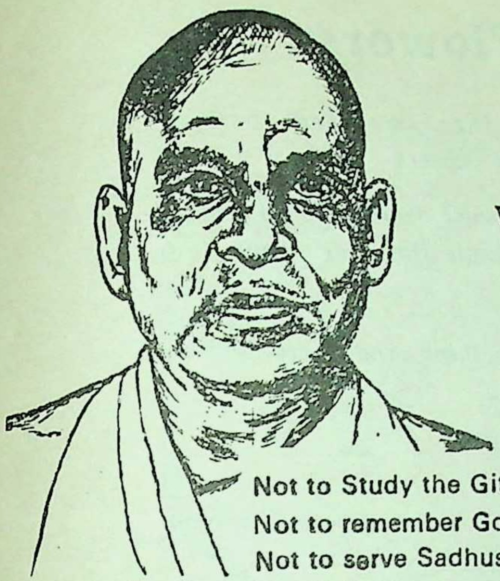

WHAT IS REAL DEATH

Swami Sivananda

Not to Study the Gita, Upanishad, daily,
Not to remember God at all times,
Not to serve Sadhus and Gurus,
Is real death.

Not to have equal vision,
Not to have balanced mind,
Not to have Atma Drishti,
Is real death.

Not to have Brahma Jhana,
Not to have a large heart,
Not to do charitable acts,
Is real death.

To Identify oneself with the body,
To Forget ones divine nature,
To live aimlessly,
Is real death.

To eat drink and be merry,
To waste the time uselessly,
To loose one's honour and name,
Is real death.

To gamble and play cards,
To read novels, drink and Smoke,
To gossip, cavie, and scandalise,
Is real death.

To back bite revile, carry tales.
To speak ill of others,
To cheat falsify and dupe,
Is real death.

To earn money unlawfully,
To outrage others women,
To injure others,
Is real death.

To lead a sensual life,
To waste vital energy,
To have a lustful look,
Is real death.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Say it with Flowers . . .

A century ago lovers were shyer than now, and conveyed their deepest emotions by means of flowers.

An orchid clutched in a maiden's moist hand said, "I await", while a sprig of holly sent through the mail meant "I'm afraid to approach."

In this jet age, you can convey anything and everything by means of Flowers:

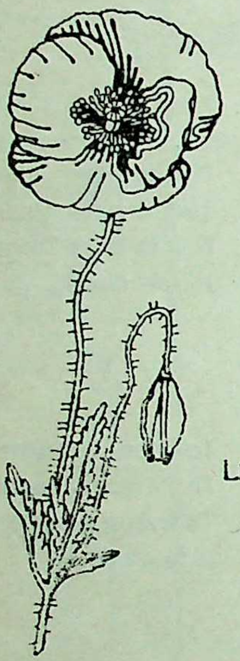

Poppy. "My dreams are of you."

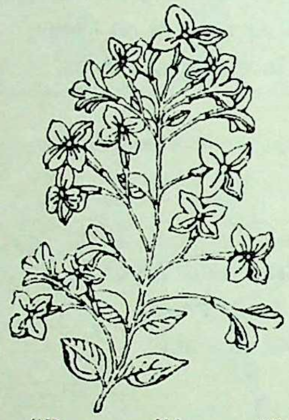

Lilac. "Do you still love me?"

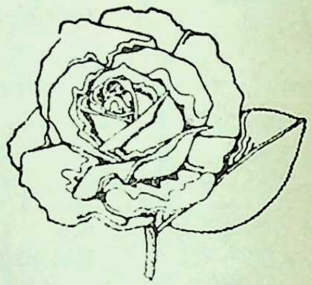

Rose. "Your sorrows are mine."

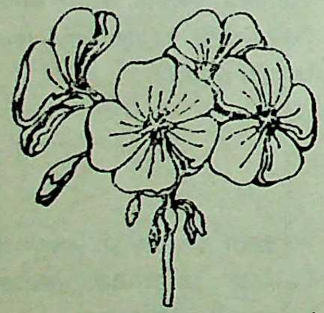

Geraniam. "You are childish."

Anemone. "Go away!"

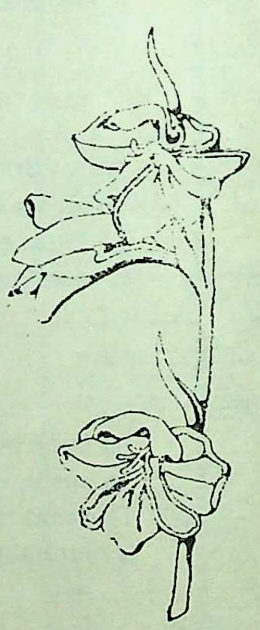

Gladiola "You pierce my heart."

"Stretching his hand out to catch the stars, he forgets the flowers at his feet."

—Jeremy Bentham

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

MORALITY — THEN

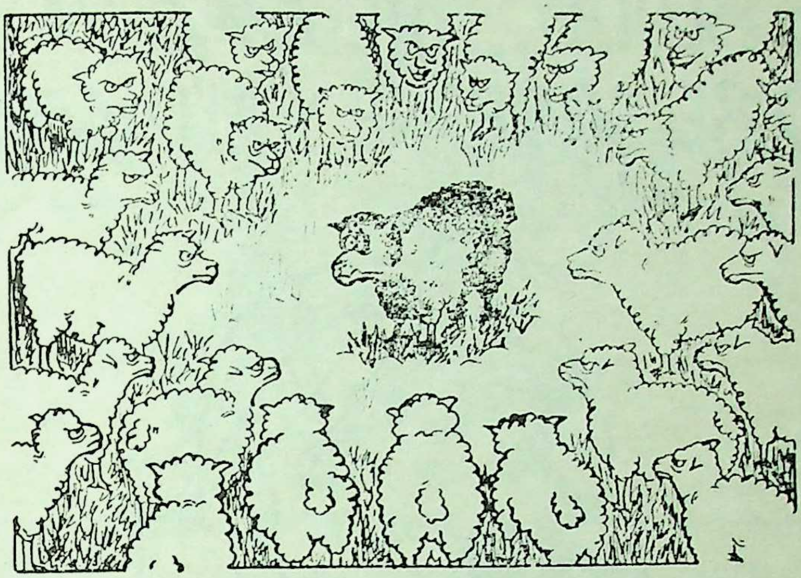

NOW

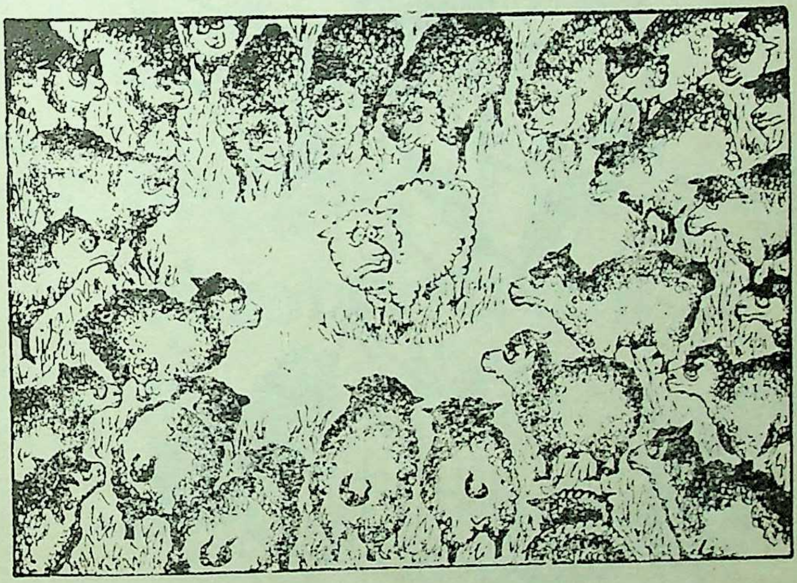

TOO MANY JAWS

I asked our postman, who was retiring after 40 years, if the work was much different now from what it was when he first started. He said, "Yes, it is Forty years ago we only had to worry about dogs snapping at us. Now it's everybody!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Dennis the Menace says:

"GIVE BLOOD... THE *LIFE* YA SAVE COULD BE SOMEONE YOU'D *LIKE*!"

Thousands of people each day throughout the world require blood transfusions.

People in your country. Your city. Perhaps even your next door neighbour.

There just isn't enough blood on hand to meet these needs. And the needs are growing faster than the increase in blood donations.

Giving blood takes only a few minutes. But it can give semeone else a lifetime.

Please contact your local Red Cross today.

GIVE BLOOD... SAVE LIFE.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

The House Blessing.

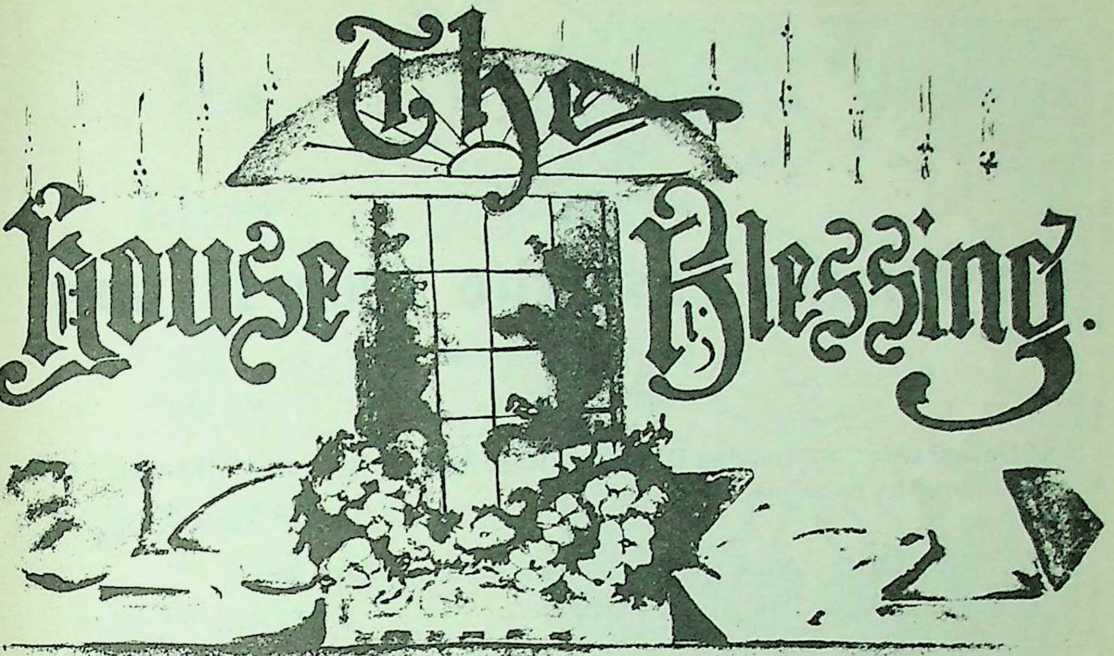

The beauty of the house
is order,
The blessing of the house
is contentment,
The glory of the house
is hospitality,
The crown of the house
is Godliness.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

Swamiji's Favourite Vedic Hymns

1. विश्वानिदेव सवितदुरितानि परासुव ।
यद्भद्रन्तन्न आसुव ॥ यजु 30.3

O Deva Savitar, All-creating Divinity ! Please keep far from us all the evils and let us attain whatever be beneficial to us.

Yaju XXX, 3

2. ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ यजु: 3.36, ऋक् 3,6.10
साम उत्तरार्चिक 13.4.1

By the gace of Om – God, Self-existent, Omniscient and All-bliss, the Source of life, the Dispeller of all sufferings and All-pervading, we meditate on the most excellent gl ory of the All-creating Divinity so that, He may lead our intellects to noble works.

Yaju III, 36; Rik III, 62, 10; Sama Utta, XIII, 4, I

3. अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेननो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ॥ यजु: 40.16

O Self-refulgent Divinity ! Please lead us on the path of virtue for the acquirement of physical and spiritual wealth, Thou knowest all the procedure of works and wisdom underlying therein. Please remove from us the act of sin which involves transgression of nature and its laws. We may remain ever-engaged in uttering Thy praise in various ways.

Yaju XL, 16

4. चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्ने ।
आप्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा
जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ॥ यजु: 7.42

The wonderous Divine Power is manifest in this universe and the force of integration, regulation and disintegration, it is this power which is permeating the whole Heaven, Earth and atmospheric region and is the impelling force of acting as the innermost self of all animate and inanimate creation.

Yaju VII, 42

(English translation by Acharya Vaidyanath Shastri)

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष॑ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

The Glory of Gayatri

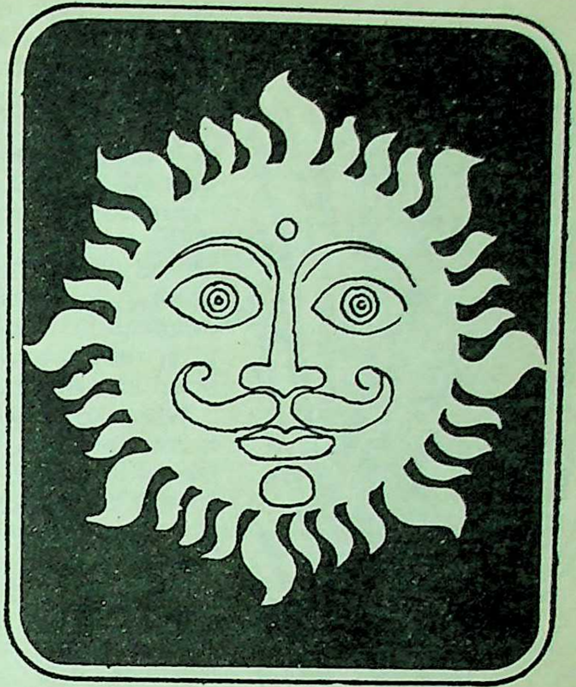

I. K. Taimni

Gayatri Mantra:

तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्

tat savitur varenyam bhargo devasya
dhimahi dhiyo yo nah prachodayat

"We meditate upon the Divine Light of that adorable Sun of spiritual Consciousness which stimulates our power of spiritual perception."

Gayatri is a *mantra* and a prayer combined. A pure *mantra* depends for its effectiveness upon the *mantra sakti* or power inherent in sound. It may or may not even have any meaning. Many important *mantras* make no sense and sound like gibberish. A Gayatri *mantra* on the other hand has also in it the tremendous power of prayer as indicated by the definition *gayantam trayate iti Gayatri* (that which saves the chanter). It embodies in the form of a *mantra* the highest spiritual aspiration of which a human soul is capable. When the power of *mantra* is thus combined with the power of prayer we get a far more effective instrument for the unfoldment of our spiritual potentialities. We are apt to underrate the power of prayer in the unfoldment of spiritual life. We do not seem to take account of the fact that many schools of mysticism and religious discipline depend almost entirely upon the power of prayer for the realization of their

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

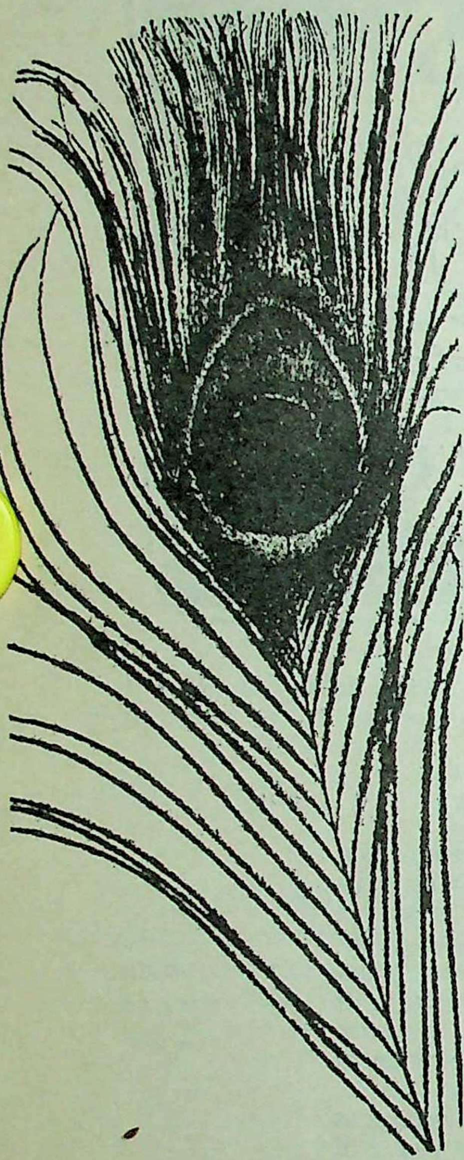

religious aspirations. The Sufi and the Christian saint can rise to great heights of spiritual illumination depending entirely upon the power of prayer. Prayer when it comes from the depths of our being and is directed by unselfish motives and intense aspiration is a tremendous power. It is a call of the individual Monad (*Jivatma*) to the Supreme Spirit (*Paramatma*), the very source of its being and the fount of spiritual power and must be heard and answered.

When the power of a prayer is combined with the power of a *mantra* in Gayatri we get a *mantra* which is not only more effective but also more attractive. The emotional element in man can find free play and this tends to neutralize the rather damping effect of a mere dry mechanical repetition with which the *sadhaka* begins his *japa*. There is a wonderful exhilarating effect in this direct and personal approach to the Divine when the soul pours out its deepest and earnest sentiments before God. That is also the reason why the strict adherence to ceremonial proprieties demanded in the use of other *mantras* is not required in the japa of Gayatri. The state of devotion (*bhakti bhava*) can make up for any deficiency in the ceremonial procedure. The more impersonal and unselfish the objective of a *mantra* the less it is subject to the trammels of conventional and traditional instructions and restrictions...

Japa alone will not do, it must be accompanied by constant meditation also as indicated in I-28 of the *Yoga-Sutras*.

The *sadhaka* who is earnest about the achievement of his aim in Gayatri *upasana* has not only to meditate on the Gayatri *mantra* at the time of *japa* but to brood over the meaning of the *mantra* whenever opportunity offers itself. In fact, this should become such a strong habit of the mind that it reverts to the mantra automatically whenever it is free. It is only out of such a concentrated and constant effort that rapid and remarkable results can be obtained...

Most of us are utterly oblivious of the fact that we are here for a very brief period and are an insignificant part of a vast and apparently unlimited universe. An insect crawling on the Himalayas has comparatively a greater significance from the purely physical point of view.

We enter this life by the gateway of birth and after spending about 70 years on this planet under all kinds of circumstances we disappear by the gateway of death. This procession of living beings has been going on for thousands of years and yet it does not occur to many people to ask the very pertinent questions as to where we have come

---

THE RELIGIOUS SPIRIT

The revolutionary spirit teaches people their rights alone; the religious spirit teaches them their duties too.
— X. Aubryet

Religion only makes a man brave, patient, and intrepid through conscience; and if a man remains faithful to religion, he would be invincible — Duguel

Whatsoever you do, whatsoever you eat, whatsoever you sacrifice, whatsoever alms you give, whatsoever penance you undergo, do it as an offering unto me.
— Bagvad Gita (IX-27)

Morality without religion is only a kind of dead reckoning — an endeavour to find our place on a cloudy sea.
— Longfellow

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

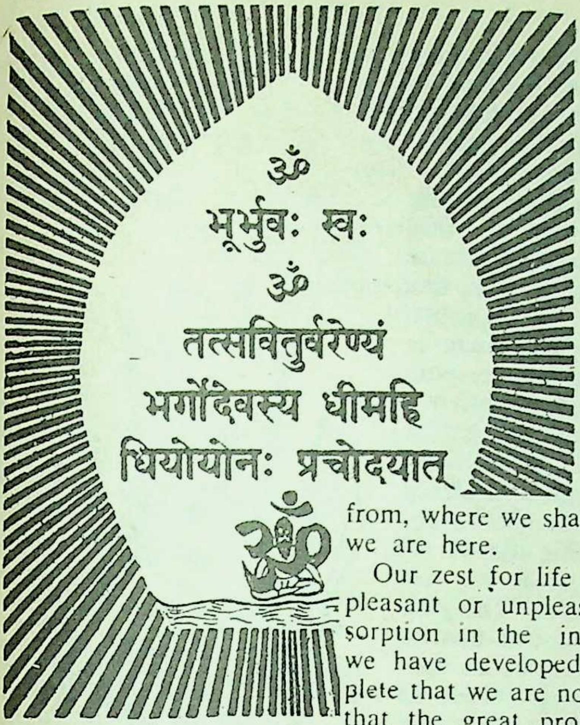

अभीष्ट फलदायिनी गायत्री माता

from, where we shall go and why we are here.

Our zest for life whether it is pleasant or unpleasant, our absorption in the interests which we have developed, is so complete that we are not even aware that the great problem of life faces us all the time, that an overwhelming mystery surrounds us.

Not only are we pursuing our personal little aims in an apparently meaningless world in a haphazard manner but we show the same lack of intelligence in dealing with the larger problems of humanity. There is utter lack of any guiding principles or ideas indicating the direction in which we have to go. There is a vague idea that we have to promote the welfare of humanity but what real welfare means and how it is to be obtained are questions about which there is bitter controversy and mortal conflict. So much so that we are ready poised to destroy in an atomic war the larger part of that very humanity for whose betterment we are supposed to be working and fighting! Could there be a more apt illustration of this prevailing lack of intelligence, despite the extraordinary intellectual achievements of Science and the undoubtedly high mental calibre of those who guide the destinies of nations?

Many of us, especially in India, who are pursuing whole-heartedly these temporary aims in search of happiness know theoretically that this search is futile and real happiness can be found only within oneself by raising the consciousness to higher levels and gradually transcending the illusions and limitations of the lower life. But still we do nothing to bring about the necessary changes in our life. Why? The reason for this anomalous behaviour, according to our Rishis, lies in the fact that the perception of the deeper truths of life and the inner significance even of the ordinary facts with which we come in contact every day depends not upon the higher spiritual faculty which is called *Buddhi* and which is vaguely referred to as intuition in Western psychology. The intellect may know all the facts but unless and until it is illuminated by the light of *buddhi* it will fail to see their deeper significance.

That is why the attitude of the philosophers who lecture every day on the deepest problems of life does not differ appreciably from the attitude of the man in the street. That is why the scientists who daily scan the skies and look into the farthest depths of this vast universe cannot see the insignificance of our human life from the purely physical point of view. That is why we find so many religious teachers preaching Vedanta to their followers and living their

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

life as if this philosophy was a matter of pure academic interest. These people seem to know everything and yet really know nothing. Their knowledge is on the plane of the intellect only.

The faculty of *buddhi* has not yet been developed or allowed to function in an adequate degree. Their knowledge has not yet been converted into realization by the illumination of *buddhi*.

This lack of inner perception is not the only result of the obscuration of the *buddhic* faculty. When this faculty has been allowed to become dormant to an extraordinary degree by evil tendencies and actions it can result in phenomena which appear truly amazing from the psychological point of view. We can find otherwise normal and sensible people behaving like lunatics in certain matters. We can find a remarkable intellectual grasp of even spiritual truths existing side by side with moral depravities of the worst kind. It is difficult to understand such anomalies unless we recognize this distinction between the intellect and *buddhi*. All such cases are due to abnormalities in the functioning of *buddhi* brought about either by a lopsided development of the intellect or by allowing oneself to be slowly side-tracked into evil ways.

Buddhic illumination is needed not only in guarding us from going astray in life or falling into evil ways but also in the field of *sadhana* when we embark in right earnest upon the divine adventure of Self-realization.

Many people in this country honestly believe that all they have got to do in order to ensure their spiritual progress is to find a suitable *guru* or spiritual teacher who will guide them in everything and become responsible for their spiritual welfare.

The real fact, however, is that no real treading of the spiritual path is possible until a *Sadhaka* has unfolded his *buddhi* sufficiently to find within himself all the guidance he needs for his spiritual advancement. The *guru* may help him in crucial matters or on special matters or on special occasions but he cannot be at the disciple's elbow to help him out in every difficulty or ordeal. In fact, the more the disciple advances on the Path, the more he has to learn to be independent of his *guru*. The light on the Path must come from within.

What has been said above will show the importance of developing our *buddhi* and the reason why our Rishis made the *japa* of Gayatri an integral part of our daily religious practice.

The Gayatri *mantra*, which is the chief element in Gayatri *upasana* or *sandhya* as it is usually called, occurs in all the four Vedas and also in the Tantras and is referred to in superlative

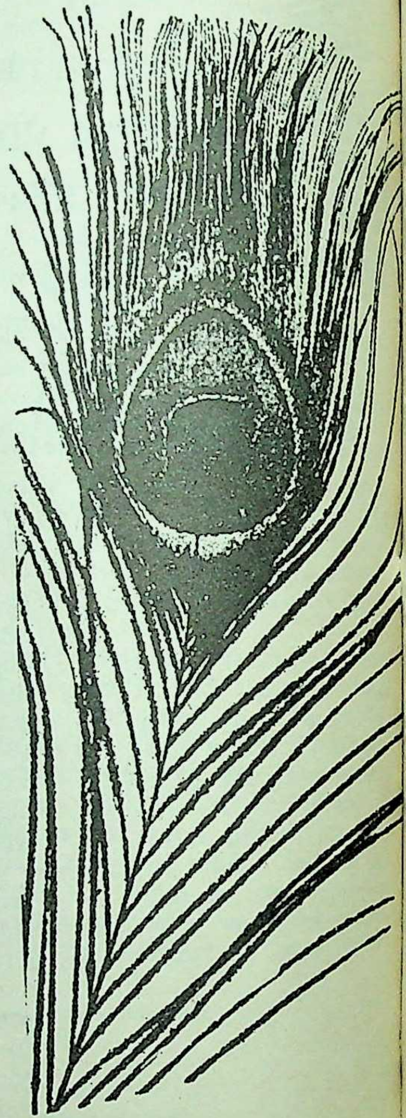

TOD'S RAJASTHAN

"Two hundred years ago you did not need to give written promise for a trust placed in your hands. Your immense banking business three centuries ago was carried on by word of mouth. So much so that Phillimore and later writers speaking of the Indians, said that they were a peculiarly truthful people. Truth was specifically an Indian virtue."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

terms by many Rishis and authors whose names are associated with the Hindu Scriptures. Although the powers and virtues attributed to this mantra are generally expressed in hyperbolic language which cannot be taken at its face value, still this universal and overwhelming evidence regarding the great importance of this *mantra* should leave no doubt in the minds of the reader that the *mantra* is capable of unfolding our spiritual faculties in a remarkable manner provided it is used properly.

□□□

THE BEGINNING OF WISDOM

THE ancient people who desired to have a clear moral harmony in the world would first order their national life; those who desired to order their national life would first regulate their home life; those who desired to regulate their home life would first cultivate their personal lives; those who desired to cultivate their personal lives would first set their hearts right; those who desired to set their hearts right would first make their wills sincere; those who desired to make their wills sincere would first arrive at understanding; understanding comes from the exploration of knowledge of things.

When the knowledge of things is gained, then understanding is reached; when understanding is reached, then the will is sincere; when the will is sincere, then the heart is set right; when the heart is set right, then the personal life is cultivated, when the personal life is cultivated, then the home life is regulated, when the home life is regulated, then the national life is orderly; and when the national life is orderly, then the world is at peace.

From the Emperor down to the common man, the cultivation of the personal life is the foundation for all. It is impossible that when the foundation is disorderly, the superstructure can be orderly. There has been a tree whose trunk is slender and whose top branches are heavy and strong. There is a cause and a sequence in things, and a beginning and end in human affairs. To know the order of precedence is to have the beginning of wisdom.

—*Confucian Scholars.*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Had I given my all!

Rabindranath Tagore

I HAD gone a-begging from door to door in the village path, when thy golden chariot appeared in the distance like a gorgeous dream and I wondered who was this King of all kings!

My hopes rose high and methought my evil days were at an end, and I stood waiting for alms to be given unasked and for wealth scattered on all sides in the dust.

The chariot stopped where I stood. Thy glance fell on me and thou camest down with a smile. I felt that the luck of my life had come at last. Then all of a sudden thou didst hold out thy right hand and say "What hast thou to give to me?"

Ah, what a kingly jest was it to open thy palm to a beggar to beg! I was confused and stood undecided, and then from my wallet I slowly took out the least little grain of corn and gave it to thee.

But how great my surprise when at the day's end I emptied my bag on the floor to find a least little grain of gold among the poor heap. I bitterly wept and wished that I had had the heart to give thee my all.

Gitanjali

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

THE GREATEST DHARMA

Dr. S. Radhakrishnan

Dharma *is that which binds society together. That which divides society, breaks it up into parts and makes people fight one another is adharma......*

THE talk about *dharma* : In the *Brihadaranyaka Upanishad* is asked the question: what is *dharma*?

There was a thunder-clap—*da da da damayata, datta, dayadhvam—dama, dana, daya*, these constitue *dharma*.

If a man is to regard himself as a virtuous man, he should have these three qualities of *dama* or self-control, *daya* or compassion, *dana* or charity. If we possess a little of this *dharma*, we will be protected from every kind of attack—*na hi kalyanakrit kaschit durgatim tata gachhati svalpamapyasya trayate mahato bhayat*. If we perform but a little of this *dharma*, it will protect us from great fear. That is what we have been told.

If we are unable to defend ourselves or if we are unable to protect ourselves against any kind of attack from outside, it is because we are ourselves lacking in this quality of *dharma--yato dharmastato jayah*—wherever you have *dharma*, you have victory. So if we want to work for victory we must work for *dharma*.

Dharma literally means that which binds society together. That which divides society, that which disintegrates it, breaks it up into parts or fragments and makes people fight one another, making them think that they belong to this or that creed, that is not true *dharma*.

Our scriptures proclaim from the very start that there is only one Reality in this world which is described in different ways—*ekam sad vipra bahudha vadanti*. You find the *Upanishad* also telling us *esha deva visvakarma mahathma*: that one supreme Lord dwells in the hearts of all human beings, there are no distinctions there. So far as the presence of God in each human being is concerned, there is no discrimination on the part of God. He is there present in every human heart. Many of us disappear without becoming conscious of this Divine presenee. There is a difference between the presence of God and consciousness of that presence. Though God may be prsent everywhere, all of us are not equally conscious of the presence of God. We therefore, say that distinctions of all these different religions should not be regarded as fundamental or final. The Final is the ultimateness of the supreme. If we are able to have that consciousness of God, it is only then that we can be regarded as religious.

By bathing in rivers, or worshipping images made of clay and stone, we may attain salvation some time, in due course. But a sadhu, a saint, purifies you at sight, *darsanadeva hi sadhavah*. Such people who are called sadhus are not ritualists. They

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

are not people who infer God by philosophical arguments, but they are people who have seen the Divine. The *rishis*, the seers themselves, have felt the reality of God in their own being. They live in the consciousness of the presence of God.

Our scriptures have said, *uttama sahajavastha, dvitiya dhyana dharana*. Live always soaked in the nature of God. Do not have one instant of your life separted from God. Whatever you happen to do, do with the consciousness of the Supreme. That is the *sahajavastha*. If you are not able to live in the consciousness of God, then you have to practise *dhyana* and *dharana*.

If even when you are asked to practise that, you are not able to realize the Supreme, a lower stage is *pratima puja*. If even then worship of God cannot be dinned into your ears, *homa* and *yatra*—that is the graduated scale.

You find, therefore, that our scriptures have always asserted a kind of generous hospitality towards the modes of worship—*homa*, *yatra*, *pratima puja*, *dhyana* and *dharana* are all permitted, but you have to aim at the highest goal of living in the consciousness of the Divine *sahajavastha* always born with you, living side by side with the Divine, looking upon Him as the eternal Presence in your heart. That is the higher kind of religion. That kind of religion does not bother about this, that and the other distinction.

You find a Sikh Guru telling us: *mandira masjid tere dham, Isvara Allah terenam.* All the great saints of God are the messengers sent by the Supreme for the purpose of satisfying the aspirations of the human individual. Every saint embodies a little of the Supreme and when that little light spreads over his whole nature and makes of it an eternal flame, a transparent spirit, then you find that that saint becomes a symbol of the Absolute Divine. That is how in our country from the beginning of our history our people have been trying to rise to the consciousness of the Divine in every activity that they perform.

If you have that sense, whatever you, do, you will do it with a sense of dedication to the Supreme. You will become a transformed being; the invisible splendour in you will shine out and become a little rising flame which burns up every kind of impurity and makes of you a symbol of true purity, of utter ligh t. That is why in many cases we are called upon to work in this world with the single spirit of dedication.

Whatever waves come upon you in this world, never give up your faith in the Eter-

---

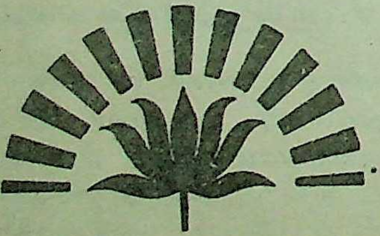

OM

O man ! Wealth, Vehicles, Sons
Women, Dominations, Property
Are worthless !
They are all perishable.
Seek the Lotus feet of the Lord
And attain Immortality,
Eternal Bliss and
Supreme Peace.

—Swami Sivananda

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

nal even as a *nati* does not give up her attention to the water-pot that she is carrying on her head even when she sways in dance to different tunes on the stage.

Dharma is nothing more than this realization of the Supreme and acting even in every small act of your life with that Supreme, present in your mind. If you are able to do so, you are performing *dharma*. If not, if other interests invade you, if you try to translate your mind into other regions, you may think that you are a believer but are not a true believer.

The real believer in God has his consciousness always there, his heart always lifted to the Divine.

What the *kirtanakaras* and *pracharaks* are doing is merely to enable every nook and corner of our country to throb with this feeling, vibrate with a sense of the Eternal, to make all feel that in this world nothing moves without the presence of the Eternal and the permission and consent of the Eternal.

You have to perform *dharma*; that is the only obligation you have in this world.

Dharma is *paropakara*: *adharma* is *paraiba* That is the one simple definition that we have. What is the use of expanding it in a series of books?

If you understand, that hurting another man is *adharma*, blessing another man is *dharma*, you are performing *dharma*.

"AN INNOCENT YOUTH IS A PRICELESS POSSESSION" — MAHATMA GANDHI

Build up a healthy, happy generation and safeguard its future

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

What is Life ?

LIFE IS A CHALLENGE	... Meet it.
LIFE IS A STRUGGLE	... Accept it.
LIFE IS A SORROW	... Overcome it.
LIFE IS A MYSTERY	... Unfold it.
LIFE IS A TRAGEDY	... Face it.
LIFE IS A JOY	... Spread it.
LIFE IS A LOVE	... Love it.
LIFE IS A DUTY	... Perform it.
LIFE IS A ROMANCE	... Enjoy it.
LIFE IS A GAMBLE	... Watch it.
LIFE IS A SONG	... Sing it.
LIFE IS A BLISS	... Embrace it.
LIFE IS A GAME	... Play it.
LIFE IS A DREAM	... Realise it.
LIFE IS A BEAUTY	... Admire it.
LIFE IS A JOURNEY	... Complete it.
LIFE IS A PROMISE	... Fulfil it.
LIFE IS A PUZZLE	... Solve it.
LIFE IS AN ADVENTURE	... Dare it.
LIFE IS AN OPPORTUNITY	... Grasp it.
LIFE IS A GOD'S GIFT	... Cherish it.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SPOTLIGHT ON SCIENCE

Hazards of medication

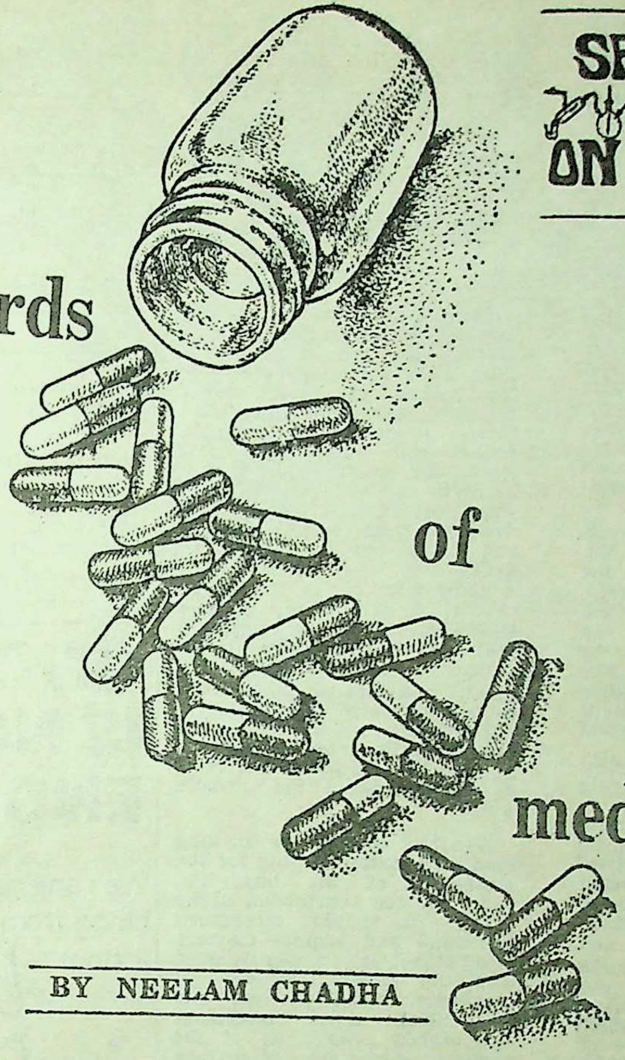

BY NEELAM CHADHA

IT is, indeed, surprising that in spite of the revolutionary progress in the field of medical science in recent years, long queues of chronic patients afflicted by a wider-than-ever variety of ailments are seen in hospitals, clinics and drugs stores. Diseases of the circulatory system, more so of the heart, the insidious and the invincible cancer, and a host of others like diabetes, rheumatism and what not, today afflict a majority of middle aged people and more often than not take their toll before the individual is really old.

Dr Alexis Carel, a champion of medical science and a vivisector, has made it clear in his book, "Man The Unknown," that science has failed to understand man. A doctor is supposed to take care of the body or, to be more precise, to rid the body of disease that may afflict it. But it is a matter of experience that diseases increase in proportion to the increase in the number of doctors in a place. Why? Because doctors suppress the apparent symptoms of the disease by drugging and injecting serums and vaccines but do not cure the disease itself. As a matter of fact, they seem to be interested only in our disease and not at all in our health, because health is much more than just absence of illness.

A majority of us do not even know what disease is. Disease is not a foreign entity invading the body from outside; it is instead a vital process initiated by Nature itself. Disease manifests itself whenever some extraneous matter accumulates inside the body due to the unnatural or so-called civilized ways of living and eating. So disease is nothing but Nature's effort to get rid of the foreign morbid matter accumulated inside the body by our negligence or indulgence in the art of eating. The symptoms observed during the self-cleansing process of the body are the disease.

Through the disease process, life makes an effort to re-establish lost health. This effort of life should never be countered or hindered in any way as is being done by the doctors. Rather, it should be facilitated preferably by relieving the body of its daily work of digestion. The entire strength of the body is then employed in the elimination of the disease. Food feeds the disease and not the patient. Healing power resides inside the system and it can work wonders if given proper opportunity. It is an establish-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ed fact that the human body is quite capable of curing itself without the aid of any external agency. In fact, it continuously performs the self-healing operation, provided no obstruction of any kind is involved.

★

The action of drugs on the system is absolutely temporary and extremely harmful. This is so because foreign matter like a drug is entirely non-adaptable to the system and, consequently, when drugs are taken the body is compelled to relinquish its self-cleansing work (i.e. the disease itself) to deal with the drug. It is obvious that the more a drug has reputation for instant action, that is, the stronger the drug, the more quickly will it interfere with the natural self-healing process of the body.

After each such treatment, the doctor says the treatment, the doctor says the patient is cured but actually he is not because neither the disease nor the cause of the disease has been removed. Disease thus suppressed will definitely appear again after some time, but in a different form and will only be named differently.

The condition of the patient then becomes worse and in most cases diseases are transformed from "acute" to "chronic" and in certain cases from "chronic" to the "destructive" stage. Ultimately such patients are graded as hopeless, incurable, doomed to a life of chronic invalidism. Thousands and thousands of innocent people are thus suffering at the hands of the doctors. Dr Baker and Dr Frank, for instance, hold that "more people die of medicines than of diseases." Dr Masangood goes even to the extent of saying that "more men have fallen victims to medicine than to war, famine and pestilence combined."

Moreover, drugs do not move out of the body of their own accord after doing the work expected of them. In the event of Nature not being given any time or opportunity to expel the drugs from the system after their job there, as is generally the case, the different tissues or organs in the body accumulate them in quantities large enough to cause drug diseases. This retention and accumulation of drugs and consequent causation of drug-diseases has led to the growth of a new branch of science, known as iridology.

In short, the more we try to cover up the filth, the more readily it will putrify It has rightly been said that the medical man tries to kill flies over a heap of rubbish whereas Nature tries to remove the rubbish itself. Removal of the root cause, i.e., the rubbish itself, is definitely wiser. Hence, internal sanitation is the true principal of health and cure.

★

The art of eating is the only form of medication capable of keeping the human body free from disease because food is the source of health or of disease, depending upon whether it is rightly or wrongly chosen and eaten. We must learn why to eat, what to eat, when to eat and how to eat. Food should not merely prevent us from feeling hungry and should not be merely an article of enjoyment. Most diseases arise out of the sin of overeating due to our slavery to the palate. It has been said that true health is impossible without rigid control of the palate, and that all other senses automatically come under our control when the palate has been brought under control and he who has conquered his senses has conquered the whole world.

Gandhiji advised us to take food as a matter of duty for the sustenance of the body and never for the satisfaction of the palate. We should strengthen our mind and acquire mastery over ourselves. In this context also, the present system of medicine makes us lose our self-control. Since medicines temporarily relieve us of the apparent symptoms of disease caused by our indulgence in vice, we are spared of the punishment so well deserved by us in this regard. This results in the weakening of the mind. Therefore we are deprived of our self-control A pain-killing drug or injection, for example, neither removes the pain nor the cause of the pain; it simply benumbs the part or whole of the nervous system which communicates the sense of pain to the brain. So the drug way is not the way to health.

It has been established that vitality is not directly related to the intake of food because a person undergoing fast actually feels stronger on the, say, sixth day of his fast than on the second provided, of course, that he is mentally prepared for it. Life force flowing in the body is certainly different from the chemical energies produced by the processes of assimilation and elimination of food. Food is needed only for repair of the body and is not the source of vital power Contrary to the common belief. temporary abstinence from food does not harm the body in any way, especially in this world of overeaters. Most of us do not realize that nearly 90 per cent of our energy is wasted in getting rid of the superfluous morbid material accumulated in our body. Dr Lindhlar, a pioneer of nature cure, has pointed out that "about one-third of what we eat enables us to live, the remaining two-thirds enables doctors to live."

It is an irony that drugs cripple and kill men all over the world but still people continue to take them under the impression that they are thereby going to recover their health.

ONCE IS NOT ENOUGH

We can't get blood from a stone

Please give us a little of yours

Support the Red Cross

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

THANKS TO OUR MOTHERS

...On my way to the frontline,
Love of you, mother, and love of country is in my heart.
Let your mind be at peace when thinking of me.
You are my mother, and all soldiers are your sons.
It doesn't matter that I am away :
Having some of them around is just like having me by your side,
Look upon my comrades as your own children,
Let us all share in your feeling.
Mother, we are of the same blood,
You, I, and all our fellow-countrymen.
The road I travel over is full of dangers,
But I meet mothers at each step...

(Excerpt from "Mother" by TO HUU — 1948)
Translated from the Vietnamese

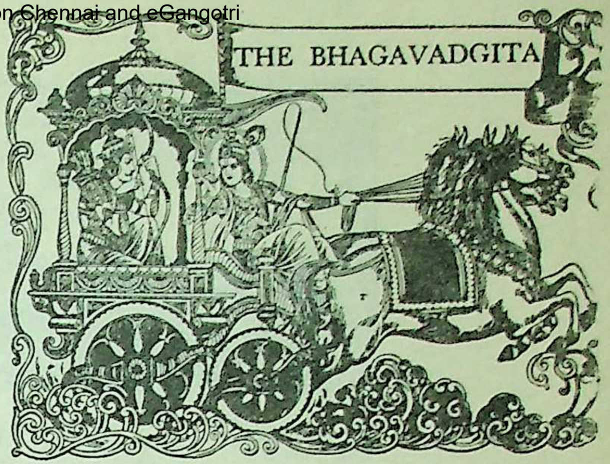

WHOSOEVER at the end leaves the body, thinking of any being, to that being only does he go, O son of Kunti (Arjuna), because of his constant thought of that being.

THEREFORE, at all times remember Me only and fight. With mind and intellect fixed (or absorbed) in Me, thou shalt doubtless come to Me alone.

AT THE time of death, with unshaken mind, endowed with devotion, by the power of Yoga, fixing the whole life-breath in the middle of the two eyebrows, he reaches that resplendent Supreme Person.

UTTERING the one-syllable *Om*—the Brahman—and remembering Me, he who departs, leaving the body, attains to the Supreme Goal.

I AM easily attainable by that ever-steadfast Yogi who constantly and daily remembers Me (for a long time), not thinking of anything else (with a single or one-pointed mind), O Partha.

I AM the goal, the support, the Lord, the witness, the abode, the shelter, the friend, the origin, the dissolution, the foundation, the treasure-house, and the seed which is imperishable.

EVEN if the most sinful worships Me, with devotion to none else, he too should indeed be regarded as righteous, for he has rightly resolved.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

National Character

RAJAJI

NATIONAL character is the keystone on which rests the fate and future of our public affairs, not this or that "ism."

National character, again, depends on—and in fact is—individual rectitude. Movements for the encouragement of personal rectitude, for purifying individual character, are therefore not irrelevant in the context of politics but are vitally connected with our hopes in respect of national affairs.

Individual honesty must be brought into being before we can hope for improvement of our national affairs. It is the drops that make the rain. It is no use saying "I shall be good after I make enough for myself." If each one continues to be dishonest, to better his affairs by wrongful means, the national character will not revive. It will continue to be in disarray as it is now. It is the totality of the character of each individual that makes what we call national character.

National character is the keystone of national affairs. It locks all the bricks together like the keystone in the arch. If the

**A typical Rajaji exhortation for excellence which deserves to be understood and assimilated by the country' youth:
"It is the totality of the character of each individual that makes what we call National Character.
It depends on, and in fact is, individual rectitude."**

TWO LINK-UPS

1. Commerce comes from credit
Credit comes from confidence
Confidence comes from character.

— Anonymous.

2. Pain makes man think
Thinking makes man wise
Wisdom makes life endurable.

— John Patrick.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

keystone is not there, the arch goes to pieces and tumbles down. It is the improvement of individual character that goes to make up the uplift of national character, which in turn becomes the keystone of the arch of national prosperity.

Every movement therefore that seeks and works to improve the character of the men and women of our country is of great importance and is intimately connected with our politics, our economy and our defence.

Gandhiji, it has been often stated, wished to spiritualise politics. He firmly held the view that we cannot keep politics and morality apart. Indeed he wanted politics to be re-built based on a true and reliable foundation, namely, individual honesty.

If the parched field of Indian politics and administration has to get fresh green life and grow, we need the monsoon of purity in national character. And the monsoon consists of little drops falling and uniting to make the rain. Individual purity of character alone can revive the parched field.

Wake Up My People

When will the people of India wake up, wake up to the need to work hard, to the need to be honest in all matters and in all walks of life including manufacture and trade?

Character, which includes efficient work and truthfulness and purity of mind, is the keystone of the arch both in individual life and in national life.

Politics, economics, administration, education, health and hygiene and a score of other things—all call for good character in the individual. Individuals make or mar the nation.

We were once men and women of good character. Something has happened to us. It is possible to probe and say what it is that has ruined our character, but it is waste of time. Let us regain our good character quickly and all will be well—politics, administration and economic condition. There is no doubt about it. Whether we are Christians or Hindus or Muslims or Parsis or any other, and talking of Hindus in particular to whatever denomination we may belong, the problem of being good and to love to work hard, is the same.

Hard work, both *bodily* and brain work, and honesty will make the keystone of the arch which will cover politics, economics, administration and everything else.

In the beginning of this change, from bad to good, from laziness to hard work, there will be a sense of personal sacrifice and a feeling of walking up a steep uphill road.

How to Make LIFE BEAUTIFUL

1-Speak to people ; there's nothing as nice as a cheerful word of greeting.

2-Smile at people, it takes 72 muscles to frown—only 16 to smile.

3-Call people by name ; the sweetest music to anybody's ear is the sound of their own name.

4-Be sincerely cordial ; speak and act as if it were a genuine pleasure.

5-Be considerate of the feelings of others ; no one likes to be rebuffed.

6-Be thoughtful of the opinions of others ; there are three sides to a controversy-yours, the other man's and the right side.

7-Be genuinely interested in people ; you car like everybody if you try.

8-Be generous with praise ; praise uplifts—criticism lowers.

9-Be alert to render service : above all, what counts in life is what we do for others.

10-Be fair in your crticism ; remember your opinion is personal with you and that doesn't make it always correct.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

are you stuck up?

Who you? Never in a million years! But are you really sure? Try our quiz and you'll discover how your friends see you, and what sort of person you really are. Answer the first question and follow the appropriate arrow to the next, and so on . . .

Start the quiz here and learn the shocking truth about yourself!

Do you ever feel at all superior to your friends . . . in any department? — NO / YES

Have most of your friends got more going for them than you have? — YES / NO

As a general rule, is your life—and home—better organised than those of your friends? — NO / YES

When your friends are around, how often do they ask your advice on personal problems? — NEVER / SOMETIMES / OFTEN

Do you hate offering advice for fear of giving someone wrong advice? — YES / NO

Do people rely on you because you're pretty good when it comes to sorting out their problems? — NO / YES

If it really comes to the crunch in your home, who has the final say when you have to make important decisions? — HIM / JOINT DECISION / YOU

Do you often feel envious of the possessions—or achievements—of your friends? — YES / NO

Do you sometimes get a little thrill when you've acquired—or achieved—something that will make your friends a bit envious? — NO / YES

Is/was it important that your children should be absolutely immaculately turned out always? — NO / YES

If there's an argument or difference of opinion are you loath to state your views? — YES / NO

Can you be extremely forceful when it comes to expressing an opinion or point of view? — NO / YES

If you had to decide who was more intelligent—you or your husband—would you say it was . . . — HIM / ABOUT THE SAME / YOU

Do you think anyone—friends or family—has ever been consciously aware that you've done something nice for them? — YES / NO

Are you recognised by others as the kind of person who is always doing terrific favours for people? — NO / YES

How would you rate your own popularity among friends, neighbours, family? — NOT VERY POPULAR / QUITE POPULAR / VERY POPULAR

NOT VERY POPULAR

You're a sad little mouse, most likely, for all that you play your part in working for the success of your family. It doesn't seem fair that your hard work, loyalty and honesty should be taken for granted by those you come into contact with every day . . . but that's the way of the world. Your problem is, of course, lack of self-confidence—a failing that is, unfortunately, all too often self-fulfilling. So you don't allow yourself to recognise your full potential because you're afraid of failure or, even more sadly, it never crosses your mind even to consider half the things that you might actually achieve.

QUITE POPULAR

You're the normal, middle-of-the-road type with plenty of friends, who rather tend to take you for granted. That's a compliment . . . you see, you are the reliable kind who is trusted and relied upon, even in a crisis. Yet you don't put people's backs up when they have dealings with you, because your no-fuss, no-nonsense approach to life probably doesn't antagonise people. But it's worth bearing in mind that a likely weakness is a tendency to back out of a nasty situation rather than face the unpleasantness of making an issue of it. Once in a while you should be more positive, even if it does put people's backs up

VERY POPULAR

Yes, you really are Ms Bossy Boots, aren't you. Those "friends" who sit on your new sofa sipping tea from the Wedgwood china might seem ever so respectful and admiring, but you should hear what they've got to say about you the minute they're out of your immaculate front door. They think you're ever so stuck-up ("Get her!") and they certainly don't share your own conviction that if the world's got to be run by someone it might as well be you. Even the family are prone to exchanging conspiratorial glances at your worst excesses. Watch them, and you'll see for yourself!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

customers!

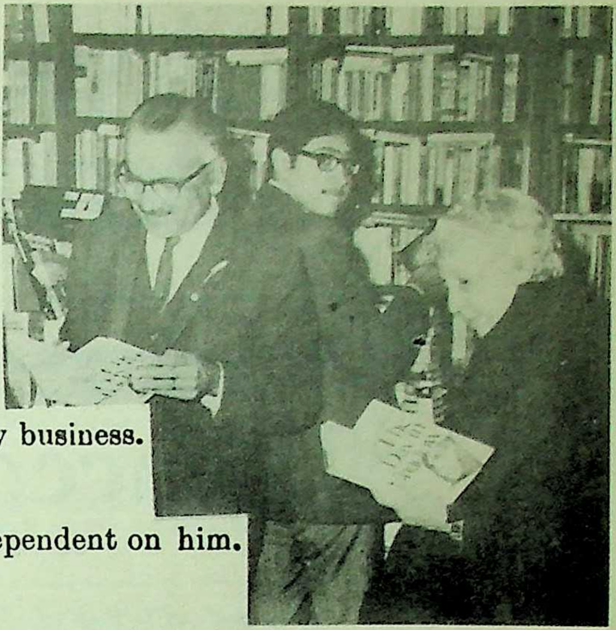

A CUSTOMER ....
is the most important person in any business.

A CUSTOMER ....
is not dependent on us — we are dependent on him.

A CUSTOMER ....
is not an interruption of our work — he is the purpose of it.

A CUSTOMER ....
does us a favour when he calls — we are not doing him a favour by serving him.

A CUSTOMER ....
is part of our business — not an outsider.

A CUSTOMER ....
is not cold statistic — he is flesh and blood and a human being with feelings and emotions like our own.

A CUSTOMER ....
is not someone to argue or match wits with.

A CUSTOMER ....
is a person who brings us his wants — it is our job to fill those wants.

A CUSTOMER ....
is deserving of the most courteous and attentive treatment we can give him.

A CUSTOMER ....
is the fellow that makes it possible to pay your salary whether you are truck driver, office employee, salesman or manager.

A CUSTOMER ....
is the life-blood of this and every other business.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A word to smokers

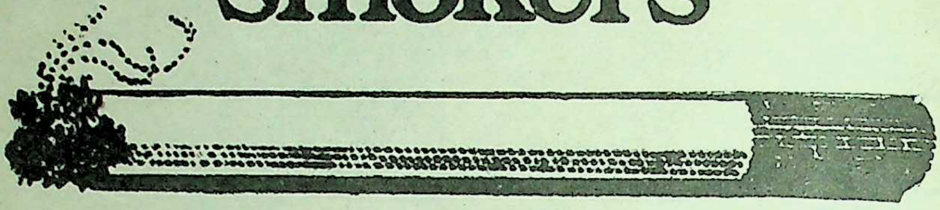

Tobacco Truths

DR. M. B. SHAH

Smoking given up in good time
Adds a mature 15 years to your life,
At the time when you need them most,
For yourself, your family and the country

* * *

Smoking certainly befouls the breath,
Smoking positively damages the health,
Smoking obviously causes a loss of wealth, and
Smoking finally causes early death.

* * *

Cigarettes destroy the health and wealth
Both of smokers and of the nation,
Unnoticed by the central intelligence of both.

* * *

Cigarettes are plain poison to the lungs, stomach and the brain,
And secret poison to the heart, arteries, memory and the nerves.

* * *

Like open tuberculosis, a smoker is a danger to the whole family.

* * *

A smoker is a permanent liability to his family and the society and
An economic loss to himself, his profession, and the country,

* * *

Millions of smokers move about freely in public with no knowledge
That they are suffering from crippled lungs, anaemia or a weak heart.

* * *

Smokers never realise that they ruin not only their own health
But that of their own children and their future generation too.

* * *

When smoking is suddenly kicked off by yourself,
Something really good is done to yourself by yourself.
The lifelong black-mailing magic of evil nicotine when revealed
Will immediately make you give up the devil's hug for ever.

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Stop smoking in time and prove your love to your family and the country.

* * *

When smoking is kicked off,
Many diseases soon clear off.

* * *

Sweet nicotine concealed in tobacco rules a lifetime over the whole brain;
Acts as a true enemy, destroying the whole physique and the brain gradually.
Never think that smoking is fun, fashion, pleasure or status symbol.
It is nothing but a symbol of disabilities, disasters and early death.

* * *

Nicotine and associated poisons in cigarette smoke and tobacco
Kill the innocent victim by a very slow, torturous and expensive mode.

* * *

Tobacco gets an easy entry as the most loving adviser,
It soon becomes a boss and then a military commander,
Later a terror and finally a murderer of the host.

* * *

Smokers cannot extend their life even for a second more but,
They can shorten it by years with the help of cigarettes.

* * *

Smoking produces foul breath, spoils good health, burns wealth
And reduces your life span with or without your knowledge.

* * *

Smoking is nothing but a form of voluntary suicide
But by a tortuous procedure and a luxurious methodology.

* * *

Smokers spoil their health slowly, spend their wealth rapidly
Reduce their life span secretly, produce a national loss unknowingly.

* * *

Choose any of these tobacco truths
For meditation and see the
Miracle that will happen to you
If you are still in the self-help stage.

From the author's forthcoming book, "Quit Smoking and Regain Lost Health."

वैधानिक चेतावनी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।

STATUTORY WARNING CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

S'RĀDDHA AND PIṆḌA

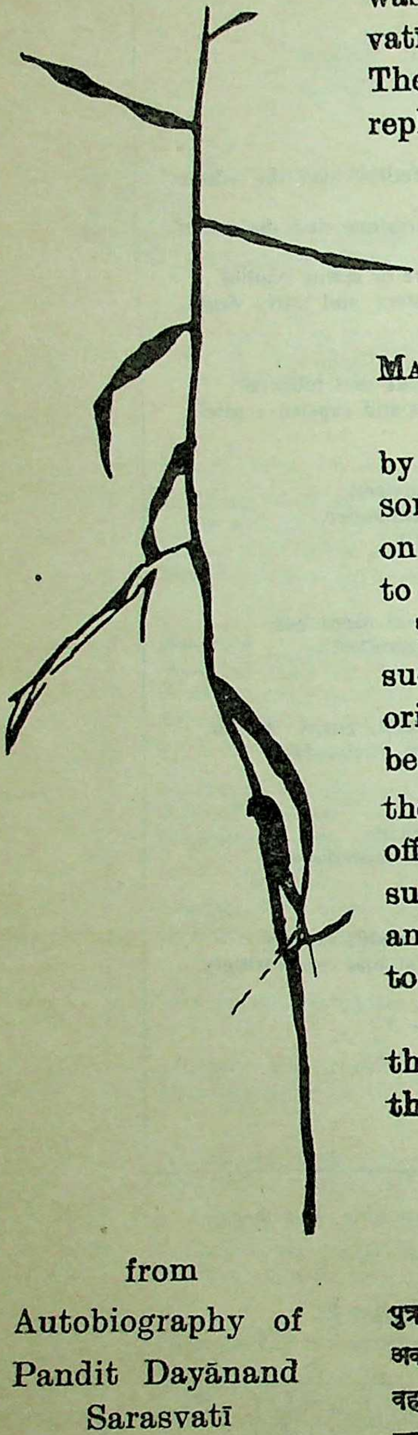

A letter was received by us recently which was forwarded to Svāmijī Dayānand Sarasvatī with a request that he would answer it. The following is the letter and Svāmijī's reply, which also expresses our own views :

The Letter

Bombay

8th February 1880

MADAM,

Will you oblige a section of your readers by inserting in the next issue of THE THEOSOPHIST a paragraph explaining your views on the Hindu custom of performing *S'rāddha* to departed ancestors ?

The points requiring notice are (*a*) how such a custom arose, *i.e.*, its philosophical origin ; (*b*) whether the offering of *piṇḍa* benefits in any way the persons for whom they are offered, in the sense that their non-offering would subject the *manes* to any suffering or privation in the other world ; and, if so, (*c*) why no *S'rāddha* is performed to children who have died young.

I shall be thankful if you could also give the views of Svāmi Dayānand Sarasvatī on this question.

Svāmi's Answer

श्राद्ध (ओरिजिन्) अर्थात् असली है श्राद्ध शब्द के अर्थ श्रद्धा के हैं। पुत्रको माता पिता आदिकी सेवा श्रद्धासे उनके जीवन पर्यन्त करना अवश्य है। परन्तु जो लोग मरे हुए माता पिताका श्राद्ध करते हैं। वह असली नहीं है। क्योंकि जीते माता पिता आदिकी सेवा श्रद्धासे करनी श्राद्ध कहाता है। मृतक के लिये पिण्ड देना व्यर्थ है क्योंकि मरे हुए को पिण्ड देनेसे कुछ् लाभ नहीं होता।

दयानन्द सरस्वती

from
Autobiography of
Pandit Dayānand
Sarasvatī
Written by him expressly
for "THE THEOSOPHIST"
Edited by H. P. Blavatsky

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

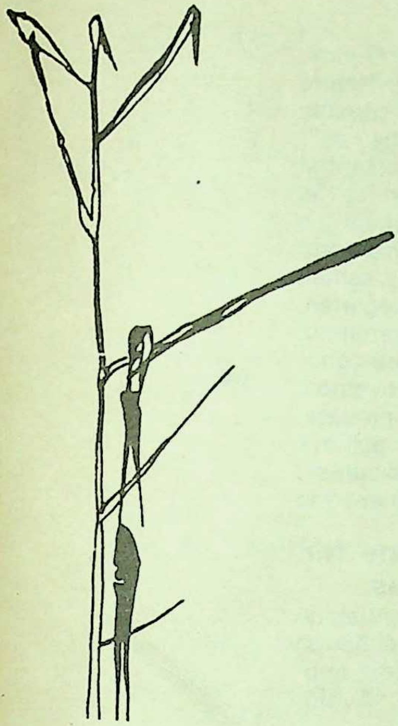

(Translation.) The original meaning of the word S'rāddha is S'raddhā, "devotion". It is the duty of every son to serve his parents with all possible devotion while they are living. But the performance of *S'rāddha* in honour of the *dead* does *not* bear out the original idea at all. S'rāddha really signifies to serve the living parents with all devotion, not the dead. And it is, therefore, useless to offer Piṇḍa (rice balls) in honour of the dead, as it results in no good.

DAYĀNAND SARASVATĪ

पितृ-यज्ञ

पितृ-यज्ञ को 'श्रद्धा' और 'तर्पण' भी कहते हैं। श्राद्ध शब्द 'श्रत्' से बना है, जो सत्य का वाचक है। जिस काम से सत्य का ग्रहण किया जाए वह 'श्रद्धा', और श्रद्धा से जो सेवा की जाए वह 'श्राद्ध' कहलाता है। जिस कर्म से माता-पितादि जीवित पितरों को तृप्त अर्थात् सुखयुक्त किया जाए वह 'तर्पण' है।

तर्पण, श्राद्ध विद्यमान प्रत्यक्ष पितरों का ही हो सकता है, मृतकों का नहीं; क्योंकि मिलाप हुए बिना सेवा नहीं हो सकती। मिलाप जीवितों का हो सकता है, मृतकों का नहीं। अतएव 'पितर' शब्द से जीवित माता-पितादि बड़ों का अर्थ ग्रहण किया जाता है।

ओम् ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधाःस्थ तर्पयत मे पितॄन्॥

पितृ-सेवा-प्रमाण

अर्थ—हे ईश्वर परमात्मन्! (ऊर्जं) बल-पराक्रम को (वहन्तीः) देने वाले (अमृतं) उत्तम रसयुक्त (घृतं) घी, (पयः) दूध, (कीलालं) पकवान, (परिस्रुतम्) रस चूते पके फल, (मे) मेरे, (पितॄन्) पितरों को, (स्वधाः स्थ) प्राप्त कराके, (तर्पयत) तृप्त करते रहो जिससे वे सदा प्रसन्न होकर मुझको सत्योपदेश सुनाते रहें।

पितर शब्द से पिता, माता, पितामह, मातामह, आचार्य, विद्वान् तथा ज्ञान में वृद्ध माननीय पुरुषों का ग्रहण होता है।

Philosophers used to ask, 'What is matter?' and reply jokingly, 'Never mind.' Psychologists asked, 'What is mind?' and replied, quite seriously. 'It doesn't matter.' Now U.S. brain scientists are studying both mind and matter together through bio-feedback—a technique that employs electronic gadgets which measure and amplify the minutest physiological changes. The research confirms what Indian yogis and Buddhist meditators have known for thousands of years—that it is possible, with training, for the mind to control the body. For example, in the 'alpha' state of consciousness—the state people are in when they are deep in meditation—the mind can 'will' changes in blood pressure, heartbeat or even stop the activity of a single cell in the spinal cord.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

YOGA : The WAY OF LIFE

Swami Vivekananda proclaimed "Each soul is potentially Divine. The goal is to manifest this Divinity within, by controlling Nature — external and internal. Do it either by work or worship, psychic control or philosophy; by one, or more, or all of these and be free". The systematic methodology of unfoldment of this inner potential Divinity, by moving towards Self-perfection is referred to as Yoga by Sri Aurobindo. Yoga is thus a process by which the Animal-man ascends through the stages Man-man, Super-man and the Divine-man. In this process, the limited, narrow, selfish thinking completely changes and takes the shape of an integrated, all-encompassing, selfless character expressed by equanimity. This state of Divinity or Self-perfection is the state of pure consciousness, maximum creativity and bliss. Hence, the movement towards THAT through Yoga is a delightful, blissful process. Since every individual or society is always striving to achieve greater happiness, bliss, creativity and higher mental faculties, Yoga clearly is the real solution, both for individual fulfilment and social harmony.

Some General Instructions for Practice of Yogāsanas

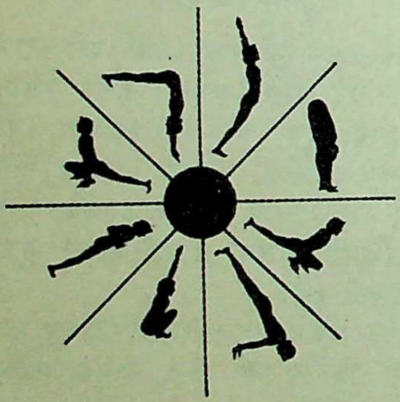

1. Do not perform Asanas immediately after meals. Leave about 4 hours after a heavy meal and at least two hours after a light one. Avoid stimulating drinks.
2. Yogasanas can be performed before or after bath, but allow about half-an-hour between Asanas and bath.
3. Asanas, and physical exercises should not be combined. After stretching and similar exercises, perform Śavāsana for sufficient length of time before starting Asanas.
4. Relaxing the body in a posture is of vital importance. Remove all tensions in the final posture. Relax for a few minutes in between the Asanas.
5. After the Yogāsanas, one should feel fresh and relaxed; never tired, exhausted or sweating.
6. Do not overexert beyond your capacity to maintain the postures for long durations. Instead, adjust the timings according to your progress.
7. Daily practice essential for fast progress.
8. Women should not practise Asanas during menstrual period. One should stop practising Asanas after the fifth month of pregnancy up to two or three months after the confinement except under expert guidance.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* रक्तदान महापुण्य महादान *

SOME FACTS ABOUT BLOOD DONATION

1. Why should I donate blood ?	To save human lives.
2. How shall I be benefited by donating blood ?	In two ways :— (i) You will have the satisfaction of saving a life. (ii) You will entitle yourself and the members of your family to the receipt of blood free of charge.
3. How will the donated blood be used ?	To assist victims of accidents. To help mothers in childbirth. To replace poisoned blood. To facilitate surgical operations. To save Rh. babies.
4. Who can donate blood ?	Any person in average health between the age of 18 and 55 years and above 40 Kg. in weight.
5. Is donation painful ?	No.
6. How long will it take to donate blood ?	Only 4-5 minutes.
7. How can you tell whether or not a person can spare blood ?	Through a medical check up by the Doctor on the spot.
8. How much do I donate at a time ?	Only half a pint *i. e.* $\frac{1}{20}$th of the total amount.
9. How long does it take to replenish the donated blood.	24 hours.
10. How often can one donate blood ?	Every three months.
11. How long can fresh blood be kept for use ?	Three weeks.
12. Can blood of different races be interchanged for transfusion ?	Yes.
13. Can animal blood be transfused into human beings ?	No, blood is species specific hence it cannot be given from one species to another.
14. It there any substitute for human blood ?	No, it can neither be manufactured nor substituted.
15. Why are voluntary donations preferable to professional ?	Professional donors motivated by greed conceal their ailments, while voluntary donors freely disclose them to the Doctor. Thus voluntary donations ensure the required standard as regard to the quality of blood.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

The relevance of Dayanand

IT is gratifying to find a number of foreign scholars and thinkers painstakingly engaging themselves in discovering afresh the depth and universality of Maharshi Dayanand.

This book* by J. T. F. Jordens falls in this valuable category. He has forcefully demonstrated the relevance of the Swami to the times when he emerged on the Indian scene as a militant nationalist and an uncompromising foe of whatever was evil in Hindu society.

India was passing through a traumatic experience in the wake of the fall of the Mughal rule. Its British masters had drained it white and its attempt at freeing itself through a rebellion in 1957 had failed.

A process of cultural aggression by the British had set in, and a major section of the native elite, frustrated and lacking faith and self-confidence, had started saying that a heavy dose of westernisation was the only answer to the country's problems. It was at this hour that this great warrior burst forth on the centre of the stage.

Swami Dayanand has to be evaluated in the context of the needs, both spiritual and temporal, of the country and the people at that time. Whoever tries to divorce him from the mass of humanity would surely misjudge him and fail to evaluate him correctly. It is heartening to find that the book, has not deviated from this basic approach.

Of course, the Swami was a vast subject in himself and any book can hardly present him in his entirety. However, Mr. Jordens's endeavour is praiseworthy and deserves our serious attention.

The Maharshi began his ascetic life as a wandering mendicant in the traditional manner. The transformation came through a poignant experience — a mother who had lost her child was obliged to retrieve the shroud because of her extreme poverty.

The young sanyasi, who was watching the scene, was so moved that he could not control his tears. He wept silently for a long time. And then it dawned on him suddenly that the life of a recluse was not meant to be lived in splendid isolation from the people. The woman's misery made him realise that he was himself part and parcel of people like her and that he must share their sorrows and move about in their midst.

From then on he became an uncompromising crusader against poverty, superstition, evil customs, rituals, and tyranny and oppression of every kind in Hindu society.

Gradually, as he moved about and covered vast distances, he came in contact with the live body of Mother India, reeling under foreign exploitation and repression. He also felt that pernicious influence of the alien western culture creeping over the native elite. This compelled him to set his face against practically everything foreign. He knew that Indians needed to be militantly nationalistic and completely self-reliant in everything if they were to survive as a free nation.

While he did not ignore the progress made by other countries through science and technology, he did not want India to copy blindly things which had no relationship with the pattern of life handed over to the people from the Vedic era. He did not want to borrow anything which could not be easily absorbed and assimilated. This applied to language, too. The Swami began promoting Hindi right from the start of his public life.

He would not accept material progress at the cost of religious and ethical values cherished by the broad masses for the past thousands of years. According to him, prosperity, purchased at the cost of moral values, could not be called progress in the correct sense of the term.

He aspired and ceaselessly worked for the religious, moral and material regeneration of India while simultaneously exhorting the people to struggle for the attainment of freedom. In fact, it was Swami Dayanand who sent Shyamji Krishna Varma abroad to organise assistance for India's freedom movement.

He denounced untouchability and challenged every pandit in India to prove from the sacred texts whether untouchability was ever a part of the Hindu social organisation. As far as he was concerned, he proved beyond any shadow of doubt that this evil had nothing to do with Hindu society and the sooner it was eliminated the better for the physical and moral health of the country.

He passionately pleaded in favour of widow marriage and asserted that the scriptures had never prohibited it. The plight of child-widows was a terrible thing to contemplate and he did his utmost to alleviate their sufferings.

In the same context, he made efforts to tackle the sadly neglected problem of women's education. He found that the Vedic tradition contained incontrovertible evidence that ancient India abounded in women scholars of great erudition and achievements. In course of time, innumerable institutions catering for the education of girls were founded in north India.

As his activities widened, he founded the Arya Samaj to carry on the fight on a much wider scale. Gradually he became a unifying force. Romain Rolland described him as a great builder of the unity of India. He delved deep into the Vedic lore and interpreted its tenets in a manner which excluded scholasticism as well as mysticism so assiduously introduced into it by elaborate schools of Avaitism and Vishistadvaitism' etc.

He thus simplified spirituality, religion, ethics and social behaviour and integrated them all into a workable system of values so that, while practising them, the people could live a self-reliant and self-regulated life of their own.

Mr. Jordens describes this vital aspect of the Swami's multifarious endeavours thus: "In his Satyarth Prakash, Dayananda had already described the historical, doctrinal, and ethical aspects of Vedic life to provide his followers with a complete guide to leading a truly religious life. He would soon add his commentaries on the Vedas, which would give everyone access to the very sources of revelation. These books could effectively take the direction of religious life out of the hands of pandits and brahmins,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

and put it back into the hands of the people themselves."

Since idol worship had degenerated into a variety of superstitions, he fought hard to eradicate this menace from the religious life of the common people. The incident of a rat ruling supreme within the precincts of a Shiva temple has become famous in this context. By such means he injected a heavy dose of rationalism in the religious outlook of the people.

He also devoted much thought and attention to devising a system of education which, apart from being rooted in the Vedic tradition, could be made universal, compulsory, productive-work-oriented and, therefore, egalitarian. He entered into extensive correspondence with industrial experts and scientists in Germany to induce them to impart their technical knowledge to India. The basic intention of these endeavours was to avoid imbalances of all kinds in human life.

The relevance of this approach became all the more clear when one looked at the west, engaged in a furious drive to get rich quickly, distorting the deeper and profounder aspects of human life. No wonder this led to the two disastrous world wars, though the Swami was not there to witness them.

After a careful scrutiny of the Maharshi's ideas one finds that his vision of a rationally organised society, derived by him from the inexhaustible wisdom of the Vedas, was very close to the socialistic formulations being developed in the West by Marx and his associates. Indeed, there were numerous texts, strewn here and there in the vast Vedic literature, which clearly visualised a society based on the concept of social ownership of the means of production.

This was not all. He appeared to have gone still further. He saw the mental and intellectual faculties of the citizens of a country or members of a society as the common property of the collective as a whole. These faculties were necessarily to be placed exclusively at the disposal of society.

Even though the Swami was a Brahmachari in the truest sense of the term, he never suffered from any anti-sex complex or attitude of mind. He was a rationalist and demonstrated a very broad-minded approach to this question.

He enjoined that marriages should not be performed or arranged by parents but by teachers, and the ceremony should cost nothing at all to either party. The very idea of dowry was repugnant to his basic nature. He declared it as a great social evil. According to him, dowry had no place in the Vedic society.

In the last analysis, one could re-emphasise the fact that the Swami was a man of the people. He cast his lot with them, discarding all concepts and precepts enjoining pursuit of unrelated spiritual knowledge and the objective of achieving personal salvation through practicing asceticism of one kind or the other. Though he remained austere in all respects, practised yoga and had attained the highest state of Samadhi, he never divorced himself from the people or their problems.

It was thus that he developed the philosophy of **traitvad.** This alone could make people realise that the world was real and not an illusion and evil was very much there with which man had to cross swords at every step of his experience. In this vast context his relevance can never be over-emphasised.

He died in the prime of his life. He had plans to go to South India. But death came in between. Mr. Jordens ruefully records: "A final important indication of the widening of the Swami's outlook is that in the last year of his life he turned for the first time his attention to South India...Letters to the Swami, written from early 1883, indicate that Dayanand had informed the Aryas of his intention to go to Madras after another visit to Calcutta...But these grandiose all-India dreams were shattered by the Swami's untimely death."

Swami Agnivesh

* **DAYANADA SARSVATI: HIS LIFE AND IDEAS by J. T. F. Jordens; Oxford University Press, Delhi; Pp. 368; Rs. 80.**

Not gold, but only men can make
A People great and strong —
Men, who for truth and honour's sake
Stand fast and Suffer Long
Bravemen, who work while others sleep
Who dare while others fly
They build a Nation's pillars deep
And lift them to the sky.

—R.W. Emerson

"I believe that we all know much more than we realise. We are using a great portion of our energy to suppress the truth."

Books are the food of youth, the delight of old age, the ornament of prosperity, the refuge and comfort of adversity, a delight at home, and no hindrance abroad; companions by night, in travelling, in the country.

CICERO

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

FROM THE EDITOR'S SCRAPBOOK

"Manners are the happy ways of doing things. People are always watching your manners, and awarding or denying you prizes accordingly." —Ralph Waldo Emerson

× × ×

"The great secret is not having bad manners or good manners, or why particular sort of manners, but having the same manners for all human souls."
—Professor Higgins to Eliza in **"My Fair Lady"**

× × ×

"We cannot always oblige, but we can always speak obligingly." —Voltaire

× × ×

For every evil under the sun,
There is a remedy or there is none.
If there is one, try to find it,
If there is none, never mind it.

× × ×

"Success in marriage is much more than finding the right person : it is a matter of being the right person." —Rabbi B. R. Brickner

× × ×

"The great secret of a successful honeymoon is to treat all disasters as incidents and none of the incidents as disasters." —Harold Nicolson

× × ×

"Never accept flattery as though it were a compliment, and never treat a compliment as though it were merely flattery." —Russell Lyres

× × ×

Come in the evening, come in the morning,
Come when expected, come without warning,
Thousands of welcome you'll find here before you,
And the oftener you come, the more we'll adore you.

× × ×

"The attributes of a great lady may still be found in the rule of the four S's : Sincerity, Simplicity, Sympathy, Serenity." —Emily Post

× × ×

"A good woman inspires a man; a brilliant woman interests him; a beautiful woman fascinates him; and a sympathetic woman gets him" —Helen Rowland

× × ×

"If an inquiring child is put off with a lie, the parent loses a certain degree of respect." —Lee Alexander Stone, M. D.

THE MARK OF A GENTLEMAN

"My boy," a father advised his son, "treat everybody with politeness, even those who are rude to you. For remember that you show courtesy to others not because **they** are gentlemen, but because **you** are one." —Alabama Times

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BOOKS ON
Religion, Culture & Philosophy

Thoughts on Indian Mystieism —V. Patanjali	
The Mystics—Aubrey Menen	127.50
Encyclopedia of Psychic Science —Nandor Fodor	138 75
Occultists and Mystics of All Ages —R Shirley	71.50
India & World Civilization —D. P. Singha (2 Vols)	150.00
The Bhagavad Gita—Swami Chidbhavananda 1008 pages	20.00
Autobiography of a Yogi —Parmahansa Yogananda	16 00
Tibetan Book of the Dead —Evans-Wentz	39.50
Tantra : Yoga of Sex—Garrison	74 50
Mind of Acharya Rajneesh	10.50
The Incredioble Sai Baba—Osborne	7.50
The Story of Swami Rama Tirtha —Puran Singh	27.50
Mysticism in Religion—Inge	16.00
In Search of a Yogi—Rutledge	30.00
Hindu Mythology—Wilkins	25.00
Modern Hinduism—Wilkins	25.00
Mahabharata of Vyas—P. Lal	45 00
Bhagavadgita—S. Radhakrishnan	20.00

YOGA

The Complete Book of Yoga : Harmony of Body and Mind—Sri Ananda	40.00
Yoga Practice—Swami Sivananda	17.00
Yoga against Spinal Pain	7.50
Yoga for Vital Beauty	10.00
Yoga and Sex—Shiv Sharma	19.00
Yoga : 28 day Exercise Plan	79.00

MAHARSHI DAYANAND

Dayanand Saraswati : Founder of Arya Samaj—Bawa Arjan Singh	30.00
Vedic Raj Darshan : Dayanand Sarsawati —Rameshwar Dayal Gupta	50.00
Dayanand Sarswati : His Life and Ideas —J T.F. Jordens	90.00

SRI AUROBINDO

The Life Divine (2 Parts)	45 00
The Synthesis of Yoga	28.00
Essays on Gita	20.00
Uttar Yogi Shri Aurobindo —S.P. Singh (Hindi)	30 00
Savitri	40.00

SWAMI SIVANANDA

Practice of Karmayoga	20.00
Mind : Its Mystery and Control	15.00
What Becomes of the Soul after Death	12.00
Sure Ways for Success in Life and God Realisation	10.00
Ten Upanishads	9.00
Practice of Yoga	18.00
Bliss Divine	30.00
Connection and Meditation	16.00

PAUL BRUNTON

Wisdom of the Overself	10.00
A Search in Secret india	20.00
Hidden Teachings Beyond Yoga	10.50
Secret Path 5.00 Inner Reality	10.00
Message from Arunachala	7.50
A Hermit in the Himalayas	6.50
Spiritual Crisis of Man	10.50

SWAMI VIVEKANANDA

A Comprehensive Biography of Swami Vivekanand—S.N. Dhar (2 Vols)	100.00
The Complete Works of Swami Vivekanand (8 Volums)	140.00
Teachings of Swami Vivekananda	10.00
Bhakti-Yoga 5.00 Raja-Yoga	6.50
Karam-Yoga 5.00 Jnana-Yoga	6.50

J. KRISHNAMURTI

Commentaries on Living (3 Vols.)	31,00
Freedom from the Known	6 00
Beyond Violence	7 00

Place your orders Today with :

NATRAJ PUBLISHERS

Specialists in Books on Religion

17 Rajpur Road, DEHRA DUN (U P.)

Agents—GOVERNMENT OF INDIA PUBLICATIONS & SURVEY OF INDIA MAPS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

शिवानन्द आयुर्वेदिक फार्मास्युटिकल द्वारा निर्मित

हिमांचलीय गुणकारी औषधियां

१. शिवानन्द दन्तरक्षक—यह सुप्रसिद्ध दन्तमञ्जन दान्तों के विविध रोगों में हितप्रद, दांतदर्द अथवा हिलना, मसूढ़ों में सूजन, खून या मवाद निकलना, आदि कष्टों में अद्वितीय, दांतों को स्वच्छ, चमकीला एवं मसूढ़ों को मजबूत बनाता है। मूल्य रु० १-२५ पैकेट, रु० ३-५० एवं रु० ८-५० पैसे प्रति टिन। क्रमशः ३० ग्राम, ६० ग्राम, तथा १६० ग्राम पैकिंग में प्राप्त।

२. च्यवनप्रभा (केशर-अष्टवर्गयुक्त)—मानसिक दुर्बलता, रक्ताल्पता, निर्बलता, यकृत-व्याधि, श्वास-कास, सर्दी, दमा तथा हृदय दुर्बलता में लाभप्रद उपचार, यह मानव शरीर के विभिन्न नाड़ी संस्थानों में व्याप्त गतिहीन रक्तप्रणाली को आमूल ओजशक्ति प्रदान कर शरीर के विकास में नियमित लाभ पहुंचाता है। प्रत्येक ऋतु में सेवनीय टानिक। मूल्य रु० ८-०० तथा रु० १५-५० तथा रु० ३०-०० प्रति टिन। क्रमशः २०० ग्राम तथा ४०० ग्राम तथा ८०० ग्राम पैकिंग में प्राप्त।

३. ब्राह्मी आंवला औषधीय तेल—हिमाञ्चलीय जड़ी-बूटियों से निर्मित यह औषधीय तैल, बालों का झड़ना, रूखापन आदि केश रोगों को रोककर बालों की जड़ों को शक्तिशाली बनाता है। मस्तिष्क एवं नेत्रों को शीतलता प्रदान कर नेत्र-ज्योति तथा स्मरण शक्ति को विकसित करता है। मूल्य रु० ६-०० एवं रु० १८-५० प्रति बाटल। क्रमशः १२० ग्राम तथा ४०० ग्राम पैकिंग में प्राप्त।

४. शुद्ध शिलाजीत--रक्त की कमी, अग्निमांद्य, बात व्याधि, शक्तिहीनता, यकृत एवं गुर्दे के रोगों में सद्य लाभप्रद। रक्त-पोषक एवं शक्ति वर्द्धक। वयस्कों के लिये उत्कृष्ट टानिक। मूल्य रु० ७-३० एवं ३५-५० प्रति बाटल। क्रमशः १० ग्राम तथा ५० ग्राम पैकिंग में प्राप्त।

५. चन्द्रप्रभा—बवासीर, यकृत विकार (जीगर बढ़ना) एवं गुर्दे के रोगों के लिये तथा बहुमूत्र व्याधि में उत्कृष्ट औषधि एवं सर्वोत्तम रसायन। मूल्य रु० ५-०० एवं रु० ६-८० प्रति बाटल। क्रमशः १२ ग्राम तथा २४ ग्राम पैकिंग में प्राप्त।

इत्यादि इत्यादि।

पताः—**शिवानन्द आयुर्वेदिक फार्मास्युटिकल वर्क्स**

दिव्य जीवनसंघीय विभाग, पो० शिवानन्द नगर—२४९ १९२, (उ०प्र०) हिमालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृतधारा जीने का सहारा

जी हाँ मेरा नाम अमृतधारा है मेरा जन्म 1901 में लाहौर में **पं० ठाकुर दत्त शर्मा वैद्य** के यहाँ हुआ तथा अगस्त 1947 से देहरादून में स्थापित होकर देश विदेशों की जनता की विभिन्न रोगों जैसे पेट दर्द, अपचन, अतिसार, वमन, जलने-कटने, ज़हरीले डंकों तथा आकस्मिक होने वाले रोगों इत्यादि में बचपन से बुढ़ापे तक की उमर में रक्षा करती हूँ।

जिन लोगों ने मुझे एक बार प्रयोग किया है वे मेरे गुणों से भली प्रकार परिचित हैं और सदैव मुझ पर पूर्ण विश्वास करते हैं मुझे अपने साथ रखते हैं, आवश्यकता पड़ने पर मेरा ही सहारा लेते हैं तथा नक़लों से हमेशा सावधान रहते हैं। मुझे अर्थात् अमृतधारा को लोग 'घर का डाक्टर' और 'जेबी डाक्टर' भी कहते हैं।

किसी कष्ट में एक बार मेरा प्रयोग करके देखें मैं आपके दुखों को सुखों में बदल दूँगी।

आपकी शुभ चिन्तक
अमृतधारा

छोटी शीशी	मध्यम शीशी	बड़ी शीशी
Rs. 1.25	Rs. 3.20	Rs. 6.00

स्थानीय कर अतिरिक्त

अमृतधारा फ़ार्मेसी प्राइवेट लि०, देहरादून. (उ०प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि दयानन्द सरस्वती
आर्य समाज, देहरादून स्थापना
पूर्ण शताब्दी समारोह के अवसर पर

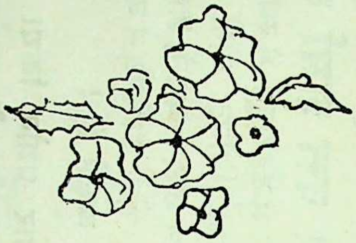

शुभ कामनायें !

शिवालिक ट्रेडिंग एजेन्सी प्रा० लि०

(ट्रेडर्स : एक्सप्लोसिव एण्ड माइनिंग यन्त्र)

५६-गांधी रोड, देहरादून ।

फोन : ५ १ ५ ३ — ग्राम — शिव ट्रजन

WITH COMPLIMENTS FROM

Kamal Block Works

17 Old Cannaught Place, DEHRA DUN
(Near Capri Cinema)

Makers of :
* Blocks * Sterios * Designs * Name Plates * Cine Slides

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CONTACT:

KUMAR TRADING COMPANY

(Approved by Tourist Department)

BUS & COACH OWNERS

75, GANDHI ROAD, DEHRA DUN

or

DIAL 3552—7552

for

Delux Buses and Luxurious Coaches

for

Conducted Tours

of

Dakpathar, Mussoorie

Badrinath, Kedarnath, Gangotri, Yamnotri

Kulu-Manali, Valley of Flowers

Jammu, Vaishnodevi

Srinagar, Gulmarg & Pahalgam etc.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि दयानन्द सरस्वती
आर्य समाज, देहरादून स्थापना
पूर्ण शताब्दी समारोह के अवसर पर

शुभ कामनायें !

विनोद चन्द्र मांगलिक
अध्यक्ष

एम० एल० दीक्षित
सचिव

अरबन को-आपरेटिव बैंक लि०

देहरादून—फोन ३०२६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Phone (Office : 26-1550
(Res : 44-1270

WITH COMPLIMENTS FROM

Telegram: BENGPRIN

Sri Bengal Printing Works Private Ltd.

21, Synagogue Street,

Calcutta-700001.

Sole Selling Agents for West Bengal :

The Ratlam Strawboard Mills Pvt. Ltd,

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

Doon Udyog Private Limited

59, Gandhi Road

DEHRA DUN, U.P.

Phone : 3965 Telex : 0595 202 Gram : UDYOG

Consignment Agents
for
I. D. L. CHEMICALS LTD.
Hyderabad-18 (A. P.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ० विश्वनाथ स्मृति संग्रह

8151

LUNA TFR

First-class travel at economy fare

DEALERS :

Quetta Motor Cycle Co.,

Narang Chowk, Gandhi Road

DEHRA DUN

Tel-3479

GURUKUL KANGRI LIBRARY
Accession 1/11/13
Class on
Cat on
Tag etc. Dharma 24.11.03
Checked
Any Other

felicitations

from :

Thakurdas Agencies

Birhana Road, KANPUR

Distributors U.P.

for Timestar Watches, Favre-Leuba Jaz &

HES Timepieces, Rivex Clocks & Bentex Straps.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

PAYMENT PROCESSED
Vide Bill No. 646 Dated 14/1/94
Anis Book Binder

Th

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar